शार्दूल विक्रीडित.

भो भव्या भववारिधौ निरवधौ नक्रौघवत् संभ्रमात् ।
भ्राम्यन्तः कथमप्यवाप्य सुकृतान्मानुष्यजन्माद्भुतं ।
तत्साफल्यकृते विधत्त विनयेनाराधनं साधनं ।
श्री सिद्धं परमेष्ठिनामतितरां शर्मद्रुमांभोधरम् ।

હે ભવ્ય જીવો ! અપાર એવા ભવ સમુદ્રમાં જળજંતુની પેઠે સંભ્રમથી ભમતાં ભમતાં કોઈક પુણ્યના ઉદયથી મનુષ્ય જન્મ પામીને તેને સફળ કરવા માટે જલદીથી સુખરૂપ વૃક્ષને વૃદ્ધિ કરવામાં મેઘ સમાન પંચ પરમેષ્ઠિનું વિનય વડે આરાધન કરો.

ઉપદેશપ્રાસાદ. વ્યાખ્યાન ૧૨ મું.

प्रस्तावना.

आ उपदेशप्रासाद ग्रंथ श्री विजयलक्ष्मीसूरिए अत्यंत उपकारक रच्यो छे. तेनी अंदर संख्याबंध कथाओ दाखल करवा उपरांत शास्त्राधार पण पुष्कळ दाखल कर्या छे. मध्यम बुध्धिवाळा वांचकोने माटे तो आवा ग्रंथनी खास आवश्यकता छे. आ ग्रंथने अत्युपयोगी जाणीने तेनुं भाषांतर कराववानुं बहु वर्ष अगाउ अमे शरु कर्युं ते दरम्यान आ पहेलो भाग बीजा तरफथी बहार पाडवानी तैयारी सांभळवामां आवतां तेना प्रसिध्ध कर्त्ताने लखी छपायेल भाग बांध्या विना मंगाव्यो तो तेनी अंदर अक्षरो उपरांत अर्थ ने भावार्थनी पण पारावार भूलो जोइ तेमांनी केटलीक लखी मोकली ते तेमणे पोतानी बुकनी साथेज छपावीने प्रगट करी परंतु वांचनाराओ दरेक स्थळ वांचतां शुध्धिपत्र तरफ जोता नथी तेथी तेनो पूरतो उपयोग थइ शक्यो नहीं. त्यार पछी अमे बीजो भाग तेनी साथे मळीने छपाव्यो अने त्यार पछीना त्रणे भागो स्वतंत्र छपावी प्रगट कर्या. पहेला भागनी शुध्ध आवृत्ति करवा घणी चीवट हती छतां ग्रंथ पूरो कर्या पछी ते काम हाथ धरवानो विचार राखेलो होवाथी ते विचार आजे पार पड्यो छे. ग्रंथ पूरो छपाइ गयो छे ने आ पहेलो भाग पण शुध्ध स्थितिमां प्रगट कर्यो छे. प्रथम छपायेल आ भागनी बुक जो के हालमां बीलकुल मळी शकती नथी परंतु जेमणे ते खरीदेल छे तेमने मेळवी जोतां आमां ने तेमां केटलो तफावत छे ते समजी शकाय तेम छे.

आ विभागमां प्रथमना चार स्थंभनुं भाषांतर समावेलुं छे. तेमां ६१ व्याख्यान आवेला छे. आ भागमां एकलो समकितनो विषयज समावेलो छे. प्रारंभमां मंगळाचरण करी मंगळ करवानी आवश्यकता सिध्ध करी पहेला व्याख्यानमां जिनेश्वरना ३४ अतिशयनुं वर्णन कर्युं छे ते वांचवा योग्य छे. त्यार पछीना त्रण व्याख्यानमां समकितना भेदो विगेरे बताववामां आवेल छे. ते साथे दरेक व्याख्यानमां एक एक कथा पण आपवामां आवी छे. पांचमा व्याख्यानथी समकितना ६७ भेदनी व्याख्या शरु थाय छे. ए ६७ भेदना वर्णन उपर एकंदर ५३ व्याख्यान छे ने तेनी अंदर ६१ कथाओ आपवामां आवेली छे. ने कोष्टकनी रीते आ नीचे बताववामां आवेल छे. छेवटना ४ व्याख्यान समकितना भेदो विगेरे बताववा माटे छे. तेमां प्रथमना ३ व्याख्यानमां समकितना रोचक कारक ने दीपक

एवा त्रण जेद छे, तेनुं वर्णन करी तेनी उपर त्रण कथाओ पण आपेली छे. छे-ल्लुं ने वधारानुं (६१ मुं) व्याख्यान समकितना वस्तुस्वरूप माटे छे. ते खास वांचवा योग्य छे. आ व्याख्यान वधारानुं एटला माटे छे के आ ग्रंथनुं नाम उपदेशरूपी प्रासाद एटले महेल छे, तेमां स्तंज (थांजलाओ) २४ राख्या छे, ते दरेक स्तंजमां १५–१५ व्याख्यानो आपवामां आव्या छे, एटले एकंदर २४ स्तंजमां मळीने वर्षना दिवस जेटला अर्थात् ३६० व्याख्यानो छे. आनो मतलब एवो छे के व्याख्यान कर्त्ता मुनि दररोज एक एक व्याख्यान वांचे तो एक वर्ष सुधी पहोंचे; एवो आ ग्रंथ छे. आ अपेक्षाए ४ स्तंजमां ६० व्याख्यान जोइए तेमां ६१ मुं दाखल कर्युं छे ते वधारानुं छे. जेथी प्रांते पण ३६० ने बदले ३६१ व्याख्यान करवामां आव्या छे.

समकितना ६७ जेद.	तेना पर व्याख्यान.	तेमां आवेल कथाओ.
४ श्रद्धा.	४ व्याख्यान.	४ कथाओ.
३ लिंग.	३ ,,	३ ,,
१० विनय.	३ ,,	३ ,,
३ शुद्धि.	४ ,,	४ ,,
५ दूषण.	५ ,,	७ ,,
८ प्रजावक.	१२ ,,	१३ ,,
५ भूषण.	५ ,,	७ ,,
५ लक्षण.	५ ,,	६ ,,
६ यतना.	२ ,,	२ ,,
६ आगार.	६ ,,	८ ,,
६ जावना.	१ ,,	१ ,,
६ स्थान.	३ ,,	३ ,,
६७	५३	६१

आ विजागमां आवेला ६१ व्याख्यानो अने तेमां आवेली एकंदर ६७ कथाओनी अंदर खास करीने प्रारंजना अने प्रांतना चार चार व्याख्याननी अंदर बतावेलुं समकितनुं स्वरूप ने तेना जेदो विगेरे लक्ष पूर्वक वांचवा योग्य छे. तदुपरांत छ स्थान उपरना ३ व्याख्यानमां गौतमादिक गणधरनी ३ कथाओ छे ते पण खास वांचवा योग्य छे. तेनी अंदर केटलुंक तत्वज्ञान समावेलुं छे. सातमा व्याख्यानमां आवेली जमालीनी कथामां ने १ए मा व्याख्यानमां आवेल त्रीजा

निह्नवनी कथामां पण बहु समजवा जेवुं छे. कथाना रसीको माटे आठ प्रज्ञावकना द्वार उपरना १२ व्याख्यानमां समावेल १३ कथाओ अने काकजंघ कोकाशनी कथा विगेरे खास वांचवा लायक छे. एकंदर रीते विचारीए तो आ आखो विज्ञाग वांचवा लायक छे. आ विज्ञागमां प्रथम खंड[1] पूर्ण थाय छे.

ग्रंथने उपयोगी बनाववा माटे ग्रंथकारे अनेक शास्त्रोनी जे जे सहादतो आपी छे ने प्रस्तावीक जे जे श्लोको आपेला छे ते तमाम अर्थ साथे आ ज्ञाषांतरनी अंदर पण आपवामां आवेला छे जेथी आ ज्ञाषांतर बहु उपयोगी बनेल छे.

पांचे विज्ञागनी अंदर कया कया विषयो दाखल करेला छे ते अमे पांचमा विज्ञागनी प्रस्तावनामां तमाम बतावेल छे. ते साथे पांचे ज्ञागमां आवेल तमाम कथाओनुं लीस्ट अक्षरानुक्रमे छेवटना विज्ञागनी प्रांते आपवामां आवेल छे.

आ ग्रंथकर्त्ताना चरित्र संबंधी वधारे हकीकत न मळी शकवाथी अमे ते संबंधी विशेष लखी शक्या नथी परंतु जो कोइ मुनिमहाराज के गृहस्थ ते संबंधी खबर आपशे तो अमे जुदुं पण तेमनुं चरित्र बहार पाडवा इच्छीए छीए.

समकित धर्म मात्रनुं मूळ छे.[2] समकित शिवायनो धर्म ते अंक विनाना शून्य जेवो छे. तेथी समकितनी अज्ञिलाषा प्रथम कर्त्तव्य छे. आ विभाग खास समकितना अज्ञिलाषीने माटेज छे, तेथी तेमणे आ विज्ञागनो लाज्ञ लेवानी खास जरुर छे.

प्रारंज्ञमां वधारे लखीने उत्सुक वांचनाराओने न रोकतां तेमनी साद्यंत वांचवानी लागणीने तेज थवा माटे अनुक्रमणिका वांची जवानी ज्ञलामण करी आ टुंकी प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे छे. परम कृपाळु परमात्मा पासे प्रार्थना करवामां आवे छे के तेमनी कृपाथी आ विज्ञाग अनेक ज्ञव्य जीवोने समकितनी प्राप्तिना निमित्तभूत थाओ अने अमारो प्रयास सफळ निवडो. तथास्तु.

आश्विन.
संवत १९६७.

श्री जैनधर्म प्रसारक सज्ञा,
ज्ञावनगर.

---

१ खंड एटले महेलना विभाग–रुम–होल. समकितना स्वरुप संबंधी पहेलो खंड आ विभागमां पूर्ण करेल छे ते प्रवेशक रुम छे २ आनी पुष्टि माटे जुओ व्याख्यान ५४ मुं

આનંદ પ્રેસ.

છન્દ હરિગીત.

ઉત્તમ મશીન કશી ન ચિન્તા, પુનિત સકલ પ્રબંધ છે,
વળિ ટાઈપ કાગળ તેમ કમ્પોઝીટર જત્થાબંધ છે.
અતિ શુદ્ધ તેમ સફાઇદાર છપાય છે ગ્રન્થો જ્યહાં;
એ પ્રેસ છે "आनन्द" માટે તુર્ત આવી મળો ત્યહાં. ૧

श्री उपदेश प्रासाद भाषांतर.

भाग पहेलो.

स्थंभ १ थी ४. व्याख्यान ६१ नी अनुक्रमणिका.

स्तंभ १ लो.

व्याख्यान १ लुं.

व्याख्यान २ जुं.

व्याख्यान ३ जुं.

व्याख्यान ४ थुं.

व्याख्यान ५ मुं.

समकितना ६७ बोलनी शरुआत.

चार श्रद्धा.

व्याख्यान ६ ठुं.

व्याख्यान ७ मुं.

व्याख्यान ८ मुं.

व्याख्यान ९ मुं.

समकितना त्रण लिंग.

व्याख्यान १० मुं.

व्याख्यान ११ मुं.

व्याख्यान १२ मुं.

विनयद्वार

व्याख्यान १३ मुं.

व्याख्यान १४ मुं.

व्याख्यान १५ मुं.

स्तंभ २ जो.

व्याख्यान १६ मुं.

व्याख्यान १७ मुं.

स्तंभ ३ जो.

स्थंभ ४ थो संपूर्ण.

॥ श्री उपदेशप्रासाद भाषान्तर ॥

। स्तंभ पहेलो ।



व्याख्यान १ लुं.

मंगळाचरण.

स्वस्तिश्रीदो नाभिभूर्विश्वबन्धु—र्गीर्वाणार्थ्यो वस्तुतस्तत्त्वसिन्धुः
भास्वद्दीप्त्यानिर्जितादित्यचन्द्रः सत्त्वानव्यादादिमोऽयंजिनेन्द्रः १

भावार्थ—" जे नाभिराजाना पुत्र कल्याण अने लक्ष्मीने आपनारा छे, समग्र विश्वने बन्धु समान छे, परमार्थथी तत्त्वज्ञानना सागर समान छे, जेनी देवताओ प्रार्थना करे छे, अने जेणे पोतानी देदीप्यमान कान्तिथी सूर्यचंद्रने जीतेला छे एवा आ प्रथम जिनेन्द्र (ऋषभस्वामी) सकल जीवोनुं रक्षण करो. "

श्रीभूपनाभिजनपान्वयपुष्करत्वे, चिद्रूपदीधितिगणै रविरेव योऽभूत्।
स्वीयौजसा शमितमोहतमःसमूहो, कल्याणवर्णविभुरस्तुविभूतये सः २

भावार्थ—" पृथ्वीनुं पालन करनार श्रीमान् नाभिराजाना वंशरूपी आकाशमां जे (प्रभु) सम्यग्ज्ञान रूपी किरणोना समूहवडे सूर्य समान थया, अने जेमणे पोताना तेजथी मोहरूपी अन्धकारना समूहनो नाश कर्यो ते सुवर्ण समान कान्तिवाळा प्रभु अमारी संपत्तिनी वृद्धि माटे थाओ. "

मोक्षलक्ष्मीना अद्वितीय हेतु रूप, त्रण लोकनी लक्ष्मीना सद्वितीय[१] हेतुरूप, आत्मस्वरूपने प्रकट करनार अने गंभीरतारूप लक्ष्मीने उत्पन्न करवामां सागर समान एवा श्री विश्वसेन राजाना पुत्र श्री शान्तिनाथ स्वामीनो हुं आश्रय करुं छुं.

मोहरूपी असुरनो नाश करवामां नारायण (विष्णु) जेवा अने कामदेवनो नाश करवामां महादेव (शंकर) जेवा तथा मनने जीतनारा तेमज पाणिग्रहण

१ बीजा हेतु साथे प्रभु आलंबनरूप.

करवाना मीषे करीने तिर्यंचोपर दया करवाने माटेज रथमां बेठेला एवा श्री नेमिनाथ प्रभु अमोने सुख आपनार थाओ.

शंखने धारण करनार (शंखेश्वर) कृष्णे जेनी प्रार्थना करी छे, तथा जे नाथना पण नाथ छे एवा हे वामा राणीना पुत्र शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्वामी ! तमे जयवंता वर्तो. ए प्रमाणे जिनेश्वर थकी त्रिपदीरूप वर्णने पामेला एवा गणधरोए जेमनी स्तुति करी छे एवा तथा जे पार्श्वनाथ स्वामीना उपनामनी संख्या अन्तरिक्ष, नवपल्लव विगेरे नामोवडे जिननुं लक्षणना प्रमाण जेटली एटले एक हजार ने आठनी करेली जगत् प्रसिद्ध छे ते सुखदायी संख्यानी हुं हर्ष पूर्वक स्तुति करुं छुं.

जे सिद्धार्थराजाना पुत्र अनंतज्ञान रूपी कल्पवृक्षना नन्दनवन समान छे, संसारना तापनो नाश करवामां बावनाचंदन जेवा छे, जेमणे अनिंदित वचनवडे विश्वने विकसित कर्युं छे, अने जेमणे पोताना (तीर्थंकरना) भवनी पूर्वेना त्रीजा भवमां अगियार लाख ऐंशी हजारने पांचसो मासक्षमण कर्यां छे ते श्री वीरस्वामी जयवंता वर्तो.

भव्य प्राणीओने अर्चन करवा योग्य, कामदेवने जीतनारा, स्वयंभू तथा संसारनो नाश करनारा एवा श्री अजितनाथ संभवनाथ विगेरे तीर्थंकरो ग्रंथना वक्ता अने कर्ता विगेरे शुभ आत्मावाळा सत्पुरुषोने सुखना कारणभूत थाओ.

प्रथम पंचपरमेष्ठीने नमस्कार करीने हुं आ उपदेशप्रासादनी वृत्ति तेमां वर्षना दिवस प्रमाणे त्रणसो ने साठ व्याख्यानो कहेलां होवाथी अब्ददिनपरिमिता नामनी करुं छुं. आ स्थळे हुं प्रथम त्रण प्रणव (ॐकार) स्थापीने पछी त्रण आकाशबीज (ह्रीं) स्थापीने अने पछी सरस्वतीबीज (ऐं)ने स्थापीने—ए रूप मंत्रने नमन करीने आ शास्त्र शरु करुं छुं.

जेम बाळकनुं कालुं घेलुं बोलेलुं वचन पण पितानी पासे शोभे छे, तेम आ मारुं प्रलाप रूपी वचन पण श्रुतधरोनी पासे सत्यपणाने पामशे. जेम कोइ तृषातुर माणस क्षीर सागरमांथी थोडुं जळ लइने पण पोतानी तृषा दूर करे छे, तेम हुं घणा शास्त्रोमांथी थोडुं थोडुं ग्रहण करीने आ व्याख्या लखुं छुं, तेथी हुं निंद्य नहीं थाउं. आ ग्रंथमां प्रथम एक एक श्लोक कहीने तेना उपर गद्यमां

एक एक दृष्टान्त आपेलुं छे, तेथी तेनी संख्या पण वर्षना दिवस प्रमाणे त्रणसो ने साठनी थयेली छे.

दरेक ग्रंथनी शरुआतमां नमस्कार[1] रूप, ग्रन्थनी वस्तुनुं प्रदर्शन[2] करवा रूप अथवा आशीर्वाद[3] रूप मंगळ विघ्नना नाश माटे तथा शिष्ट जनना आचारनुं पालन करवा माटे करवुं जोइए. कह्युं छे के—

श्रेयांसि बहुविघ्नानि, भवन्ति महतामपि ।

अश्रेयसि प्रवृत्तानां, क्वापि यान्ति विनायकाः ॥ १ ॥

भावार्थ—" महापुरुषोने पण श्रेयना कार्यमां घणां विघ्नो आवे छे, अने अशुभ कार्यमां प्रवर्तेला माणसोनां विघ्नो दूर जतां रहे छे."

तेथी करीने ग्रन्थना आरंभमां विघ्नसमूहनी शान्ति करवा माटे उपर कहेलुं मंगळ शास्त्रना प्रारंभमां, मध्यमां अने अन्तमां करवाने इच्छेलुं छे. अहीं कोइ शिष्य प्रश्न करे के " स्याद्वाद धर्मना वर्णन रूप आ ग्रन्थ होवाथी समग्र ग्रन्थज मंगळ रूप छे; तो पछी शास्त्रना आरंभ, मध्य अने अन्तमां मंगळ करवानी शी जरुर छे ? केमके मंगळ करवानुं कांइ पण प्रयोजन रहेतुं नथी." आ प्रश्ननुं गुरुमहाराज समाधान करे छे के " हे शिष्य ! 'मंगळ करवानुं कांइ पण प्रयोजन नथी' ए जे तें मंगळ नहीं करवामां हेतु (कारण) आप्यो ने हेतु असिद्ध छे. कारण के—शिष्यजनो निर्विघ्नपणे ग्रन्थ पूर्ण करी शके (अभ्यास करी शके), तेटला माटे आरंभमां मंगळ करवुं जोइए, तेज ग्रन्थ शिष्यजनोना हृदयमां सुदृढ थवा माटे मध्यमां मंगळ करवुं जोइए; अने तेज ग्रन्थ शिष्य प्रशिष्यादिक परंपराए करीने सर्वने उपकारी थवा माटे अन्त्य मंगळ करवानी जरुर छे. माटे तें मंगळ नहीं करवामां बतावेलुं कारण असिद्ध छे. ते विषे प्रशंसनीय भाष्य रूपी धान्य उत्पन्न करवामां वृष्टि समान श्री जिनभद्रगणि महाराजे कह्युं छे के—

तं मंगलमाईए, मज्झे पज्जंतए य सत्थस्स ।

पढमं सत्थत्थाविग्घ, पारं गमणाय निद्दिट्ठं ॥१॥ इत्यादि

---

१ जमां इष्टदेवताने नमस्कार करवामां आवे ते २ जेमां प्रस्तुत ग्रन्थनो विषय देखाडवामां आवे ते ३ जेमां आशीर्वादनुं वचन कहेवामां आवे ते

भावार्थ—"शास्त्रना प्रारंभमां, मध्यमां अने अन्तमां मंगळ करवुं जोइए. तेमां प्रथम मंगळ शास्त्र अने तेना अर्थनो निर्विघ्न पार पामवा माटे कहेलुं छे." इत्यादि.

तेमज हे शिष्य ! शिष्टजनोनो आ मंगळ करवा रूप आचार पण अवश्य जोवामां आवे छे. शिष्ट कोण कहेवाय छे ? शास्त्र रूप सागरना पारने पामवा माटे जेओ शुभ व्यापारमां प्रवर्ते ते शिष्टजनो कहेवाय छे. कह्युं छे के—

शिष्टानामयमाचारो, यत्ते संत्यज्य दूषणम् ।
निरन्तरं प्रवर्तन्ते, शुभ एव प्रयोजने ॥ १ ॥

भावार्थ—शिष्टजनोनो आ आचारज होय छे के तेओ दूषणनो त्याग करीने निरन्तर शुभ कार्यमांज प्रवर्ते छे.

वळी बुद्धिमान पुरुषो फळनी इच्छावाळाज होय छे, केमके प्रयोजन विना तो मार्गमां पडेली कांटावाळी शांखळीनुं उपमर्दन करवानी जेम निष्फळ प्रयत्न थाय छे; तेथी तेवी शंका टाळवा माटे, बुद्धिमान पुरुषोने आ ग्रंथना पठन पाठनमां प्रवृत्त करवा माटे तथा उपद्रवोनो नाश करवा माटे ग्रन्थकार इष्ट देवताने नमस्कार करवा पूर्वक संबंध, अभिधेय अने प्रयोजनने सूचवनार प्रथम श्लोक कहे छे—

ऐन्द्रश्रेणिनतं शान्तिनाथमतिशयान्वितम् ।
नत्वोपदेशसद्माख्यं ग्रन्थं वक्ष्ये प्रबोधदम् ॥ १ ॥

शब्दार्थ—इन्द्रोना समूहवडे वंदना करायेला अने अतिशयोथी युक्त एवा शान्तिनाथ स्वामीने नमस्कार करीने हुं प्रबोधने आपनारा आ उपदेशप्रासाद नामना ग्रन्थने कहुं छुं.

विस्तरार्थ—हुं उपदेशप्रासाद नामना ग्रन्थने कहुं छुं. ए रीते क्रियापदनो संबंध छे. तेमां 'उपदेश' एटले हमेशा व्याख्यान आपवाने योग्य एवा त्रणसो ने एकसठ दृष्टान्तोनुं 'सद्म' एटले स्थान (महेल—प्रासाद), ते नामनो ग्रन्थ हुं कहुं छुं. ते ग्रन्थ केवो छे ? तेनुं विशेषण कहे छे के 'प्रबोधदम्' एटले सम्यग् ज्ञानने आपनार—उत्पन्न करनार छे. ते ग्रंथ शुं करीने कहुं छुं ? नमस्कार करीने कहुं छुं. अर्थात् मन वचन कायावडे नमस्कार करीने कहुं छुं. कोने नमस्कार करीने ? शान्तिनाथने—अचिरा माताना पुत्रने—विश्वसेन राजाना पुत्र सोळमा

तीर्थंकरने. ते शान्तिनाथ केवा छे? चोसठ इन्द्रो, बार चक्रवर्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव, नव बळदेव, तथा गणधरो, विद्याधरो अने मृगेन्द्रो (सिंह) विगेरेना समूहवडे नमस्कार करायेला छे. वळी केवा छे? अपाय अपगम विगेरे चार[1] अथवा प्रकारांतरे चोत्रीश अतिशयोथी युक्त छे, एवा शान्तिनाथ स्वामीने प्रणाम करीने हुं उपदेशप्रासाद नामना ग्रन्थने करुं छुं. आ प्रमाणे प्रथम श्लोकनो विस्तरार्थ छे.

आ प्रथम श्लोकमां 'अतिशयोथी युक्त' एवुं शान्तिनाथनुं विशेषण आप्युं छे. तेमां तेमना चोत्रीश अतिशयो सूचव्या छे. ते अतिशयो पूर्वाचार्यनी गाथावडे बतावे छे—

चउरो जम्मप्पभिई, इक्कारस कम्मसंखए जाए।
नवदस य देवजणिए, चउत्तीसं अइसए वन्दे ॥ १ ॥

भावार्थ—"तीर्थंकरोने जन्मथी आरंभीने चार अतिशयो, कर्मना संक्षयथी उत्पन्न थयेला अगीयार अतिशयो अने देवताओए करेला ओगणीश अतिशयो होय छे. ते चोत्रीश अतिशयवाळा भगवानने हुं वंदना करुं छुं.

ते अतिशयो आ प्रमाणे छे—

(१) तीर्थंकरनो देह सर्व लोको करतां श्रेष्ठ (लोकोत्तर) अने अद्भूत स्वरूपवान होय छे, तथा व्याधि रहित अने परसेवो तथा मेल रहित होय छे.

(२) तीर्थंकरोनो श्वासोश्वास कमलना परिमलनी जेवो सुगन्धी होय छे.

(३) जिनेश्वरोनुं मांस अने रुधिर गायना दूध जेवुं उज्वल (श्वेत) होय छे. तथा (४) भगवाननो आहार अने निहार चर्मचक्षुवाळा प्राणीओने (मनुष्यादिकने) अदृश्य होय छे, परंतु अवधि विगेरे ज्ञानवाळा पुरुषो तो जोइ शके छे. आ चारे अतिशयो भगवानने जन्मसमयथीज उत्पन्न थाय छे.

हवे ज्ञानावरणीयादिक[2] चार घातिकर्मोना क्षयथी ११ अतिशयो उत्पन्न थाय छे ते बतावे छे—

---

१. ज्ञानातिशय, वचनातिशय, पूजातिशय ने अपायापगमातिशय ए चार

२ ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अने अन्तराय आ चार घाति कर्म छे तेना क्षयथी प्राणीने केवळज्ञानादि प्रगट थाय छे

(१) जगवानना समवसरणनी भूमि मात्र एक योजन विस्तारवाळी होय छे, तोपण तेटली जूमिमां करोमो देवताओ, मनुष्यो अने तिर्यंचोनो समावेश थाय छे, अने परस्पर संकोचनी बाधा रहित सुखे बेसे छे.

(२) जगवंते देशनामां कहेली पांत्रीश गुणोथी युक्त अर्ध मागधी ज्ञाषा देवताओ, मनुष्यो अने तिर्यंचोने पोतपोतानी ज्ञाषामां समजावाथी धर्मनो अवबोध करनारी थाय छे. तथा ते वाणी एक योजनना समवसरणमां रहेला सर्व प्राणीओने एक सरखी रीतेज सांजळवामां आवे छे. जो के जगवंत तो एकज ज्ञाषामां उपदेश आपे छे, परंतु वरसादना जळनी जेम ते ज्ञाषा जिन्न जिन्न जीवो रूप आश्रयने पामीने ते ते जीवोनी ज्ञाषापणे परिणाम पामे छे. ते विषे कह्युं छे के—

देवा दैवीं नरा नारीं, शवराश्चापि शावरीम् ।
तिर्यञ्चोपि हि तैरश्चीं, मेनिरे जगवद्गिरम् ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—जगवाननी वाणीने देवताओ दैवी ज्ञाषा माने छे, मनुष्यो मानुषी भाषा माने छे, जिल्ल लोको पोतानी ज्ञाषा माने छे अने तिर्यंचो पण पोतानी (पशु पक्षीनी) ज्ञाषा बोलाय छे एम माने छे.

आवा प्रकारना जुवनाद्भुत अतिशय विना समकाळे अनेक प्राणीओनो उपकार थइ शकतो नथी. आ संबंधमां एक जिल्लनुं दृष्टांत छे—

सरःशरस्वरार्थेन, जिल्लेन युगपद्यथा ।
सरो नत्थीति वाक्येन, प्रियास्तिस्रोऽपि बोधिताः ॥१॥

ज्ञावार्थ—सरोवर, बाण अने सारो कंठ ए त्रणे अर्थ कहेवानी इच्छावाळा कोइ जिल्ले "सरोनत्थि—सर नथी." ए वाक्ये करीने पोतानी त्रणे स्त्रीओने समजावी दीधी ते दृष्टांत आ प्रमाणे छे.

कोइ एक जिल्ल ज्येष्ठ मासमां पोतानी त्रण स्त्रीओने साथे लइने कोइ गाम तरफ जतो हतो. मार्गमां एक स्त्रीए तेने कह्युं के "हे स्वामी! तमो सुकंठथी गायन करो, के जे सांजळवाथी मने आ मार्गनो श्रम तथा सूर्यनो ताप बहु दुःसह न थाय." बीजी स्त्रीए कह्युं के "हे स्वामी ! तमे जळाशयमांथी कमळनी सुगन्धवाळुं शीतळ जळ लावी आपीने मारी तृषानुं निवारण करो." त्रीजी बोली के

"हे पति! मने मृगनुं मांस लावी आपीने मारी क्षुधानुं निवारण करो." आ प्रमाणे ते त्रणे स्त्रीओनां वाक्यो सांभळीने ते भिल्ले 'सरो नत्थि' ए एकज वाक्यथी ते त्रणेने जवाब आप्यो. तेमां पहेली स्त्री एम समजी के "मारो स्वामी कहे छे के मारो 'सरो' एटले स्वर-सारो कंठ नथी; तेथी शी रीते गान करुं?" बीजीए धार्युं के "सरो एटले सरोवर कोइ आटलामां नथी, एटले क्यांथी पाणी लावुं?" त्रीजी समजी के "सरो एटले शर-बाण नथी, तो शी रीते मृगने मारीने तेनुं मांस लावी शकाय?"

आ प्रमाणे भिल्लना एकज वाक्यथी ते त्रणे स्त्रीओ पोताना कहेवानो उत्तर सांभळीने स्वस्थ थइ; तो भगवाननी वाणी तो उपमारहित तथा वचनने अगोचर छे, एटले ते वाणीथी अनेक प्राणीओ समजे, तेमां शुं आश्चर्य छे? कह्युं छे के—

नयसप्तशतीसप्तभंगीसंगीतसंगतिम् ।
शृण्वन्तो यद्गिरं भव्या, जायन्ते श्रुतपारगाः ॥ १ ॥

भावार्थ—"सात नयना सातसो भांगाथी अने सप्त भंगीनी रचनाथी मिश्रित-युक्त भगवाननी वाणी सांभळीने अनेक भव्य प्राणीओ श्रुतना पारगामी थाय छे." इति द्वितीयोऽतिशयः

(३) भगवानना मस्तकनी पाछळ बार सूर्यबिंबनी कान्तिथी पण अधिक तेजस्वी अने मनुष्योने मनोहर लागे तेवुं भामंडळ एटले कांतिना समूहनो उद्योत प्रसरेलो होय छे. श्री वर्धमान देशनामां कह्युं छे के—

रूवं पिच्छंताणं, अइदुलहं जस्स होउ मा विग्घं ।
तो पिंडिऊण तेअं, कुणंति भामंडलं पिट्ठे ॥ १ ॥

भावार्थ—"भगवंतनुं रूप जोनाराने तेनुं अतिशय तेजस्वीपणुं होवाथी सामुं जोवुं अत्यंत दुर्लभ थइ पडे छे, तेम न थवा माटे ते सर्व तेजनो एकत्र पिंड थइने भगवंतना मस्तकनी पाछळ रहे छे, जेथी भगवंतनुं रूप जोनाराओ सुखे सुखे भगवंतनी सामुं जोइ शके छे.

(४) दयाना अद्वितीय निधि समान भगवान जे जे स्थळे विहार करे

छे ते ते स्थळे सर्व दिशाओमां पचीश पचीश योजन अने उंचे नीचे साडा बार साडा बार योजन एम पांचसो[1] गाउ सुधीमां प्रथम थयेला ज्वरादिक रोगो नाश पामे छे, अने नवा रोगो उत्पन्न थता नथी.

(५) उपर कह्या प्रमाणे ज्ञगवाननी स्थितिथी पांचसो गाउ सुधीमां प्राणीओने पूर्व ज्ञवमां बांधेलां अने जातिथी उत्पन्न थयेलां (स्वाज्ञाविक) वैर परस्पर बाधाकारी होतां नथी.

(६) उपर कह्या प्रमाणेना पांचसो गाउ सुधीमां इतिओ (सात प्रकारना उपद्रव), तथा धान्यादिकने नाश करनारा तीडो, सूडा अने उंदर विगेरे उत्पन्न थता नथी.

(७) उपर कही तेटली ज्ञूमिमां मारी (मरकी), दुष्ट देवतादिके करेलो उत्पात (उपद्रव) अने अकाल मृत्यु थतां नथी.

(८) तेटली ज्ञूमिमां अतिवृष्टि एटले उपराउपर निरंतर वरसाद थतो नथी के जेथी धान्यमात्र कोही जाय.

(९) तेटला स्थळमां अनावृष्टि—सर्वथा जळनो अज्ञाव थतो नथी के जेथी धान्यादिकनी निष्पत्तिज न थाय.

(१०) ते स्थळे दुर्जिक्ष—दुकाळ पडतो नथी.

(११) पोताना राज्यना लश्करनो ज्ञय (हुल्लड विगेरे) तथा बीजा राज्य साथे संग्रामादिक थवानो ज्ञय उत्पन्न थतो नथी.

आ प्रमाणे कर्मक्षयजन्य ११ अतिशयो जाणवा.

हवे देवताओए करेला ओगणीश अतिशयो आ प्रमाणे—

(१) प्रज्ञु जे स्थळे विचरे त्यां आकाशमां देदीप्यमान कांतिवाळुं धर्मने प्रकाश करनार धर्मचक्र फरे (आगळ चाले).

(२) आकाशमां श्वेत चामरो बंने बाजु चाले.

(३) आकाशमां निर्मळ स्फाटिक मणिनुं रचेलुं पादपीठ सहित सिंहासन चाले.

---

१ दरेक दिशामां पचीश पचीश योजन एटले सो सो गाउ मळीने चार दिशाना चारसो गाउ तथा उपर अने नीचे साडा बार साडा बार योजन एटले पचास पचास गाउ मळीने सो गाउ, सर्व मळीने पांचसो गाउ. आ प्रमाण अगियारमा अतिशय सुधी समजवुं.

(४) आकाशमां जगवानना मस्तक पर त्रण छत्र रहे.

(५) आकाशमां रत्नमय धर्मध्वज प्रजुनी आगळ चाले. सर्व ध्वजनी अपेक्षाए आ ध्वज अत्यंत मोटो होवाथी ते इन्द्रध्वज पण कहेवाय छे.

आ पांचे अतिशयो ज्यां ज्यां जगद्गुरु जगवान विहार करे त्यां त्यां आकाशमां चाल्या करे छे, अने ज्यां ज्यां जगवान वेसे त्यां त्यां यथायोग्य उपयोगमां आवे छे. एटले के—धर्मचक्र तथा धर्मध्वज आगळना जागमां रहे छे, पादपीठ पग तळे रहे छे, सिंहासन उपर प्रजु वेसे छे, चामरो वींजाय छे, अने छत्रो मस्तक पर रहे छे.

(६) माखणनी जेवा कोमळ, सुवर्णना नव कमळो देवो रचे छे, तेमां वे कमळ उपर तीर्थंकर जगवंत पोताना वे पग राखीने चाले छे. वाकीना सात कमळो जगवाननी पाछळ रहे छे, तेमांथी वे वे कमळो क्रमसर जगवाननी आगळ आगळ आव्या करे छे.

(७) तीर्थंकरना समवसरण फरता मणिनो, सुवर्णनो अने रूपानो एम त्रण गढ देवताओ रचे छे. तेमांनो जगवाननी पासेनो पहेलो गढ (प्राकार) विचित्र प्रकारना रत्नोमय वैमानिक देवताओ वनावे छे, वीजो एटले मध्य प्राकार सुवर्णमय ज्योतिषी देवो वनावे छे, तथा त्रीजो एटले वहारनो प्राकार रूपानो जुवनपति देवताओ रचे छे.

(८) तीर्थंकर ज्यारे समवसरणमां सिंहासन पर वेसे छे, त्यारे तेनुं मुख चारे दिशामां देखाय छे. तेमां पूर्व दिशा तरफ मुख राखीने प्रजु पोतेज विराजे छे, वाकीनी त्रण दिशामां जिनेन्द्रनाज प्रजावथी तेमना जेवीज रुपवान सिंहासन विगेरे सहित त्रण मूर्तिओ देवताओ विकुर्वे छे. ते रचवानो हेतु ए छे के सर्व दिशाओमां वेठेला देवो विगेरेने प्रजु पोतेज अमारी सामे वेसीने अमने उपदेश करे छे एवो विश्वास आवे छे.

(९) ज्यां ज्यां प्रजु स्थिति करे छे, ते ते स्थळे जिनेश्वरनी उपर देवताओ अशोक तरु रचे छे. ते अशोक वृक्ष ऋषजस्वामीथी आरंजीने श्री पार्श्वनाथ स्वामी सुधी त्रेवीश तीर्थंकरो उपर तेमना पोताना शरीरना मानथी वार गुणो उंचो रचवामां आवे छे, अने महावीरस्वामी उपर वत्रीश धनुष उंचो रचवामां आवे छे. कह्युं छे के—

उसभस्स तिन्नि गाउय, बत्तीसधणुणि वद्धमाणस्स ।
सेसजिणाणमसोउं, शरीरउ बारसगुणो ॥ १ ॥

भावार्थ—ऋषभस्वामी उपर त्रण गाउ उंचो अशोक वृक्ष होय छे, वर्धमान (महावीर) स्वामी उपर बत्रीश धनुष उंचो होय छे, अने बाकीना जिनेश्वरो उपर तेमना शरीरथी बार गुणो उंचो होय छे.

अहीं कोइ शंका करे के—“आवश्यक चूर्णिमां श्री महावीरस्वामीना समवसरणना प्रस्तावमां कह्युं छे के—असोगवरपायवं जिणउच्चताउ बारसगुणं सक्को विउव्वइत्ति—इन्द्रे जिनेश्वरनी उंचाइथी बार गणो उंचो अशोक नामनो श्रेष्ठ तरु विकुर्व्यो. ने अहीं तो बत्रीश धनुष उंचो कह्यो, ते केम संभवे ?” आ प्रश्ननो उत्तर ए छे के—“आवश्यक चूर्णिमां जे बारगणुं उंचाइनुं प्रमाण कह्युं छे, ते केवळ अशोकवृक्षनुं कह्युं छे, अने अहीं जे बत्रीश धनुषनुं मान कह्युं छे, ते साल वृक्ष सहित अशोकवृक्षनुं प्रमाण कहेलुं छे. अहीं पण अशोकवृक्ष तो बारगणोज समजवो. एटले महावीरस्वामीनुं शरीर उंचाइमां सात हाथ छे, तेने बारगणुं करवाथी चोराशी हाथ एटले एकवीश धनुष उंचो अशोकवृक्ष, अने तेनापर अगीयार धनुष उंचो सालवृक्ष होवाथी बन्ने मळीने बत्रीश धनुषनुं मान समजवुं. आ प्रमाणे प्रवचनसारोद्धारनी वृत्तिमां कहेलुं छे.”

(१०) ज्यां ज्यां तीर्थंकर विचरे त्यां त्यां कांटाओ अधोमुख थइ जाय छे. एटले मार्गमां रहेला कांटाओनी अणीओ नीची जाय छे.

(११) ज्यां ज्यां भगवंत चाले छे त्यां त्यां वृक्षो भगवानने प्रणाम करता होय तेम नीचा नमे छे.

(१२) भगवान लीला सहित जे स्थळे विचरे छे, त्यां आकाशमां देवदुंदुभि वाग्या करे छे.

[१३] भगवंत ज्यां विचरे छे त्यां संवर्तक जातिनो वायु एक योजन प्रमाण पृथ्वीने शुद्ध करीने [कचरो विगेरे दूर करीने] सुगंधी, शीतळ अने मंद मंद तेमज अनुकुळ वाय छे, तेथी सर्व प्राणीने ते सुखकारी थाय छे. ते विषे श्रीसमवायांगमां सूत्रमां कह्युं छे के—सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणा मारुएणं जोयण परीमंडलं सव्वउ समंता पमज्जिज्जइ ॥

शीतळ, सुखस्पर्शवाळो, अने सुगंधयुक्त एवो पवन सर्व दिशाओमां चोतरफ एक एक योजन सुधी भूमि प्रमार्जन करे छे."

(१४) जगद्गुरु जिनेश्वर ज्यां ज्यां संचार करे छे त्यां त्यां चास, मोर अने पोपट विगेरे पक्षीओ प्रभुने प्रदक्षिणा दे छे.

(१५) जे स्थळे प्रभु विराजे छे, त्यां धूळी शमाववा माटे घनसारादि युक्त गंधोदकनी वृष्टि थाय छे. (मेघकुमार देवो आ वृष्टि करे छे.)

(१६) समवसरणनी भूमिमां चंपक विगेरे पांच रंगना पुष्पोनी जानु प्रमाण (ढींचण सुधी) वृष्टि थाय छे. अहीं कोइ शंका करे के " विकस्वर अने मनोहर पुष्पोना समूहथी व्याप्त एवी योजन प्रमाण समवसरणनी पृथ्वी उपर जीवदयामां रसिक चित्तवाळा मुनिओनुं रहेवुं तथा जवुं आववुं शीरीते योग्य कहेवाय, केमके तेथी तो जीवनो विघात थाय." आ शंका उपर केटलाएक एवुं समाधान आपे छे के " ते पुष्पो देवोए विकुर्वेला होवाथी सचित्तज होतां नथी " परंतु आ जवाब युक्त नथी. केमके ते पुष्पो मात्र विकुर्वेलांज होय छे एम नथी, परंतु जळ तथा स्थळना उपजेला पुष्पोनी पण देवो वृष्टि करे छे. ते विषे आगममां पण कह्युं छे के—

" विटट्ठाइं वि सुरभि जलथलयं दिव्वकुसुमनीहारिं
पकिरंति समंतेणं दसध्धवणं कुसुमवासंति ॥ "

भावार्थ—" नीचां वींटवाळां, सुगंधवाळा अने जळ स्थळमां उत्पन्न थयेलां एवां पंचरंगी दिव्य पुष्पोनी वृष्टि देवताओ चोतरफ विस्तारे छे. "

आ प्रमाणेनो सिध्धान्तनो पाठ जोइ (सांभळीने) केटलाएक पंडितमन्यो स्वमति कल्पनाथी एवो उत्तर आपे छे के " जे स्थळे मुनिओ बेसे छे ते स्थळे देवताओ पुष्पवृष्टि करता नथी. " आ उत्तर पण सत्य नथी. केमके मुनिओ जे स्थळे बेठा होय, त्यांज काष्ठनी दशानो आश्रय करीने एटले काष्ठनी जेम स्थिर तेओए बेसीज रहेवुं जोइए एवो कांइ नियम नथी, परंतु कारणवशे तेओनुं गमन आगमन पण संभवे छे. माटे अहीं सर्व गीतार्थने मान्य एवो उत्तर ए छे के "जेम एक योजन जेटली समवसरणनी भूमिमां अपरिमित सुर, असुर, नर अने तिर्य-

वोनुं परस्पर मर्दन थतां पण तेओने कांइ पण बाधा थती नथी. तेम जानु प्रमाण पुष्पोना समूह उपर मुनिगण तथा विविध जन समूहना चालवाथी पण ते पुष्पोने कांइ पण बाधा थती नथी. परंतु जाणे अमृत रसथी सिंचन कराता होय, तेम ते पुष्पो उलटा विशेष उल्लास पामता जाय छे. केमके अनुपम एवा तीर्थंकरोनो प्रभाव अचिंत्य छे.

(१७) तीर्थंकरोना मस्तकना केश, दाढी, मूछ, तथा हाथ पगना नख वृद्धि पामता नथी. (निरंतर एकज स्थितिमां रहे छे).

(१८) तीर्थंकरोनी समीपे सर्वदा ओछामां ओछा एक क्रोड भवनपति विगेरे चारे निकायना देवो रहे छे.

(१९) जिनेश्वर जे स्थाने विचरता होय, त्यां निरंतर वसंत विगेरे सर्वे ऋतुना मनोहर पुष्प फळादिकनी सामग्री प्रगट थाय छे, एटले ऋतुओ पण बधी अनुकूळ वर्त्ते छे.

आ प्रमाणे तीर्थंकरोना सर्वे मळीने चोत्रीश अतिशयोनुं वर्णन जाणवुं. आ अतिशयोमां कोइ ठेकाणे समवायांगनी साथे कांइ कांइ फेरफार जोवामां आवे छे, ते मतान्तर जाणवुं. ते मतान्तरनुं कारण तो सर्वज्ञज जाणी शके छे.

मूळ श्लोकमां ' अतिशयान्वितम् ' अतिशयोए करीने युक्त, एवुं जे पद कहेलुं छे तेनी आ व्याख्या करवामां आवी. एवा अतिशयोवाळा विश्वसेन राजाना कुळमां तिलक समान अने अचिरा मातानी कुक्षि रूपी शुक्ति (छीप) ने विषे मुक्ता (मोती) समान सोळमा तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ स्वामीने नमस्कार करीने एटले उपहासनो त्याग करवा पूर्वक मन, वचन, कायानी शुद्धिथी प्रणाम करीने अनेक शास्त्रना अनुसारे आ उपदेश प्रासाद ग्रंन्थ हुं रचुं छुं.

आ शास्त्रमां संबंध वाच्य वाचक लक्षण छे. आ ग्रन्थमां जे अर्थ छे ते वाच्य छे, अने ते अर्थने कहेनारो आ ग्रंन्थ ते वाचक छे. आ ग्रंन्थमां व्याख्यान करवा योग्य अर्हद्धर्मना उपदेशनुं निरूपण कर्युं छे, ते आ शास्त्रनुं अभिधेय छे. तथा आ ग्रंन्थनुं प्रयोजन बे प्रकारे छे. एक ग्रन्थकर्त्तानुं अने बीजुं श्रोतानुं. ते बन्नेने पण पर (प्रधान) अने अपर (गौण) एवा बबे प्रयोजन रहेला छे. तेमां ग्रन्थकर्त्ताने पर प्रयोजन मोक्षपदनी प्राप्ति थवा रूप छे अने अपर प्रयोजन

भव्य जीवोने बोध पमाडवा रुप छे. तेवीज रीते श्रोताने पण स्वर्ग तथा मोक्षनी प्राप्ति रुप पर प्रयोजन छे, अने शास्त्रतत्त्वना बोध रुप अपर प्रयोजन छे. आवा प्रकारनुं एटले संबंध, अभिधेय अने प्रयोजनवाळुं शास्त्र बुद्धिमानोने तेमां प्रवृत्ति करावनार थाय छे.

अहीं प्रथम श्लोकमां 'अतिशयान्वितम् (अतिशयो वडे युक्त)' एवुं जिनेश्वरनुं जे विशेषण आप्युं छे ते (अतिशयो) नुं वर्णन टीकाकारे घणुं विस्तारथी कर्युं छे ते भाव मंगळ होवाथी, सर्व विघ्ननुं विनाशक होवाथी तथा सर्व कल्याणना कारण रुप होवाथी कर्युं छे.

" जे मनुष्यो जिनेश्वरना अतिशयोनुं आ वर्णन निरंतर प्रातःकाळे संभारे छे, तेओ समग्र समृद्धि युक्त थाय छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ जिननमस्कार-
करणातिशयवर्णनरुप प्रथम व्याख्यानम् ॥ १ ॥

व्याख्यान २ जुं.

समकित विषे.

अहीं प्रथम सर्व समृद्धिनां निधानरूप, सर्व गुणोमां मुख्य अने समग्र धर्मकार्योनां मूळ कारणरूप सम्यग्दर्शननुं स्वरूप कहुं छुं.—

" देवत्वधीर्जिनेष्वेव, मुमुक्षुषु गुरुत्वधीः ।
धर्मधीरार्हतां धर्मे, तत्स्यात्सम्यक्त्वदर्शनम् ॥ १ ॥ "

भावार्थ—" रागद्वेषने जीतनारा जिन कहेवाय छे. ते नाम जिन, स्थापना जिन, द्रव्य जिन अने भाव जिन, एम चार प्रकारे छे. ते जिनेश्वरोने विषेज

देवबुद्धि राखवी, तथा भव (संसार) थकी पोताना आत्माने मुक्त करवाने इच्छनार जे मुमुक्षु पुरुषो, तेमने विषेज गुरुपणानी बुद्धि राखवी, तेमज दुर्गतिमां पडता जीवोने धारण करनार जिनेश्वरप्रणीत धर्म, तेनेज विषे धर्मपणानी श्रद्धा राखवी, ते सम्यग्दर्शन कहेवाय छे."

जो के दर्शन शब्दवडे चक्षुथी जे जोवामां आवे ते दर्शन एम पण कहेवाय छे, परंतु आ जैनशासनमां तो सत्य देव, सत्य गुरु अने सत्य धर्मना तत्त्वनुं जे संशयादिक रहित सम्यग्ज्ञान, तेने सम्यग्दर्शन कहेलुं छे. तेवुं ज्ञान दर्शनमोहनीय कर्मना क्षय, उपशम, के क्षयोपशमथी प्राप्त थाय छे. तेथी जिनेन्द्रना दरेक वचन उपर दृढ विश्वासरूप विशिष्ट प्रकारना सद्भावने 'दर्शन' जाणवुं. आ 'समकित' शब्दना कहेला अर्थने दृढ करवा माटे महाबळ नामना राजकुमारनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

समकित उपर महाबळ राजकुमारनुं दृष्टान्त.

हस्तिनापुरमां बळ नामे राजा राज्य करतो हतो. ते राजाने प्रभावती नामे राणी हती. ते राणीए सिंहना स्वप्नथी सूचवन थयेला एक शूरवीर पुत्रने जन्म आप्यो. तेनुं नाम महाबल राख्युं. ते कुमार अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो, त्यारे तेने भोग भोगववामां समर्थ थयेलो जाणीने तेना पिताए एक दिवसे आठ राज्यकन्याओ साथे परणाव्यो. अने ते आठे स्त्रीओने माटे राजाए सुवर्णना आठ महेल बंधावी आप्या. ते स्त्रीओने तेमना पिताओए प्रेम पर्वक आठ करोड सोनैया, आठ करोड रुपैया, आठ मुगट, आठ जोडी कुंडळ, आठ नंदावर्त, तथा सर्व प्रकारना रत्नमय आठ भद्रासन विगेरे घणी वस्तुओ आपी. (आ हकीकत श्री भगवती सूत्रमां छे). ते आठे स्त्रीओनी साथे भोगविलास करतां महाबळ कुमारे केटलोक काळ निर्गमन कर्यो.

एकदा विमळनाथ स्वामीना संतानीआ धर्मघोष नामे सूरि पांचसो मुनिना परिवार सहित हस्तिनापुरना उद्यानमां समवसर्या. तेमनुं आगमन सांभळीने पौरलोकोनी जेम ते राजकुमार पण पोतानी सर्व समृद्धि सहित तेमने वंदना करवा माटे गयो. सूरीश्वरने वंदना करीने कुमार योग्य स्थाने बेठो. ते समये मुनीश्वरे देशना आपी के—

" असारमेव संसार—स्वरूपमिति चेतसि ।
विज्ञाय शिवदे धर्मे, यत्नं कुरुत हे जनाः ॥

भावार्थ—" हे भव्यजनो ! ' आ संसार निस्सारज छे ' एम जाणीने मोक्ष आपनार एवा धर्मने विषे यत्न करो. "

सर्व धर्मकृत्योनुं मूळ समकित छे. अने ते समकित देव गुरु तत्त्वने विषे सम्यक् श्रद्धानथी प्राप्त थाय छे. अणुव्रतो के महाव्रतो, दान, जिनपूजा, क्रिया, जप, ध्यान, तप, सर्व शास्त्राभ्यास, तीर्थयात्रा अने गुणनी उपार्जना—ए सघळां समकित सहित होय तोज मोक्षने अर्थे थाय छे, तेथी प्रथम तेनो आश्रय करो."

इत्यादि गुरुमुखथी देशना सांभळीने वैराग्य पामेला महाबळ कुमारे कह्युं के—" हे भगवंत! हुं अरिहंतना कहेला मार्गने हर्ष पूर्वक सद्दहुं छुं तेथी मातापिताने पुछीने हुं आपनी पासे दीक्षा अंगिकार करीश. " आचार्ये कह्युं के " हे वत्स ! धर्मकार्यमां प्रतिबंध करीश नहीं. " पछी महाबळ कुमारे घेरे जइ मातापिताने प्रणाम करीने कह्युं के—" तमारी आज्ञाथी हुं धर्मघोष आचार्य पासे दीक्षा ग्रहण करीश. " ते सांभळीने तेमणे महाबळ प्रत्ये कह्युं के " हे वत्स ! तुं अमने प्राणथी-पण प्रिय छे तेथी तारो वियोग अमे एक क्षणमात्र पण सही शकीए तेम नथी, तेथी ए वातज तुं बोलीश नहीं. हे पुत्र ! ज्यांसुधी अमे जीवीए त्यां सुधी तो तुं घरमांज रहे. " ते सांभळीने कुमारे माताने कह्युं के " हे माता ! पहेलुं कोण मृत्यु पामशे अने पछी कोण मृत्यु पामशे ? ते कांइ जाणी शकातुं नथी, तेथी मने चारित्र लेवानी आज्ञा आपो के जेथी तमारी कुक्षिथी पामेला मनुष्य जन्मने हुं सफळ करुं. जेम पूर्वना अनन्त भवोमां थयेली अनन्त माताओ अंक विनाना मींडानी जेम निष्फळ थइ तेम तमे न थाओ ; तमे तो शुभ अंक (एक बे विगेरे)नी जेम सार्थ थाओ. " आ प्रमाणेना ते कुमारना आग्रहनो त्याग करावबाने असमर्थ थयेला तेना मातपिता तेना दास जेवा थइ गया.

एकदा राजाए महाबळ कुमारने स्नेह पूर्वक पोताना राज्यासन पर बेसाडी सुवर्णना, रुपाना, रत्नना अने माटीना एकसो ने आठ आठ कळशो वडे राज्याभिषेक कर्यो. पछी ते बोल्या के " हे वत्स ! कहे, हवे अमे शुं करीए ? " त्यारे कुमारे कह्युं के " हे पिता ! आपणा कोशमांथी त्रण लाख सोनैया लइने

तेमांथी मारे माटे एक लाख सोनैया आपी [1] कुत्रिकापणमांथी पात्रां लावो, एक लाख सोनैया आपीने रजोहरण (ओघो) लावो, अने मात्र चार आंगळ राखी बाकीना सर्व केश कातरी नांखवा माटे एक लाख सोनैया आपीने एक हजामने बोलावो." ते सांभळीने राजाए पण तरतज तेना कह्या प्रमाणे कर्युं. पछी स्नान करी दिव्य चंदननो शरीरे लेप करी, सर्व उत्तम अलंकारो धारण करी, हजार मनुष्योथी वहन कराय तेवी शिबिकामां आरुढ थइने कुमार गुरु पासे आव्यो. ते वखते तेना मातपिताए कुमारने कह्युं के "हे पुत्र! आ दुर्लभ चारित्रने ग्रहण करीने तारे तेनुं पालन करवामां अत्यंत यत्न करवो." एम कहीने आचार्यने प्रणाम करी तेओ पोताना नगरमां पाछा गया.

पछी महाबळ कुमारे पोताना हाथे पंचमुष्टि लोच करी ते गुरुना हाथे दीक्षा ग्रहण करी.

त्रण गुप्ति अने पांच समितिथी युक्त एवा महाबळ मुनिए विनय पूर्वक चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो, विविध प्रकारनी तपस्याओ करी अने बार वर्ष सुधी अस्खलित चारित्रनुं पालन करीने सर्व पापनी आलोचना करीने तथा प्रतिक्रमीने एक मासना अनशन वडे काळधर्म पामी ब्रह्म नामना पांचमा देवलोकमां दश सागरोपमननी स्थिति (आयुष्य) वाळा देव थया.

चौद पूर्वी जघन्यथी पण लांतक नामना छठ्ठा देवलोके जाय छे, छतां अहीं महाबल मुनिने पांचमा देवलोके जवानुं कह्युं, तेनुं कारण कांइक पण विस्मरण विगेरे हेतुथी चौद पूर्वथी न्यून ज्ञान हशे एम संभवे छे.

त्यांथी आयुष्य क्षये चवीने ते महाबळ मुनिनो जीव वाणिज्य नामना गाममां कोइ मोटा श्रेष्ठीने घेर सुदर्शन नामे पुत्र थयो. अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो. एकदा ते पुरना उद्यानमां समवसरेला श्री महावीर स्वामीना चरणकमळने वंदना करवा माटे ते गयो. त्यां स्वामी सर्व जीवना हितने माटे समयथी आरंभीने सर्व काळना स्वरूपनुं निरूपण करता हता. ते सांभळीने विस्मय पामेला सुदर्शन श्रेष्ठीए प्रभुने पूछ्युं के "हे भगवन्! काळ केटला प्रकारनो छे?" स्वामीए जवाब आप्यो के "हे सुदर्शन! काळ चार प्रकारनो छे. प्रमाणकाळ, यथायुनिर्वृत्ति-

१ देवी दुकान, के जेमां त्रण भुवनमांनी दरेक चीज मळती हती.

काळ, मृत्युकाळ अने अध्धाकाळ. " हे स्वामी ! प्रमाणकाळ कोने कहेवो ? " प्रमाण काळ बे प्रकारनो छे. चार पहोरनो दिवस अने चार पहोरनी रात्री विगेरे. " हे स्वामी ! यथायुनिवृत्ति काळ एटले शुं ? " हे सुदर्शन ! नारकी जीवे तथा देवताए जे प्रमाणे आयुष्य बांध्युं होय, ते प्रमाणे पूरेपूरुं ते जोगवे, तेने यथायुनिवृत्ति काळ कहे छे. " हे स्वामी ! मृत्युकाळ एटले शुं ? " हे श्रेष्ठी ! जीव शरीरथी जूदो पडे, अथवा शरीर जीवथी जुदुं पडे, ते मृत्युकाळ कहेवाय छे. " हे भगवान ! अध्धाकाळ एटले शुं? " हे श्रेष्ठी ! अध्धाकाळ घणा प्रकारनो छे. समयकाळ अने आवळीका काळथी आरंजीने उत्सर्पिणी अपसर्पिणी सुधीनो सर्व काळ अध्धा काळ कहेवाय छे. " आ प्रमाणे सांजळीने तेणे पूछ्युं के " हे जगवान ! पल्योपम अने सागरोपम जेवो मोटो काळ शी रीते पूर्ण थाय?" प्रजु बोल्या के "हे सुदर्शन! पूर्वे तें पण तेवो काळ अनुजव्यो छे. पूर्व जवमां तुं ब्रह्म देवलोकमां दश सागरोपमना आयुष्यवाळो देव हतो. " इत्यादि तेना पूर्वजवनुं वृत्तान्त प्रजुए कह्युं. ते सांजळीने सुदर्शनने वैराग्य उत्पन्न थयो. तेथी तरतज तेणे स्वामी पासे दीक्षा ग्रहण करी.

आ प्रमाणे ते महाबळना जीव सुदर्शने बीजा जवमां दीक्षा ग्रहण करीने फरी चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो. अनुक्रमे सर्व कर्मनो क्षय करी केवळज्ञान प्राप्त करीने मोक्षपद पाम्यो.

" देव, गुरु अने धर्मरूप तत्त्वने विषे जेनी कामधेनु समान यथार्थ बुध्धि थाय छे तेमने सर्व समृद्धिओ प्राप्त थाय छे. तेवा सम्यग्दर्शनथी महाबल राजा मोक्ष पर्यन्तनी समृध्धि पाम्यो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ प्रथम स्थंजे द्वितीयं व्याख्यानम् ॥ २ ॥

व्याख्यान ३ जुं.



समकित पामवाना बे हेतु विषे.

तीर्थकृत्प्रोक्ततत्त्वेषु, रुचिः सम्यक्त्वमुच्यते ।
लभ्यते तत्स्वभावेन, गुरूपदेशतोऽथवा ॥ १ ॥

भावार्थ—" तीर्थंकरे कहेला तत्त्वोने विषे जे रुचि–श्रद्धा होवी, ते सम्यक्त्व–समकित कहेवाय छे. ते समकित स्वभावथी अथवा गुरुना उपदेशथी एम बे प्रकारे प्राप्त थाय छे."

तीर्थंकरोए नव तत्त्वो कहेलां छे. तेमने विषे जे रुचि–श्रद्धा थवी, ते समकित एटले सम्यक् श्रद्धा कहेवाय छे. श्रद्धा विनानां मात्र ज्ञानथीज फळ सिद्धि थती नथी. तत्त्वज्ञो पण जो श्रद्धा रहित होय तो तेओ आत्महित लक्षण फळने पामता नथी. श्रुतज्ञानना धारक छतां पण अंगारमर्दक आचार्य जेवा अभव्य अने बीजा दूरभव्य प्राणीओ जगतना निष्कारण वत्सल एवा जिनेश्वरनां कहेलां तत्त्वो उपर श्रद्धा रहित होवाथी शास्त्रोक्त, तथा प्रकारना, आत्महित रुप फळने पाम्या नथी. एम शास्त्रमां संभळाय छे.

समकित बे रीते प्राप्त थाय छे. स्वभावथी अथवा गुरुना उपदेशथी. स्वभावथी एटले गुरु विगेरेना उपदेशनी अपेक्षा रहित स्वाभाविक क्षयोपशमथी प्राप्त थाय ते, अने उपदेश एटले गुरुए कहेला धर्मोपदेशनुं श्रवण करवाथी प्राप्त थाय ते.

आ अनादिकाळथी चाल्या आवता संसाररुपी सागरने विषे पडेलो प्राणी भव्यत्वना परिपाकने लीधे पर्वतपरथी नदीमां पडेला पथ्थरना[1] न्याये करीने अनाभोगपणाथी यथाप्रवृत्तिकरण करे छे. अध्यवसाय विशेषरुप ते यथाप्रवृत्तिकरणवडे एक आयु कर्मविना बीजां ज्ञानावरणादिक सात कर्मोने पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून एवा एक सागरोपम कोटाकोटीनी स्थितिवाळां करे छे. अ-

---

[1] ते पथ्थर अथडाता कुटाता गोळ थाय छे तेम.

हीं ते जीवने कर्मथी उत्पन्न थयेला अत्यंत निविड रागद्वेषना परिणामरुप कर्कश अने दुर्भेद एवी ग्रंथि प्राप्त थाय छे. आ ग्रंथि सुधी अभव्य जीवो पण अनंतीवार आवे छे अने तेने यथाप्रवृत्तिकरणवडे ग्रंथि प्रदेश पामीने अरिहंतनी विभूति जोवाथी शुभभावमां वर्तता सता श्रुतसामायिकनो लाभ थाय छे, परंतु बीजो कांइपण आत्मिक लाभ थतो नथी. अने ते ग्रंथिने पामीने कोइ भव्य प्राणी परम विशुद्धिवडे ग्रंथिनो भेद करवा रुप अपूर्वकरण[1] करीने मिथ्यात्वनी स्थिति जे अंतःकोटाकोटीनी छे, तेमांथी अन्तमुहूर्तकाळ सुधी तेना दळियां प्रदेशथी पण न वेदवा पडे तेवुं अन्तरकरण करे छे. त्रण करणनो अनुक्रम आ प्रमाणे छे.—

जा गंठी ता पढमं, गंठीसमच्छेयउ भवे बीअं ।
अनियट्टीकरणं पुण, सम्मत्तपुरक्खडे जीवे ॥ १ ॥

भावार्थ—ग्रंथि सुधी आवे त्यारे पहेलुं करण (यथाप्रवृत्ति) होय छे, ग्रंथिनो भेद करे त्यारे बीजुं करण (अपूर्व) होय छे अने ते जीव ज्यारे समकितनी पासे आवे अर्थात् सम्यक्त्व पामवाने वखते त्रीजुं अनिवृत्ति करण प्राप्त थाय छे.

अहीं मिथ्यात्वनी स्थितिना बे विभाग थाय छे. तेमांनी पहेली अन्तर्मुहूर्त प्रमाण स्थितिने भोगवीने बीजीः उपशमन करेली स्थितिमां अंतरकरणन प्रथम समये जीव सम्यक्त्व पामे छे. कह्युं छे के—

आन्तर्मौहूर्तिकं सम्यग्दर्शनं प्राप्नुवन्ति यत् ।
निसर्गहेतुकमिदं, सम्यक्श्रद्धानमुच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—मध्यना अन्तर्मुहूर्तमां जे समकित प्राप्त थाय छे, ते सम्यक् श्रद्धावाळुं निसर्ग समकित कहेवाय छे.

गुरुपदेशमालंब्य, प्रादुर्भवति देहिनाम् ।
यत्तु सम्यग्श्रद्धानं, तत्स्यादधिगमजं परम् ॥ २ ॥

---

१ आ करण पूर्वे कोइ पण वार करेलु नहीं होवाथी तेनु नाम अपूर्वकरण सार्थक छे.

भावार्थ—गुरुना उपदेशने अवलंबन करीने (सांभळीने) प्राणीओने सम्यक् श्रद्धा उत्पन्न थाय छे, ते अधिगमज नामनुं बीजुं समकित कहेलुं छे.

अधिगमसमकित उपर कृषीवल (खेडुत)नुं दृष्टान्त[1]

वलादपि श्राद्धजनस्य दीयते, सद्दर्शनं सर्वसुखैकजन्मभूः ।
व्यदीधपद्वीरजिनस्तदुद्यमं, श्रीगौतमेनापि न किं कृषीवले॥१॥

भावार्थ—"श्रावकने बळात्कारे पण सर्व सुखना अद्वितीय कारण रुप समकित आपवामां आवे छे. तेवो उद्यम श्रीमहावीर स्वामीए श्रीगौतम गणधर पासे कृषीवल उपर कराव्यो हतो. तेनी कथा आ प्रमाणे—

एकदा जंगम (चालता) कल्पवृक्ष जेवा भगवान महावीर स्वामीए मार्गे विहार करतां गौतम गणधर प्रत्ये कह्युं के—" हे वत्स ! जे आ समीपे (थोडे दूर) कृषीवल देखाय छे, तेने प्रतिबोध करवा माटे तुं जलदी जा, केमके तेने ताराथी ज मोटो लाभ प्राप्त थशे. " ते सांभळीने भगवाननी आज्ञा अंगीकार करी गौतम स्वामी ते खेडूत पासे गया. अने कह्युं के—" हे भद्र ! तुं कुशळ तो छे ने? अरे भाइ ! आ खेती करवावडे अनेक द्वीन्द्रिय विगेरे जीवोनो वध करी शा माटे फोगट पाप बांधे छे ? पापकुटुंबना पोषणने माटे आवां कर्मो करीने तुं तारा आत्माने अनर्थमां शा माटे नांखे छे ? सांभळ.—

संसारमावन्न परस्स अट्ठा, साहारणं जं च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उवेयकाले, न बंधवा बंधवयं उविंति ॥ १ ॥

भावार्थ—जे माणस संसारमां आवीने परने एटले कुटुंबादिकने माटे खेती विगेरे साधारण कर्म करे छे, ते माणसने ज ते कर्मनो विपाक उदयमां आवे त्यारे तेनां फळ भोगववां पडे छे, ते वखते तेना बांधवो ते फळ भोगववा आवता नथी.

माटे हे भाइ ! तपस्या (चारित्र) रुपी वहाणनो आश्रय करीने आ भवसमुद्रने तरी जा " आ प्रमाणेना गौतम स्वामीना वचनामृतथी आर्द्र थयेलो ते खेडूत बोल्यो के—" हे स्वामी ! हुं जाते ब्राह्मण छुं. मारे सात पुत्रीओ छे. ते सर्वनां दुष्पूर उदरनी पूर्ति करवा माटे हुं अनेक पाप कर्मो करुं छुं. हवे अत्यारथी

---

१ आ दृष्टान्त संप्रदायथी चाल्युं आवतुं छे.

आप ज मारा बंधु समान अने माता समान छो. आप जे आज्ञा करशो ते प्रमाणे हुं करीश. तमारुं वचन उलंघीश नहीं." ते सांभळीने श्रीगौतम स्वामीए तेने साधुवेष आप्यो, तेणे तत्काळ स्वीकार कर्यो. पछी ते कृषीवल साधुने साथे लइने श्रीगौतम स्वामी प्रभु पासे जवा चाल्या. त्यारे ते बोल्यो के—"हे पूज्य! आपणे क्यां जवुं छे?" गौतम स्वामी बोल्या के—"ज्यां अमारा पूज्य गुरु विराजे छे त्यां आपणे जवुं छे," ते सांभळीने ते खेडूत बोल्यो के—"आप तो सुर असुर ना पण पूज्य छो, छतां आपने पण पूज्य एवा गुरु छे? तो ते वळी केवा हशे?" त्यारे गौतम स्वामीए ते खेडूतनी पासे भगवानना गुणोनुं वर्णन कर्युं, ते गुणो सांभळवाथी तेणे तरतज समकित प्राप्त कर्युं. आगळ चालतां तीर्थंकरना अद्भुत अतिशयोनी समृद्धि जोइने तेणे विशेषे करीने समकितने दृढ कर्युं. छेवटे ज्यारे परिवार सहित श्री वीरस्वामीने तेणे साक्षात् जोया, त्यारे तेना मनमां प्रभु उपर द्वेष उत्पन्न थयो. श्री गौतम गणधरे ते खेडूतने कह्युं के "हे मुनि! श्रीजिनेश्वरने वंदना करो." त्यारे ते गौतम गणधर प्रत्ये बोल्यो "हे महाराज! जो आ तमारा गुरु होय, तो मारे आ प्रव्रज्यानुं कांइ पण प्रयोजन नथी. तमारो शिष्य थवाथी सर्युं! आ तमारो वेष लइ ल्यो. हुं तो मारे घेर जइश." एम कहीने ते साधुवेषनो त्याग करी मुठी वाळीने नाठो. ते वखते ते खेडूतनी तेवी चेष्टा जोइने इन्द्र विगेरे सर्वे हसता हसता बोल्या के "अहो! श्रीगौतम गणधरे शिष्य तो बहु सारो कर्यो!" तेवी अद्भुत स्थिति जोइने गौतम गणधरे किंचित् लज्जा पामी भगवानने तेना वैरनुं कारण पूछ्युं. त्यारे भगवान बोल्या के "हे वत्स गौतम! आ खेडूते तमे कहेला अरिहंतना गुणोनुं चिंतवन करतां ग्रंथिभेद कर्यो छे तेथी तमने तथा तेने मोटो लाभ थयो छे. हवे मने जोइने तेने जे द्वेष उत्पन्न थयो तेनुं कारण कहुं छुं ते सांभळो—

पूर्वे हुं पोतनपुर नगरमां प्रजापति राजानो पुत्र त्रिपृष्ठ नामे वासुदेव हतो, ते वखते त्रण खंडनो स्वामी अश्वग्रीव नामे प्रतिवासुदेव हतो. एकदा सभामां बेठेला अश्वग्रीव राजाए कोइ निमित्तियाने पोताना मरण विषे प्रश्न कर्यो. एटले ते निमित्तिआए कह्युं के "तमारुं मृत्यु त्रिपृष्ठना हाथथी थशे." ते सांभळीने अश्वग्रीव राजा त्रिपृष्ठ उपर द्वेष राखीने निरंतर तेने मारवाना उपायो करवा लाग्यो. परंतु तेना सर्व उपायो निष्फळ गया. ते अश्वग्रीवना पुरोद्यानमां तेनुं एक शालिक्षेत्र हतुं. तेमां आवीने एक सिंह निरंतर अनेक मनुष्योने उपद्रव करतो हतो. ते

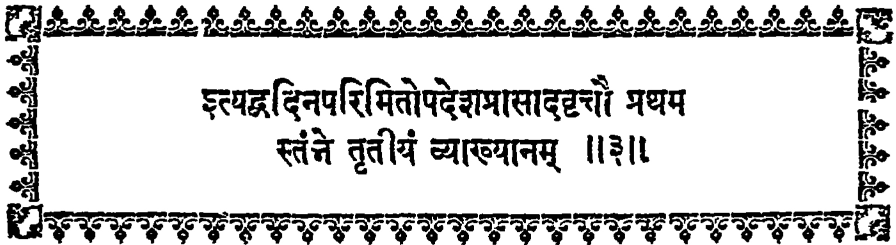
सिंहने मारवाने कोइ पण समर्थ थयुं नहीं. तेथी ते शालिक्षेत्रना रक्षणने माटे अश्वग्रीवे पोताना खंडीया सर्व राजाओने आज्ञा करीने वारा प्रमाणे एक एक राजाने ते क्षेत्रना रक्षण माटे आववानुं ठराव्युं. ए प्रमाणे आवतां अन्यदा प्रजापति राजानो वारो आव्यो. ते वखते त्रिपृष्ठ कुमार पिताने जतां अटकावीने पोते ते उपद्रवनुं रक्षण करवा माटे मात्र एक सारथिनेज साथे राखी रथमां बेसीने त्यां गयो. पछी ते शालिक्षेत्र पासे जइने सिंहने बोलाव्यो, के तरतज ते सिंह त्रिपृष्ठनी सामे धस्यो. तेने त्रिपृष्ठे बे ओष्ठ पकडीने शुक्तिसंपुटनी जेम चीरी नांख्यो. ते वखते मरवा पडेलो ते सिंह पोतानी निंदा करवा लाग्यो के—"अहो! हुं सिंह छतां पण एक मनुष्य मात्रथी ज मराणो." तेने खेद पामतो जोइने त्रिपृष्ठना सारथिए तेने शांत करवा माटे मधुर वाणीवडे कह्युं के—"हे सिंह! आ कुमार वासुदेव थवाना छे, तेने तुं एक रंक मनुष्य जेवा न जाणीश, तुं नरेन्द्रना हाथथी मरायो छे, तेथी शा माटे शोक करे छे? मनुष्य लोकमां आ त्रिपृष्ठ कुमारज एक सिंह छे, अने तुं तिर्यक् योनिमां उत्पन्न थयेलो सिंह छे." आ प्रमाणेना शांतिना वाक्यो सांभळीने हर्ष पामेलो सिंह समाधि पूर्वक मरण पाम्यो.

पछी ते त्रिपृष्ठ, सारथि अने सिंह ए त्रणेना जीवो भवसागरमां भ्रमण करतां करतां सांप्रत काळे ते त्रिपृष्ठनो जीव ते हुं थयो छुं, सिंहनो जीव ते कृपीवल थयेलो छे, अने सारथिनो जीव ते तुं इन्द्रभूति (गौतम) थयो छे. पूर्व भवे तमे मधुर वाणीवडे तेने प्रसन्न कर्यो हतो, अने में तेने मार्यो हतो, ते कारणथी आ भवमां तेनो तमारापर स्नेह छे अने मारापर द्वेष छे. आ प्रमाणे आ भवनाटकमां स्नेह ने वैरनुं कारण जाणी लेवुं. परंतु ते खेडूत शुक्लपक्षीओ थयो छे. एटले जे जीवने अर्ध पुद्गलपरावर्तन संसार बाकी रह्यो होय, ते शुक्लपक्षीओ कहेवाय छे, अने तेथी वधारे संसार जेने बाकी होय ते कृष्णपक्षीओ कहेवाय छे."

आ प्रमाणे भगवंतना मुखथी सांभळीने घणा जीवोए समकित उपार्जन कर्युं (समकित पाम्या).

"हे गौतम! ताराथी बे घडीमात्र समकित पामेलो ते खेडूत अर्ध पुद्गल परावर्तनी अंदर मोक्षपदने पामशे. तेथी तने तेने प्रतिबोध करवा माटे में मोकल्यो

हतो. " आ प्रमाणे ते खेडूतनुं वृत्तांत सांभळीने इन्द्र विगेरे समकितमां सुदृढ थया. तेवी रीते हे भव्य प्राणीओ ! तमारे पण चित्तमां चिरकाळ पर्यंत समकितने स्थिर करवुं.



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम स्तंभे तृतीयं व्याख्यानम् ॥३॥

व्याख्यान ४ थुं.



समकितना त्रण भेद विषे.

समकितने ज्ञानचारित्र करतां पण अधिक कह्युं छे ते आ प्रमाणे—

श्लाघ्यं हि चरणज्ञानवियुक्तमपि दर्शनम् ।
न पुनर्ज्ञानचारित्रे, मिथ्यात्वविषदूषिते ॥ १ ॥
ज्ञानचारित्रहीनोऽपि, श्रूयते श्रेणिकः किल ।
सम्यग्दर्शन माहात्म्यात्तीर्थकृत्त्वं प्रपत्स्यते ॥ २ ॥

भावार्थ—" ज्ञान अने चारित्र विनानुं एकलुं समकित पण प्रशंसाने पात्र छे; परंतु मिथ्यात्व रूपी विषथी दूषित थयेला ज्ञान ने चारित्र श्लाघ्य नथी. जुओ! श्रेणिक राजा ज्ञान अने चारित्र रहितज हता एम संभळाय छे, परंतु सम्यक्दर्शन (समकित)ना प्रभावथी ते तीर्थंकर थवाना छे, अर्थात् तेमणे तीर्थंकर नाम कर्म बांध्युं छे. "

अहीं कोइ शंका करे के " श्रेणिक राजाए त्रण प्रकारना समकितमांथी कया समकितवडे तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन. कर्यु ? " तेनो जवाब ए छे के " स-

म्यक्त्वना त्रण प्रकार छे.—औपशमिक, क्षयोपशमिक अने क्षायिक. तेमां भस्मथी आच्छादन करेला अग्निनी जेम मिथ्यात्वमोहनी अने अनंतानुबंधिनी चोकडी (क्रोध, मान, माया अने लोभ) नो उपशम करवाथी प्राप्त थाय ते औपशमिक सम्यक्त्व कहेवाय छे. आ समकित अनादि मिथ्यादृष्टि जीवने पूर्वे कहेला त्रण करण करवा पूर्वक अन्तर्मुहूर्तनी स्थितिवाळुं थाय छे. अने ते चारे गतिना जीवो पामी शके छे. अथवा आ समकित उपशम श्रेणिपर आरूढ थयेला मुनिने उपशांतमोह नामना अग्यारमा गुणठाणे प्राप्त थाय छे. ते विषे श्री जिनभद्रगणि महाराज महाभाष्यमां कहे छे के—

उवसामगम्मि सेढिगयस्स होइ उवसामिअं तु सम्मत्तं ।
जो वा अकयतिपुंजो अखवियमिच्छो लहइ सम्मं ॥ १ ॥

भावार्थ—" उपशमश्रेणिपर आरुढ थयेलाने औपशमिक समकित प्राप्त थाय छे (होय छे). अथवा जेणे त्रण पुंज कर्या नथी अने मिथ्यात्व खपाव्युं नथी एवो जीव ए समकित पामे छे. "

मिथ्यात्व मोहनी तथा अनंतानुबंधि कषायनी चोकडी—तेमां जे उदय आवी होय, तेनो देशथी निर्मूल नाश करे, अने उदयमां नहीं आवेलीनो उपशम करे, एम नाश एटले क्षय अने उपशम ए बन्ने वडे युक्त एवुं जे समकित ते क्षायोपशमिक कहेवाय छे. आ समकितनी स्थिति छासठ सागरोपम झाझेरी छे.

त्रीजुं क्षायिक समकित एटले जेमां समकित मोहनी, मिथ्यात्व मोहनी अने मिश्र मोहनी तथा अनन्तानुबंधि चार कषाय ए सात प्रकृतिनो निर्मूळ नाश थाय ते. आ क्षायिक समकित सादि अनंत स्थितिवाळुं होय छे. केमके ते आव्यां पछी जतुं नथी. आ क्षायिक समकितना प्रभावथीज श्रेणिक राजाए तीर्थंकर नाम कर्म बांध्युं छे. ते विषे आगममां कह्युं छे के—

न सेणिउ आसि तया बहुस्सुउ, न वा य पन्नत्तिधरो न वायउ ।
सो आगमिस्साइ जिणो भविस्सइ, सम्मिरक पन्नाइ वरं खु दंसणं।१।

भावार्थ—"श्रेणिक राजा बहुश्रुत न होता, तेमज प्रज्ञप्तिने धारण करनारा नहोता. तो पण ते आगामी चोवीशीमां तीर्थंकर थनार छे, तेथी तत्त्व

प्रज्ञावाळुं समकितज श्रेष्ठ छे एम जणाय छे." आ श्लोकनो भावार्थ तेना दृष्टांतथी जाणवा योग्य छे ते आ प्रमाणे—

दृढ समकित उपर श्रेणिक राजानुं दृष्टान्त.

राजगृही नगरीमां श्रेणिक राजा राज्य करतो हतो. ते नगरीनी बहार गुणशील नामना चैत्यमां एकदा जगतस्वामी श्रीमहावीर प्रभु समवसर्या. ते वखते चेल्लणा राणीने लइने श्रेणिक मोटा सैन्य सहित प्रभुने वांदवा गयो. जिनेश्वरने वंदना करीने ते योग्य स्थाने बेठो. ते वखते तेणे कोइ कुष्ठीने पोताना कोढनो रस (परु विगेरे) लइ लइने प्रभुने पगे चोपडतो जोयो. ते अयुक्त कार्य जोइने राजा ते कुष्ठी उपर अति क्रोधायमान थयो. तेवामां प्रभुने छींक आवी, त्यारे ते कुष्ठी बोल्यो के "मरो." थोडीवारे राजाने छींक आवी, त्यारे ते बोल्यो के "चिरकाळ जीवो." तेवामां अभयकुमारने छींक आवी, त्यारे ते बोल्यो के "मरो अथवा न मरो." तेटलामां कालसूकरिक नामना चांडाळने छींक आवी, त्यारे ते बोल्यो के "म मर ने म जीव." आ प्रमाणे ते कुष्ठी बोल्यो. तेमां भगवानने मरवानुं कहेलुं सांभळीने अधिक क्रोध पामेला श्रेणिके विचार्युं के "अहो! आ कुष्ठी केवो दुष्ट छे? एने जरुर सजा करवी जोइए." एम विचारीने राजाए पोताना सेवकोने आज्ञा करी के "आ कुष्ठी समवसरणनी बहार नीकळे एटले तेने पकडी लेजो." पछी ते कुष्ठी बहार नीकळ्यो त्यारे राजसेवको तेने पकडवा गया, तेटलामां तो ते आकाश मार्गे ऊडी गयो. एटले सेवकोए आवीने राजाने कह्युं के "ते तो कोइ देव हतो, तेथी आकाश मार्गे जतो रह्यो." ते सांभळीने राजाए प्रभुने पूछ्युं के "हे भगवान! ते कुष्ठी कोण हतो, अने तेणे आवी चेष्टा केम करी?" प्रभुए कह्युं के "हे राजा! ते कुष्ठी मनुष्य नहोतो, पण ते तो दर्दुरांक नामनो देव हतो. तेणे तो बावनाचंदनवडे अमारा चरणनी पूजा करी छे, पण दैवी मायाथी तमने कुष्ठनी भ्रांति थइ हती." राजाए फरीथी पूछ्युं के "हे स्वामी! ते देवता शी रीते थयो?" त्यारे तीर्थपति बोल्या के—

कोशांबी पुरीमां सेडुक नामनो एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते त्यांना शतानीक राजानी सेवा करतो हतो. एकदा राजाए प्रसन्न थइने तेने वरदान मागवानुं कह्युं, त्यारे ते ब्राह्मणे पोतानी स्त्रीनो अभिप्राय लइने राजा पासे माग्युं के "हे

राजा! मने आ नगरमां हमेशां मिष्टान्न भोजन तथा उपर एक महोर दक्षणा मळे, तेवुं ठरावी आपो." ते सांभळीने राजाए कांइक हसीने ते प्रमाणे ठरावी आप्युं. पछी ते ब्राह्मण हमेशां जुदे जुदे घेर भोजन करवा लाग्यो. परंतु दक्षणाना लोभथी करेला भोजननुं वमन करीने ते एकथी वधारे घेर जमवा जवा लाग्यो. तेथी ते थोडा काळमां कुष्ठी थयो. ते जोइने राजाए तथा तेना कुटुंबे तेनुं अपमान कर्युं. तेथी ते कुष्ठी क्रोधायमान थयो. पछी तेणे एक बोकडो अणाव्यो अने तेने पोताना कुष्ठनो रस चोपडी चोपडीने घास विगेरे खवरावदा लाग्यो. तेथी ते बोकडानुं लोही विगेरे सर्व कुष्ठमय थइ गयुं. पछी ते ब्राह्मणे एक दिवस पोताना पुत्र विगेरे कुटुंबने कह्युं के "आपणा कुळनी एवी रीत छे के ज्यारे कोइ वृद्ध थाय, त्यारे ते पोताना पुत्रादिकने एक बोकडाना मांसनुं भोजन करावीने पछी ते तीर्थगमन करे छे, माटे तमे सौ आ बोकडानुं मांस खाओ, अने मने रजा आपो." ते सांभळीने ते पुत्रादिके कबूल कर्युं. एटले ते सर्वने पेला बोकडानुं मांस खवरावदावडे कुष्ठी बनावीने ते ब्राह्मण रात्रिने समये घरमांथी नीकळी गयो. वनमां भ्रमण करतां विविध प्रकारनी औषधिओना मूळ धोवाइने आवेलुं कोइ खाबोचियानुं पाणी पीवाथी ते व्याधि रहित थइ गयो. एटले ते पाछो पोताने घेर आव्यो, अने पोताना पुत्रोने कह्युं के "तमे मारुं अपमान कर्युं, तेनुं आ फळ तमने प्राप्त थयुं अने हुं तो व्याधि रहित थइ गयो." आ सर्व वृत्तांत जाणीने पौरलोकोए ते ब्राह्मणने घणी निर्भर्त्सना (निंदा) करीने काढी मूक्यो. एटले ते राजगृह नगरे आवी दरवाजा पासे बेठो. तेवामां अहीं अमारुं समवसरण थयुं. ते वखते अमने वांदवाने उत्सुक थयेलो द्वारपाळ ते सेडुक ब्राह्मणने दरवाजा पर चोकी करवा राखीने समवसरणमां आव्यो. पाछळ ते ब्राह्मणे पुरदेवनी पासे वडां, पक्वान्न विगेरे घणुं नैवेद्य पुरजनोए मूकेलुं हतुं ते कंठ सुधी ठांसी ठांसीने खाधुं. पछी अत्यंत तृषा लागवाथी पाणी पाणी करतो मृत्यु पामीने ते दरवाजानीज पासेनी वावमां देडको थयो.

एकदा फरीथी अमारुं समवसरण अहीं थयुं. ते वखते अमने वंदन करवानी उत्कंठा वाळी पाणी भरनारी स्त्रीओना मुखथी अमारुं आगमन सांभळीने ते देडकाने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. तेथी ते देडको अमने वांदवा माटे वावमांथी बहार नीकळी मार्गमां कूदतो कूदतो आवतो हतो, तेवामां तमे पण ते रस्तेथी

अहीं आवता हता, एटले तमारा घोडाना पग नीचे दबाइने अमारा ध्यानमां मरण पामी सौधर्म देवलोकमां दर्दुरांक नामे देवता थयो.

ते देव आजे इन्द्रे पोतानी सभामां करेली तमारा समकितनी प्रशंसा सांभळीने ते पर श्रद्धा नहीं आववाथी तमारी परीक्षा करवा माटे अहीं आव्यो. अने तेणे कुष्ठना मीषथी गोशीर्षचंदन वडे अमारी भक्ति करी. "

आ प्रमाणे ते देवनुं वृत्तांत सांभळीने श्रेणिक राजाए फरीथी प्रभुने पूछ्युं के " हे भगवान ! ते देवताए आपने छींक आवी, त्यारे मरवानुं शा माटे कह्युं, मने चिरकाळ जीववानुं शा कारणथी कह्युं, अभयकुमारने जीव अथवा मर एम केम कह्युं अने कालसौकरिकने म मर ने म जीव एवुं शा हेतुथी कह्युं ?" जिनेश्वर बोल्या के "हे राजा! ते देवे भक्तिना रागथी अमने एम कह्युं के–हे स्वामी! तमे समग्र कर्मनो क्षय करीने जन्म जरा मरण विगेरेथी रहित स्वाभाविक सुखवाळा मोक्ष पदने जलदी पामो. तमने चिरकाळ जीववानुं एवा हेतुथी कह्युं के–तमे जीवता छो त्यां सुधी राज्यसुखने अनुभवो छो, पण मरी गया पछी घोर नरकमां जवाना छो, माटे घणो काळ जीवता रहो, एम कह्युं. तथा अभयकुमार मंत्रीने जे कह्युं ते एवा हेतुथी कह्युं के—ते जीवतो सतो अहीं सुखो भोगवे छे, अने मरण पामीने सर्वार्थसिद्ध विमानमां देव थनार छे, माटे मरो अथवा जीवो एम कह्युं. अने कालसौरिकने एवा अभिप्रायथी कह्युं के—ते अहीं जीवीने हमेशां पांचसो पाडानो वध करे छे, अने मरीने घोर नरकमां जवानो छे, माटे तेने जीववानुं के मरवानुं एके लाभकारी न होवाथी म मर म जीव एम कह्युं. "

आ सर्व खुलासा सांभळीने राजा आश्चर्य पामी फरीथी जिनेश्वरने वंदना करीने बोल्यो के " हे स्वामी ! मारी नरकगति न थवा माटे तेना निवारणनो उपाय बतावो. " प्रभु बोल्या के " पूर्वे मिथ्यात्वपणामां जे नारकीनुं आयुष्य बांध्युं छे ते अवश्य भोगववुंज पडशे,–तेनी बीजी प्रतिक्रिया छे ज नहीं. " आ प्रमाणे कह्या छतां पण श्रेणिके वधारे आग्रह करवाथी तेने बोध थवा माटे प्रभुए कह्युं के " हे राजा! जो तुं तारी कपिला नामनी दासीने हाथे मुनिने दान अपाव, अथवा हमेशां पांचसो पशुनो वध करनार कालसौकरिकने एक दिवस हिंसाकर्मथी अटकाव, तो तारे दुर्गतिमां जवुं न पडे. " ते सांभळीने राजा ' आ कार्य तो मारा कबजानुं छे ' एम धारतो पोताना नगर तरफ चाल्यो.

मार्गमां दर्दुरांक देवे राजानी परीक्षा करवा माटे नदीमां जाळ नांखीने माछलां पकडता एक मुनिनुं रूप बताव्युं, पछी ते मुनिने मत्स्यनुं मांस खातो दीठो. एटले राजाए तेने कह्युं के " हे साधु ! आ दुष्कर्म करवुं मूकी दे. " त्यारे ते साधु बोल्यो के " हुं एकलोज आवुं कर्म करुं छुं एम नथी, पण महावीर स्वामीना सर्व शिष्यो मारा जेवाज छे. " ते सांभळी श्रेणिके तेने कह्युं के "अरे ! तारुंज आवुं हीनभाग्य छे, बाकी वीरपरमात्माना शिष्यो तो गंगाना जळ जेवा पवित्र-पुण्यस्वरुप छे." एवी रीते तेनी निर्भत्सना करीने राजा नगरीमां प्रवेश करे छे तेवामां तेणे एक युवान साध्वीनुं रूप जोयुं. ते साध्वीए हाथे पगे अलतानो रस लगाड्यो हतो, यथायोग्य सर्व अलंकारो अंगपर धारण कर्यां हतां, नेत्रमां काजळ आंज्युं हतुं, मुख तंबोळथी भरेलुं हतुं अने गर्भवती हती. तेने जोइने राजाए कह्युं के " हे भली साध्वी ! आवुं शासन विरूद्ध आचरण केम करे छे ? " त्यारे ते बोली के " हुं एकलीज आवी छुं एम नथी, पण सर्व साध्वीओ आवीज छे. " ते सांभळीने राजाए कह्युं के " अरे पापिणी ! तारुंज आवुं अभाग्य छे, के जेथी आवुं विरूद्ध आचरण करे छे अने बोले छे. " ए प्रमाणे तेनो तिरस्कार करीने राजा आगळ चाल्यो. तेवामां ते देवताए पोतानुं दिव्य स्वरूप प्रगट करी राजाने प्रणाम करीने कह्युं के " हे राजा ! तने धन्य छे. इन्द्रे जे प्रमाणे तमारी प्रशंसा करी हती तेवाज तमे छो. जेम समुद्र मर्यादा न मूके तेम तमे तमारा सम्यक्त्वनी मर्यादानो त्याग कर्यो नहीं. " इत्यादि स्तुति करीने ते देव राजाने एक दैवी हार तथा बे क्षौम वस्त्र आपी अदृश्य थयो.

राजाए पोताना महेलमां आवी कपिला दासीने बोलावीने कह्युं के "तुं मुनिने तारा हाथे दान आप. " ते बोली के " हे स्वामी ! मने एवी आज्ञा न आपो, हुं दान नहीं आपुं. तमे हुकम करो तो हुं अग्निमां पेसुं, विप खाउं, पण ए कार्य नहीं करुं. " तेनां आवां वचनो सांभळीने कालसौकरिकने बोलावी तेने कयुं के " तुं मात्र एकज दिवस पाडानो वध करवो तजी दे. " ते बोल्यो के " हे स्वामी ! हुं जन्मथी दररोज पांचसो जीवनो वध करुं छुं ते हुं मूकीश नहीं. मारुं आयुष्य घणुं गयुं छे, हवे थोडुं बाकी छे, तेथी तेटला माटे हवे प्राणीवधने शा माटे तजुं ? शी रीते मूकुं ? मोटो समुद्र तरीने नाना खाबोचीआमां कोण डूबे ?" ते सांभळीने हास्य करता राजाए तेने एक मोटा अंधकूपमां नखाव्यो. बीजे

दिवसे प्रातःकाळमां राजा प्रभु पासे जइ तेमने वंदना करीने बोल्यो के " हे प्रभु! में कालसौकरिकने पाडाना वधथी एक दिवसने माटे अटकाव्यो छे. " त्यारे प्रभु बोल्या के " ते कालसौकरिके कुवामां रह्या रह्या माटीना पांचसो पाडा करीने तेनो वध कर्यो छे. " ते सांभळीने राजाए जिनेश्वरने कह्युं के " हे नाथ ! कृपानिधि एवा आपनुं शरण मूकीने हुं कोने शरणे जाउं ? " जिनेन्द्र बोल्या के " हे वत्स ! खेद न कर. तुं समकितना प्रभावथी आ भवथी त्रीजा भवे मारी जेवो पद्मनाभ नामे तीर्थंकर थवानो छे. " (आ स्थाने विस्तार घणो छे, ते उपदेशकं-दली नामना ग्रंथथी जाणवो.) ते सांभळीने हर्ष पामी पोताना नगरमां आवी श्रेणिक राजा निरंतर धर्मकृत्यो करवा लाग्यो. ते त्रण काळ जिनेश्वरनी पूजा करतो अने हंमेशां जिनेश्वरनी सन्मुख एकसो आठ सुवर्णना चोखा वडे साथियो पूरतो, परंतु स्वयंभूरमण समुद्रना मत्स्यनुं भक्षण करवाना त्याग जेटलो पण ते नियम लइ शकतो नहीं. एवो विरति रहित छतां पण क्षायिक समकितना बळथी ते व्होंतेर वर्षना आयुष्यवाळो, सात हाथ उंचो अने श्रीमहावीरनीज जेवो आवती चोवी-शीमां प्रथम तीर्थंकर थशे.

" श्रेणिक राजानो जीव पहेली नरकमां चोराशी हजार वर्षनुं आयुष्य भोगवीने शुभ भाव वडे क्षायिक समकितना प्रभावथी तीर्थंकरपणाने पामशे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ प्रथम स्थंभे चतुर्थं व्याख्यानम् ॥ ४ ॥

व्याख्यान ५ मुं.

समकितना सम्सठ भेदमांना पहेला चार श्रद्धाना भेद-पैकी परमार्थ संस्तव नामनी प्रथम श्रद्धाना स्वरूप विषे.

जीवाजीवादितत्त्वानां, सदादिसप्तभिः पदैः ।
शश्वत्तच्चिन्तनं चित्ते, सा श्रद्धा प्रथमा भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जीव, अजीव विगेरे तत्त्वोनुं सत् विगेरे सात पदोवडे चित्तमां निरंतर चिंतवन करवुं, ते प्रथम श्रद्धा कहेवाय छे. "

जे प्राणोने धारण करे तेने जीव कहीए अने तेथी विपरीत–प्राणरहीत ते अजीव कहीए. मूळ श्लोकमां जीव अजीव आदि तत्वो एम कह्युं छे, तेथी आदि शब्दवडे पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध अने मोक्ष ए सात तत्त्वो ग्रहण करवा. ते तत्त्वोनुं छतापणुं, संख्या, क्षेत्रस्पर्श, काळ, अन्तर, भाव अने अल्पबहुत्व ए सात स्थानकोवडे निरंतर मनमां चिंतन करवुं, ते परमार्थ संस्तव नामनी समकितनी पहेली श्रद्धा कहेवाय छे, तेनुं बीजुं नाम परमरहस्य परिचय पण कहेलुं छे.

अंगारमर्दक आचार्य विगेरेने पण परमार्थ संस्तव विगेरे तो संभवे छे, एम कोइ शंका करे, तो ते शंका करवापणुं नथी; केमके आ श्रद्धामां केवळ तात्विक श्रद्धावाळानेज अधिकारी गणेला छे अने अंगारमर्दक जेवा मिथ्यात्वीने तात्विक श्रद्धानो बिलकुल संभवज नथी. आ पहेली श्रद्धा उपर अभयकुमारनुं दृष्टान्त छे ते नीचे प्रमाणे—

अभय कुमारनुं दृष्टान्त.

औत्पत्त्यादिधियां सद्म, अभयो मंत्रिणां वरः ।
तत्त्वपरिचयादाप, सर्वार्थसिद्धिकं सुखम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" औत्पातकी विगेरे बुध्धिना स्थान रुप मंत्रिवर अभयकुमार तत्त्वना परिचयथी सर्वार्थसिद्धिनुं सुख पाम्यो. "

राजगृह नगरमां प्रसेनजित राजा राज्य करतो हतो. तेने श्रेणिक विगेरे सो पुत्रो हता. एकदा राजाए " राज्यने योग्य कयो कुमार छे ?" तेनी परीक्षा करवा माटे ते सो पुत्रोने एकेक खीरनो थाळ आपी साथे जमवा बेसाड्या. पछी ज्यारे तेओए जमवानुं शरु कर्युं, त्यारे राजाए अत्यंत भूख्या थयेला कूतराओ तेमना तरफ छोडी मूकाव्या. ते कूतराओने आवता जोतांज एक श्रेणिक सिवाय बीजा सर्वे कुमारो जम्या विनाज खीरथी खरडेला (एठा) हाथे ऊभा थइने नाठा. श्रेणिक कुमार तो जेम जेम कूतराओ पासे आववा लाग्या, तेम तेम पोताना भाइओना थाळ तेमने आपतो आपतो पोताना थाळनी खीर खावा लाग्यो. ए प्रमाणे ते पुरेपुरुं जम्यो. आ वृत्तांत जाणीने राजाए नवाणुं कुमारोनी प्रशंसा करी, अने श्रेणिकनी निंदा करता सता तेने कह्युं के " तें कूतराओ साथे भोजन कर्युं तेथी तने धिक्कार छे. "

एकदा फरीथी परीक्षा करवा माटे खाजां, लाडु विगेरे करंडीआमां भरीने तेनां ढांकणां बंध करी ते उपर सील मार्या. तथा माटीना कोरा घडा पाणीथी भरीने ते उपर पण सील कर्या. पछी ते करंडीआओ अने ते घडाओ कुमारोने आपीने राजाए कह्युं के " तमारे आ सील तोड्या विना करंडि-यामांथी पक्वान्न खावुं अने घडाओमांथी पाणी पीवुं. " एम कहीने तेओने एकान्त स्थळमां राख्या. पछी सर्व कुमारोने भूख लागी, पण तेओने खावानो उपाय सूझ्यो नहीं. ते जोइने श्रेणिके करंडीआओने हलावी हलावीने तेनी वांसनी सळीयोना छिद्रोमांथी ते पक्वान्ननो भूको काढी काढीने तथा घडाओने लुगडां वींटीने भीनां थयेलां ते वस्त्रोने नीचोवी नीचोवीने सर्व कुमारोने तृप्त कर्या. ते हकीकत सांभळीने राजाए श्रेणिकनी बुद्धिथी अतःकरणमां प्रसन्न थया छतां उपरथी निंदा करी के " पक्वान्ननो भूको करीने रांकनी जेम खाधो, तेनी बुद्धि रांक जेवी जाणवी. "

एकदा राजमहेलमां अग्नि लागी, ते वखते राजाए कुमारोने आज्ञा आपी के " जेनाथी जे चीज लेवाय ते लइ ल्यो. " ते सांभळीने सर्व कुमारो मणि माणिक्य विगेरे जवाहीर लइ आव्या. अने श्रेणिके तो राजाना जयना प्रथम

चिन्ह रूप भंभा लीधी. ते सांभळीने पण राजाए श्रेणिकनी निंदा करी, अने तेनुं भंभसार नाम पाड्युं.

पछी राजाए श्रेणिक सिवाय बीजा सर्व कुमारोने जूदा जूदा देशो आप्या, पण श्रेणिकने कांइ आप्युं नहीं. तेथी अपमान पामेलो श्रेणिक गुप्त रीते राजगृह नगरमांथी नीकळी गयो. अनुक्रमे चालतां चालतां ते बेनातट नगरे पहोंच्यो. ते नगरनी अंदर प्रवेश करी श्रेणिक कोइ भद्र नामना श्रेष्ठीनी दुकाने बेठो. ते दिवसे श्रेणिकना पुण्यप्रभावथी ते श्रेष्ठीने वेपारमां घणो लाभ थयो. तेथी तेणे श्रेणिकने पूछ्युं के " हे पुण्यनिधि! आजे तमे कोना अतिथि थवाना छो?" श्रेणिके हास्य करतां जवाब आप्यो के " आपनाज. " ते सांभळीने श्रेष्ठीए हर्षित थइ विचार कर्यो के " आजे स्वप्नमां में मारी पुत्रीने योग्य वर जोयो हतो तेज आ जणाय छे, माटे बहु ठीक थयुं. " एम विचारीने श्रेष्ठी दुकान बंध करी श्रेणिकने पोतानी साथे पोताने घेर लइ गयो. त्यां गौरवने योग्य एवा ते श्रेणिकनी तेणे भोजनादिकवडे सारी परोणागत करी. पछी पोताना कुटुंबीओने बोलावीने श्रेष्ठीए महोत्सव सहित विधिपूर्वक पोतानी पुत्री सुनंदाने श्रेणिक साथे परणावी. श्रेणिक तेणीनी साथे प्रीति पूर्वक क्रीडा करवा लाग्यो; केटलेक काळे सुनंदा गर्भवती थइ. ते वखते जिनपूजा करवी, हाथी उपर बेसवुं अने अहिंसानो पटह (अमारीपडह) वगडाववो, विगेरे तेणीने थयेला दोहदो श्रेणिके पूर्ण कर्या.

अहीं राजगृह नगरीमां प्रसेनजित राजा श्रेणिकना जवाथी तेना वियोगना दुःखवडे अत्यंत दुःखी थइने तेनी शोध कराववा लाग्यो. अन्यदा कोइ सार्थना मुखथी ' श्रेणिक बेनातट नगरे छे ' एम सांभळ्युं. तेवामां प्रसेनजित राजाने आयुष्यना अन्तने करनारो महा व्याधि उत्पन्न थयो, तेथी पोतानुं मृत्यु समीप जाणीने तेणे श्रेणिकने तरत बोलाववा माटे राजसेवकोने सांढणीपर बेसाडीने बेनातट तरफ मोकल्या. तेमणे श्रेणिक पासे आवीने राजानी अंतस्थितिवाळी हकीकत कही. ते सांभळीने श्रेणिके सुनंदाने कह्युं के " हे प्रिया! हुं मारा पिता पासे जाउं छुं, तमारे तो हाल अहींज रहेवुं योग्य छे, तेथी अहीं रहो अने जो तमारे आ गर्भथी पुत्र प्रसवे, तो तेनुं अभय नाम राखजो. " ते सांभळीने सुनंदा बोली के " ज्यारे ते पुत्र आठ वरसनो थाय, अने मने पोताना पितानुं ठेकाणुं पूछे त्यारे मारे शो जवाब आपवो ?" ते सांभळीने श्रेणिके खडी-

वडे भारवट उपर आ प्रमाणे अक्षर लख्या के—

“ राजगृहे पालि गाम गोवालि धवले टोडे घर कहीया ”

“ राजगृह नगरमां ते गामना गोवाळ (राजा) अमे छीए अने उज्वळ टोडावाळुं (राजमहेल) अमारुं घर छे एम कहेजे. ”

आ विषय उपर धर्मोपदेशमाळामां नीचे प्रमाणे श्लोक छे.—

गोपालकाः पाण्डुरकुड्यवन्तो, वयं पुरे राजगृहे वसामः ।
आह्वानमंत्रप्रतिमानितीमान्, वर्णान् लिखित्वार्पयति स्म चास्यै॥१॥

भावार्थ—“ गो[1]नुं पालन करनारा अने श्वेत वर्णनी भींतोवाळा राजगृहपुरमां अमे रहीए छीए. आ प्रमाणे पुत्रनुं आह्वान करवाना (बोलाववाना) मंत्रनी जेवा अक्षरो लखीने श्रेणिके तेणीने (सुनंदाने) आप्या. ”

पछी प्रियाने युक्ति प्रयुक्तिथी समजावी तेणीनी रजा लइने श्रेणिक राजगृह नगरे आव्यो, अने पिताना चरण कमळमां पडी नम्यो. तेने आवेलो जोइने राजाए हर्षनां अश्रुजळ साथे सुवर्णकळशना जळवडे महोत्सव पूर्वक तेने राज्याभिषेक कर्यो. पछी राजाए तपश्चर्या अंगीकार करी. अने अनुक्रमे देवलोकने पाम्यो.

श्रेणिके राजा थया पछी परीक्षा करी करीने चारसो नवाणुं मंत्रीओ कर्या. पछी ते सर्वनो उपरी इंगिताकारवडे पारका मननी वातने पण जाणे एवो मंत्री करवानी इच्छाथी तेणे परीक्षा करवा माटे पोतानी उर्मिका (वींटी) एक जळ विनाना उंडा कूवामां नांखीने आघोषणा करावी के “ आ उर्मिकाने जे पुरुष कूवाने कांठे रहीने पोताना हाथवडे लइ लेशे ते सर्व मंत्रीओमां अग्रेसर (मुख्य) मंत्री थशे.” ते सांभळी सर्वे मंत्रीओ तथा बीजा घणा विचक्षण पुरुषो ते कूवा पासे आवीने ते मुद्रिका (वींटी) लेवानो प्रयास करवा लाग्या. पण सर्वे खेद पामी निराश थइने पाछा गया.

अहीं बेनातटमां सुनंदाए गर्भ समय पूर्ण थतां एक पुत्रने जन्म आप्यो.

---

[1] पृथ्वीनुं पालन करनार राजा, बीजो अर्थ गायनुं पालन करनार गोवाळ.

तेनुं अज्ञयकुमार नाम पाड्युं. ते कुमार अनुक्रमे मोटो थयो, तेने निशाळे मोकल्यो. त्यां ते सर्वकळाओमां घणो निपुण थयो. एकदा तेने साथे ज्ञणनारा ठोकराओ साथे कजीयो थयो. एटले ते ठोकराओए अज्ञयने 'बाप विनाना' कहीने तेनी मश्करी करी. ते सांज्ञळीने अज्ञये अति खेदयुक्त थइ मानी पासे जइ तेने पूछ्युं के "हे माता! मारा पिता कोण छे? अने क्यां छे?" सुनंदाए कह्युं के "हे वत्स! ते हुं जाणती नथी. कोइ परदेशी पुरुष मने परणीने थोडी मुदत अहीं रहीने गयेल छे. परंतु जती वखते तेणे आ ज्ञारवट उपर कांइक अक्षरो लख्या छे." ते सांज्ञळीने अज्ञयकुमारे ज्ञारवटपरना अक्षरो वांची पितानुं स्वरूप जाणी माताने कह्युं के "हे माता! मारा पिता तो राजगृहीनगरीना राजा छे, माटे हवे आपणे त्यां जइए." पछी ज्ञद्र श्रेष्ठीनी रजा लइने अज्ञयकुमार पोतानी माने साथे लइ राजगृहनगरना उद्यानमां आव्यो. त्यां सुनंदाने बेसारीने अज्ञयकुमारे गाममां प्रवेश कर्यो. पेला कूवा पासे आवतां घणा लोकोने त्यां एकठा थयेला जोइ-ने अज्ञये पूछ्युं के 'अहीं केम घणा लोको एकठा थया छे?' त्यारे तेओए तेने मुद्रानुं वृत्तांत कह्युं. ते सांभळीने कुमारे कह्युं के "ए वात कांइ दुष्कर नथी. तरतज बनी शके तेम छे." एम कहीने तेणे कांठापर रहीने ओक छाणनो पिंडो ते मुद्रिका उपर नांख्यो, एटले ते मुद्रिका छाणमां चोटी गइ. पछी ते छाण सुकाइ गयुं एटले ते जळ विनानो कूवो जळथी पूर्ण भरी दीधो. ते वखते पेलुं शुष्क छाणुं मुद्रिका साथे तरीने उपर आव्युं. अज्ञयकुमारे ते पोताने हाथे लइ लीधुं अने तेमां चोटी रहेली वींटी उखेडीने राजाने मोकली. आ वृत्तान्त सांभळीने हर्ष पामेलो राजा श्रेणिक जाते कूवा पासे आवी कुमारने जोइ अत्यंत खुशी थयो. पछी राजाए कुमारने आलिंगन दइने पूछ्युं के "हे वत्स! तुं कये गामथी आवे छे? अथवा शुं तुं आज गाममां रहे छे?" कुमारे प्रणाम करीने जवाब आप्यो के "हे स्वामी! हुं बेनातट नामना पुरमांथी आजेज अहीं आव्यो छुं." राजाए पूछ्युं "ते गाममां एक धन नामे श्रेष्ठी रहे छे. तेने सुनंदा नामनी पुत्री छे. तेनुं वृत्तांत तुं कांइ जाणे छे?" कुमारे कह्युं के "हा जी. तेणीए एक पुत्र प्रसव्यो छे. तेनुं नाम अज्ञयकुमार पाड्युं छे. ते कुमार रूप गुण अने उम्मरवडे मारी जेवो ज छे. हे स्वामी! मने जोवाथी तेने ज जोयो, एम जाणो. तेनी साथे मारे गाढ स्नेह छे. तेना विना हुं एक क्षण पण रही शकतो नथी." राजाए पूछ्युं के

"त्यारे तेने मूकीने तुं अहीं केम आव्यो ?" कुमार बोल्यो "तेने अने तेनी माताने अहीं समीपना उद्यानमांज मूकीने हुं अत्रे आव्यो छुं." ते सांभळीने राजा ते कुमारनी साथे उद्यानमां गयो, अने पोतानी प्रिया सुनंदाने मळ्यो. राजाए सुनंदाने पूछ्युं के "ते वखते तने जे गर्भ हतो ते पुत्र क्यां छे?"

सुनंदा बोली के "हे प्राणनाथ ! आ आपनी साथे आव्यो तेज ते पुत्र छे." ते सांभळी राजाए कुमारने कह्युं के "हे वत्स ! तुं मारी पासे जूठुं केम बोल्यो ?" तेणे जवाब दीधो के "हुं निरंतर मारी माताना हृदयमां रहुं छुं; तेथी में तेवो जवाब आप्यो हतो." ते सांभळी राजाए आनंद पामी कुमारने पोताना खोळामां बेसाड्यो. पछी राजाए अति आनंद पूर्वक ध्वज तोरणथी शणगारेला राजगृहनगरमां सुनंदाने प्रवेश कराव्यो; अने अभयकुमारने चारसो नवाणुं मंत्रीओमां प्रधान मंत्रीनुं पद आप्युं. पछी ते बुद्धिशाळी अभयकुमारने आगळ करीने श्रेणिक राजाए घणा देशो साध्या. (पोताने तावे कर्या.)

एकदा श्रीमहावीर स्वामी राजगृहीना उपवनमां समवसर्या. तेमने वांदवा माटे अभयकुमार गयो. त्यां घणा देव, देवी, साधु, साध्वी विगेरेथी व्याप्त एवी भगवाननी पर्षदामां एक कृश गात्र वाळा शान्त महर्षिने जोइने कुमारे भगवानने पूछ्युं के "हे स्वामी ! आ महर्षि कोण छे ?" प्रभु बोल्या के—ए वीतभयपत्तनना राजा नीतिमान उदायन छे. ते राज्यावस्थामां मने वांदवा आव्या हता, त्यारे में तेने आ प्रमाणे धर्मोपदेश आप्यो हतो के—"संध्याना रंग जेवुं, पाणीना परपोटा जेवुं अने दर्भना अग्र भाग उपर रहेला जळना बिंदु जेवुं आ जीवित चंचळ छे. अने युवावस्था नदीना पूरनी जेवी वही जती छे तो हे पापी जीव! तुं केम बोध पामतो नथी ? अहो ! मुक्तिना जेवुं सुख आ संसारमां कोइ पण स्थळे नथी. आ विषय पर अंगारदाहकनुं दृष्टान्त छे ते तमे सांभळो.—

अंगारदाहकनुं दृष्टान्त.

कोइ एक अंगारा (कोयला) नो वेपार करनार काष्ट बाळीने तेना कोयला पाडवा माटे एक पाणीनो भरेलो घडो लइ वनमां गयो. त्यां काम करतां तृषा लागवाथी अनुक्रमे ते आखो घडो पाणी पी गयो. परंतु माथा पर सूर्यनो ताप होवाथी, पासे कोयला पाडवा करेला अग्निना तापथी तथा लाकडा कापवा-

ना श्रमथी तेने अत्यंत तृषा लागी. तेथी पाणी विना ते मूर्छा खाइने निद्रावश थयो. निद्रामां तेने स्वप्न आव्युं. तेमां ते पोताना घरमां रहेलुं सर्व जळ पी गयो. पछी अनुक्रमे सरोवरोनुं, कूवाओनुं, नदीओनुं, तथा छेवट सघळा समुद्रोनुं जळ ते पी गयो. तो पण तेनी तृषा छीपी नहीं. पछी एक जीर्ण कुवामां थोडुं पाणी हतुं, ते लेवा माटे तेणे घासनो पूळो दोरडे बांधीने तेमां नांख्यो. ते पूळो बहार काढीने तेमांथी नीकळता जळ बिंदुने जीभ वडे चाटवा लाग्यो. समुद्रना जळथी पण जेनी तृषा मटी नहीं, तेनी तृषा आ पूळामांथी झरता जळकणथी शी रीते नष्ट थाय ?

आ दृष्टान्तनुं तात्पर्य ए छे के–स्वर्गादिकनां अनेक सुख भोगव्यां छतां जेने तृप्ति थइ नहीं तेने अल्प आयुपवाळा मनुष्य देहना अल्प सुखथी शी रीते तृप्ति थइ शके ? जरावडे जर्जरित अंग थया छतां पण ते विषय सुखथी तृप्त थतो नथी." आ प्रमाणेनी अमारी वैराग्यमय वाणी सांभळीने उदायन राजाने प्रतिबोध थवाथी तेणे तरतज दीक्षा ग्रहण करी; आ चोवीशीमां आ छेल्ला राजर्षि छे. हवे पछी कोइ पण राजा दीक्षा लेशे नही. आ राजर्षि आ भवमांज सर्व कर्मनो क्षय करीने मोक्ष पद पामशे.

आ प्रमाणेनी हकीकत प्रभुना मुखथी सांभळीने अभयकुमारे पोताने घेर जइने श्रेणिकराजाने कह्युं के " हे स्वामी ! आपनी आज्ञाथी हुं दीक्षा लेवा इच्छुं छुं, माटे आप कृपा करीने मने चारित्र अपावो. केमके पूज्य पिता ! मोटा पुण्यना उदयथी आप जेवा जैनधर्मी हितकारक पिता मळ्या छे, अने साक्षात् जिनेश्वर श्रीमहावीर स्वामी गुरु मळ्या छे; तेथी आवा संयोगमां पण जो हुं दुष्कर्मना मर्मनुं मथन न करी शकुं, तो पछी मारा जेवो बीजो कोण मूर्ख कहेवाय?" पुत्रनां आवां युक्तियुक्त वचन सांभळीने राजाए तेने आलिंगन दइने कह्युं के " हे वत्स ! ज्यारे हुं क्रोधथी तने ' अरे पापी ! मारी पासेथी दूर जा, मने मुख बतावीश नहीं' एवा वाक्य कहुं त्यारे तुं व्रत ग्रहण करजे. " आ प्रमाणेना पिताना वचनने विनयवान अभयकुमारे अंगीकार कर्युं अने भक्ति पूर्वक तेमनी सेवा करवा लाग्यो.

एकदा आकरी शीतऋतुमां श्री महावीरस्वामी राजगृही नगरीना गुणशील चैत्यमां समवसर्या. ते वखते श्रेणिक राजा चेलणा राणी सहित प्रभुने

वांदवा गया. प्रभुने वांदी देशना सांभळीने राणी सहित पाछले पहोरे पाछा वळतां मार्गमां नदीने कांठे एक साधुने कार्योत्सर्गे रहेला जोया. ते शान्त अने दान्त मुनिने वंदना करीने राजा पोताने घेर आव्यो. पछी रात्रे शयनगृहमां श्रेणिक राजा चेल्लणा राणी साथे कामक्रीडा करी आलिंगन दइने सुइ गयो. निद्रामां राणीनो एक हाथ ओढेला वस्त्रथी बहार नीकळी गयो. ते हाथ टाढने लीधे ठरी जवाथी राणी जागी गइ. पछी मुखथी सीत्कार शब्द करती राणीए ते हाथ तरतज सोडमां लइ लीधो. ते वखत पेला नदी तीरे रहेला वस्त्र रहित मुनिनुं तेने स्मरण थइ आववाथी ते बोली के " अहो ! प्राणनो पण नाश करे एवी उग्र टाढमां तेनी शी गति थती हशे ? " आ तेणीनुं वाक्य अकस्मात् जागेला राजाना सांभळवामां आव्युं. तेथी तेणे विचार्युं के " अहो ! आ राणी दुराचरणी जणाय छे, आने मारा सिवाय बीजो कोइ पुरुष वधारे प्रिय लागे छे, तेथी खरेखर आ व्यभिचारिणी छे, तो पछी बीजी सर्वे राणीओ पण व्यभिचारिणी होय तेमां शुं आश्चर्य ! " आ प्रमाणे मनमां रोषने धारण करता राजाए विचारमां ने विचारमां निद्रा रहित पणे रात्रि निर्गमन करी. " घणुं करीने डाह्या माणसो पण पोतानी स्त्रीने स्नेहथी बोलावनार उपर पण इर्ष्यालु थाय छे. "

प्रातःकाळे राजाए अभयकुमारने बोलावीने आज्ञा करी के " मारुं समग्र अन्तःपुर दुराचारी छे, तेथी हमणांज आखा अन्तःपुरने सळगावी मूक. " ते सांभळीने अभय बोल्यो के " पितानुं वाक्य प्रमाण छे. " पछी श्रेणिक राजा तरतज जिनेश्वरने वांदवा गया. प्रभुना मुखथी धर्मदेशना सांभळ्या पछी राजाए प्रभुने पूछ्युं के " हे स्वामी ! चेटक राजानी पुत्री (-चेल्लणा) ने एकज पति छे के अनेक पति छे ? " स्वामीए उत्तर आप्यो के " हे श्रेणिक ! तारी सर्व स्त्रीओ धर्मपत्नी (पतिव्रता) छे. गइ काले अहींथी जतां तें तथा चेल्लणाए नदीतीरे जे मुनिने जोया हता, तेनुं स्मरण करीने मध्यरात्रे चेल्लणाए कह्युं हतुं के " आवी टाढमां तेनी शी गति थइ हशे ? " परंतु बीजा आश्रीने ते बोली नथी. " आ प्रमाणेना वचनो भगवानना मुखथी सांभळीने श्रेणिक राजा पोताना घर तरफ उतावळथी चाल्यो.

अहीं अभयकुमारे राजानी आज्ञा थया पछी विचार्युं के " राजाए मने आज्ञा तो आपी छे, पण ते कार्य सहसा करवाथी परिणामे अत्यंत दुःखदायी

थशे. " एम विचारीने तेणे अन्तःपुरनी पासे रहेला घासना घरो खाली करी जीव जंतु रहित शोधावीने सळगावी मूक्यां. पछी भगवानना समवसरण तरफ ते चाल्यो. मार्गमां श्रेणिक राजा सामा मळ्या. तेणे अभयने पूछ्युं के " तें शुं कर्युं ?" अभय बोल्यो के " आपनी आज्ञा प्रमाणे कर्युं छे. " ते सांभळीने राजाए क्रोधथी कह्युं के "मारी दृष्टिथी दूर जा, मने तारुं मुख देखाडीश नहीं; आवुं साहस काम तारा विना बीजो कयो मूर्ख करे ? " ते सांभळीने " पितानुं वाक्य प्रमाण छे " एम कहीने अभयकुमारे समवसरणमां जइ प्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी.

अहीं राजाए गाममां आवीने जोयुं, तो मात्र घासना घरोज सळगावेला दीठा. एटले तेणे विचार्युं के " अहो ! अभये मने कपट करीने छेतर्यो, जरूर तेणे दीक्षा लइ लीधी हशे. " एम विचारीने ते मुठी वाळीने दोडता पाछा समवसरणमां आव्या. त्यां तो अभयकुमारने व्रत लइने बेठेला दीठा एटले " तें मने छेतर्यो." एम कहीने श्रेणिक राजाए तेमने वंदना करी. पछी क्षमा मागीने घेर गया. अभयमुनि प्रभु पासे रही चारित्र पाळी तपस्या करी काळ धर्म पामीने सर्वार्थसिद्धि विमानमां देवता थया.

" आ प्रमाणे गुणना स्थान रूप अभयमंत्रीए परमार्थ संस्तव नामनी प्रथम श्रद्धाने सफळ करी, तेम हे भव्य जीवो! तमारे पण जो मुक्ति रूपी स्त्रीने आलिंगन करवानी इच्छा होयतो तमे पण ते प्रमाणे करो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम
स्तंभे पंचमं व्याख्यानम् ॥५॥

व्याख्यान ६ ठुं.



सारी रीते परमार्थने जाणनारा मुनिओनी सेवा करवा रूप मुनि पर्युपास्ति नामनी बीजी श्रद्धा विषे.

गीतार्थाः संयमैर्युक्तास्त्रिधा तेषां च सेवनम् ।
द्वितीया सा भवेच्छ्रद्धा, या बोधे पुष्टकारिणी ॥ १ ॥

भावार्थ—"संयम युक्त एवा गीतार्थ मुनिओनी त्रण प्रकारे सेवा करवी ते बीजी श्रद्धा कहेवाय छे. ते श्रद्धा बोधमां एटले तत्त्वज्ञानमां पुष्टि करनारी छे."

गीत एटले सूत्र अने अर्थ एटले ते (सूत्र) ना अर्थनो विचार, ए बन्ने जेने होय ते गीतार्थ कहेवाय छे. संयम एटले सर्वविरति रूप सत्तर प्रकारनुं चारित्र. ते आ प्रमाणे–पांच आश्रवोथी विरमवुं, पांच इन्द्रिओनो निग्रह करवो, चार कषायनो जय करवो, अने त्रण दंड थकी विराम पामवो. ए प्रमाणेनी विरतिमां आसक्त थयेला तल्लीन मनवाळा मुनिओनी तथा ज्ञान अने दर्शनवाळाओनी पण मन, वचन अने कायावडे सेवा करवी एटले विनय करवो, बहुमान करवुं अने भक्ति करवी विगेरे. नहीं तो हिंसा करनार वाघरी पण शिकार उपर ताकीने नमन करे छे, अर्थात् नीचे नमे छे, तेनी जेम नमवुं ते निष्फळ जाणवुं. आवा गुणवाळी श्रद्धाने मुनिपर्युपास्ति नामनी बीजी श्रद्धा कहेली छे. आ श्रद्धा वस्तुनुं यथार्थ स्वरूप जाणवामां पुष्टि करनारी छे, अने सम्यक्त्वने स्फटिकनी जेवुं स्वच्छ करनारी छे. ते उपर पुष्पचूला साध्वीनुं दृष्टान्त छे ते नीचे प्रमाणे—

पुष्पचूला साध्वीनुं दृष्टान्त.

गीतार्थसेवने सक्ता, पुष्पचूला महासती ।
सर्वकर्मक्षयाल्लेभे, केवलज्ञानमुज्ज्वलम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"गीतार्थ मुनिनी सेवामां आसक्त थयेली महासती (साध्वी) पुष्पचूला सर्व कर्मनो क्षय करवावडे उज्ज्वल केवळज्ञानने पामी."

आ जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रने विषे पृथ्वीपुर नामना नगरमां पुष्पकेतु नामे राजा हतो. तेने पुष्पवती नामे राणी हती. तेणीए पुष्पचूल नामे पुत्र तथा पुष्पचूला नामे पुत्रीने युगलपणे जन्म आप्यो. ते जाइ बेन वच्चे एटलो बधो स्नेह हतो, के एक क्षणमात्रनो वियोग थतां ते बन्ने मरवाने तैयार थइ जता हता. ते जोइने पुष्पकेतु राजाए विचार्युं " जो आ बन्नेने जूदे जूदे स्थाने परणावीश, तो ते बन्ने परस्परना वियोगथी मृत्यु पामशे, तेथी ते बन्नेनेज हुं परस्पर परणावुं तो ठीक. " एम विचारीने राजाए मंत्रीओने तथा पौरजनोने बोलावीने प्रश्न कर्यो के "मारा अन्तःपुरमां जे रत्न उत्पन्न थाय, तेनो स्वामी कोण?" ते सांजळीने सर्वे बोल्या के " हे नाथ ! आपना समग्र राज्यमां कोइ पण स्थळे उत्पन्न थयेला रत्नना आप स्वामी छो, तो पछी अन्तःपुरमां उत्पन्न थयेला रत्नना तो आप स्वामी हो, तेमां शुं कहेवुं ? तेना तो आपज स्वामी छो. अने अन्तःपुरमां उत्पन्न थयेला रत्ननी आप जे कांइ योजना करो ते अमारे मान्य छे. " आ प्रमाणे कपट वचन वडे ते सर्वेनी संमति मेळवीने राजाए राणी तरफनो निषेध छतां पण ते बन्नेना लग्न परस्पर कर्या. तेथी पुष्पवती राणी वैराग्य पामी तपस्या करीने स्वर्ग लोकमां देवता थइ.

केटलेक काळे पुष्पकेतु राजा मृत्यु पाम्यो, त्यारे पुष्पचूल राजा थयो. ते पुष्पचूलानी साथे विषय सुख जोगवतो काळ निर्गमन करवा लाग्यो. " अहो ! आ संसारमां कामांध पुरुष कार्याकार्यनो विचार करी शकतो नथी. " हवे ते पुष्पवती राणीनो जीव जे देव थयो हतो तेणे अवधिज्ञानवडे पुत्र पुत्रीनुं अकार्य जोइने पूर्वनी प्रीतिना वशथी पुष्पचूलाने स्वप्नमां महा जय उत्पन्न करनारां नरको देखाड्यां. ते जोइने जय पामेली पुष्पचूलाए जागृत थइ ते स्वप्ननो सर्व वृत्तांत पतिने कह्यो. पछी राजाए प्रातःकाळे बौद्ध विगेरे सर्व दर्शनीओने बोलावीने तेमने "नरको केवा होय?" एवो प्रश्न कर्यो. तेना जवाबमां कोइए गर्जावासने नरक कह्युं, कोइए केदखानाने, कोइए दारिद्रने, अने कोइए परतंत्रपणाने नरक कह्युं. ते सर्व मत सांजळीने राणीए कह्युं के " तेवा प्रकारनां नरको होतां नथी. " पछी राजाए अन्निकापुत्र आचार्यने बोलावीने नरकनुं स्वरुप पूछ्युं, त्यारे सूरिए कह्युं के " हे राजा! नरक सात छे. तेमां पहेला नरकमां एक सागरोपमनी, बीजामां त्रण सागरोपमनी, त्रीजामां सातनी, चोथामां दशनी, पांचमामां सत्तरनी, छठ्ठामां बावीशनी

अने सातमीमां तेत्रीश सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति होय छे, अने ते साते नरक पृथ्वीमां क्षेत्रथी उत्पन्न थयेली वेदना होय छे. पांच नरकमां क्षेत्र वेदना साथे अन्योन्यकृत वेदना होय छे, अने प्रथमनी त्रण नरकमां ते बे प्रकार उपरांत त्रीजी-परमाधामीकृत वेदना होय छे." विगेरे नरकनुं यथार्थ स्वरुप सांभळीने राणीए आचार्यने पूछ्युं के "अहो! आपने पण मारा जेवुंज स्वप्न आव्युं छे के शुं?" गुरुए कह्युं के "हे भद्रे! अमने कांइ स्वप्न आव्युं नथी, परंतु जिनेश्वरे कहेला आगमथी अमे तेनुं सर्व स्वरूप जाणीए छीए." राणीए पूछ्युं "हे पूज्य! कया कर्मथी प्राणी नरके जाय?" गुरुए कह्युं के "महा आरंभादिक कार्यो करवाथी अने विषय सेवनादिकथी जीव नरके जाय छे." इत्यादि उपदेश सांभळीने राजाए तेमने विसर्जन कर्या.

बीजी रात्रे पेला देवताए पुष्पचूलाने स्वप्नमां स्वर्गना सुख बताव्या. ते वृत्तांत राणीए राजाने कह्यो, त्यारे राजाए सर्व दर्शनीओने बोलावीने स्वर्गनुं स्वरूप पूछ्युं. तेना उत्तरमां तेओ बोल्या के "मनमां चिंतवेलुं सुख प्राप्त थाय तेज स्वर्ग" विगेरे तेमना जवाबोथी संतोष कारक खुलासो नहीं थवाने लीधे राजाए अन्निकापुत्र आचार्यने बोलावीने स्वर्गनुं स्वरूप पूछ्युं, त्यारे गुरुए "देवताओ अखंड यौवनवाळा, जरा रहित, निरुपम सुखवाळा तथा सर्व अलंकारने धारण करनारा होय छे. पहेला देवलोकमां ३२ लाख विमान छे, बीजामां २८ लाख छे" विगेरे स्वर्गनुं यथार्थ स्वरुप कह्युं. ते सांभळीने राणीए श्रद्धा पूर्वक पूछ्युं के "हे गुरु! ते स्वर्गना सुख शी रीते प्राप्त थाय?" गुरु बोल्या के श्रावक धर्म अथवा साधु धर्मनुं सारी रीते सेवन करवाथी स्वर्गना सुख प्राप्त थाय छे."

ते सांभळीने प्रतिबोध पामेली राणीए पुष्पचूळ राजाने कह्युं के "हे नाथ! मने चारित्र लेवानी आज्ञा आपो." त्यारे राजाए कह्युं के "हे प्रिया! तारो वियोग एक क्षणवार पण हुं सहन करी शकुं तेम नथी." तो पण राणीए घणो आग्रह कर्यो, त्यारे राजाए कह्युं के "हे प्रिया! जो तुं हमेशां अहीं रहेवानुं अने मारे घरथीज आहार ग्रहण करवानुं कबुल करे, तो हुं चारित्रनी संमति आपुं." ते सांभळीने राणीए ते अंगीकार कर्युं. पछी राजाए मोटा उत्सव पूर्वक अन्निकापुत्र आचार्य पासे राणीने दीक्षा अपावी.

केटलाक काळ पछी आचार्ये श्रुतज्ञानना उपयोगथी दुष्काळ पडवानो

संभव जाणीने पोताना गच्छने बीजा देशमां मोकल्यो. अने पोते वृद्ध होवाथी त्यांज रह्या. ते वखते पुष्पचूला साध्वी निर्दोष आहार लावीने आपवावडे अग्लानवृत्तिए गुरुनी वैयावृत्य करवा लागी. अनुक्रमे शुभध्यानवडे क्षपकश्रेणी पर आरुढ थइने ते केवळज्ञान पामी. तो पण गुरुनी सेवा करती बंध पडी नहीं. उलटी गुरुनी इच्छानुसार आहार लावी आपीने तेमनी सेवा करवा लागी. तेथी एक दिवस गुरुए तेने पूछ्युं के "तुं मारा मननी इच्छाने हमेशां शी रीते जाणे छे?" साध्वीए जवाब दीधो के "हे पूज्य! जे जेनी पासे निरंतर रहे ते तेनी मनोवृत्ति केम न जाणे?"

एकदा वरसाद वरसतो हतो, ते वखते तेणीए आहार आण्यो, त्यारे सूरिए पूछ्युं के "हे पुत्री! तुं श्रुतने जाणे छे छतां आवा वरसादमां तुं आहार केम लावी?" तेणीए कह्युं के "जे जे प्रदेशमां अचित्त अप्कायनी वृष्टि थती हती, ते ते प्रदेशमां चालीने हुं आहार लावी छुं. तेथी आ आहार अशुद्ध नथी." गुरुए पूछ्युं "तें अचित्त प्रदेश शी रीते जाण्यो?" तेणीए कह्युं "ज्ञानवडे" सूरिए पूछ्युं के "प्रतिपाति[1] ज्ञानवडे के अप्रतिपाति[2] ज्ञान वडे?" ते बोली के "पांचमा ज्ञानवडे (केवळज्ञानवडे)." ते सांभळीने सूरिए, "अहो! में केवळीनी आशातना करी." एम कहीने तेने मिथ्या दुष्कृत आप्युं. पछी आचार्ये तेमने पूछ्युं के "हुं मोक्ष पामीश के नहीं?" केवळीए कह्युं के "तमने गंगानदी उतरतां केवळज्ञान प्राप्त थशे." ते सांभळीने सूरि गंगानदी उतरवा माटे केटलाक लोकोनी साथे नावमां बेठा. परंतु जे बाजु ते बेसे ते बाजुए नाव नमवा लाग्युं. एवी रीते दरेक बाजुए सूरि बेठा, एटले ते दरेक स्थान नमवा लाग्युं, पछी सूरि मध्यमां बेठा. त्यारे आखुं वहाण डुबवा लाग्युं. (आचार्ये पूर्वभवमां पोतानी स्त्रीनुं अपमान कर्युं हतुं. ते स्त्री व्यन्तरी थइ हती ते आ प्रमाणे सूरिने उपद्रव करती हती.) तेथी लोकोए आचार्यने उपाडीने जळमां नाख्या. ते वखते पेली व्यन्तरीए जळमां शूळी ऊभी करीने तेमां आचार्यने परोव्या तो पण महात्मा आचार्य तो "अहो! मारा देहना रुधिर वडे अप्कायना जीवो मरण पामे छे." एम जीवदयानी भावना करवा

---

१ आवीने जतुं रहे ते प्रतिपाति २ आवीने पाछुं जायज नहीं ते अप्रतिपाति केवळज्ञान.

लाग्या. एम शुभ भावनी वृद्धि थतां सर्व कर्मनो क्षय करी अंतकृत केवळी थइने तेओ तरतज मोक्षे गया.

ते वखते नजीकमां रहेला देवोए तेमनो केवळज्ञाननो महोत्सव कर्यो. त्याऱथी ते प्रयाग नामें तीर्थ थयुं. त्यां अन्य दर्शनीओ स्वर्ग सुख पामवाना हेतुथी करवत मूकावे छे.

पुष्पचूला साध्वी केवळीपणे पृथ्वी पर विहार करी अंते सर्व कर्मनो क्षय करी अनंत आनंद वाळा मोक्ष पदने पामी.

" आ पुष्पचूलानुं पवित्र चरित्र सांभळीने जे भव्य जीवो गुरु परिचर्या करवामां तत्पर थाय छे ते परम सुखनुं धाम जे मोक्ष तेने मेळवे छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ प्रथम स्थंभे षष्ठं व्याख्यानम् ॥ ६ ॥

व्याख्यान ७ मुं.

व्यापन्नदर्शनीनो त्याग करवा रूप त्रीजी श्रद्धा विषे.

व्यापन्नं दर्शनं येषां, निह्नवानामसद्ग्रहैः ।
तेषां संगो न कर्तव्यस्तच्छ्रद्धानं तृतीयकम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" कदाग्रहवडे जेमनुं सम्यग्दर्शन नाश पाम्युं छे, एवा निह्नवोनो संग न करवो, ते त्रीजी श्रद्धा कहेली छे. "

असद्ग्रहथी एटले पोतानी मति कल्पनाए मानेला मत उपर कदाग्रह राखवाथी जेमनुं दर्शन एटले सर्व नय विशिष्ट वस्तुना बोधरूप समकित नष्ट थयुं छे तेवा निह्नवो समग्र वस्तुओमां यथावस्थित प्रतिपत्ति (श्रद्धा) छतां पण कोइ

एकाद अर्थमां अन्यथा मान्यतावाळा होय छे. निह्नव एटले जिनेश्वरना वचननुं निह्नव करे—अपलाप करे ते. तेवा निह्नवोना संगनो त्याग करवो. निह्नव शब्दना उपलक्षणथी पासत्था, कुशीलीया विगेरेना संगनो पण त्याग करवो. अन्यथा समकितनी हानी थाय छे. तेमनो त्याग करवारूप आ त्रीजी श्रद्धा कहेवाय छे. आ विषय उपर जेनुं समकित नष्ट थयुं छे एवा जमालि विगेरेना दृष्टान्तो छे, तेमांथी प्रथम जमालिनुं दृष्टान्त नीचे प्रमाणे.

जमालिनुं दृष्टान्त.

कुंडपुर नामना नगरमां श्री महावीरस्वामीनी बेननो दिकरो जमालि नामनो राजपुत्र रहेतो हतो. ते जमालि महावीरस्वामीनी पुत्री सुदर्शना साथे परण्यो हतो. तेनी साथे विषय सुख भोगवतो सतो ते काळ निर्गमन करतो हतो.

एकदा विहार करतां करतां प्रभु ते नगरना उपवनमां समवसर्या. तेमने आवेला सांभळीने जमालि वांदवा माटे गयो. त्यां प्रभुने प्रदक्षिणा पूर्वक वंदना करीने तेणे नीचे प्रमाणे देशना सांभळी—

गृहं सुहृत्पुत्रकलत्रवर्गो, धान्यं धनं मे व्यवसायलाभः ।
कुर्वाण इत्थं न हि वेत्ति मूढो, विमुच्य सर्वं व्रजतीह जन्तुः ॥१॥

भावार्थ—" मनुष्य एम जाणे छे के—आ घर, मित्र, पुत्र, स्त्री, धन, धान्य विगेरे सर्व मारा उद्योगनी कमाणी छे, पण ते मूर्ख समजतो नथी के आ सर्व अहीं मूकीनेज प्राणी परलोकमां एकलो जाय छे. "

आ प्रमाणे देशना सांभळीने वैराग्य पामेला जमालिए पोताने घेर जइ घणा आग्रहथी माता पितानी आज्ञा मेळवी. अने पांचसो क्षत्रीओनी साथे प्रभुपासे दीक्षा ग्रहण करी. त्यारपछी हजार स्त्रीओनी साथे सुदर्शनाए पण दीक्षा लीधी. चारित्रनुं पालन करतां जमालिए अगीयार अंगनो अभ्यास कर्यो. अन्यदा एकला विहार करवानी प्रभु पासे आज्ञा मागी. भावि लाभ न जाणवाथी प्रभु मौन रह्या, कांइपण उत्तर आप्यो नहीं. तोपण जमालि पांचसो साधुओने लइने विहार करी श्रावस्ति नगरीए गयो. त्यां तिंदुक उद्यानना कोइ यक्षना चैत्यमां रह्यो. रूक्ष अने नीरस आहार करवाथी केटलेक काळे जमालिने

तीव्र दाहज्वर उत्पन्न थयो. तेनी पीडाथी तेना शरीरमां बेसवानी के उन्ना रहे-
वानी पण शक्ति रही नहीं, एक दिवस तेणे साधुओने कह्युं के " मारे माटे ज-
ल्दीथी संथारो करो, जेथी हुं सुइ जउं. " ते सांजळीने साधुओ संथारो करवा
लाग्या. जमालिए दाहज्वरनी अधिक पीडा थवाथी तरतज साधुओने पूछ्युं के
" संथारो पाथर्यो के नहीं ? " त्यारे साधुओए पथराइ रहेवा आव्यो हतो तेथी
अर्धो पथरायो हतो उतां पण " हा, पाथर्यो. " एवो जवाब दीधो. ते जवाब
सांजळीने वेदनाथी विह्वळ थयेलो जमालि तरतज उठीने सुवानी इच्छाथी त्यां
गयो, तो संथारो अर्धो पाथरेलो जोयो. तेथी ते क्रोध पाम्यो, अने " क्रियमाणं
कृतं (करातुं कार्य करेलुं कहेवाय) " एवुं सिद्धान्तनुं वचन तेना स्मरणमां आव्युं.
तेज वखते मिथ्यात्वनो उदय थवाथी केटलीक युक्तिओ वडे तेणे सिध्धान्तनुं ते
वचन असत्य छे, एम विचार्युं. ते विचारवा लाग्यो के " क्रियमाणं कृतं, चलमानं
चलितं " इत्यादि जगवाननुं वचन असत्य छे. एम आजे मने प्रत्यक्ष थयुं छे. के-
मके आ संथारो हजु ' क्रियमाण ' एटले करातो छे, ने ' कृतं ' एटले करेलो
नथी. माटे सर्व वस्तु करातो होय ते करेली कहेवाय नहीं. परंतु जे कार्य कर्युं हो-
य-पूरुं थइ गयुं होय तेज कर्युं कहेवाय. जेमके घट विगेरे कार्य
क्रियाकाळना अंतमांज थयेलुं देखाय छे. परंतु शिवस्थासादि[1] काळे घटरूपी
कार्य थयेलुं देखातुं नथी. आ वात बाळगोपाळथी आरंभीने सर्वजनने प्रत्यक्ष
सिद्ध छे." आ प्रमाणे विचारीने ते पोतानी कल्पित युक्तिओ सर्व साधुओने
समजाववा लाग्यो. त्यारे तेना समुदाय मांहेना स्थविर साधुओए तेने कह्युं के
" हे आचार्य ! ' क्रियमाणं कृतं ' विगेरे जगवाननां वाक्यो सत्य ज छे. तेमां
कांइ पण प्रत्यक्ष विरोध नथी. केमके एक घटादिक कार्यमां अवान्तर कारणो अने
कार्यो असंख्याता होय छे. माटी लाववी, तेनुं मर्दन करीने पिंड बनाववो, तेने
चक्रपर चडाववो, दंडथी चक्र जमाववुं, प्रथम शिव करवुं. पछी स्थासक करवुं,
इत्यादि घटरूपी सर्व कार्यना कारणो छे. अने छेवटे दोरावडे कापीने घटने चक्रथी
जूदो कर्यो त्यारे ज ते घटरूपी कार्य थयुं एम तमारुं मानवुं छे, ते अयोग्य छे.
केमके घटरूप कार्य करती वेळाए दरेक समये अन्य अन्य कार्योनो आरंभ थाय छे
अने ते कार्यो निष्पन्न थाय छे. केमके कार्यना कारणनो अने निष्पत्तिनो एक ज

१ शिव अने स्थास ए घडाना पेंदा, गोळा विगेरे अवान्तर विभेद छे.

काळ छे. (करणनो काळ जूदो अने निष्पत्तिनो काळ जूदो एम नथी) तेथी सर्व अवांतर कारणो अने कार्यो थइ रह्या पछी छेल्ले समयेज परिपूर्ण घटनो आरंभ थाय छे, तेज समये ते निष्पन्न थाय छे. (आ विषय उपर घणो विस्तार छे, ते महाभाष्यथी जाणी लेवो.) वळी हे जमालि ! तमे संथारो अर्धो पाथरेलो जोइने संथारो कर्यो ज नथी ए प्रमाणे बोल्या, ते अयोग्य छे. केमके संथारो अर्धो पाथर्यो छे, एम तो तमे पण बोल्या, ते न पाथर्यो होत तो केम बोलात ? माटे प्रथमथी जेटला आकाशप्रदेशमां संथारो पाथरवा मांड्यो तेटला आकाशप्रदेश-मां तो ते पथराइ गयो छे. मात्र उपर पाथरवानां वस्त्रो बाकी छे. ते पथरायां नथी पण संथारो जेटलो पथराणो तेटलो तो पाथर्यो ज छे; ते कांइ हवे पाथरवानो नथी. माटे विशिष्ट समयनी अपेक्षावाळां भगवानना वाक्योमां कोइ जातनो दोष नथी.

आ प्रमाणे अनेक युक्तिओथी स्थविर साधुओए जमालिने समजाव्यो, तो पण ते समज्यो नहीं, त्यारे तेओ तेने छोडीने वीरप्रभु पासे गया. पण सुद-र्शनाए तो जमालिपरना अनुरागने लीधे तेनो मत कबुल कर्यो. ते ढंक नामना कुंभारजातिना श्रावकने घेर रही हती. त्यां ढंकने पोताना मतमां लेवा माटे ते समजाववा लागी, एटले ढंके तेने मिथ्यात्व पामेली जाणीने कह्युं के " अमे तो कांइ एवी वातोमां समजता नथी. " पछी एक दिवस ढंक श्रावक निभा-डामांथी ठाम काढतो हतो अने तेज ठेकाणे सुदर्शना साध्वी बेठी बेठी स्वा-ध्याय करती हती. तेने प्रतिबोध करवा माटे ढंके अग्निनो एक अंगारो तेणीना वस्त्र उपर मुकी दीधो, तेथी ते कपडानो एक छेडो बळी गयो. ते जोइने सुदर्शना बोली के—" हे श्रावक ! तें मारो कपडो बाळी नाख्यो. " त्यारे ढंक बोल्यो के " अरे ! बळतुं होय ते बाळ्युं कहेवाय, एवो तो श्रीभगवाननो मत छे. तमे तो तेवुं क्यां मानो छो ? तेथी तमारा मते तो में कपडो बाळ्यो नथी, माटे तमे बाळ्यो केम कहो छो ? " आ प्रमाणेनुं ढंकनुं वाक्य सांभळीने विचार करतां ते सुदर्शना बोध पामीने बोली के " हे श्रावक ! तें मने ठीक प्रतिबोध पमाड्यो. हुं हवे ते संबंधि मिथ्यादुष्कृत आपुं छुं. " एम कहीने ते जमालि पासे जइ तेने पण बोध करवा लागी. परंतु ते तो जरा पण बोध पाम्यो नहीं. तेथी तेने एकलो मूकीने सुदर्शना भगवाननी पासे गइ.

एकदा जमालिए चंपा नगरीमां आवीने श्री महावीरस्वामीने कह्युं के

।रा शिष्यो छद्मस्थपणे ज विहार करे
तेथी हुं तो सर्वज्ञ अरिहंत थयो
हे जमालि ! तुं एवुं असत्य जापण
गण ठेकाणे स्खलना पामतुं नथी.
आप—" आ लोक शाश्वत छे के
। के अनित्य छे ? " ते सांभळीने
धारण कर्युं, अने नियंत्रित करेला
बोल्या के " हे जमालि ! छद्मस्थ
के छे ते आ प्रमाणे—भूत, भविष्य
छे, अने उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी
तेमज द्रव्य रुपे करीने आ जीव शा-
देवपणाना पर्यायवडे अशाश्वत छे. "
जमालिने श्रध्धा थइ नहीं. तेथी ते
मेथ्यात्वी करवा लाग्यो. छेवट मृत्यु
। तथा आलोयण प्रतिक्रमणादि क-
वलोकमां तेर सागरोपमना आयुष्य-
वाळा किल्बिष देव थयो. (आ जमालिनुं चरित्र भगवती सूत्रमां विस्तारथी
आपेलुं छे).

" श्री जिनेश्वरे कह्युं छे के—देव, तिर्यंच अने मनुष्यना भवमां पांच पांच वार उत्पन्न थइने ते जमालि फरीने समकित पामी सिध्धि सुखने पामशे. आ प्रमाणे श्री वीर प्राकृत चरित्रमां कह्युं छे."

" आ जमालिनुं चरित्र सांभळीने भव्यजीवोए नष्टदर्शनीनो संग करवो नहीं. एवो संग प्राप्त थयां छतां पण जेओ ढंक श्रावकनी जेम श्रध्धानो त्याग करता नथी, तेओ सर्व प्रकारना सुखने पामे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम
स्तंभे सप्तमं व्याख्यानम् ॥७॥

व्याख्यान ८ मुं.

पाखंडिना वर्जनरूप चोथी श्रद्धा विषे.

शाक्यादीनां कुदृष्टीनां, बौद्धानां कूटवादिनाम् ।
वर्जनं क्रियते भव्यैः, सा श्रद्धा स्याच्चतुरीयका ॥ १ ॥

भावार्थ–"शाक्य विगेरे कुदृष्टिओ (मिथ्यात्वीओ) नुं, बौधोनुं अने मिथ्याभाषीओनुं वर्जन करवुं, ए चोथी श्रद्धा कहेली छे."

शाक्य मतवाळा उन्मत्त जेवा थइने एवो उपदेश आपे छे के—

न मांस भक्षणे दोषो, न मद्ये न च मैथुने ।
प्रवृत्तिरेषा भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफला ॥ १ ॥

भावार्थ–" मांस भक्षण करवामां, मद्य–मदिरा पान करवामां अने विषय सुख सेववामां दोष नथी. केमके प्राणीओनी एवीज प्रवृत्ति छे, परंतु ते मांस भक्षण विगेरेथी निवृत्त थवामां मोटुं फळ छे."

तेओ कोइ युवान स्त्रीने उद्देशीने कहे छे के---

पिब खाद च चारुलोचने, यदतीतं वरगात्रि तन्न ते ।
न हि भीरु गतं निवर्तते, समुदयमात्रमिदं कलेवरम् ॥ १ ॥

भावार्थ–"हे सुन्दर नेत्रवाळी स्त्री ! तुं यथेच्छ खा, अने पी. हे सुंदर गात्रवाळी ! जे आ तारी युवावस्था गइ, ते तारी नथी अर्थात् पाछी फरीथी तने मळवानी नथी, केमके हे भीरु स्त्री ! जे कांइ गयुं ते पाछुं आवतुं नथी. अने आ शरीर तो मात्र प्राहुणा जेवुं (थोडी मुद्दत रहेवानुं) छे."

प्रथम श्लोकमां शाक्यादि लख्युं छे, ते आदि शब्दथी एकांत नयने अंगीकार करनारा सर्वे मिथ्यादृष्टि समजवा. कह्युं छे के—

जावइया वयणपहा, तावइया चेव हुंति नयवाया ।
जावइया नयवाया, तावइयं चेव मिच्छत्तं ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेटला वचन रचना छे, ते सर्वे नयवाद छे. अने जेटला नयवाद छे, तेटला मिथ्यात्वना प्रकार छे."

तेथी शाक्य मतवाळानो तथा अन्य मिथ्यादृष्टिओनो पण संग वर्जवो. वळी कुदृष्टि एटले जेमनुं दर्शन (शासन) कुत्सित छे—निंद्य छे तेवा कुदृष्टि त्रणसो ने त्रेसठ प्रकारना होय छे. आगममां तेना भेद आ प्रमाणे देखाड्या छे.

असियसय किरियाणं, अकिरियवाईण होइ चुलसी उ ।
अन्नाणिय सत्तट्ठी, वेणइयाणं च बत्तीसं ॥ १ ॥

भावार्थ—" क्रियावादीना एकसो ने एंशी भेद छे, अक्रियावादीना चोराशी भेद छे. अज्ञानवादीना सडसठ भेद छे अने विनयवादीना बत्रीस भेद छे" कुल ३६३ भेद छे.

तेवा कुदृष्टिना संगनो त्याग करवो. तथा बौद्ध एटले क्षणिकवादी तेमनो तथा मिथ्याभाषी—नास्तिको, तेमनो संग शुद्ध बुद्धिवाळा भव्यप्राणीओए सर्वथा प्रकारे तत्काळ वर्जवो. ते चोथी पाखंडि संग वर्जन रूप श्रद्धा जाणवी. आ हकीकतने दृढ करवा माटे इन्द्रभूति (गौतम)नुं दृष्टान्त कहे छे—

इंद्रभुति [गौतमस्वामी] नुं दृष्टांत

गुरुं वीरं च संप्राप्य, इन्द्रभूतिर्गणाधिपः ।
जातः कुसंगत्यागेन, सद्धर्मकथने रतः ॥ १ ॥

भावार्थ " इन्द्रभूति (गौतम) गणधर महावीरस्वामी गुरुने पामीने कुसंगनो त्याग करी सद्धर्मनी प्ररुपणा करवामां आसक्त थया."

श्रीमहावीरस्वामी केवळज्ञान पाम्या पछी अपापा नगरीना महसेन नामना उद्यानमां समवसर्या. ते गाममां सोमिल नामना ब्राह्मणने घेर यज्ञने माटे अगीयार विद्वान ब्राह्मणो मळ्या हता. तेमां इन्द्रभूति, अग्निभूति विगेरे पांच पंडितो पांचसो पांचसो शिष्यो सहित आव्या हता. बे पंडितो साडात्रणसो साडात्रणसो शिष्यो सहित आव्या हता. अने चार पंडितो त्रणसो त्रणसो शिष्यो सहित आव्या हता. ए प्रमाणे ४४०० ब्राह्मणो एकठा मळ्या हता. ते समये श्री वीरप्रभुने वांदवा माटे आकाश मार्गे आवता असंख्य सुर

असुरने जोइने तथा देवदुन्दुभिना ध्वनिने सांभळीने ते पंडितो बोल्या के "अहो! अमारा यज्ञमंत्रोना आकर्षणथी आकर्षाइने आ देवो साक्षात् अहीं आवे छे" परंतु ते देवताओने चांडालना पाडानी जेम ते यज्ञना स्थानने तजीने प्रभुपासे जता जोया, तेथी ते सर्वे ब्राह्मणो खेद पाम्या. तेओए लोकोना मुखथी सांभळ्युं के "आ देवताओ सर्वज्ञने वांदवा जाय छे." ते सांभळीने ते सर्व ब्राह्मणोमां मुख्य इन्द्रभूति हतो, तेणे विचार कर्यो के "अहो! हुं एकज सर्वज्ञ छतां शुं बीजो पण कोइ मनुष्य पोतानुं सर्वज्ञपणुं प्रसिद्ध करे छे? कदाच कोइ धूर्त मूर्ख जनोने छेतरे. पण अहो! आ धूर्ते तो देवोने पण छेतर्या जणाय छे के जेथी सरोवरने छोडी जता देडकानी जेम, सारा वृक्षने तजी जता ऊंटोनी जेम, सूर्यना तेजने तजी जता घुवडोनी जेम अने सुगुरुने छोडी जता कुशिष्योनी जेम आ देवो यज्ञमंडपने तथा मने सर्वज्ञने पण छोडीने तेनी पासे जाय छे. अथवा जेवो ए सर्वज्ञ हशे, तेवा ज आ देवो पण हशे. तोपण हुं आवा इन्द्रजाळीने सहन करी शकतो नथी. केमके आकाशमां बे सूर्य होइ शके नहीं, एक गुफामां बे केसरी सिंह रही शके नहीं अने एक म्यानमां बे तरवारो रही शके नहीं." ए प्रमाणे विचार करता ते इन्द्रभूतिए प्रभुने वांदीने पाछा आवता लोकोने जोइने पूछ्युं के "हे लोको! ते सर्वज्ञ केवो छे?" त्यारे लोकोए तेमना आठ प्रातिहार्य विगेरेनुं स्वरूप कह्युं. अने बोल्या के—

यदि त्रिलोकी गणनापरा स्यात्तस्याः समाप्तिर्यदि नायुषःस्यात् ।
परेपरार्ध्यं गणितं यदि स्याद्गणेयनिःशेषगुणोऽपि स स्यात् ॥१॥

भावार्थ—"जो कदाच त्रण जगतना जीवो ते भगवानना गुणोनी गणना करवा तत्पर थाय, तेमां पण तेमना आयुष्यनी समाप्ति न होय, अने परार्धथी पण अधिक संख्याना अंक होय, तो ते भगवानना समग्र गुणोनी गणना कदाच थइ शके!"

आ प्रमाणे लोकोना मुखथी सांभळीने इन्द्रभूति विचार करवा लाग्यो के "खरेखर आ कोइ महाधूर्त जणाय छे, के जेणे सर्व लोकोने भ्रममां नांख्या छे. परंतु सूर्य जेम अंधकारने सहन न करे, अने सिंह जेम पोतानी केशवाळीना छेदने सहन न करे, तेम हुं तेने सहन करी शकीश नहीं. में मोटा मोटा वादी-

ओने मोटी सन्नामां मौन धारण कराव्युं छे, तो आ मात्र घरमाज शूरवीर एवो मारी पासे कोण मात्र छे ? जे वायुए मोटा हाथीओने उमाडी दीधा छे, तेनी पासे रुनुं पुंजडुं शा हिसाबमां छे ?" आवां तेनां वचनो सांन्नळीने अग्निन्नूति बो-ल्यो के "हे भाइ! आवा सामान्य धूर्त उपर तमारे शा माटे पराक्रम फोरववुं जोइए? शुं पक्षिराज (गरुड) नाना कीडाओ उपर पोतानुं पराक्रम वापरे छे ? माटे आवा वादीकीट उपर तमारे जाते शा माटे प्रयत्न करवो जोइए ? हे बन्धु ! हुंज तेनी पासे जइश. एक कमळनो छोड उखेडवा सारु शा माटे ऐरावण हाथीने लइ ज-वो जोइए ?" ते सांन्नळीने गौतमे पोताना न्नाइ अग्निभूतिने कह्युं के "हे न्नाइ ! में सर्व वादीओनो पराजय कर्यो छे, छतां आ मगना पाकमां रहेला कोरडुनी जेम, घाणीमां आखा रहेला तलना कणनी जेम, अने अगस्तिए समुद्रनुं पान करतां बाकी रहेला जळबिंदुनी जेम नाना खावोचीआ जेवो बाकी रह्यो छे. परंतु तेने ए-कने जित्याविना बधाने जित्या ते न जित्या बराबर ठरे छे, केमके एकवार शीयळ-नुं खंडन करनार सती स्त्री कायमने माटे असती कहेवाय छे. समुद्रमां रहेला वहा-णमां एक नानुं पण छिद्र होय, तो ते समग्र वहाणने डूबावी दे छे. अहो ! मारा न्नयने लीधे गौड देशना पंमितो तो दूर देश जता रह्या छे, गुजरातना विद्वानो जर्जरित थइने त्रास पाम्या छे, मालव देशना पंमितो तो मृत्यु पामी गया छे, अ-ने तिलंग देशमां उदय पामेला पंमितो अस्तने पाम्या छे. विश्वने विषे मारी सामे वाद करे एवो एक पण पंमित रह्यो नथी. मात्र आ एकज धूर्त जेम देडको कृष्ण सर्पने लात मारवा तैयार थाय, जेम बळद ऐरावण हाथीने शींगडा मारवा तैयार थाय अने जेम हाथी पोताना दांत वडे पर्वतने पाडवा यत्न करे, तेम मारी साथे वाद करवा इच्छे छे. अथवा आणे अहीं आवीने मने जे क्रोध पमाड्यो छे, ते तेणे सूतेलो सिंह जगाड्यो छे. पोतानी आजीविकानी अने यशनी हानि पहों-चाडवा माटे तेणे आवुं अविचारी कृत्य शुं कर्युं ? आणे वायुनी सन्मुख रहीने अग्नि सळगाव्यो छे, देहना सुखने माटे कौंचलतानुं तेणे आलिंगन[1] कर्युं छे, अने शेषनागनी फणा उपरनो मणि लेवा माटे तेणे हाथ लांबो कर्यो छे. अरे ज्यांसुधी सूर्यनो उदय थयो न होय, त्यांसुधीज खद्योत अने चंद्र प्रकाश करी शके छे पण सूर्यनो उदय थयो एटले खद्योत अने चंद्र क्यांइ जता रहे छे. ए-

---

१ कौंचानो स्पर्श मात्र करवाथी आखे शरीरे चळ उठे छे तो तेने आलिंगन करवाथी शुं न थाय ?

कज सिंहना नाद वडे सर्व पशुओ नाशी जाय छे. ज्यांसुधी गुफामां रहेला सिंहना पूंछडाना झपाटानो शब्द सांभळ्यो नथी, त्यांसुधीज मदोन्मत्त हाथी काळा मेघनी जेवी गर्जना करे छे. परंतु जेम दुष्काळमां भूख्या माणसने क्यांइथी अन्न मळी जाय तेम मने आजे मारा भाग्यवशात् आ वादी मळ्यो छे. माटे हवे हुं तेनी पासे जाउं. यमराजने कांइ मालवदेश दूर नथी, चक्रवर्तीने कांइ पण अजेय नथी, पंडितोने कांइ अजाण्युं नथी, अने कल्पवृक्षने कांइ पण न आपवा लायक होतुं नथी. तेथी आजे तेनी पासे जइने तेनुं पराक्रम जोइ लउं. साहित्य शास्त्र, न्याय शास्त्र, व्याकरण शास्त्र, छंदः शास्त्र अने अलंकार शास्त्र विगेरे सर्व शास्त्रोमां हुं निपुण छुं. क्या शास्त्रमां मारो प्रयास नथी ? तेथी आ वादीने हुं जितुं, अने तेना सर्वज्ञपणाना आडंबरने दूर करुं."

पछी गर्विष्ठपणाना वचनोने बोलता ते इन्द्रभूतिए देहनी कांति वधारवाने माटे पोताना शरीरपर बार तिलको कर्या, सुवर्णनुं यज्ञोपवीत धारण कर्युं, अने उत्तम वस्त्रो पहेर्यां. ए प्रमाणे महा आडंबर करीने पोताना पांचसो शिष्यो सहित चाल्यो. ते वखते तेना शिष्यो तेनी बिरुदावळी बोलवा लाग्या के "जेना कंठमां सरस्वती देवी आभूषण रूपे रही छे, जेणे सर्व पुराणो जाणेलां छे, जे वादी रूपी केळने कृपाण (खड्ग) समान छे, वळी वादी रूपी अंधकारने दूर करवामां सूर्य समान, वादी रूपी घंटीने तोडवामां मुद्‌गर समान, सर्व शास्त्रोना आधारभूत, साक्षात् परमेश्वर स्वरूप, वादी रूपी घुवडने नष्ट करवामां सूर्य समान, वादी रूपी समुद्रनुं शोषण करवामां अगस्त्य ऋषि समान, वादी रूपी पतंगीयाने भस्म करवामां दीपक समान, वादी रूपी ज्वरनो नाश करवामां धन्वन्तरी वैद्य समान, सरस्वतीनी कृपानां पात्र, अने बृहस्पति (देवगुरु) पण जेना शिष्य रूप छे, एवा हे भगवान ! तमे जय पामो." आवी रीते शिष्योना मुखथी बोलाती बिरुदावळीनुं श्रवण करतो ते गौतम आगळ चाल्यो.

समवसरणनी नजीक आवतां अशोकादिक अतिशयोने जोइने तथा जातिवैरवाळा प्राणीओने वैरनो त्याग करीने एकत्र रहेला जोइने ते बोल्यो के "अहो ! आतो कोइ महाधूर्त जणाय छे." त्यारे तेना छात्रो (शिष्यो) बोल्या के "हे पूज्य गुरु ! अमे आपनी कृपावडे हमेशां करोडो वादीओनो जय करवामां समर्थ छीए, तो आ एकनो पराजय करवो, तेमां तो शुं ? अमारामांनो एकज छात्र

तेनो निग्रह करवा समर्थ छे." ते सांभळी गौतम समवसरणनी नजीक गयो. समवसरणना पहेला पगथिया उपर चडी श्री वीरप्रभुने जोतांज तेने शंका (भय) उत्पन्न थइ. ते आश्चर्य पामीने विचारवा लाग्यो के " अहो ! आ ते कोण छे ? शुं सूर्य छे ? ना, सूर्यतो उष्ण किरणवाळो छे. त्यारे शुं आ चंद्र छे ? ना, तेने तो कलंक छे. त्यारे शुं मेरुपर्वत छे ? ना, ते तो अत्यंत कठिन छे. त्यारे शुं आ विष्णु छे ? ना, ते तो काळो छे. त्यारे शुं ब्रह्मा छे ? ना, ते तो जरावडे आतुर छे अने वळी जरा (वृद्धावस्था)थी व्याप्त छे. त्यारे शुं कामदेव छे ? ना, ते तो शरीर विनानो छे. त्यारे शुं महादेव छे ? ना, ते तो कंठमां रहेला शेषनागथी भयंकर छे. परंतु आतो सर्व दोषथी रहित अने समग्र गुणसमूहथी व्याप्त छे. माटे जरूर आ तो छेल्ला तीर्थंकरज होवा जोइए. सूर्यनी जेम आना सामुं पण जोइ शकाय तेम नथी अने दुस्तर समुद्रनी जेम आने उल्लंघन करी शकाय तेम नथी. हवे आनी पासे मारे मारुं महत्त्व शी रीते साचववुं ? अरे ! में मूर्खाए सिंहना मुखमां हाथ नांख्यो अने वेरडीना झाडने आलिंगन कर्युं, मारे तो एक तरफ पूरथी भरेली नदी अने बीजी तरफ वाघ ए न्यायना जेवुं थयुं. वळी एक खीलीने माटे आखो प्रासाद भांगवा कोण इच्छे ? सुतरना तांतणा माटे आखो हार कोण तोडे ? राख माटे चंदनना लाकडां कोण बाळे ? लोढा माटे समुद्रमां रहेला वहाणने कोण भांगे ? पण में तो ए सघळुं करनारनी जेम अविचारी कृत्य कर्युं छे. में दुर्बुद्धिए जगदीश्वरने जीतवानी इच्छा करी अने ते माटे अहीं आव्यो. परंतु आ जगन्नाथे कोइ पण दिव्यप्रयोगथी मारुं मन वश करी लीधुं के जेथी मारी आवी बुद्धि थइ. हवे आनी पासे हुं एक अक्षर पण शी रीते बोली शकुं ? अने तेनी पासे पण शी रीते जइ शकुं ? आ समये तो जन्मथीज आरंभीने सेवन करेला शंकर जो मारा यशनुं रक्षण करे, तो बहु सारुं. अथवा तो त्रण जगतने जीतनार आ प्रभुनी पासे शंकर पण शुं करी शके ? ते तो अत्यारे क्यांइ नाशी गया जणाय छे. परंतु कोइ पण प्रकारे भाग्यना वशथी जो अहीं मारो जय थाय, तो तो हुं त्रण भुवनमां पंडितशिरोमणि थाउं."

आ प्रमाणे ते विचार करता हता, तेटलामां भगवंते तेने बोलाव्या के " हे इन्द्रभूति गौतम ! तमने सुख साता वर्त्ते छे ? " ते सांभळीने गौतमे विचार्युं के " अहो ! शुं आ मारुं नाम पण जाणे छे ? अथवा तो भण

जगतमां प्रसिद्ध एवा मारा नामने कोण न जाणे ? बाळ गोपाळथी आरंभीने सर्व कोइ सूर्यने जाणेज छे, ते कोइनाथी छानो रहेतो नथी. परंतु आणे मने मधुर वाक्यथी बोलाव्यो तेथी हुं धारुं छुं के ते मारी साथे वाद विवाद करवामां बीहे छे. पण हुं एवा मीष्ट वचनथी संतोष पामुं तेम नथी, जो ए मारा मनना संशयने दूर करे, तो हुं तेने खरा सर्वज्ञ समजुं अने त्यारेज मन आश्चर्य उत्पन्न थाय." गौतम आ प्रमाणे विचारे छे तेवामां भगवान बोल्या के "हे गौतम ! जीव छे के नहि ? ते विषे तमारा मनमां संशय छे. चारे प्रमाणथी (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान अने शब्द प्रमाणथी) जीव ग्राह्य थइ शकतो नथी, माटे जीव छे ज नहीं एवुं तमारुं मानवुं छे, पण ते असत्य छे. कारण के तमे वेदपदनो खरो अर्थ जाणता नथी, तेथीज तमने आ संशय उत्पन्न थयो छे. वेदमां कह्युं छे के—

"विज्ञानघन एतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति न प्रेत्यसंज्ञास्ति" विज्ञान घन केº जीव आ पंच महाभूत थकी उत्पन्न थइने पाछो ते पंच महाभूतमांज विनाश पामे छे तेथी तेनी प्रेत्यकेº परलोक संज्ञा नथी." आवो अर्थ करीने तमे जीवनो अभाव सिद्ध करो छो, पण ते अर्थ अयुक्त छे. केमके विज्ञानघननो अर्थ जीव नथी, पण पांच इन्द्रियो छे. तेथी थतुं घटादि पदार्थोनुं जे ज्ञान ते घटादि पदार्थ नाश पामे सते नाश पामे छे, तेथी तेनी प्रेत्य संज्ञा नथी. (आ पदनुं सर्व युक्तिओ सहीत व्याख्यान श्री विविशेषावश्यकथी जाणी लेवुं.) तेमज हे गौतम ! जेम दूधमां घी छे, तलमां तेल छे, काष्ठमां अग्नि छे, पुष्पमां सुगन्ध छे तथा चंद्रज्योत्स्नामां अमृत छे, तेम जीव पण देहमां रहेलो छे. माटे जीव छे, एम सिद्ध थाय छे."

इत्यादि युक्ति युक्त, जन्म मरण रहित एवा भगवानतुं वचन सांभळीने गौतमनो संशय दूर थयो. तेथी तेणे पांचसो शिष्यो सहित भगवाननी पासे प्रव्रज्या अंगीकार करी. पछी प्रभुना मुखथी "उपज्जएइ वा, विगमए वा, धुवए वा"— उत्पन्न थाय छे, मरे छे अने निश्चळ भाव छे. ए त्रिपदीने पामीने तेमणे द्वादशांगीनी रचना करी. तेमां 'उपज्जए' एटले जीवथी जीव उत्पन्न थाय छे ते नरनारीथी गर्भ उत्पन्न थाय छे ते, जीवथी अजीव उत्पन्न थाय छे ते देहथी नख

विगेरे उत्पन्न थाय छे ते, अजीवथी अजीव उत्पन्न थाय छे ते इंटादिकना चूर्णनी जेम अने अजीवथी जीव उत्पन्न थाय छे ते परसेवाथी जु विगेरेनी उत्पत्तिनी जेम. एवी रीते विगम—नाशमां पण चार भांगा समजवा. जीवथी*जीव नाश पामे छे, जीवथी अजीव नाश पामे छे, अजीवथी जीव नाश पामे छे अने अजीवथी अजीव नाश पामे छे. ध्रुवपणामां नित्य, अछेद्य, अभेद्यादिक जीवनुं स्वरूप जाणवुं.

गौतमे दीक्षा लीधानी वात सांभळीने अग्निभूति विगेरे बीजा दश पंडितो पण अनुक्रमे भगवाननी पासे आव्या. अने तेमना संशयो दूर थवाथी ते सर्वेए पण पोतपोताना शिष्यो सहित दीक्षा लीधी.

" हे भव्य प्राणीओ ! आ गौतम गणधरनुं गुणोना मंदिर जेवुं अने सर्व सुखने आपनारुं चरित्र सांभळो के जेथी मिथ्या दर्शननो नाश थाय अने मोक्ष सुखने प्राप्त करनारुं सम्यग्दर्शन प्राप्त थाय. "

---

१ जीव छकाय जीवोनी उपमर्दना करे छे ते.

२ जीव घटादि पदार्थोनो नाश करे छे ते.

३ खड्गादिकथी अथवा सोमलादिकथी जीव मरण पामे छे ते

४ घडा साथे पथ्थर अफळावाथी घडुं नाश पामे छे ते.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम स्तंभे अष्टमं व्याख्यानम् ॥८॥

व्याख्यान ९ मुं.

समकितना त्रण लिंगमांहेना पहेला शुश्रूषा नामना लिंग विषे.

शुश्रूषा भगवद्वाक्ये, रागो धर्मे जिनोदिते ।
वैयावृत्त्यं जिने साधौ, चेति लिंगं त्रिधा भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" श्री जिनेश्वरना वाक्यने विषे शुश्रूषा एटले सांभळवानी इच्छा, जिनेश्वरे कहेला धर्मने विषे राग–प्रीति अने जिनेश्वर तथा साधुओनुं वैयावृत्त्य–ए त्रण समकितनां लिंग छे. "

श्री अरिहंते कहेला वचनने सांभळवानी इच्छा निरंतर राखवी. केमके जिनवचन श्रवण कर्याविना कांइ पण ज्ञानादिक गुण प्राप्त थतो नथी. आगममां कह्युं छे के—

सवणेण य नाणेय, विन्नाणे पच्चक्खाणे य संजमे ।
अनिह्नए तवे चेव, वोदाणे अकिरिय निव्वाणे ॥ १ ॥

भावार्थ—" शास्त्र श्रवण करवाथी ज्ञान थाय, ज्ञानथी विज्ञान थाय, विज्ञानथी पच्चख्खाण थाय, पच्चख्खाणथी संयम थाय, संयमवडे दोष रहित तप थाय, तपथी क्रियारहितपणुं प्राप्त थाय, पूर्व कर्म निर्जरे, नवा न बांधे अने क्रियारहित थवाथी निर्वाण–मोक्ष प्राप्त थाय."

श्रीहरिभद्र सूरिए पण तेमज कह्युं छे के—

क्षारांभस्त्यागतो यद्वन्मधुरोदकयोगतः ।
बीजं प्ररोहमादत्ते तद्वत्तत्त्वश्रुतेर्नरः ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेम खारा जळना त्यागथी अने मीठा जळना योगथी बीज अंकुराने पामे छे, तेम तत्त्वज्ञानना श्रवणथी मनुष्य ज्ञानने पामे छे—ज्ञानरूप अंकुरा प्रगटे छे. "

तेथी करीने आ शुश्रूषा समकितनुं प्रथम लिंग छे. तेनी उपर सुदर्शन श्रेष्ठीनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

सुदर्शन श्रेष्ठी तथा अर्जुन माळीनुं दृष्टान्त.

राजगृह नगरमां अर्जुन नामनो एक माळी रहेतो हतो. तेने अत्यंत सुंदर अने युवावस्थाथी मनोहर बंधुमती नामे स्त्री हती. ते माळीने नगरनी बहार पचरंगी पुष्पोवाळो एक सुंदर बाग हतो. ते बागनी नजीकमां एक यक्षनुं देवळ हतुं. तेमां हजार पळनुं लोढानुं मुद्गर धारण करीने उभेली मुद्गरपाणि नामना यक्षनी मूर्त्ति हती. ते यक्षनी पोताना कुळदेवतानी जेम ते माळी पोतानी स्त्री सहित नित्य अर्चा करतो हतो. एकदा महोत्सवनो दिवस होवाथी कोइ छ पुरुषो फरता फरता मुद्गरपाणि यक्षना देरामां आवी आनंद करता बेठा हता. तेवामां अर्जुन माळी पोतानी स्त्री सहित सुंदर पुष्पो लइने यक्षनी पूजा करवा आव्यो. तेने आवतो जोइने पेला छए मित्रोए परस्पर विचार कर्यो के " आ माळीनी स्त्री अति स्वरूपवान छे, माटे आ माळीने बांधी लइने तेनी समक्ष ज तेनी स्त्री साथे आपणे क्रीडा करीए. " एम निश्चय करीने तेओ बारणानी पाछळ छूपी रीते उभा रह्या. पेलो माळी देरामां आवी पुष्प विगेरेथी यक्षनी पूजा करीने पंचांग प्रणाम करवा लाग्यो. ते वखते पेला छए मित्रोए एकदम बहार आवीने तेने बांधी लीधो. पछी तेनी समक्ष तेनी स्त्री साथे विलास करवा लाग्या. ते जोइने अर्जुन माळीने विचार थयो के " मारा जीवतरने धिक्कार छे. केमके—

> **सह्यन्ते प्राणिभिर्बाढं, पितृमातृपराभवाः ।**
> **नार्यापराभवं सोढुं, तिर्यञ्चोऽपि न हि क्षमाः ॥ १ ॥**

" प्राणीओ पिताना के माताना पराभवने सहन करी शके छे, पण स्त्रीना पराभवने सहन करवामां तिर्यंचो पण समर्थ नथी. "

अहो ! मारा देखतां ज आ पशु जेवा पुरुषो पशुधर्मनुं आचरण करे छे. " एम विचारतो ते अर्जुन माळी मनमां ने मनमां यक्षने उपालंभ देवा लाग्यो के–" हे यक्ष ! खरेखर तुं पथ्थरमयज देव छे, आटला काळ सुधी में तारी पूजा

करी, तेनुं मने आ फ़ळ मळ्युं." ते समये यक्षे ज्ञानवमे ते सर्व जाण्युं, एटले माळीना वचनथी अत्यंत क्रोधायमान थइने तेणे तेना देहमां प्रवेश कर्यो. पछी बांधेला सर्व बंधन तोमीनें लोढानो मुद्गर उपामी तेना वमे बंधुमती सहित छए मित्रोने चूर्ण करी नांख्या. त्यारथी आरंनीने अर्जुनना शरीरमां रहेलो ते यक्ष हमेशां एक स्त्री सहित छ पुरुषोने ज्यां सुधी मारतो नहीं, त्यां सुधी तेनो क्रोध शान्त थतो नहीं. आ सर्व वृत्तांत जाणीने ते नगरना राजा श्रेणिके पटह वगमावीने सर्व पौरजनोने खबर आपी के "ज्यां सुधी ते अर्जुने सात माणसो मार्या न होय, त्यां सुधी कोइए नगर बहार नीकळवुं नहीं."

आ अवसरे श्री वीर प्रनु ते नगरना उद्यानमां समवसर्या. तेमनुं आगमन सुदर्शन नामना महा श्रावके सांनळ्युं, तेथी आनंद पामीने जिनेश्वरना वचनामृतने पीवानी इच्छावाळा तेणे "हुं जिनेश्वरने वांदवा जाउं बुं" एम कही मावापनी रजा मागी. ते सांनळीने तेओ बोल्या के "हे वत्स! त्यां जतां तने उपसर्ग थशे, माटे अहींज रहीने भावथी प्रनुने वंदना कर." सुदर्शन बोल्यो "हे मात पिता! त्रण जगतना गुरु श्री जिनेन्द्रना मुखथी उपदेशनुं श्रवण कर्या विना मारे नोजन करवुं पण कल्पे नहीं." ए प्रमाणे कही मात पितानी रजा लइ सुदर्शन श्रीवीर प्रभुने वांदवा चाल्यो. मार्गे चालतां तेणे क्रोधथी मुद्गर उंचो करीने जाणे कोप पामेलो यमराज ज होय नहीं तेम अर्जुन माळीने दूरथी आवतो जोयो. एटले तरतज नय रहित सुदर्शन शेठ पोताना वस्त्रना छेडा वमे पृथ्वीनुं प्रमार्जन करीने त्यां बेठो. पछी जिनेश्वरने नमस्कार करी, चार शरण अंगीकार करी, सर्व प्राणीओनें खमावी, सागारी अनशन करी, उपसर्गनो नाश थया पछी ज पारीश, एवो निश्चय करीने कायोत्सर्ग कर्यो अने पंच परमेष्ठी महामंत्रनुं स्मरण करवा लाग्यो. अर्जुन माळीना शरीरमां रहेलो यक्ष तेनी पासे आव्यो, पण मंत्रथी विष रहित करेला अने खीली लीधेला सर्पनी जेम ते तेनो पराभव करवा शक्तिवान थयो नहीं, तेनो रोष नष्ट थइ गयो. पछी नय पामीने पोतानो मुद्गर लइ ते यक्ष अर्जुनना शरीरमांथी नीकळी गयो. यक्षना प्रवेशथी मुक्त थयेलो अर्जुन पण कापेला वृक्षनी जेम तरत पृथ्वी पर पमी गयो. पछी थोमी वारे शुद्धिमां आवेला अर्जुने सुदर्शन श्रेष्ठीने जोइ तेने पूछ्युं के "तमे कोण छो? अने क्यां जाओ छो?" श्रेष्ठीए कह्युं के "हुं

सुदर्शन नामे श्रेष्ठी छुं. अने श्रीवीर प्रभुने वांदवा जाउं छुं. तुं पण ते सर्वज्ञने वांदवा चाल." ते सांभळीने अर्जुन पण तेमनी साथे भगवानना समवसरणमां गयो. प्रभुने वांदीने ते बन्नेए आ प्रमाणे देशना सांभळी—

"हे भव्य प्राणीओ! मोहथी अन्ध थयेला आ जगतमां मनुष्य जन्म, आर्य देश, उत्तम कुळ, श्रद्धालुपणुं, गुरुवचननुं श्रवण अने कृत्याकृत्यनो विवेक ए मोक्षरूपी महेल पर चढवाना पगथियांनी पंक्ति छे. ते पूर्वे करेला सुकृतना योगथीज पमाय छे." इत्यादि देशना सांभळीने केटलाक नियम ग्रहण करी सुदर्शन शेठ पोताने घेर गया.

अर्जुन माळीए वैराग्य उत्पन्न थवाथी पूर्वे करेला वध संबंधी पापने हणवा माटे भगवाननी पासे दीक्षा लीधी. अने ते साथेज तेणे अभिग्रह लीधो के "हे विभु! आजथी आरंभीने मारे आपनी आज्ञाथी निरंतर षष्ठ (छठ) तप करवा वडे आत्माने भावता सता विचरवुं." स्वामीए तेने योग्य जाणीने तेम करवानी आज्ञा आपी. पछी अर्जुन मुनि छठ छठनो तप करता विचरवा लाग्या. पारणाने दिवसे गोचरी माटे ते गाममां जता त्यारे तेने जोइने लोको कहेवा के "आणे मारा पिताने मारी नांख्यो छे, कोइ कहेतुं के आणे मारी माताने मारी नांखी छे" एम कोइ भाइने, कोइ बेनने अने कोइ स्त्रीने मारी नाखवानुं कही कहीने ते मुनिने गाळो देवा लाग्या, आक्रोश करवा लाग्या, मारवा लाग्या, हिलना करवा लाग्या अने निंदवा लाग्या. पण ते मुनि तेमनापर मनथी पण खेद पाम्याविना सर्व उपसर्ग सम्यग् प्रकारे सहन करवा लाग्या. एम करतां कोइ वखत पारणाने दिवसे कांइ आहार मळतो, तो ते भगवानने निवेदन करीने मूर्छा रहितपणे वापरता. ए प्रमाणे उदार तपकर्मवडे आत्माने भावतां ते अर्जुनमाळी मुनिए कांइक उणा छमास व्यतीत कर्या. प्रांते अर्धा मासनी संलेखना करीने अंतकृत केवळी थइने अनन्तचतुष्टयवाळा मोक्ष पदने पाम्या.

हमेशां सात मनुष्योनो वध करनार अर्जुन माळी, वीर भगवानने पामीने, अनुपम अभिग्रहनुं पालन करी छेवट अन्तकृत केवळी थइ सिद्ध पदने पाम्यो अने सुदर्शन श्रेष्ठी पण स्वर्गना सुख पाम्यो.

"हे भव्य जीवो! आगमनुं श्रवण करवामां जेनुं चित्त आदरवाळुं छे

एवा सुदर्शन श्रेष्ठीनुं आ चरित्र सांभळीने भवसागर तरवामां नौका समान धर्मनुं श्रवण करवामां निरंतर यत्न करो."

आ संबंध अंतगडदशांग सूत्रमां पण कहेलो छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम
स्तंभे नवमं व्याख्यानम् ॥९॥

व्याख्यान १० मुं.

समकितना बीजा धर्मराग रूप लिंग विषे.

पाछला व्याख्यानना प्रारंभना श्लोकमां 'रागो धर्मे जिनोदिते' ए बीजुं पद कह्युं छे. तेमां 'जिन' एटले रागद्वेष रहित जे तीर्थंकर तेमणे कहेलो 'धर्म' जे यतिधर्म अने श्रावक धर्म, तेने विषे 'राग' एटले मननी अत्यंत प्रीति राखवी. शुश्रूषा नामना पहेला लिंगमां श्रुतधर्मनो राग इच्छेलो छे, अने अहीं चारित्रधर्म उपरनो राग इच्छयो छे, एटलो ए बन्नेमां तफावत छे. आ प्रसंग उपर चिलातिपुत्रनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

चिलातिपुत्रनुं दृष्टान्त.

तीव्रेण धर्मरागेण, अघं दुष्टमपि स्फुटम् ।
चिलातिपुत्रवत्सद्यः, क्षयीकुर्वन्ति देहिनः ॥ १ ॥

भावार्थ—" प्राणीओ चिलातिपुत्रनी जेम दुष्ट पापने पण धर्म उपरना तीव्र रागवडे तत्काळ क्षय करे छे."

क्षितिप्रतिष्ठ नगरमां यज्ञदेव नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते अनिंद्य एवा जैनधर्मनी निंदा करतो हतो. ते पंडितमानी ब्राह्मणने एकदा वाद करवा माटे

कोइ क्षुल्लक जैन मुनिए बोलाव्यो. ते वखते तेणे शरत करी के " मने जे जीते, तेनो हुं शिष्य थाउं." वाद करतां ते साधुए तेने जीती लीधो, एटले ते पराजय पामीने तेनो शिष्य थयो. एकदा शासन देवताए यज्ञदेव साधुने कह्युं के–"जेम माणस नेत्रवाळो छतां पण सूर्यना प्रकाश विना जोइ शकतो नथी, तेम जीव ज्ञानवाळो छतां पण शुध्ध चारित्र विना मोक्षना सुखने जोइ शकतो नथी, माटे तमे चारित्रमां स्थिर थाओ." शासन देवीए आम कह्या छतां ते ब्राह्मण होवाथी दुगंच्छा छोडतो नहीं. एटले के स्नान, दंतधावन विगेरे न करवाथी तेने दुगंच्छा उत्पन्न थती. तेनी स्त्री तेना परनी प्रीतिने छोडी शकी नहीं, तेथी तेने वश करवा माटे तेणीए कामण कर्युं. तेथी शरीरे पीडा पामता ते ब्राह्मण मुनि शुध्ध चारित्रनुं पालन करीने देवता थया.

ते ब्राह्मणनी स्त्री पोताना कामणथीज पतिनुं मरण थयेलुं जाणीने वैराग्य उत्पन्न थवाथी, चारित्र ग्रहण करी मुनिहत्यानुं पाप आलोच्या विना मरण पामीने स्वर्गे गइ.

ते ब्राह्मणदेव आयुष्य पूर्ण थये चवीने राजगृह नगरमां धना श्रेष्ठीनी चिलाती नामनी दासीनी कुक्षिथी पुत्रपणे उत्पन्न थयो. लोकोमां ते चिलातिपुत्रना नामथी प्रसिध्ध थयो. तेनी स्त्री स्वर्गमांथी चवीने धना श्रेष्ठीना पांच पुत्रो उपर सुसुमा नामनी पुत्री थइ. धना श्रेष्ठीए ते पुत्रीने रमाडवा माटे चिलातिपुत्रनी योजना करी. एकदा चिलातिपुत्रने सुसुमा साथे असभ्य क्रीडा करतो जोइने धना शेठे तेने काढी मूक्यो. ते सिंहगुहा नामनी चोरनी पल्लीमां जइने रह्यो. पल्लीपतिए पोताना अवसान वखते तेने पोताना पुत्रपणे स्थापीने पल्लीपति बनाव्यो. त्यां कामदेवना शस्त्रथी पीडा पामतो चिलातिपुत्र सुसुमानुं वारंवार स्मरण करवा लाग्यो. एकदा ते पापीए सर्व चोरोने कह्युं के—" हे चोरो ! आपणे आजे राजगृह नगरमां धना शेठने घेर चोरी करवा जइए. त्यांथी जे धन प्राप्त थाय ते सर्व तमारे लेवुं, अने तेनी पुत्री सुसुमाने मारे लेवी." ए रीते व्यवस्था करीने रात्रिने समये ते सर्व चोरो धना शेठना घरमां पेठा. पछी धना शेठ विगेरेने अवस्वापिनी आपीने सर्व चोरो धन लइने नीकळी गया, अने चिलातिपुत्र सुसुमाने लइने नीकळ्यो. थोडी वारे श्रेष्ठी जागी उठ्यो. एटले तेणे कळकळाट करीने सर्वने जगाड्या. पछी पोताना पांचे पुत्रो सहित नगरना कोटवाळ विगेरेने साथे लइने श्रेष्ठी चोरोनी

पाछळ चाल्यो. सर्व चोरो तेमने पाछळ आवता जोइने भय पामी सर्व धन छोमी दइने जूदी जूदी दिशामां नाशी गया. ते धन लइने कोटवाळ विगेरे पाछा वळ्या, पण धनो शेठ तो पांचे पुत्रो सहित सुसुमानी शोध माटे आगळ चाल्यो. तेने तरवार सहित आवतो जोइने चिलातिपुत्र खड्ग वडे सुसुमानुं मस्तक कापी धम नीचे नांखी दइ मस्तक हाथमां राखीने उतावळो नासी गयो. धन श्रेष्टी ते स्थाने आव्यो, त्यां सुसुमाने मरेली जोइने घणीवार विलाप करी पाछो वळी पोताना नगरमां आव्यो.

धन श्रेष्ठी बीजे दिवसे पुत्रो सहित श्री वीरप्रज्ञु पासे धर्म सांज्ञळवा गया. प्रज्ञुए उपदेश आप्यो के—" आ जगतमां मनुष्यो ' आ मारो पिता छे, आ मारी माता छे, आ मारा बांधवो छे, आ परिजन छे, आ स्वजनो छे, अने आ द्रव्य में उपार्जन कर्युं छे, एम माने छे. पण ते सर्व यमराजने वश छे एम ते जाणता नथी." इत्यादि जिनेश्वरनी वाणी सांज्ञळीने प्रतिबोध पामेला धन श्रेष्टीए दीक्षा ग्रहण करी. अने तीव्र तपस्या करीने स्वर्गे गया. तेना पांच पुत्रोए श्राद्ध धर्म अंगीकार कर्यो.

अहीं चिलाति दासीनो पुत्र हाथमां सुसुमानुं मस्तक लइने दोड्यो जतो हतो अने ते मस्तकमांथी नीकळता लोही वमे तेनुं आखुं शरीर लीपायुं हतुं. ते थोमे दूर गयो, तेटलामां तेणे एक मुनिने कायोत्सर्गे रहेला जोया. तेने जोइने चिलातिपुत्रे कह्युं के " हे मुनि ! मने जलदी धर्मोपदेश आपो, नहीं तो खड्ग वमे आ स्त्रीना मस्तकनी जेम तमारुं मस्तक पण हुं छेदी नांखीश. " ते सांज्ञळीने मुनिए तेने योग्य पात्र जाणीने संक्षेपथीज ' उपशम विवेक अने संवर ' ए त्रण पद कह्यां. पछी तरतज नवकार मंत्र बोलता ते मुनि आकाश मार्गे उत्पती गया.

मुनिए कहेला पदोने सांज्ञळीने ते चोरपति विचार करवा लाग्यो के " उपशमनो अर्थ शुं ?" पोतेज विचार करीने मनमां बोल्यो के " उपशम एटले क्रोधनी शान्ति, ते उपशम तो मारामां क्यां छे ? बिलकुल नथी. " एम विचारीने तेणे हाथमांथी क्रोधना चिन्हज्ञूत खड्ग नांखी दीधुं. फरी विचार करतां तेणे विवेक पदनो अर्थ जाण्यो के " कृत्य (करवा लायक) ने विषे प्रवृत्ति करवी अने अकृत्यने विषे निवृत्ति करवी, ते विवेक. ते विवेक वमे धर्म थाय छे. तेवो

विवेक मारामां क्यां छे ? केमके दुष्टताने सूचन करनारुं स्त्रीनुं मस्तक तो मारा हाथमां छे." एम विचारीने तेणे स्त्रीना मस्तकनो त्याग कर्यो. पछी संवरनो अर्थ विचारतां तेणे जाएयुं के "पांचे इन्द्रियो अने मननो निरोध करवो, ते संवर. ते संवर मारे स्वेछाचारीने–सर्व प्रकारे मोकळाने क्यांथी होय ? न होय. त्यारे तेने माटे प्रयत्न करवो जोइए." एम विचारीने पेला मुनि ज्यां उभा हता, तेज स्थाने पोते मुनिनी ज जेम कायोत्सर्ग करीने उभो रह्यो. अने प्रतिज्ञा करी के "ज्यां सुधी मने स्त्रीहत्यानुं पाप स्मरणमां आवे, त्यांसुधी मारो देह हुं वोसरावुं छुं. अर्थात् त्यांसुधी मारे कायोत्सर्ग हो."

हवे भावमुनि थयेला चिलातीपुत्रनुं शरीर रुधिरथी व्याप्त हतुं, तेथी तेना गंधथी असंख्य कीडीओ एकठी थइ, अने तेनुं शरीर चालणी जेवुं करी नाख्युं. ते कीडीओ पगमां पेसीने खाती खाती मस्तके नीकळी. आ रीते अढी दिवस सुधी महा तीव्र वेदनाने सहन करतां छतां ते किंचित् पण ध्यानथी चळित थया नहीं. प्रांते आयुष्य पूर्ण थवाथी ते महात्मा मृत्यु पामीने आठमा सहस्रार देवलोकमां देवता थया.

"हे भव्य प्राणीओ ! सद्वाक्यना अर्थने बुद्धि पूर्वक विचारीने चिलातिपुत्रे मोटां पापोनो नाश कर्यो, तेवी रीते तमे पण जो आश्रवोनो त्याग करशो, तो तमारा हाथमां ज मोक्ष लक्ष्मी क्रीडा करशे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ प्रथम स्थंभे दशमं व्याख्यानम् ॥ १० ॥

व्याख्यान ११ मुं.

समकितना त्रीजा वैयावृत्य नामना लिंग विषे.

नवमा व्याख्यानना प्रारंभना श्लोकमां "वैयावृत्त्यं जिने साधौ, चेति लिंगं त्रिधा भवेत्" ए छेल्ला बे पादमां 'जिन' एटले रागादिक अढार

दोषनो जय करनारा देव अने तत्त्वने प्रकाश करनारा तेमज पांच प्रकारना आचार पाळवामां तत्पर 'साधु' ते गुरु. तेमां जिनेश्वरनी द्रव्य पूजा तथा भाव पूजा वडे वैयावृत्त्य करवी अने गुरुनी अशन पानादिक वडे 'वैयावृत्त्य' एटले सेवा अवश्य करवी; ते प्राणीओने मोटो लाभ करनार थाय छे. ए सतकितनुं त्रीजुं लिंग जाणवुं. ते उपर संप्रदायागत नंदिषेणनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

नंदिषेणनुं दृष्टान्त.

> वैयावृत्यं वितन्वानः, साधूनां वरभावतः ।
> वध्नाति तनुमान्नन्दिषणावत् कर्म सुन्दरम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"श्रेष्ठ भावथी साधुओनी वैयावच्च करनार प्राणी नंदिषेण मुनिनी जेम शुभ कर्मने बांधे छे."

नंदि ग्राममां सोमिल नामना ब्राह्मणने सोमिला नामनी स्त्रीथी नंदिषेण नामे पुत्र उत्पन्न थयो हतो. ते पुत्रनी बाल्यावस्थामां ज तेना मा बाप मरण पाम्या हता. नंदिषेण मस्तकना केशथी ते पगना नख सुधी कद्रूपो हतो. बिलाडानी जेम तेना नेत्रो पींजरा हता, गणेशनी जेम तेनुं उदर मोटुं हतुं, उंटनी जेम तेना ओष्ठ लांबा हता, अने हाथीनी जेम तेना दांत बहार नीकळेला हता. तेने दुर्भागी जाणीने तेना स्वजनोए पण तजी दीधो हतो, तेथी ते पोताना मामाने घेर जइ दासकर्म करवा लाग्यो. अत्यंत कद्रूपो होवाथी तेने कोइए कन्या आपी नहीं, तेथी बहु खेद पामेला तेने तेना मामाए कह्युं के "तुं खेद करीश नहीं, मारे सात कन्याओ छे, तेमांथी एक कन्या हुं तने आपीश." एम कहीने तेणे पोतानी पुत्रीओने अनुक्रमे नंदिषेण साथे परणवानुं कह्युं. त्यारे ते सर्वे बोली के "अमे झेर खाइशुं, अथवा गळाफांसो खाइशुं, पण नंदिषेणने अंगीकार नहीं करीए." ते सांभळीने तेनो मामो निरुपाय थयो, तेथी विशेष खेद पामेलो नंदिषेण तेना मामाना घरनो त्याग करी वनमां जइ भृगुपात[१] करीने मरवा तैयार थयो. तेवामां तेने नजीकमां कायोत्सर्गे रहेला एक मुनिए दीठो. तेथी तेने तेम करतो अटकावीने भृगुपात करवानुं कारण पूछ्युं, त्यारे तेणे मुनिने प्रणाम करीने पोतानुं

१ पर्वतना उंचा शिखरपरथी पडतुं मुकी मरीजवुं ते, आने भेरवजव पण कहे छे.

वृत्तांत कही संभळाव्युं. ते सांभळीने मुनि बोल्या के " अरे मुग्ध ! निरंतर मलिन देहवाळी, जेना शरीरना बार द्वारोमांथी मळ वहाज करे छे एवी स्त्रीओमां तुं आसक्ति न राख, वळी आवुं मरण करवाथी कांइ कर्मनो क्षय थवानो नथी, उलटां कर्म वृध्धि पामे छे. परंतु जो तुं सुखनी आशा राखतो होय तो जीवनपर्यंत चारित्र धर्मनी प्रतिपालना कर के जेथी आगामी भवे तुं सुखी था." ते सांभळीने तेणे तरतज ते मुनिनी पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी. गुरु पासे विनय पूर्वक धर्म शास्त्रोनुं पठन करतां ते गीतार्थ थया. अन्यदा ते नंदिषेण मुनिए अभिग्रह कर्यो के 'मारे निरंतर छठ तप करीने पारणाने दिवसे वृध्ध, ग्लान अने नाना साधुओनी वैयावच्च करीने पछी आंबिल करवुं.'

आ प्रमाणेनो अविच्छिन्न अभिग्रह पाळतां एकदा इन्द्रे पोतानी सभामां नंदिषेणनी उग्र तपस्या साथे निश्चळ अभिग्रह विषे प्रशंसा करी. ते पर अविश्वास आववाथी कोइ वे देवताओ तेनी परीक्षा करवा माटे तेनी पासे आव्या. एक देवता ग्लान साधुनुं रूप धारण करीने गाम बहार रह्यो, अने बीजो देव साधुने रूपे नंदिषेण पासे आव्यो. ते वखते नंदिषेण मुनि छठनुं पारणुं होवाथी पच्चक्खाण पारीने भोजन करवा बेसता हता, तेवामां पेला द्रव्यसाधुए भावसाधुने कह्युं के " अरे नंदिषेण! तारो अभिग्रह क्यां गयो ? आ नगरनी बहार एक ग्लान साधु अत्यंत तृषाक्रांत पडेला छे, तेनुं वैयावृत्य कर्या विना खावा केम बेसे छे ? " ते सांभळीने नंदिषेण मुनि पोतानुं भिक्षापात्र बीजा मुनि पासे मूकीने ते ग्लान साधु माटे प्रासुक जळ लेवा नीकळ्या. पेला देवताए देवशक्तिवडे सर्व घरे पाणी अनेषणीय करी मूकेलुं होवाथी नंदिषेण मुनिने घणा घेर फरवुं पड्युं. छेवट एक घेरथी तेने शुध्ध जळ मळ्युं, ते लइने पेला साधु साथे नंदिषेण गाम बहार ग्लान साधु पासे गया. ते ग्लान साधुने अतिसारनो व्याधि थयेलो हतो, तेथी तेनुं शरीर नंदिषेण धोवा लाग्या, ते वखते ते देवे अत्यंत दुर्गंध विकुर्वी. परंतु नंदिषेण तेथी खेद न पामता विचार करवा लाग्या के " अहो ! कर्मनी गति विचित्र छे, ते कोइने छोडतुं नथी." एम शुद्ध भावना भावता ते ग्लान साधुने पोताना खांध पर उपाडीने ते उपाश्रय तरफ चाल्या. मार्गमां ते ग्लान साधुए वारंवार निहार करीने नंदिषेणनुं आखुं शरीर विष्टाथी लींपी दीधुं. तथापि नंदिषेणे जरा पण दुगंछा न करी. अने तेने

तेवी स्थितिमां उपाश्रये लावीने विचारवा लाग्या के " अरे ! आ साधुने हुं केवी रीते रोग रहित करीश ? " एम विचारीने ते पोताना आत्मानी निंदा करवा लाग्या. आवी रीते तेने वैयावृत्त्यने विषे निश्चळ जाणीने ते बन्ने देवो प्रत्यक्ष थया अने तेमने वंदना करी, क्षमा मागी, सुगंध पुष्पोदकनी वृष्टि करीने तेमनी प्रशंसा करता करता स्वर्गे गया.

नंदिषेण मुनिए ' बार हजार वर्ष सुधी तपस्या करी ' एम नेमिचरित्रमां कह्युं छे, अने वसुदेव हिंडिमां पंचावन हजार वर्ष सुधी तपस्या कर्यानुं कहेलुं छे.[१]

छेवट नंदिषेण मुनिए अनशन ग्रहण कर्युं, ते वखते कोइ चक्रवर्ती राजा पोताना सर्व अन्तःपुर सहित तेने वांदवा आव्या. ते चक्रीनी अत्यंत स्वरूपवान स्त्रीओने जोइने पोतानी पूर्व स्थितिनुं स्मरण थतां ते मुनिए " आ तपस्याना प्रजावथी हुं स्त्रीवल्लज थाउं " एवुं नियाणुं कर्युं. पछी ते मुनि काळ धर्म पामीने सातमा महाशुक्र देवलोकमां देवता थया.

देवलोकथी च्यवीने नंदिषेणनो जीव सूर्यपुरमां अंधकवृष्णी राजानी सुजद्रा नामनी राणीथी दशमो वसुदेव नामे पुत्र थयो. ते कुमार पूर्व जन्ममां करेला निदानने लीधे स्त्रीवल्लज थयो. वसुदेव कुमार नगरमां ज्यां ज्यां फरतो, त्यां त्यां नगरनी स्त्रीओ पोताना गृहकार्यो मूकीने तेनी पाछळज जमती हती. तेथी उद्वेग पामेला पौरजनोए समुद्रविजय राजाने विज्ञप्ति पूर्वक ते वृत्तांत जाहेर कर्युं. ते सांजळीने राजाए पौरजनोने सारा उत्तरथी संतोष पमाडी विदाय कर्या. पछी वसुदेवने बोलावीने तेणे कह्युं के " आजथी तारे आपणा राजगढमांज क्रीडा करवी, वहार नीकळवुं नहीं " वसुदेवे ते वाक्य स्वीकार्युं.

एकदा ग्रीष्मऋतुमां शिवा देवीए समुद्रविजयने विलेपन करवा माटे मोकलेलुं चंदननुं कचोलुं लइने जती दासीने जोइने वसुदेव कुमारे पूछ्युं के " हे दासी ! शुं लइ जाय छे ? लाव, मने आप. " दासीए न आप्युं एटले वसुदेवे बळात्कारे तेनी पासेथी लइने पोताने शरीरे विलेपन कर्युं. तेथी रुष्टमान थयेली दासीए कह्युं के " आवा अटकचाळा छो, तेथीज घररूपी केदखानामां राख्या जणाय छे. " ते सांजळीने वसुदेवे पूछ्युं के " ए शी रीते ? " त्यारे तेणीए पौरजनो संबंधी सर्व वृत्तान्त कही बताव्युं. ते सांजळीने पोतानुं अपमान

१ तपस्या करी एटले चारित्र पाळ्युं एम समजवुं. मुनिनुं चारित्र तपोमयज होय छे.

थयेलुं जाणी रोषथी तेज रात्रिए छानी रीते नगरीनी वहार नीकळी गया. अने पोतानी जंघा चीरीने तेना लोही वडे दरवाजाना बारणा उपर तेणे लख्युं के "भाइना अपमानथी वसुदेवे अहीं चितामां प्रवेश कर्यो छे." पछी तेनी नजीकमांज एक चिता रची तेमां कोइ मडदुं सळगावीने वसुदेव देशान्तर चाल्या गया.

गामे गाम फरतां अनुक्रमे बोंतेर हजार विद्याधर विगेरेनी कन्याओने ते परण्या. एकदा शौरिपुरमां रोहिणी राजपुत्रीनो स्वयंवर थतो हतो. ते समये घणा राजाओ अने राजपुत्रो त्यां आव्या हता. वसुदेव पण वामन अने कुब्जनुं रूप करीने त्यां आव्यो. सर्वे लोको तेने वामन रुपे देखता हता अने रोहिणी तेने मुळरुपेज देखती हती. तेथी मोहित थयेली रोहिणीए बीजा सर्वनो त्याग करीने तेना कंठमां वरमाळा आरोपण करी. ते जोइने समुद्रविजय विगेरे राजाओ क्रोध पामीने ते वामन साथे युध्ध करवा तैयार थया. वसुदेवे विचार्युं के 'मोटा भाइनी साथे युध्ध करवुं योग्य नथी.' तेथी तेणे पोताना नामथी अंकित एवुं बाण समुद्रविजय तरफ नांख्युं. ते बाण लइने जोतां 'वसुदेव तमने प्रणाम करे छे" एवा अक्षरो वांची समुद्रविजये जाण्युं के "आ तो मारो नानो भाइ छे. कोइ पण कारणने लीधे तेणे आवुं रूप धारण कर्युं जणाय छे." पछी युध्ध बंध करी सर्वे मळ्या, परस्पर आनंद थयो. अने वसुदेवनी साथे रोहिणीने परणावी. अने तेमने लइने समुद्रविजय पोताने नगरे गया.

केटलेक काळे हाथि, सिंह, चंद्र अने समुद्र ए चार स्वप्नो वडे सूचन करेला बळरामने रोहिणीए जन्म आप्यो. त्यार पछी देवकीए सात स्वप्नथी सूचन करेला वासुदेव (कृष्ण) ने जन्म आप्यो. (आ चरित्रनो विस्तार धर्मदास गणिना करेला ग्रंथथी जाणी लेवो.) आयु पूर्ण थये वसुदेव मृत्यु पामीने स्वर्गे गया.

" त्रीजा वैयावृत्य नामना लिंगने विषे दृढ निश्चयवाळा नंदिषेण मुनिवर राजाओने पण प्रशंसा करवा लायक पदवीने पामीने छेवट मोक्ष सुखने पाम्या.

माटे हे भव्य प्राणीओ! तमे पण वैयावृत्त्यने विषे यत्नवाळा थाओ."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ प्रथम
स्थंभे एकादशं व्याख्यानम् ॥ १ ॥

व्याख्यान १२ मुं.



त्रीजा विनयद्वार विषे कहे छे.

अर्हत्सिध्धमुनीन्द्रेषु, धर्मचैत्यश्रुतेष्वपि ।
तथा प्रवचनाचार्योपाध्यायदर्शनेष्वपि ॥ १ ॥

पूजा प्रशंसनं भक्तिरवर्णवादनाशनम् ।
आशातनापरित्यागः, सम्यक्त्वे विनया दश ॥ २ ॥

भावार्थ—"अर्हत, सिध्ध, मुनि, धर्म, चैत्य, श्रुत, प्रवचन, आचार्य, उपाध्याय अने दर्शनने विषे पूजा, प्रशंसा, भक्ति, अवर्णवादनो नाश अने आशातनानो परित्याग करवो, ए समकित सूचक दश प्रकारनो विनय छे."

विस्तरार्थ—सुर अने असुर विगेरेनी करेली पूजाने जे अर्ह केत लायक होय, ते अर्हत् कहेवाय छे.

उक्कोसं सत्तरिसयं, जहन्न वीसा य दस विहरंति ।
जम्मं पइ उक्कोसं, वीसं दस हुंति जहन्ना ॥ १ ॥

भावार्थ—"एक काळे उत्कृष्टथी एक सो ने सीतेर अने जघन्यथी वीश के दश तीर्थंकरो विचरे छे. जन्म आश्रीने उत्कृष्टथी वीश एक काळे जन्मे छे, अने जघन्यथी एक काळे दश तीर्थंकर जन्म पामे छे."

सिद्ध एटले जेओ कृतकृत्य थया छे ते. मुनि एटले मनन करवाना स्वभाववाळा, सत्य वचनना प्रकाशक. धर्म—एकथी मांडीने क्षांत्यादि दश प्रकारनो. चैत्यो–त्रण भुवनमां रहेला शाश्वता अने अशाश्वता जिनभुवनो. तेमां शाश्वत जिन बिंबोनी संख्या आ प्रमाणे छे.—

देवेसु कोडिसयं, कोडि बावन्न लक्ख चउणवइ।
सहसा चउआलीसं, सत्तसया सठी अपूवहिआ ॥ १ ॥

भावार्थ—" देवलोकने विषे (वैमानिकमां) एकसो बावन करोड, चोराणुं लाख, चुमाळीश हजार, सात सो ने साठ शाश्वता जिनबिंबो छे. "

लक्खतिगं इगनवइ, सहस्स बिसा य तिन्नि सया य ।
जोइस वज्जिऊणं, तिरियं जिणबिंबसंख इमा ॥ २ ॥

भावार्थ—" त्रण लाख एकाणुं हजार त्रणसो ने वीश शाश्वत जिनबिंबो ज्योतिषि शिवाय तिर्छा लोकमां छे. "

तेरस कोडिसयाइं, गुणनवइ कोडि सट्ठि लक्खाइं ।
भुवणवइणं मज्झे, जोइसियभुवणेसु य असंखा ॥ ३ ॥

भावार्थ—" तेरसो ने नेव्याशी करोड अने साठ लाख शाश्वता जिनबिंबो भुवनपतिमां छे, अने ज्योतिषिना भुवन(विमान) मां तो असंख्याता छे."

कोडि सयाइं पन्नरस, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना ।
छत्तीसं पुण सहसाइं, असिइियाउ सव्वग्गं ॥ ४ ॥

भावार्थ—" पनरसो ने बेंतालीश करोड, अठावन लाख, छत्रीश हजार अने एंशी–एटली कुल संख्या शाश्वता जिन बिंबोनी छे. (आ संख्या व्यंतरने ज्योतिषि शिवाय समजवी.) "

अशाश्वता एटले भरतचक्री विगेरेए करावेला जिनबिंबो समजवा.

श्रुत एटले द्वादशांगी विगेरे सूत्रो. प्रवचन—चतुर्विध संघ. आचार्यो—गच्छाधिपतिओ. उपाध्यायो—वाचना आपनारा (मुनिओने भणावनारा). तथा

दर्शन ते जिनशासन अथवा सम्यक्त्व. ए अर्हत आदि दश पदोनी पूजा, प्रशंसा, ज्ञक्ति, अवर्णवाद वर्जन तथा आशातना परित्यागवडे विनय करवो. बीजा ग्रंथोमां विनयना घणा प्रकारो बताव्या छे, परंतु अहीं तो दश प्रकारानोज स्वीकार कर्यो छे. विनय उपर ज्ञुवनतिलक मुनिनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

ज्ञुवनतिलक प्रबंध.

कुसुमपुरमां धनद नामे राजा हतो. तेने पद्मावती नामे राणी हती अने ज्ञुवनतिलक नामे कुमार हतो. एकदा धनद राजा मंत्रीओ सहित सभामां बेठो हतो, ते समये रत्नस्थळ नगरना राजा अमरचंद्रनो प्रधान राजानी आज्ञाथी राजसज्ञामां दाखल थयो. तेणे राजाने नमन करी योग्य स्थाने बेसी विज्ञप्ति करी के " हे स्वामी ! अमारा राजा अमरचंद्रने यशोमती नामनी पुत्री छे. ते एकदा पुष्पोद्यानमां क्रीडा करती हती, ते वखते तेणे विद्याधरीओना मुखथी गवाता तमारा पुत्र ज्ञुवनतिलक कुमारना गुणसमूहनुं श्रवण कर्युं, त्यारथी ते यशोमती तमारा कुमारनुंज ध्यान करती महाकष्टे दिवसो निर्गमन करवा लागी. एकदा वियोगनी विधुरताथी कृश थयेली कुमारीने जोइने राजाए तेने कृश थवानुं कारण पूछ्युं, त्यारे तेणीए पोतानो मनोगत अज्ञिप्राय तेने निवेदन कर्यो. ते सांज्ञळीने अमारा राजाए मने आपनी पासे तमारा पुत्र साथे तेनो लग्न संबंध करवा माटे मोकल्यो छे. माटे आप ते हकीकतनो स्वीकार करी अमने आज्ञारी करो. " आवां ते प्रधाननां वचनो सांज्ञळीने धनद राजाए कुमारनो विवाह स्वीकार्यो अने ते प्रधाननुं सारुं सन्मान कर्युं.

पछी शुभ दिवसे धनदराजानी आज्ञाथी मंत्री अने सामंत राजाओ सहित राजकुमार ज्ञुवनतिलके लग्नने माटे प्रमाण कर्युं. मार्गमां सिद्धपुर नामना नगर पासे आवतां कुमार एकदम आंखो बंध करी मूर्छा खाइ रथमां पडी गयो. तेने सर्वे बोलाववा लाग्या परंतु ते कुमार मुंगानी जेम एक अक्षर पण बोल्यो नहीं. तेथी हिमवडे करमाइ गयेला कमळनी जेवा मुखवाळा सचिवोए पुरमांथी घणा मांत्रिकोने बोलाव्या. परंतु तेमना सर्व प्रयोगो उखर ज्ञूमिमां वृष्टिनी जेम निष्फळ थया. ते समये 'थोडे दूर कोइ केवळी सुवर्णना कमळ पत्र पर बेसीने देशना आपे छे' एम सांज्ञळीने ते मंत्रीओ 'केवळी पासे जइ तेमने वंदना करी देशना सांज्ञळवा

लाग्या. केवळी जगवान बोल्या के "हे जव्य प्राणीओ ! आ संसार रुपी अगाध समुद्रमां मत्स्यादिकना समूहनी जेम संभ्रमथी जटकता जीवो घणा कष्टथी, पूर्ण सत्कृत्यो वमे, अद्‌जुत मनुष्य जन्म पामे छे. ते मनुष्य जन्मने सफळ करवा माटे मोक्ष सुख रुपी वृक्षने वृद्धि करवामां मेघ समान विनय वमे सिध्धादि परमेष्टीनुं आराधन करो."

इत्यादि देशना सांजळ्या पछी कंठीरव नामना मुख्य मंत्रीए प्रणाम पूर्वक केवळीने पूछ्युं के "हे जगवान ! जुवनतिलक कुमारने अणचिंती दुःखप्राप्ति थवानुं शुं कारण छे ?" त्यारे केवळी बोल्या के "धातकीखंमना भरतक्षेत्रने विषे जुवनागार नामना पुरमां जेमणे पापसमूहने दूर कर्यो छे एवा कोइ सूरि पोताना गच्छ सहित पधार्या. ते सूरिनो एक वासव नामनो शिष्य महात्माओनो शत्रुरूप हतो. ते निरंतर दुर्विनय रूप समुद्रमां निमग्न रहेतो हतो. एकदा तेने आचार्ये उपदेश दीधो के "हे वत्स ! विनय गुण धारण कर. कह्युं छे के—

विनयफलं शुश्रूषा, गुरुशुश्रूषाफलं श्रुतज्ञानम् ।
ज्ञानस्य फलं विरतिर्विरतिफलं चाश्रवनिरोधः ॥१॥

संवरफलं तपोबलमथ तपसो निर्जरा फलं दृष्टम् ।
तस्मात् क्रियानिवृत्तिः क्रियानिवृत्तेरयोगित्वम् ॥२॥

योगनिरोधाद्‌जवसन्ततिक्षयः सन्ततिक्षयान्मोक्षः ।
तस्मात् कल्याणानां, सर्वेषां जाजनं विनयः ॥ ३ ॥

जावार्थ---" विनयनुं फळ गुरुनी सेवा करवी ते छे, गुरू सेवानुं फळ श्रुतज्ञान प्राप्त थाय ते छे, ज्ञाननुं फळ विरति प्राप्त थवी ते छे, विरतिनुं फळ आश्रवनो निरोध थाय ते छे, आश्रव निरोध (संवर)नुं फळ तप करवाने विषे बलवान थवा रूप छे, तपनुं फळ कर्मनी निर्जरा थाय ते छे, कर्म निर्जराथी क्रियानी निवृत्ति थाय छे, क्रिया रहित थवाथी अयोगिपणुं प्राप्त थाय छे, योगना निरोधथी जवनी परंपरानो नाश थाय छे, अने जव परंपराना क्षयथी मोक्षनी प्राप्ति थाय छे. माटे विनय ए सर्व प्रकारना कल्याणोनुं भाजन छे."

आ प्रमाणे विनय गुणने माटे गुरुए घणो उपदेश आप्यो, परंतु ते उद्धत शिष्यने तो ते उपदेश उलटो द्वेष रूप थयो. तेथी गुरुए तथा बीजा सर्वे मुनिओए तेनी उपेक्षा करी. एटले क्रोध युक्त थइने तेणे प्रासुक जळमां गुरुने तथा बीजा मुनिओने मारी नांखवा माटे तालपुट विष नाख्युं. अने पोते भयने लीधे त्यांथी नाशी जइ कोइ अरण्यमां जइने सुतो. तेवामां दावानळ सळगवाथी ते दुष्ट साधु रौद्र ध्यानथी मृत्यु पामीने छेल्ली नरके गयो. अहीं सूरि विगेरेने पेलुं जळ पीतां शासन देवताए अटकाव्या.

पेलो वासव नरकथी नीकळीने मत्स्यादिक योनिमां अवतरीने घणां भवोमां भटक्यो, ते वासव हालमां कांइक कर्मनी लघुतां थवाथी राजकुमार थयो छे. हमणा पूर्वे करेला मानसिक ऋषिघात संबंधी शेष रहेला पापना उदयथी आवी दुर्दशाने पाम्यो छे. हे मंत्री! आ प्रमाणे में कहेलुं तेना पूर्व भवनुं वृत्तांत तमे ते कुमारने कहेशो एटले ते सज्ज थइ जशे."

केवळीना वचनने अंगीकार करीने मंत्री विगेरे सर्व कुमारनी पासे आव्या. पछी मंत्रीए तेने केवळीए कहेलुं वृत्तांत सांभळ्युं, के तरतज ते सज्ज थयो. पछी जातिस्मरण पामेलो कुमार केवळीने वांदवा आव्यो. मुनिने वंदना करीने पूर्व कर्मनो क्षय करवाने माटे तेणे तरतज दीक्षा ग्रहण करी, तेनी साथे ते मंत्री विगेरेए पण वैराग्य पामी चारित्र अंगीकार कर्युं. राजकुमारी यशोमति आ वृत्तांत सांभळीने क्षण वार मूर्छा पामी. पण पछी तरतज सज्ज थइने तेणीए पण संसारना क्षणिक सुखथी वैराग्य पामीने मावापनी आज्ञाथी चारित्र ग्रहण कर्युं. आ सर्व वृत्तांत राजसेवकोए जइने धनद राजाने निवेदन कर्युं.

भुवनतिलक मुनि तीर्थंकरादिक दशे पदनो विनय करवा लाग्या. ते जोइने तेना गुरु पण तेना विनय गुणनी प्रशंसा करवा लाग्या. तेमणे बोंतेर लाख पूर्व सुधी चारित्रनुं प्रतिपालन कर्युं. अने कुल एंशी लाख पूर्वनुं आयुष्य पूर्ण करीने अंते पादपोपगम अनशन ग्रहण करी केवळज्ञान पामी अनंत आनंदना साम्राज्य रूप मोक्ष पदने पाम्या.

"हे भव्य जीवो! आ भुवनतिलक मुनिना दृष्टांतने श्रोत्रद्वयना कुंडल रूप करीने (सांभळीने) अर्हदादिक दश पदनो निरंतर विनयसेवा करो

के जेथी शीघ्रपणे मोक्ष लक्ष्मी तमारा उत्संगमां आवीने बेसे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम
स्तंभे द्वादशं व्याख्यानम् ॥ १२ ॥

व्याख्यान १३ मुं.

विनय प्रशंसा.

प्राप्नोति विनयाज्ज्ञानं, ज्ञानदर्शन संभवः ।
ततश्चरणसंपत्तिश्चान्ते मोक्षसुखं लभेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" विनयथी ज्ञान प्राप्त थाय छे, ज्ञानथी दर्शन–समकित प्राप्त थाय छे, दर्शनथी चारित्र प्राप्त थाय छे, अने तेथी अंते मोक्ष सुख प्राप्त थाय छे."

श्रुतज्ञाननी इच्छावाळा पुरुषे तो विशेषे करीने गुरुजननो विनय करवो. विनय पूर्वक ग्रहण करेलुं श्रुत तत्काळ सम्यग् फळने आपे छेः ते शिवाय फळ आपतुं नथी. कह्युं छे के—

मातंगसूनोर्वरविष्टरस्थाद्विद्या गृहीता फलति स्म शीघ्रम् ।
श्रीश्रेणिकस्येह यथा तथा स्यात्सप्रश्रयं शास्त्रमधीतमृध्यै ॥ १ ॥

भावार्थ—" चांडाळना पुत्रने श्रेष्ठ सिंहासनपर बेसाडीने श्रेणिक राजाए विद्या ग्रहण करी, त्यारे तेने शीघ्रताथी विद्यानुं फळ प्राप्त थयुं. तेवीज रीते शास्त्र पण जो विनय पूर्वक ग्रहण कर्युं होय तोज ते सर्व प्रकारनी समृद्धिने माटे थाय छे." ते दृष्टांत आ प्रमाणे छे—

विनय प्रसंग उपर श्रेणिक राजानो प्रबंध.

राजगृह नगरमां श्रेणिक राजा राज्य करता हता. एकदा श्रीवीर प्रभुना

मुखथी सतीपणानी खात्री थवाने लीधे तेणे प्रसन्न थइने चेल्लणा राणीने कह्युं के " हे प्रिया ! बीजी राणीओ करतां वधारे सारो महेल हुं तारा माटे कराववा इच्छुं छुं, तो ते केवो करावुं ? " चेल्लणाए कह्युं के " हे स्वामी ! मारे माटे एक स्तंभवाळो प्रासाद करावो. " ते सांभळीने राजाए एक स्तंभवाळो महेल कराववा अभयकुमारने आज्ञा आपी. अभयकुमारे सुतारोने बोलावीने हुकम कर्यो. एटले ते सुतारो तेवा महेलने योग्य काष्ठने माटे अरण्यमां चोतरफ शोध करवा लाग्या. तेवामां तेमणे एक मोटा थडवाळुं वृक्ष जोइने आनंद पामी विचार्युं के " जरुर आ वृक्ष कोइ देवताए अधिष्ठित होवुं जोइए, तेथी आ वृक्षने कापतां आपणा स्वामीने कांइ पण विघ्न थवु न जोइए." एम विचारीने ते विघ्न दूर करवा सारु तेओए तेना अधिष्ठायक देवने उद्देशीने तेनी आराधना माटे उपवास कर्यो; अने गंध, धूप तथा पुष्पादिकथी तेनी पूजा करीने पोताने घेर गया. आ हकीकत जाणीने ते वृक्षनो अधिष्ठायक देव पोताना स्थाननो भंग थवाथी भय पामी अभयकुमार पासे जइ बोल्यो के " हे मंत्री ! हुं सर्व ऋतुना फळ पुष्पोथी सुंदर नंदन वन जेवो बाग बनावी, फरतो प्राकार करीने वचमां एक स्तंभवाळो महेल तमने करी आपीश, परंतु तमे मारा स्थानरूप पेला वृक्षने कपावशो नहीं. " ते सांभळीने अभये तेनुं वचन स्वीकार्युं, एटले ते अद्भुत शक्तिवाळा व्यन्तरे तत्काळ पोताना कहेवा प्रमाणे महेल बनावी दीधो. ते महेलमां राजानी आज्ञाथी चेल्लणा देवी पद्मद्रहमां रहेती लक्ष्मीनी जेम निरंतर लीला करवा लागी.

एकदा ते नगरमां रहेनारा कोइ चांडाळनी गर्भिणी स्त्रीने अकाळे केरी खावानो दोहद थवाथी तेणे पोताना पतिने केरी लावी आपवानुं कह्युं. त्यारे ते चांडाळ बोल्यो के " आ ऋतुमां केरी मळे नहीं, माटे क्यांथी लावुं ? " स्त्रीए कह्युं के " चेल्लणा राणीना उद्यानमां सर्व ऋतुओना फळ पुष्प छे, माटे त्यांथी लावी आपो. " चांडाळे कह्युं के " ते वनमां राजानो घणो बंदोवस्त छे, परंतु कोइक उपायथी लावीश. " पछी ते चांडाळ रात्रीने वखते ते उद्यान पासे जइ तेना प्राकारनी बहार उभो रह्यो. अने अवनामिनी विद्याए करीने आम्रवृक्षनी शाखा नीचे नमावीने तेना परनी केरीओ तोडी लीधी. पछी उन्नामिनी विद्यावडे पाछी शाखाने हती तेम उंची करी दीधी. एवी रीते करीने तेणे पोतानी स्त्रीनो दोहद पूर्ण कर्यो (आ प्रमाणे केरीओ लेवाथी ते आंबो केरी विनानो थइ गयेलो

जोइने उद्याननना रक्षके ते हकीकत राजाने निवेदन करी. राजाए अभयने बोलावीने कह्युं के "जेनामां आवी शक्ति छे, ते अन्तःपुरमां पण केम प्रवेश करी न शके? माटे ते चोरने सात दिवसमां पकडी लाव. नहीं तो चोरनी प्रमाणे तारो दंड थशे." राजानी आज्ञा अंगीकार करीने अभयकुमार रात्री दिवस पुरमां अने पुर वहार चो तरफ तपास करवा माटे फरवा लाग्यो, परंतु चोर हाथ आव्यो नहीं. छेवटे सातमी रात्रीने समये कोइ नटनी रमत जोवाने माटे जुगारीओ, स्त्रीलंपटो, चोरो अने मांसलुब्धको एकठा थया हता, त्यां जइ पहोच्यो. नटन आववानी कांइक वार हती, तेथी अभये सर्व लोकोने कह्युं के–"हे जनो! ज्यां सुधी नट आव्यो नथी, त्यां सुधी हुं एक वार्ता कहुं ते तमे सांभळो—

वसंतपुरमां एक जीर्ण नामे निर्धन वणिक रहेतो हतो. तेने एक पुत्री हती. ते मोटी उम्मरनी थइ, तोपण तेने योग्य वर मळ्यो नही, तेथी योग्य वर मेळववा माटे ते कामदेवनी पूजा करवा लागी. एकदा ते कुमारी चोरीथी पुष्पो लेवा माटे एक उद्यानमां पेठी. तेने उद्याननना रक्षके पकडी. तेणीनुं अति सुंदर स्वरूप जोइने मोहित थयेला उद्यानपाळके तेणीनी कामक्रीडा माटे प्रार्थना करी. त्यारे ते कुमारिका बोली के–"हुं हजु परणी नथी तेथी स्पर्श करवाने लायक नथी. कह्युं छे के

अस्पृशा गोत्रजा वर्षाधिका प्रव्रजिता तथा ।
नाष्टौ गम्याः कुमारी च, मित्रराजगुरुस्त्रियः ॥ १ ॥

भावार्थ—"अस्पृशा (चांडाल विगेरे अस्पर्श जातिनी), एक गोत्रनी, मोटी उम्मरनी, दीक्षा लीधेली, कुमारी, मित्रनी स्त्री, राजानी स्त्री अने गुरुनी स्त्री–आ आठ प्रकारनी स्त्रीओ अगम्य छे. अर्थात् पर पुरुषे तेनो स्पर्श करवो ते पण योग्य नथी."

ते सांभळीने माळीए कह्युं के "ज्यारे तुं परणे त्यारे जो तुं प्रथम मारी पासे आववानुं कबुल करे तो अत्यारे तने छोडी मूकुं." ते सरत अंगीकार करीने ते पोताने घेर गइ. केटलेक दिवसे ते कन्या योग्य पति साथे परणी. प्रथमनी रात्रीएज तेणीए एकांतमां पोताना पतिने माळीने आपेला वचननी वात कही. ते सांभळीने तेना पतिए विचार्युं के "अहो! आ स्त्री सत्यप्रतिज्ञावाळी जणाय छे." एम विचारीने तेणे तेणीने रजा आपी. एटले ते स्त्री मणि, मोती

अने सुवर्णना अलंकारो तथा उत्तम वस्त्रो पहेरीने घर वहार नीकळी उद्यान तरफ चाली. मार्गमां तेणीने चोर मळ्या. तेमणे तेणीने रोकी अने सर्व वस्त्र तथा आभरण उतारी आपवानुं कह्युं, त्यारे तेणीए पोतानुं वृत्तांत जणावीने कह्युं के " हे भाइओ ! हुं जइने हमणां पाछी आवुं छुं, ते वखते तमारा कहेवा प्रमाणे करीश, अत्यारे मने जवा द्यो. " ते सांभळीने चोरोए तेने जवा दीधी. आगळ जतां एक क्षुधावडे दुर्बळ थयेला राक्षसे तेने दीठी एटले रोकी. तेने पण चोरनी पेठे सत्य वृत्तान्त कही पाछा आववानुं वचन आपीने माळी पासे गइ. माळीने कह्युं के " में तने प्रथम वचन आप्युं हतुं, ते प्रमाणे हुं आजे विवाहित थवाथी तारी पासे आवी छुं. " ते सांभळीने माळीए विचार्युं के " अहो ! आ केवी सत्य प्रतिज्ञावाळी छे ? " एम विचारीने तेणे तेने पोतानी वेन समान कही वस्त्र विगेरेथी सन्मान करीने रजा दीधी. पछी पाछां आवतां तेणीए राक्षस पासे आवी तेना पूछवाथी माळीए वेन तरीके गणी वस्त्रो आप्यानी सर्व वात कही. ते सांभळीने राक्षसे " अहो ! शुं हुं माळी करतां पण अधम छुं ? " एम विचारीने तेणीने मुक्त करी. त्यांथी आगळ चालतां तेणीनी राह जोइने बेठेला चोरो पासे ते आवी. चोरोना पूछवाथी तेणीए माळी तथा राक्षस साथे बनेली हकीकत कही बतावी. ते सांभळीने " अहो ! शुं आपणे ते बन्ने करतां अधम थइशुं ? " एम विचारीने तेओए पण वेन तरीके गणी तेणीने सन्मान पूर्वक रजा आपी. पछी तेणीए घेर आवीने सर्व हकीकत पोताना पतिने कही. ते सांभळीने ते पण आनंद पाम्यो. अने तेनी साथे सुखनो अनुभव करवा लाग्यो. "

आ प्रमाणे कथा कहीने अभय मंत्रीए सर्वने पूछ्युं के " हे लोको ! कहो ! ते स्त्रीनो पति, चोर, राक्षस अने माळी ए चारमां दुष्कर काम कोणे कर्युं?" अभयकुमारना प्रश्नना उत्तरमां जेओ स्त्रीना इर्ष्यालु हता तेओ बोल्या के " हे मंत्री ! नवी परणेली पोतानी खुबसुरत युवान स्त्रीने माळी पासे जवानी रजा आपी, ते तेणीना पतिए बहु दुष्कर काम कर्युं. " जेओ क्षुधातुर हता तेओ बोल्या के " राक्षस भूख्यो हतो, छतां तेणीने जवा दीधी, माटे राक्षसे घणुं दुष्कर काम कर्युं. " लंपट पुरुषोए कह्युं के "एवी स्वरुपवान स्त्रीने एमने एम पाछी

जवा दीधी ते माळीए बहु दुष्कर काम कर्युं." छेवट आम्र फळ चोरनार चांमाळे पेला चोरनी प्रशंसा करी. ते सांजळीने अजयमंत्रीए तरतज ते चांमाळने पकड्यो. पछी तेने दबावीने केरी चोर्या संबंधी पूछतां ते चांमाळे स्त्रीनो दोहद पूर्ण करवा माटे विद्यानी सहाय वमे करीओ लीधानुं कबूल कर्युं. ते चांमाळने राजा पासे लइ जइने अजयकुमारे तेनुं सर्व वृत्तान्त कह्युं, एटले राजाए तेनो वध करवानो हुकम कर्यो. त्यारे अजयकुमारे कह्युं के "हे स्वामी! आनी पासेथी प्रथम अपूर्व एवी बन्ने विद्याओ तो ग्रहण करो, पछी जेम योग्य लागे तेम करजो. केमके—

बालादपि हितं ग्राह्यममेध्यादपि काञ्चनम् ।

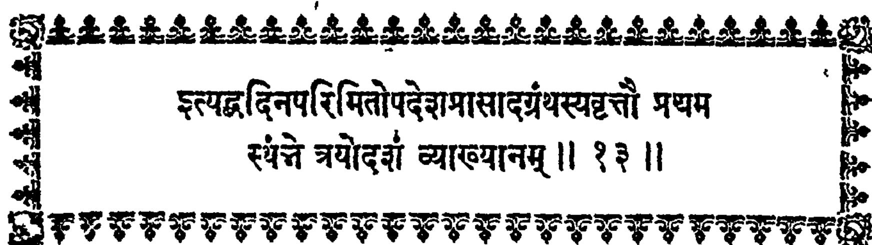
नीचादप्युत्तमा विद्या, स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि ॥ १ ॥

जावार्थ—" बाळक थकी पण हित वचन ग्रहण करवुं, अशुचिमांथी पण कांचन लइ लेवुं, नीच माणस पासेथी पण उत्तम विद्या होय तो ग्रहण करवी, अने नीचा कुळमांथी पण स्त्रीरत्न ग्रहण करवुं." आ प्रमाणे नितिशास्त्रनुं कथन छे.

अजयकुमारना आ प्रमाणेना कहेवाथी श्रेणिक राजाए सिंहासन पर बेठा बेठा ते चांडाळने पोतानी सन्मुख नीचे बेसामीने तेनी पासेथी अवनामिनी अने उन्नामिनी ए बे विद्या शीखवा मांमी. परंतु घणीवार ते विद्या बोलतां छतां पण राजाना हृदयमां पेठी नहीं. त्यारे राजाए क्रोध पामीने कह्युं के "अरे चांमाळ! मने विद्या आपवामां पण तुं खोटाइ करेछे ?" एम कहीने तिरस्कार करवा लाग्या. ते जोइ अजयकुमारे कह्युं के "हे स्वामी! जो विद्या ग्रहण करवी होय तो एने सिंहासन पर बेसामीने आप हाथ जोमी पृथ्वी उपर तेनी सन्मुख बेसो, तो विद्या आवमशे." ते सांजळीने राजाए तेम कर्युं के तरतज जाणे हृदयमां लखेली होय, एम ते बन्ने विद्या दृढ थइ गइ. पछी विद्यागुरु थवाथी ते चांमाळने अजये राजा पासेथी मुक्त कराव्यो.

"आ कथा उपरथी विनयज सर्वत्र फळदायी छे एम समजीने विनय

पूर्वक श्रुतनुं अध्ययन विगेरे करवुं."


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ प्रथम
स्थंभे त्रयोदशं व्याख्यानम् ॥ १३ ॥

व्याख्यान १४ मुं.



अविनयना फळ विषे.

अन्वयथी विनयनुं स्वरूप कहीने हवे व्यतिरेकथी तेनुं व्याख्यान करे छे.

प्रकृत्या दुर्विनीतात्मा, गुरूक्ते प्रतिकूलधीः ।
संसारसागरे मग्नो, विनेयः कूलवालकः ॥ १ ॥

भावार्थ—"प्रकृतिथी ज अविनयवान (उध्धत) अने गुरुना वचनथी विपरीत वर्तनार कूलवालक साधु संसार सागरमां डूब्यो." तेनुं दृष्टांत आ प्रमाणे—

कूलवालकनुं दृष्टान्त.

कोइ एक आचार्यने एक अविनयी शिष्य हतो. तेने आचार्य ताडना करे के शिखामण आपे, तो तेना पर गुस्से थतो. एकदा आचार्य ते शिष्यने लइने उज्जयंत (गीरनार) गिरिनी यात्रा करवा गया. त्यां ते शिष्य यात्रालु स्त्रीओनी उपर कुदृष्टि करवा लाग्यो, ते जोइने गुरुए तेने निवार्यो, तेथी ते गुरुना पर कोपायमान थयो. एटले यात्रा करीने पाछा वळतां गुरुनी पाछळ रहीने ते दुष्ट शिष्ये गुरुना चूरे चूरा करवाना हेतुथी एक मोटो पथरो गबडाव्यो. परंतु ते पथ्थर गुरुना बे पग वच्चे थइने नीकळी गयो. आवा तेना दुष्ट कृत्यथी गुरुए तेने शाप आप्यो के "हे दुरात्मा ! तुं स्त्रीथी विनाश पामीश." ते सांभ-ळीने तेणे विचार कर्यो के "ज्यां बीलकुल स्त्रीओज न होय, त्यां रहुं के जेथी

गुरुनो शाप मिथ्या थाय." पछी ते साधु कोइ नदीने सामे कांठे वस्ति विनाना भागमां जइ आतापना लेवा लाग्यो. तेना उग्र तपना प्रभावथी ते नदी तेना तरफ वहेती बंध थइने बीजी तरफ वहेवा लागी, तेथी ते साधुनुं कूलवालुक एवुं नाम लोकोए पाड्युं.

राजगृह नगरीना राजा श्रेणिके देवताए आपेल दिव्य कुंडळनी जोडी, अढार चक्र (सेर)नो हार, अने दिव्य वस्त्रो सहित सेचनक हाथी पण पोताना पुत्र हल्ल विहल्लने आप्यो. तेथी गुस्से थयेला कूणिके कांइक प्रपंच करीने पोताना पिता श्रेणिकने काष्ठना पांजरामां नांख्यो. केटलेक दिवसे राजा परलोकमां गये सते कूणिक नवी चंपा नामनी पुरी वसावीने तेमां काल, महाकाल विगेरे पोताना दश भाइओ सहित रह्यो. अन्यदा पोतानी राणी पद्मावतीना दररोजना आग्रहथी कूणिके हल्ल विहल्ल पासे हार विगेरे चारे वस्तुओ मागी. तेथी बुद्धिमान एवा ते बन्ने भाइओ "आ मागणी अनर्थनुं मूळ छे" एम विचारीने पोतानी साररूप सर्व चीजो लइने रात्रिए छुपी रीते त्यांथी नीकळी पोताना मातामह चेटक राजा पासे विशाळा नगरीए जइने रह्या. कूणिकने तेनी खबर थतां तेणे दूत मोकलीने चेटक राजाने कहेवराव्युं के "हल्ल विहल्लने अमने पाछा सोंपो." तेना जवाबमां चेटक राजाए कह्युं के "शरणे आवेला दोहित्रोने हुं शी रीते तमने सोंपुं ?" दूते आवीने कूणिक राजाने ते वात करी. एटले कूणिक अत्यंत क्रोध पामीने त्रण करोड सुभटोना सैन्य सहित तथा पोतानी सरखा बळवान काळ महाकाळ विगेरे दशे भाइओ सहित चेटक राजा तरफ चाल्यो. चेटक राजा पण पोताना सामंत अढार राजाओ सहित कूणिकनी सामे आव्यो. परस्पर युद्ध प्रवर्त्युं. पहेला दिवसना युद्धमांज चेटक राजाए देवताए आपेला अमोघ बाण वडे काळकुमारने यमराजना स्थानमां पहोंचाड्यो. एटले बन्ने लश्करो युद्धथी विराम पाम्या. ए प्रमाणे दश दिवसे कूणिकना दशे भाइओने चेटक राजाए मारी नांख्या. चेटक राजाने दररोज एक ज बाण मुकवानो नियम हतो. पोताना दशे भाइओने मरायेला जोइने शोकसागरमां निमग्न थयेला कूणिके चेटक राजाने दुर्जय मानी अट्ठम तप वडे सौधर्मेन्द्र अने चमरेन्द्रनुं आराधन कर्युं. एटले ते बन्ने इन्द्रोए आवीने कूणिकने कह्युं के "चेटक राजा जैन धर्मी होवाथी अमारो साधर्मी छे, माटे तेने अमे मारी शकशुं नहीं,

परंतु तारा देहनी रक्षा करशुं. " पछी चमरेन्द्रे तेने महा शिलाकंटक अने रथमुशळ नामना बे संग्राम आप्यां. अर्थात् ते बे प्रकारना युद्ध शिखव्यां. तेमांना पहेला संग्राममां शत्रुना सैन्यमां एक कांकरो नांख्यो होय, तो ते मोटी शिला जेवो थइने शत्रुनो नाश करतो अने एक कांटो नांख्यो होय, तो ते शस्त्र रूप थइने नाश करतो. ते संग्राम करवा वडे कूणिके एक दिवसे चेडाराजाना चोराशी लाख सुभटोनो विनाश कर्यो. बीजे दिवसे छन्नुं लाख योद्धानो विनाश कर्यो. तेथी त्रास पामीने त्रीजे दिवसे चेडाराजाए श्रावक धर्ममां दृढ, निरंतर छठ तप करनार अने महा पराक्रमी एवा नाग सारथीना पौत्र वरुण नामना पोताना सेनापतिने कह्युं के " हे वीर ! आजे तो तुं युद्ध करवा सज्ज था. " स्वामीनुं वचन अंगीकार करीने वरुण सेनापति कूणिकना सैन्य साथे लडाइमां उतर्यो. भवितव्यताने योगे कूणिकना सेनापतिए वरुणने बाणवडे मर्म स्थानमां वींध्यो, एटले वरुणे पोतानो रथ बे त्रण पगलां पाछो हठावीने तीव्र बाणवडे ते सेनापतिने हणी नांख्यो. पछी तरतज ते वरुण युद्धभूमिमांथी नीकळीने दूर जइ दर्भनो संथारो करी ते पर बेसीने आलोचना प्रतिक्रमण करी समाधि पूर्वक मरण पामीने अरुणाभ नामना विमानमां चार पल्योपमना आयुष्यवाळो देवता थयो. त्यांथी चवीने ते वरुणनो जीव महाविदेहमां उत्पन्न थइ मोक्ष पदने पामशे. (वरुणनुं सविस्तर चरित्र भगवती सूत्रथी जाणी लेवुं.)

वरुणना गया पछी चेटक राजाए कूणिकना पर बाण मूक्युं, परंतु कूणिकना शरीर फरतुं इन्द्रे वज्रनुं कवच करेलुं हतुं, तेथी ते बाण तेने अथडाइने भूमिपर पडयुं. चेडाराजाने एकज बाण मुकवानी प्रतिज्ञा होवाथी तेणे बीजुं बाण मूक्युं नहीं. बीजे दिवसे पाछुं तेणे बाण मूक्युं, तो ते पण निष्फळ गयुं. तेथी चेडा राजाए पोताना अमोघ बाणथी पण कूणिकने अजेय जाणीने पाछा वळी विशाला नगरीमां प्रवेश करी दरवाजा बंध कराव्या. एटले कूणिके ते नगरी फरतो घेरो घाल्यो.

हवे रात्रीना समये हल्ल अने विहल्ल सेचनक हाथीपर आरूढ थइ नगबहार नीकळी गुप्त रीते कूणिकना सैन्यमां प्रवेश करी तेना सैन्यने हणवा लाग्या. ए प्रमाणे हंमेशां पोताना सैन्यने घणुं हणातुं जोइने कूणिके पोताना सैन्य फरती

खाइ खोदावी तेमां गुप्त रीते खेरना अंगारा नंखाव्या, ते वातनी हल्ल विहल्लने खबर नहोती, तेथी तेओ हमेशना नियम प्रमाणे सेचनकपर आरुढ थइने रात्रे कूणिकना सैन्य पासे आव्या. त्यां खाइनी नजीक आवतां हाथीए विभंगज्ञानथी वळता अंगारावाळी गुप्त खाइ जाणीने 'आ हल्ल विहल्ल विनाश न पामो' एवा हेतुथी ते आगळ एक पगलुं पण चाल्यो नहीं. एटले ते बन्ने भाइओ तेने अंकुशवडे प्रहार करीने बोल्या के "हे दुष्ट हाथी! आजे तुं प्रतिकूळ वर्तणुक करे छे, ते तने योग्य नथी." ते सांभळीने ते बन्नेने पोतानी पीठपरथी भूमिपर उतारी दइने ते हाथी खाइमां पड्यो. तेनी अंदर रहेली अग्निना तापथी वळी मरीने ते हस्ती पहेला स्वर्गमां देवता थयो. ए प्रमाणे हस्तीने मृत्यु पामेलो जोइने बन्ने भाइओ खेदयुक्त थइ विचार करवा लाग्या के "अहो! आपणे आ पशुथी पण अधन्य छीये के जेथी एना जेटलुं पण आपणे जाणी शक्या नहीं. एतो खेर, पण आपणे आ भयंकर पापथी शी रीते छूटशुं?" ए रीते विचार करतां ते बन्नेने वैराग्य उत्पन्न थयो. तेथी तरतज शासनदेवीए तेमने उपाडीने श्रीवीरप्रभु पासे मूक्या. एटले ते बन्नेए भगवंतनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे तपस्या करीने ते बन्ने भाइओ सर्वार्थसिद्ध विमानमां देवता थया.

अहीं कूणिक राजाए मनमां एवी प्रतिज्ञा करी के "जो हुं मारा तीक्ष्ण बाणोवडे विशालानगरीने खोदी न नाखुं, तो मारे अग्निमां प्रवेश करवो." आवी कठण प्रतिज्ञा कर्या छतां पण ते विशालानगरी जीती शक्यो नहीं, तेथी ते अति खेदयुक्त थयो.

आ समये गुरुनी आज्ञानो भंग करनार कूलवालक मुनि के जे नदीने कांठे आतापना लेतो हतो, तेनापर कोप पामेली शासनदेवी आकाशमां रहीने कूणिक प्रत्ये बोली के "जो मागधिका नामनी गणिका कूलवालक मुनिने चारित्र भ्रष्ट करीने लावे, तो तेनी सहायथी अशोकचंद्र (कूणिक) राजा विशालानगरीने जीती शके; ते विना ते नगरी जीती शकाशे नहीं." ते सांभळीने राजाए मागधिका गणिकाने बोलावीने सत्कार पूर्वक कूलवालकने भ्रष्ट करीने लाववानुं कह्युं. ते वात अंगीकार करीने कपटथी श्राविकानो वेष लइ मागधिका

नदी तीरे रहेला ते मुनि पासे गइ. मुनिने वंदना करीने ते बोली के " हे मुनि-राज ! स्थाने स्थाने चैत्योने तथा मुनिओने वंदना करीने मारे भोजन करवानो नियम छे, आजे आपने अहीं रहेला जाणीने हुं वंदना करवा आवी छुं, माटे हे मुनिराज ! कृपा करीने निर्दोष भात पाणी ग्रहण करी मने कृतार्थ करो. " एम कहीने तेणीए नेपाळाना चूर्णथी मिश्रित करेला सुंदर मोदक तेने वहोराव्या. ते खावाथी तेने तरतज अतिसारनो व्याधि थयो. तेथी तेणीए बीजी नानी नानी गणिकाओ पासे तेनी वैयावच्च करावी के जेथी ते मुनि थोडी मुदतमांज चारि-त्रथी भ्रष्ट थइ तेने आधीन थइ गया. पछी तेने लइने ते गणिका कूणिक पासे आवी. कूणिके कुळवालकने कह्युं के "आ विशालानगरी जीती शकाय तेम करो." कूणिकनुं वचन अंगीकार करीने ते विशालानगरीमां गयो. त्यां सर्वत्र भ्रमण करतां एक स्थाने तेणे मुनिसुव्रत स्वामीनो स्तूप जोइ विचार्युं के " आ स्तूपना प्रभावथी आ पुरीने कोइ जीती शकतुं नथी. तेथी आनोज भंग करवा माटे प्रथम उपाय करवो जोइए. " एम विचारीने गाममां फरवा लाग्यो. तेने जोइने पौरलोकोए तेने पूछ्युं के " हे मुनि ! आ नगरीनो उपद्रव क्यारे दूर थशे ? " तेणे कह्युं के " आ स्तूपने तमे पाडी नाखशो, त्यारे तमारो उपद्रव दूर थशे. " ते सांभळीने लोको ते स्तूपने पाडवा लाग्या. एटले तेमने विश्वास उत्पन्न कराववा माटे ते दुष्ट साधुए कूणिकने कहीने तेनुं सैन्य बे कोश दूर हठाव्युं. ते जोइने पौरजनोने मुनिना वाक्यपर विश्वास आव्यो. तेथी तेओए कूर्मशिला पर्यंत सर्व खोदी नाख्युं, अने कूणिके घेरो घाल्या पछी बार वर्षे लोकोए पुरना दरवाजा उघाड्या, केमके कूणिक तो कपटथी दूर गयेलो हतो.

दरवाजा उघड्याना खबर सांभळी कूणिक राजाए आवीने नगरीपर छापो मारी नगरीनो भंग कर्यो, ते वखते पण महान् युद्ध थयुं. कूणिकने चेडा राजाना युद्ध जेवुं युद्ध आ अवसर्पिणीमां थयुं नथी. आ लडाइमां एकं-दर एक करोड ने एंशी लाख सुभटो हणाया, तेमां दश हजार सुभटो मरीने एकज माछलीना उदरमां उत्पन्न थया, एक देवलोकमां गयो, एक उंचा कुळमां उत्पन्न थयो, अने बीजा सर्वे नरक गतिमां तथा तिर्यग्गतिमां उत्पन्न थया.

पछी चेटक राजा नगरी बहार नीकळ्या, ते वखते कूणिके तेमने कह्युं के "हे पूज्य मातामह ! मने आज्ञा आपो. हुं आपनो पुत्र छुं. हुं शुं करुं ?" चेटके

जवाब आप्यो के " हे दौहित्र (दीकरीना पुत्र) ! एक क्षणवार उभो रहे. हुं हमणां आ वावमां स्नान करीने आवुं छुं. " एम कहीने चेटक राजा वावमां जइ लोढानी पुतळी कंठे बांधी समाधिमां तत्पर थइ वावमां पड्या. तेज वखते धरणेन्द्रे तेमने झीली लीधा, अने ते पोताना भुवनमां (पाताळमां) लइ गया. त्यां चेटक राजा अनशनवडे काळधर्म पामीने सहस्रार देवलोकमां इन्द्रना सामानिक देवता थया.

पछी चेटक राजानो दौहित्र सुज्येष्ठानो पुत्र सत्यकि विद्याधर हतो, ते त्यां आवीने समग्र नगरीना लोकोने नीलवंत पर्वत उपर लइ गयो. पछी कूणिक राजा पण पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करीने पोतानी राजधानीमां आव्यो.

कूलवालक पण देवगुरुनी आशातना करवाथी अने मागधिका गणिकाना संगथी अनेक पापकर्मो करीने दुर्गतिमां गयो.

" हे भव्य प्राणीओ ! जो तमारे मोक्ष सुखनी इच्छा होय तो आ कूलवालक साधुनुं अति दुरन्त चरित्र सांभळीने महा विषम विष समान गुरु महाराजनी आशातनानो त्याग करजो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम
स्तंभे चतुर्दशं व्याख्यानम् ॥ १४ ॥

व्याख्यान १५ मुं.

चोथा त्रण शुद्धि नामना द्वार विषे.

मनोवाक्कायसंशुद्धिः , सम्यक्त्वशोधनी भवेत् ।
तत्रादौ मनसः शुद्धिः , सत्यं जिनमतं मुनेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" मन, वचन अने कायानी जे शुद्धि, ते सम्यक्त्वने शोधन (शुद्ध) करनारी थाय छे. तेमां प्रथम मननी शुद्धि करवी, एटले जिनमतने सत्य मानवो. "

' जिनमत ' एटले जिनेश्वरे प्ररूपेल समग्र पदार्थोना भावने प्रगट करनार द्वादशांगी रुप शास्त्र. तेने सत्य मानवुं, अने बीजां सर्व लौकिक परतीर्थीना शास्त्रो—दर्शनो असार छे एम मानवुं. तेनुं नाम मनः शुद्धि कहेवाय छे.

मनःशुद्धि उपर जयसेनानुं दृष्टान्त.

उज्जयिनी नगरीमां संग्रामशूर नामे राजा राज्य करतो हतो. ते नगरीमां वृषभ नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने जयसेना नामनी स्त्री हती. ते समकितवंत तथा पतिव्रता हती. ते मोटी उम्मरनी थइ तो पण तेने कांइ संतान थयुं नहीं. तेथी तेणीए एकदा पोताना पतिने कह्युं के—" हे स्वामिन् ! संततिने माटे तमे फरी विवाह करो, केमके पुत्र विना आपणुं कुळ शोभतुं नथी. कह्युं छे के—

यत्र नो स्वजनसंगतिरुच्चै-र्यत्र नो लघुलघूनि शिशूनि ।
यत्र नास्ति गुणगौरवचिन्ता, हन्त तान्यपि गृहाण्यगृहाणि ॥१ ॥

भावार्थ—" जेने घेर स्वजनो एकठा थइने बेसता नथी अर्थात् स्वजनोनी संगति नथी, जे घरमां नानां नानां बाळको क्रीडा करतां नथी अने जे घरमां गुणना गौरवपणानुं चिंतवन थतुं नथी, तेवा घरो घरनी गणत्रीमां नथी. "

ते सांभळीने श्रेष्ठी बोल्यो के—" हे प्रिया ! तुं कहेछे ते सत्य छे, परंतु मारा चित्तमां विषयसुखनी बिलकुल अभिलाषा नथी. " ते बोली—हे" स्वामी! विषय सुखने माटे न परणवुं ते तो ठीक छे, पण संतानने माटे फरी परणवामां कांइ खोटुं नथी. " ते सांभळीने श्रेष्टी कांइ बोल्यो नहीं, मौन रह्यो. तेथी जयसेनाए जाते तपास करीने कोइ श्रेष्ठीनी गुणसुंदरी नामनी कन्यानुं मागुं करी तेनी साथे पोताना पतिने परणाव्यो. पछी धीरे धीरे जयसेना घरनो सर्व कार्यभार गुणसुंदरीने सोंपीने धर्मआराधनमां तत्पर थइ. केटलेक काळे गुणसुंदरीने एक पुत्र थयो.

एकदा गुणसुंदरीनी माता बंधुश्रीए पुत्रीने पूछ्युं के—"हे पुत्री! तारा पतिना घरमां तने सुख छे ना ?" गुणसुंदरी बोली—"हे माता ! मने शोक्य उपर आपीने पछी सुखनी वात शुं पूछे छे ? प्रथम माथुं मुंडावीने पछी नक्षत्र शुं पूछे छे, अने पाणी पीने पछी घर शुं पूछेछे ? मने तो पतिने घेर एक क्षण मात्र पण सुख नथी; मारो पति मारी शोक्य उपरज आसक्त छे." बंधुश्री बोली —हे पुत्री ! जो ते तारी शोक्य रागथी तथा कळाथी तेवा वृध्ध पतिने पण वहन करे छे, रीजवे छे, तो पछी बीजानी शी वात करवी ? ज्यां साठ साठ वर्षना मोटा हाथीओने वायु उडाळे, त्यां गायोनी शी गणना, अने मछर विगेरेनी तो वात ज शी करवी ? तो पण हे पुत्री ! तुं शांति राख. तारी शोक्यना विनाशनो हुं कांइक उपाय करीश. तुं हाल तो तारे घेर जा."

एकदा जाणे साक्षात् रुद्र (शिव) नी मूर्त्ति होय, तेवो प्रतापी कोइ कापालिकने जोइने बंधुश्रीए पोताना कार्य साधवाना इरादाथी तेने अनेक रस संयुक्त भोजन कराव्युं. कह्युं छे के—

कार्यार्थी भजते लोको, न कश्चित् कस्यचित् प्रियः ।
वत्सः क्षीरक्षयं दृष्ट्वा, परित्यजति मातरम् ॥ १ ॥

भावार्थ–"लोको कांइ पण कार्यने अर्थेज बीजाने भजे छे, पण स्वभावथी कोइ कोइने प्रिय होतोज नथी. वाछरडो पण दूध नष्ट थयेलुं जोइने तेनी माता (गाय) नो त्याग करे छे."

पछी ते योगी पण हमेशां भिक्षाने माटे त्यांज आववा लाग्यो. अने बंधुश्री पण तेने हमेशां नवी नवी भिक्षा आपवा लागी. एकदा योगीए प्रत्युपकार करवा माटे तेणीने कह्युं के—"हे माता ! तारे कांइ काम होय, तो खुशीथी कहे के ते हुं करी आपुं." ते सांभळीने बंधुश्रीए गद्गद् कंठे पोतानी पुत्रीनुं दुःख कह्युं. त्यारे योगी बोल्यो के–"हे माता ! जयसेनाने हणीने मारी बेन गुणसुंदरीने सुखी न करुं, तो हुं अग्नि प्रवेश करुं."एवी प्रतिज्ञा करीने ते पोताने आश्रमे गयो.

पछी कृष्णचतुर्दशीनी रात्रीए ते योगीए स्मशानमां एक मडदुं आणीने तेनी पूजा करी. पछी वैताली विद्यानो जाप करीने ते मडदामां वेतालीने प्रत्यक्ष

करी अर्थात् तेमां प्रवेश कराव्यो. पछी ते वेताली बोली—" हे योगी ! जे काम होय ते कहे." योगी बोल्यो—" हे महाविद्या ! जयसेनाने मारी नांख." ते सांभळीने ते विद्या योगीनुं वचन अंगीकार करी जयसेना पासे गइ, पण त्यां तो सम्यक् प्रकारे निश्चळ चित्ते कायोत्सर्गमां स्थित थयेली जयसेनाने तेणे जोइ. एटले ते वेताळी धर्मना महिमाथी द्वेष रहित थइने जयसेनाने प्रदक्षिणा करी पाछी वळी स्मशानमां गइ. तेने विकराळ स्वरूपे आवती जोइने ते योगी भयथी नाशी गयो. बीजे दिवसे पण तेज रीते योगीए फरीथी वेताली विद्याने मोकली. ते वखते पण ते विद्या जयसेनाने कांइ पण करी शकी नहीं, अने अट्टाट्टहास्य करती पाछी आवी. एम त्रण वार मोकली, ने त्रण वार ते पाछी आवी. चोथी वार पोतानाज मरणना भयथी योगीए कह्युं के—" हे देवी ! बेमां जे दुष्ट होय, तेने जल्दी मारीने आव." ते सांभळीने देवी जयसेना पासे गइ, पण तेने देव-गुरुनी भक्तिमां तत्पर जोइने त्यांथी पाछी वळी. तेवामां घर बहार कायचिंता माटे नीकळेली प्रमादी गुणसुंदरीने तेणे दीठी. एटले तेनेज खड्गवडे मारीने देवी स्मशानमां आवी, योगीनी रजा लइ स्वस्थाने गइ. थोडीवार पछी जयसे-ना कायोत्सर्ग पारीने बहार नीकळी, त्यां गुणसुंदरीने मरेली जोइने ते विचारमां पडी के–"अहो ! पूर्वना कोइ अशुभ कर्मना उदयथी मारे माथे आ कलंक आ-वशे." एम विचारीने ते उपद्रवनी शांति माटे तेणे फरीथी कायोत्सर्ग कर्यो. प्रातःकाळे गुणसुंदरीनी मा बंधुश्री रात्रीमां शुं थयुं, तेनी खबर लेवा उत्सुक थइ सती गुणसुंदरीने घेर आवी. त्यां गुणसुंदरीनेज मरेली जोइने तेणीए पोकार करी राजाने जाहेर कर्युं के—" हे राजा ! मारी पुत्रीने तेनी शोक्य जयसेनाए शोक्यपणाना द्वेषथी मारी नांखी छे." ते सांभळीने राजाए क्रोध पामीने जयसेनाने पोतानी पासे बोलावी पूछ्युं. जयसेना कांइ पण बोली नहीं, तेवामां शासनदेवी-नी प्रेरणाथी पेलो योगीज नगरमां बोलतो बोलतो अकस्मात् राजसभामां आव्यो. अने पोतानुं भयंकर रूप प्रगट करी बोल्यो के " निर्दोष जयसेनाने मूकीने दुष्ट गुणसुंदरीने मेंज महाविद्या पासे हणावी छे." एम कहीने ते संबंधी सर्व वृत्तांत राजाने कही बताव्युं. ते वखते शासनदेवताए पण जयसेना उपर पुष्पवृष्टि करी. राजाए " बंधुश्रीज दुष्ट छे " एम निश्चय थवाथी तेने गाम बहार काढी मूकी. पुः पछी राजाए जयसेनाने पूछ्युं के—" हे गुणीयल बेन ! जगत्मां कयो धर्म

श्रेष्ठ छे ? ते तुं कहे." जयसेना बोली के—" स्याद्वादथी युक्त एवा जैनधर्म विना बीजा सर्व धर्मो एकांतवादी अने घणा दोष युक्त होवाथी आराधवा योग्य नथी." फरी राजाए पूछ्युं के— " हे शीलवंती ! गंगा, प्रयाग विगेरे तीर्थोमां कयुं तीर्थ संसारतारक छे ?" जयसेना बोली—" हे राजा ! लोकमां अडसठ तीर्थो कहेवाय छे, पण ते सर्वे आत्मधर्मने पुष्टि आपनारां नथी. तीर्थ तो मात्र एक सिध्धाचळज छे. केमके ते गिरि पर कार्तिक शुदि पूर्णिमाए श्री रूषभदेवना पुत्रो द्राविड अने वालिखील मुनि दश करोड साधुओ सहित मुक्ति पाम्या छे. फागण शुदि दशमने दिवसे नमि अने विनमि नामना मुनि बे करोड साधुओ सहित सिध्धि पदने पाम्या छे. फागण शुदि आठमने दिवसे श्री ऋषभदेव स्वामी नवाणु पूर्व वखत ते गिरिपर आव्या छे. श्रीशांतिनाथ स्वामीए तेनापर चातुर्मास कर्युं हतुं. ते वखते मुनि वेषे तथा श्रावक वेषे मळीने सतर करोड मनुष्यो सिध्धि पाम्या हतां, बीजा तीर्थंकर श्री अजितनाथ स्वामीना हाथथी दीक्षित थयेला पंचाणुं हजार साधुओ ते पर्वतपर चातुर्मास रह्या हता. तेमांथी कार्तिक शुदि पूर्णिमाने दिवसे दश हजार साधुओ केवळ ज्ञान पामी मोक्षे गया हता. आसो शुदि पूर्णिमाए पांच पांडवो वीश करोड साधुओ सहित सिध्ध थया हता. फागण शुदि तेरसने दिवसे शांब अने प्रद्युम्न कुमार साडा त्रण करोड साधुओ सहित मुक्ति पदने पाम्या छे. श्रीकालस मुनि एकहजार साधुओ सहित, श्रीसुभद्र मुनि सातसो मुनिओ सहित, श्रीरामचंद्र पांच करोड मुनि सहित, श्रीरामना भाइ भरत त्रण करोड मुनि सहित तथा श्रीवसुदेवनी बोंतेर हजार स्त्रीओमांथी पांत्रीश हजार स्त्रीओ तेज सिध्धगिरिपर सिध्धि पदने पामी छे, बीजी साडत्रीश हजार स्त्रीओ बीजे स्थाने सिध्धि पदने पामी छे. तथा देवकी अने रोहिणी नामनी वसुदेवनी स्त्रीओ तो आगामी काळे तीर्थंकर थवानी छे. सुकोशल मुनि वाघणना करेला उपसर्गथी काळधर्म पामीने मंगुलगिरि (सिध्धाचळनी एक टुंक) पर सिध्ध थया छे. इत्यादि अनंत साधुओ ते गिरिपर सिद्धिपद पाम्या छे, अने पामशे.

चैत्र शुदि पूर्णिमाने दिवसे ते गिरिपर श्रीपुंडरीक गणधर पांच करोड मुनिओ सहित सिद्ध थया छे. माटे हे राजा ! एकवार श्री शत्रुंजयने जोवाथी (यात्रा करवाथी) सर्व तीर्थोनी यात्रानुं फळ प्राप्त थाय छे." आ प्रमाणे सां-

भळीने राजा विगेरे सर्व लोकोए श्री जैनधर्मनो तथा श्री सिद्धाचळ तीर्थनो स्वीकार कर्यो—तेनेज मानवा लाग्या.

पछी राजाए जयसेनाने मोटा उत्सव पूर्वक तेने घेर मोकली. केटलेक काळे जयसेनाए प्रव्रज्या ग्रहण करी, अनुक्रमे तपस्या करीने सिद्धि पदने पामी.

" स्याद्वाद धर्मना विचारमांज चित्त राखनारी तथा मिथ्यादर्शनपर किंचित् पण राग नहीं राखनारी जयसेना मननी शुद्धिथी अनुक्रमे अनंत सुखवाळुं मोक्षपद पामी. तेज प्रमाणे हे भव्य प्राणीओ ! तमे पण मनःशुद्धिने दृढ करो जेथी तमने पण कल्याण परंपरा प्राप्त थाय. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ प्रथम स्थंभे पंचदशं व्याख्यानम् ॥ १५ ॥

॥ प्रथमः स्तंभः समाप्तः ॥

श्री उपदेश प्रासाद.

स्तंभ बीजो.

व्याख्यान १६ मुं.

मनःशुद्धि विषे (जारी).

मनःशुद्धिमबिभ्राणा, ये तपस्यन्ति मुक्तये ।
हित्वा नावं भुजाभ्यां ते, तितीर्षन्ति महार्णवम् ॥ १ ॥
तदवश्यं मनःशुद्धिः , कर्तव्या सिद्धिमिच्छता ।
बह्वारंभेऽपि शुद्धेन, मनसा मोक्षमाप्नुते ॥ २ ॥

भावार्थ—" मनशुद्धि राख्या शिवाय जे मनुष्यो मुक्तिने माटे तपस्या करे छे तेओ वहाणनो त्याग करीने बे हाथवडे महा समुद्रने तरवा इच्छे छे, अर्थात् समुद्र तरवामां वहाणनीज जरुर छे. ते स्थाने अहीं मनशुद्धि छे. तेथी मोक्षनी इच्छावाळा मनुष्ये अवश्य मनशुद्धि करवी. केमके बहु आरंभी छतां पण जो मननी शुद्धि राखी होय तो ते मोक्षने पामे छे."

आ प्रसंग उपर आनंद श्रावकनो अधिकार छे ते नीचे प्रमाणे—

आनंद श्रावकनुं दृष्टान्त.

राजगृही नगरीमां आनंद नामे एक कुटुंबी रहेतो हतो. ते एकदा गुणशील नामना चैत्यमां श्रीवीरप्रभुनुं पधारवुं सांभळीने पोताना स्वजनो सहित पगे चालतो केवळीना पण ईश एवा भगवाननी पासे गयो. प्रभुने वंदना कांतकरीने अने मतनुं स्थापन करनारी वाणी सांभळवाथी ते प्रतिबोध पाम्यो. तेथी तेणे समकित सहित देशविरति ग्रहण करी. तेमां प्रथम द्विविध त्रिविधे करीने स्थूल जीवहिंसादिक पांच अणुव्रत ग्रहण कर्यां. तेमां चोथा व्रतमां पोतानी स्त्री शिवायनी

अन्य सर्व स्त्रीओनो त्याग कर्यो. पांचमा व्रतमां पोतानी इच्छानुसार द्रव्यनुं (परिग्रहनुं) प्रमाण कर्युं के—रोकड धनमां चार करोड सोनामहोरो निधानमां, चार करोड व्याजे फेरववामां अने चार करोड वेपारमां राखवी, तेथी वधारे राखवुं नहीं. दश हजार गायोनुं एक गोकुळ कहेवाय छे, एवां चार गोकुळ, एक हजार गाडां, खेतीने माटे पांचसो हळ अने बेसवा माटे चार वाहन राख्यां, तेथी वधारेनो त्याग कर्यो. छठ्ठा दिग्व्रतनुं वर्णन आगळ व्रतना अधिकारमां कहेवाशे. सातमा व्रतमां अनंतकाय, अभक्ष्य अने पन्नर कर्मादाननो त्याग कर्यो. दातणमां जेठीमधना काष्ठ शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. मर्दन माटे शतपाक अने सहस्रपाक तेल विना बीजा तेलनो त्याग कर्यो. उद्वर्तन (पीठी)ने माटे घउं ने उपलेटना पिष्ट शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. स्नानने माटे उष्ण जळना आठ माटीना घडाथी वधारे जळनो त्याग कर्यो. पहेरवामां उपरनुं अने नीचेनुं एम बे वस्त्रो शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. विलेपनमां चंदन, अगरु, कर्पूर अने कुंकुम विगेरे शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. पुष्पोमां पुंडरीक कमळ तथा मालतीनां पुष्पो शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. अलंकारमां नामांकित मुद्रिका (वींटी) तथा कानना बे कुंडळो शिवाय बाकीनो त्याग कर्यो. धूपमां अगरु अने तुरुष्क (लोबान) शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. पेय (पीवा लायक) आहारमां मग चणा विगेरे तळीने करेल अथवा घीमां तळेला चोखाथी बनाववामां आवेल प्रवाही पदार्थ शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. पक्वान्नमां घेबर अने खांडनां खाजां, भातमां कमळशाळीना चोखा, विदळमां मग अडद अने चणा, घीमां शरदऋतुमां थयेलुं गायनुंज घी, शाकमां मीठी डोडी ने पल्लवल, मधुर पदार्थमां पल्यंक, अन्नमां वडां, फळमां क्षीरामलक (मीठां आंवळां), जळमां आकाशथी पडेलुंज पाणी, मुखवासमां जायफळ, लविंग, एलायची कक्कोल अने कपूर ए पांच वस्तुथी मिश्रित तंबोल–एटली चीजो वापरवी, ते शिवाय बीजानो त्याग कर्यो.

आ प्रमाणे तेणे जिनेश्वर पासे बारे व्रत ग्रहण कर्यां. (बाकीनां व्रतोनुं स्वरूप आगळ कहेवामां आवशे). पछी नवतत्त्वनुं स्वरूप जाणीने ते आनंद श्रावके पोताने घेर आवी पोतानी शिवानंदा नामनी स्त्रीने कह्युं के " हे प्रिया ! में आजे जैन धर्म अंगीकार कर्यो छे; तुं पण प्रभु पासे जइने ते उत्तम धर्मनो स्वीकार कर. " ते सांभळीने शिवानंदा तरतज पोतानी सखीओ सहित प्रभु पासे

गइ. जिनेन्द्रने वंदना करी देशना श्रवण करीने तेणे पण श्रद्धा पूर्वक श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो.

आ प्रमाणे देशविरति धर्म पाळवामां तत्पर एवा ते दंपतीए चौद वर्ष व्यतीत कर्यां. एकदा मध्य रात्रिए जागृत थयेल आनंद श्रावक धर्मचिंतवन करवा लाग्यो के " अहो मारुं आयुष्य रागद्वेषमां–प्रमादमां घणुं व्यतित थइ गयुं. कह्युं छे के—

लोकः पृच्छति मे वार्तां, शरीरे कुशलं तव ।
कुतः कुशलमस्माकमायुर्याति दिने दिने ॥ १ ॥

" लोक मने वात पूछे छे के तमारुं शरीर कुशळ छे ? परंतु शरीर ते कुशळ क्यांथी होय ? केमके दिवसे दिवसे आयुष्य तो घटे छे. "

माटे हवे हुं प्रमाद दूर करीने श्रावकनी प्रतिमानो अंगीकार करी यथाशक्ति तेनुं पालन करुं. " एम विचारीने प्रातःकाळे पोताना कुटुंबने तथा ज्ञातिवर्गने बोलावी तेमने भोजन वस्त्रादिवडे संतोष पमाडीने मोटा पुत्रने भार सोंपी पोते प्रतिमानुं वहन करवा तत्पर थयो.

प्रथम छ आगार रहित तथा शंका कांक्षादि पांच अतिचार रहित सम्यक्त्व नामनी पहेली प्रतिमा एक मास सुधी धारण करी. पछी पूर्वनी (प्रथम पडिमानी) क्रिया सहित बार व्रतना पालन रूप बीजी प्रतिमा बे मास सुधी धारण करी. पछी पूर्वनी क्रिया सहित सामायिक नामनी त्रीजी प्रतिमा त्रण मास सुधी वहन करी. पछी पूर्वनी क्रिया सहित चार मास सुधी चार पर्वणीए[1] पौषध करवा रूप पौषध नामनी चोथी प्रतिमानुं वहन कर्युं. पछी पांच मास सुधी ते चारे पर्वणीना पौषधमां रात्रिना चारे प्रहर कायोत्सर्ग रही कायोत्सर्ग नामनी पांचमी प्रतिमा वहन करी. पछी छ मास सुधी अतिचार दोष रहित ब्रह्मचर्यनुं पालन करवा रूप छठी प्रतिमा वहन करी. पछी सात मास सुधी सातमी सचित्तनुं वर्जन करवा रूप प्रतिमा धारण करी. पछी आठ मास सुधी पोते समग्र आरंभ न करवा रुप आठमी आरंभत्याग नामनी प्रतिमा धारण करी. पछी

१ अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा ने अमावास्या—आ चार पर्वणी; तेमां अष्टमी चतुर्दशी बे बे होवाथी कुल दिवस ६ गणवा.

सेवकद्वारा पण कांइ आरंभ न कराववा रूप नवमी प्रतिमा नव मास सुधी वहन करी. पछी पोताने निमित्ते करेलुं भोजन न करवा रूप दशमी प्रतिमा दश मास सुधी वहन करी. पछी छेल्ली अगियारमी प्रतिमा वहन करी तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे—

खुरमुंडो लोएण वा, रयहरणं उवग्गहं च घेत्तूणं ।
समणभूयो विहरइ, धम्मं काएण फासंतो ॥ १ ॥

" अस्त्राथी मुंडन करावीने अथवा लोच करीने रजोहरण तथा पात्रादिक ग्रहण करी कायावडे धर्मनुं पालन करतो सतो साधुनी जेम विचरे, अने कुटुंबमां 'प्रतिमाप्रपन्नस्य श्रावकस्य भिक्षां देहि' एम बोली भिक्षा मागे."

ए रीते अगियारमी प्रतिमा अगियार मास सुधी वहन करी. आ अगियारे प्रतिमामां पाछली पाछली प्रतिमाओ भेळी करवानीज समजवी अने ते सर्वे अतिचार पण लगाड्या विना पाळवानी समजवी. अगियारे प्रतिमा वहन करतां पांच वर्ष अने पांच मास [१] व्यतीत थयां. ते प्रमाणे करतां आनंद श्रावकनुं बाह्यथी शरीर अने अंतरथी मन अति कृश थयां. ते जोइने तेणे चार शरण पूर्वक अनशन ग्रहण कर्युं. ते अवसरे तेनी मनशुध्धि विशेष थवाथी तेने अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं.

तेवा समयमां ते गामनी बहार उद्यानमां श्री वीरस्वामी समवसर्या. श्री वीरप्रभुने वंदना करी तेमनी आज्ञा लइने गौतम गणधर गोचरी माटे गाममां आव्या. त्यांथी निर्दोष आहार लइने पाछा वळतां घणा लोकोना मुखथी आनंद श्रावकना अनशननुं वृत्तांत सांभळीने गौतम स्वामी तेने शाता पूछवा गया. पोतानी पासे गणधर महाराजाने आवेला जोइने भक्तिभाववडे आनंद श्रावके तेमना चरणकमळमां प्रणाम करीने पूछ्युं के " हे पूज्य ! श्रावकने पण अवधि ज्ञान थाय खरुं ?" गौतम स्वामी बोल्या के " उत्तम श्रावकने थाय. " ते सांभळीने आनंद बोल्यो के " हे भगवान ! मने तेवुं ज्ञान थयुं छे. तेथी हुं उंचे सौधर्म देवलोक सुधी, नीचे लोलुक नरकावासा सुधी, तिरछुं लवण समुद्रने विषे त्रण दिशामां (पूर्व पश्चिम ने दक्षिण दिशामां) पांचसो योजन अने उत्तर दिशामां क्षुद्र हिमाचळ सुधी सर्व वस्तुओ जोउं छुं. " ते सांभळीने गणधर बोल्या के " एटलुं

१ अगियार प्रतिमाना काळनो मर्यादा गणतां पांच वर्षने छ मास थायछे.

એવું અવધિજ્ઞાન ગૃહસ્થીને સંભવતું નથી, માટે તું મિથ્યા દુષ્કૃત આપ." આનંદે કહ્યું કે "હે ભગવાન્ ! અસત્ય બોલવાનો મિથ્યા દુષ્કૃત અપાય છે, માટે આપે આપવો જોઇએ." તે સાંભળીને ગૌતમ ગણધર શંકા પામ્યા. એટલે તેમણે પ્રભુ પાસે જઇને તેનું સ્વરૂપ પૂછ્યું. પ્રભુએ તેજ પ્રમાણે કહ્યું. એટલે ગૌતમ ગણધરે આનંદ પાસે આવીને મિથ્યા દુષ્કૃત આપ્યું.

પછી આયુષ્ય પૂર્ણ થયે આનંદ શ્રાવક પંચ નમસ્કારનું સ્મરણ કરતો મૃત્યુ પામીને સૌધર્મ કલ્પમાં અરુણાભ નામના વિમાનમાં ચાર પલ્યોપમના આયુષ્યવાળો દેવ થયો. ત્યાંથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થઇ મોક્ષપદને પામશે.

આ ચરિત્ર ઉપાસક દશાંગ સૂત્રમાં તથા આનંદ સુંદર (વર્ધમાન દેશના) માં સવિસ્તર કહેલું છે, ત્યાંથી જાણી લેવું.

"હે શ્રાવકો ! આ આનંદ શ્રાવકનું ચરિત્ર શ્રવણ કરીને આનંદમાં તત્પર થઇ મનશુદ્ધિ કરવામાં નિરંતર આદરવાળા થાઓ."

ઇત્યબ્દદિનપરિમિતોપદેશપ્રાસાદવૃત્તૌ દ્વિતીય-
સ્તંભે ષોડશં વ્યાખ્યાનમ્ ॥ ૧૬ ॥

વ્યાખ્યાન ૧૭ મું.



વચન શુદ્ધિ વિષે.

જીવાજીવાદિતત્ત્વાનાં, પ્રરૂપકં સદાગમમ્ ।
તદ્વિપરીતં વદેન્નાથ, સા શુદ્ધિર્મધ્યગા ભવેત્ ॥ ૧ ॥

ભાવાર્થ—" જીવ અજીવ વિગેરે તત્ત્વોની પ્રરૂપણા કરનાર આગમમાં તેનું જે સ્વરૂપ કહેલું હોય તે પ્રમાણેજ કહેવું, તેથી વિપરીત કહેવું નહીં, તેનું નામ

वचनशुद्धि कहेवाय छे."

सद्दानेन गृहारंभो, विवेकेन गुणव्रजः ।
दर्शनं मोक्षसौख्यांगं, वचःशुद्ध्यैव लक्ष्यते ॥ २ ॥

भावार्थ—"गृहस्थाश्रम रुमा दानवमे ओळखाय छे, गुणनो समूह विवेकवमे ओळखाय छे, अने मोक्षसुखना अंगभूत दर्शन (समकित) वचननी शुद्धिथीज ओळखाय छे; अर्थात् दान, विवेक अने वचनशुद्धिवमेज गृहस्थपणुं, गुणसमूह अने समकित होवानी खात्री थइ शके छे."

आ प्रसंग उपर संप्रदायागत कालिकसूरिनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

कालिकाचार्यनुं दृष्टान्त.

"दत्त राजाना मामा कालिकसूरिनी पेठे महा पुरुषो संकटमां पण असत्य बोलता नथी. चंदननी सुगंध तेने पथ्थरपर घसवाथीज जणाय छे अने इक्षुनो (शेरडीनो) अति मधुर रस तेने पीलवाथीज नीकळे छे."

तुरमणि नामनी पुरीमां कालिक नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने भद्रा नामनी बहेन हती. तेने दत्त नामे पुत्र हतो. कालिक द्विजे केटलेक काळे गुरु पासे धर्मोपदेशनुं श्रवण करी वैराग्यथी चारित्र ग्रहण कर्युं. तेथी कोइना अंकुश विना दत्त अति उध्धत थइ गयो, साते व्यसनमां आसक्त थयो. केटलेक काळे ते दत्त त्यांना जितशत्रु राजानो सेवक बन्यो. सेवा करतां राजा तेनापर प्रसन्न थयो, तेथी तेने अनुक्रमे प्रधान बनाव्यो. पछी धीरे धीरे सर्व राजवर्गने पोतानो करीने राजाने पदभ्रष्ट करी दत्त पोते राजा थयो. ते परलोकथी भय पाम्या विनाज आश्रवना कार्योमां द्रव्यनो व्यय करवा लाग्यो. मोटा मोटा यज्ञो करी घणा जीवोनी हिंसा करवा लाग्यो, अने तेमां हणाता पशुओने जोइने ते अति हर्ष पामवा लाग्यो.

अहीं कालिक मुनि बहुश्रुत थवाथी गुरुए तेने सूरिपद आप्युं. अन्यदा विहार करतां करतां कालिकाचार्य तुरमणि पुरीना उद्यानमां आव्या. तेमनुं आगमन जाणीने दुष्ट दत्त राजा पोतानी माताना आग्रहथी तेमने वांदवा गयो. मामाने वंदना करीने दत्त तेमनी सन्मुख बेठो. पछी तेणे सूरिने प्रश्न कर्यो के "हे-

मामा ! यज्ञ करवाथी शुं फळ प्राप्त थाय ?" तेना उत्तरमां गुरुए जीवदया रूप धर्मनो उपदेश कर्यो. त्यारे फरीथी दत्त बोल्यो के "हे पूज्य ! हुं धर्म विषे प्रश्न करतो नथी, हुं तो यज्ञनुं फळ पूछुं छुं." आ प्रमाणे दत्ते वारंवार पूछवाथी गुरु बोल्या के "हे दत्त ! तुं जाणतो नथी के यज्ञनुं फळ नरकगमनज छे, अने तेथी तारी पण नरकेज गति थवानी छे. केमके लौकिक शास्त्रमां पण कहेलुं छे के—

> अस्थ्नि वसति रुद्रश्च, मांसे चास्ति जनार्दनः ।
> शुक्रे वसति ब्रह्मा च, तस्मान्मांसं न भक्षयेत् ॥ १ ॥
> तिलसर्षपमात्रं तु, मांसं यो भक्षयेन्नरः ।
> स नरो वर्तते नरके, यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ २ ॥

भावार्थ—"प्राणीओनां हाडकांमां महादेव वसे छे, मांसमां जनार्दन (विष्णु) वसे छे, अने वीर्यमां ब्रह्मा वसे छे, माटे मांसनुं भक्षण करवुं नहीं. जे मनुष्य तल अने सर्षवना दाणा जेटलुं पण मांस खाय छे ते मनुष्य ज्यांसुधी आकाशमां सूर्य चंद्रनी हयाती छे त्यांसुधी नरकमां रहे छे."

वळी हे दत्त राजा ! तुं आजथी सातमे दिवसे कुंभिपाकनी वेदना भोगवीने नरके जइश." ते सांभळीने क्रोध पामेला दत्ते पूछ्युं के "तेनी खात्री शी ?" सूरि बोल्या—"तारा मृत्युना समय पहेलां तारा मुखने विषे मनुष्यनी विष्टा पेसशे." दत्ते क्रोधथी पूछ्युं—"हे मामा ! त्यारे तमारी शी गति थशे ?" गुरु बोल्या—"हुं स्वर्गे जइश." ते सांभळीने दत्त राजा खड्गथी गुरुने हणवा इच्छतो सतो विचारवा लाग्यो के "जो हुं सात दिवसथी वधारे जीवीश तो पछी जरुर आने मारी नांखीश." एम विचारीने सूरिने सात दिवस सुधी नहीं जवा देवा माटे सखत चोकीपहेरामां राखीने पोते पोताना महेलमां जइने भरायो. पछी तेणे सूरिनुं वचन अन्यथा करवा माटे एक करोड सुभटोने पोतानी फरता राख्या, अने राजमहेल तथा राजमार्गने अत्यंत साफ करावीने कोइ पण जग्याए किंचित् पण अशुचि न रहे तेवो पाको बंदोवस्त कर्यो. तेवी रीते तेणे ७ दिवस महेलमांज रहीने निर्गमन कर्या. सातमे दिवसे तेने भ्रांति थवाथी तेणे सात दिवस

पूरा थइ गया एम धार्युं. तेथी आज आठमो दिवस छे एम धारी अश्व पर आरूढ थइने हर्ष पूर्वक ते राजमार्गमां नीकळ्यो. ते समये एक माळी पुष्पनो भरेलो करंमीयो लइने राजमार्गे जतो हतो. तेने भेरी विगेरेना शब्द सांभळवाथी अकस्मात झाडानी अत्यंत बाधा थइ आवी. लोको घणा होवाथी बीजे जइ शक्यो नहीं. तेथी राजमार्गमांज तेणे युक्ति पूर्वक मळोत्सर्ग करी लीधो, अने तेना पर पुष्पोनो ढगलो करीने ते आगळ चाल्यो गयो; तेवामां दत्त राजा त्यांथी नीकळ्यो. तेना घोडानो पग पेला पुष्पना ढगला पर पड्यो. एटले तेमांथी विष्टा उडीने तेनो छांटो राजाना मुखमां पेठो. तेथी आचार्यना कहेला वचन पर विश्वास आवतां राजाए पोताना सेवकोने पूछ्युं के " आजे केटलामो दिवस थयो ?" त्यारे तेओए कह्युं के " आज सातमो दिवस थयो. " ते सांभळीने राजा झंखवाणो थइ पाछो फर्यो.

दत्त राजा ज्यारे सूरिपर क्रोध करीने राजमहेलमां आवी छ दिवस एकांतमांज रह्यो हतो ते अवसरे सर्वे राजवर्ग दत्तथी विरुध्ध थइने जितशत्रु राजाने राज्यगादी पर बेसाडवानी युक्ति शोधता हता. तेथी सातमे दिवसे दत्त बहार नीकळ्यो के तरतज तेओए जितशत्रु राजाने बंधनथी मुक्त करीने महेलमां दाखल कर्यो. पछी दत्त ज्यारे मुखमां विष्टा पेसवाथी पाछो फरी राजमहेल पासे आव्यो त्यारे ते राजवर्गे दत्तने एकाएक बांधी लइने जितशत्रुने स्वाधीन कर्यो. तेने जोइने हर्ष पामेला जितशत्रु राजाए तेने कुंभीपाकमां नांखीने पकाव्यो. तेनी महा पीडानो अनुभव करतो दत्त मृत्यु पामीने नरकनो अतिथि थयो. कालिकसूरि आयुष्यनो क्षय थये काळधर्म पामीने स्वर्गना अलंकारभूत थया.

" आ कालिकाचार्यनुं दृष्टांत सांभळीने सर्वे प्राणीओए मृत्युना भयने पण दूर तजी दइने सत्य वचनज बोलवुं. केमके वचनशुध्धिथी आ लोकमां राजादिकथी सन्मान मळे छे, अने परलोकमां स्वर्गनां सुख मळे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ तृतीयस्तंभस्य सप्तदशं व्याख्यानम्

२७

व्याख्यान १८ मुं.

त्रीजी कायशुद्धि विषे.

खड्गादिभिर्भिद्यमानः, पीड्यमानोऽपि बन्धनैः ।
जिनं विनान्यदेवेभ्यो, न नमेत्तस्य सा भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" खड्गादिकथी छेदाता छतां अने बंधनवडे पीडाता छतां पण जे मनुष्य श्री जिनेश्वर विना बीजा देवने न नमे, तेने कायशुद्धि होय छे. "

खड्ग विगेरे हथीयारोथी छेदाता छतां अने रज्जु बेडी विगेरे बंधनोथी पीडाता छतां तेमज महा संकटमां आवी पड्या छतां जे मनुष्य श्री जिनेन्द्र विना बुद्ध, शंकर, स्कंद विगेरे अन्य देवोने नमस्कार न करे, ते सम्यग्दृष्टि प्राणीने त्रीजी कायशुद्धि जाणवी. आ प्रसंग उपर वज्रकर्णनो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

वज्रकर्णनुं दृष्टान्त.

अयोध्या नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी दशरथ राजा राज्य करता हता. तेमणे एकदा प्रसन्न थवाथी पोतानी कैकयी नामनी राणीने वरदान आप्युं हतुं. ते तेणीए योग्य समये मागवा माटे थापण करी राख्युं हतुं. पछी रामचंद्रने राजगादी आपवाने वखते तेणीए ते वरदान मागीने रामचंद्रने बार वर्षनो वनवास अपाव्यो. तेथी राम, लक्ष्मण अने सीता वनमां गया. तेओ फरतां फरतां अनुक्रमे पंचवटीमां केटलोक वखत रहीने आगळ चालतां अवन्तीना प्रदेशमां आव्या. त्यां जुए छे तो खुल्ली दुकानो सर्व जातनी चीजोथी भरपूर पडी हती, घरो धन अने सुवर्ण विगेरेथी पूर्ण छतां उघाडां पड्यां हतां, क्षेत्रोनां खळांओमां धान्यना ढगलाओ पड्या हता, तथा अश्वो, बळदो विगेरे पशुओ रक्षक विना स्वेच्छाए फरता हता. परंतु कोइपण स्थाने कोइ मनुष्य दृष्टिए पडतो नहोतो. ते जोइने रामे लक्ष्मणने पूछ्युं के " हे वत्स ! आ बधुं मनुष्यविना शून्य केम जणाय छे ? "

त्यारे लक्ष्मण एक उंचा वृक्षपर चढीने चोतरफ जोवा लाग्यो. तेवामां एक पुरु तेना जोवामां आव्यो. ते पुरुषने बोलावतां तेणे आवीने लक्ष्मणने प्रणाम कर्यो. पछी ते पुरुषने लइने लक्ष्मण मोटा भाइ पासे गया. रामे ते पुरुषने ते वृत्तान्त पूछ्युं, त्यारे ते बोल्यो के " हे स्वामी ! सांभळो.

दशपुर नामना नगरमां वज्रकर्ण नामे महा पराक्रमी राजा छे. ते सर्व गुण संपन्न छतां चंद्रनी जेम मृगया (शिकार)ना व्यसनथी दूषित थयेलो हतो. एकदा ते केटलाक लुब्धको (पारधीओ)ने लइने वनमां गयो हतो. त्यां तेणे एक सगर्भा हरिणीने शरवडे वींधी. तेथी तेणीना उदरमांथी गर्भ नीकळीने पृथ्वीपर पड्यो. ते गर्भने घरोळीनी कापेली पुंछडीनी जेम तरफडतो जोइने ते वज्रकर्णना हृदयमां दया आवी. तेथी ते पोताना आत्मानी निंदा करवा लाग्यो के " अहो ! में नरके जवा योग्य पाप उपार्जन कर्युं. " इत्यादि पोताना आत्माने निंदतो ते राजा निर्दयपणानो त्याग करीने वनमां आमतेम भ्रमण करतो हतो, तेवामां तेणे एक शिलातलपर बेठेला शांत अने दांत एवा कोइ मुनिने दीठा. तेमने प्रणाम करीने राजाए पूछ्युं के " हे महात्मा ! आ अरण्यमां रहीने तमे शुं करो छो ? " मुनिए जवाब आप्यो के " हुं आत्महित करुं छुं. " ते सांभळीने राजाए कह्युं के " हे स्वामी ! मने पण आत्महित थाय, तेवो रस्तो बतावो. " त्यारे मुनि बोल्या के " हे राजा ! सम्यग्दर्शन पूर्वक हिंसादिकनो त्याग करवो, तेज आत्महित छे. तेमां सम्यक्त्वनुं स्वरुप आ प्रमाणे छे—

देवो जिणंदो गयरागदोसो, गुरु वि चारित्तरहस्स कोसो ।
जीवाइ तत्ताण य सद्दहाणं, सम्मत्तमेवं भणियं पहाणं ॥१॥
जस्सारिहंते मुणिसत्तमेसु, मोत्तुं न नामेइ सिरो परस्स ।
निव्वाणसुक्खाण निहाणठाणं, तस्सेव सम्मत्तमिणं विसुद्धं ॥२॥

भावार्थ—" रागद्वेष वर्जित श्रीजिनेश्वरने देव, चारित्ररहस्यना निधि समान साधुओ ते गुरु, अने जीवादिक नव तत्त्वोनुं शुद्ध स्वरुप ते धर्म—तेनी जे सद्दहणा राखवी ते सर्वमां मुख्य एवुं समकित कहेवाय छे. अरिहंत अने उत्तम साधुओने मूकीने बीजा कोइने जे मनुष्य मस्तक नमावतो नथी, तेनेज निर्वाणसुखना

प्रधान स्थान रूप आ विशुद्ध समकित छे एम जाणवुं."

इत्यादि धर्मोपदेश सांभळीने वज्रकर्ण राजा प्रतिबोध पाम्यो. तेथी तेणे गुरु पासे समकित मूळ बार व्रत अंगीकार कर्यां. तेमां विशेषे करीने जिनेश्वर तथा मुनिराज सिवाय बीजा कोइने न नमवानो नियम ग्रहण कर्यो. पछी ते पोताना नगरमां गयो. घेर आव्या पछी तेने विचार थयो के—"हुं अवन्ति नगरीना सिंहरथ राजानो सेवक छुं; तेथी तेने मारे अवश्य प्रणाम करवा पडशे ने तेम करवाथी मारा नियमनो भंग थशे." एम विचारीने तेणे पोताना हाथनी एक अंगुठी करावी, तेमां मुनिसुव्रत स्वामीनी सूक्ष्म प्रतिमा करावी. पछी ज्यारे सिंहरथ पासे जाय त्यारे ते अंगुठीने सन्मुख राखीने प्रणाम करवा लाग्यो, एटले ते मन वडे जिनेश्वरनेज प्रणाम करतो हतो, अने बहारथी (देखावमां) सिंहरथ राजाने प्रणाम करतो देखातो हतो.

एकदा कोइ खळ पुरुषे ते वृत्तांत सिंहरथ राजाने निवेदन कर्यो. ते सांभळीने राजाए विचार्युं के—"अहो! वज्रकर्ण केवो कृतघ्नी छे? के ते मारुं राज्य भोगवे छे, छतां मने प्रणाम मात्र पण करतो नथी. तेथी ते दुष्टनो दंड करवो, एज न्याय छे." एम विचारीने तेणे संग्रामने माटे रणभंभा वगडावी.

आ समये कोइ पुरुषे वज्रकर्ण पासे जइ कह्युं के "हे साधर्मी वज्रकर्ण राजा! तमने जेम रुचे तेम करो. सिंहरथ राजा तमारापर चडी आवे छे." वज्रकर्णे पूछ्युं के "तुं कोण छे? अने क्यां रहे छे?" ते बोल्यो "हे देव! हुं कुंडिनपुरनो रहीश वृश्चिक नामनो श्रावक छुं. एकदा हुं घणां करीयाणां लइने उज्जयिनी[1] नगरीमां गयो हतो. त्यां एक दिवस वसन्तोत्सवमां अनंगलता नामनी गणिकाने जोइने हुं तेनापर मोहित थयो, तेथी तेणीने में मारुं सर्व धन आपी दीधुं, अने तेणीनी साथे हुं विषयसुख भोगववा लाग्यो. एकदा ते गणिकाए सिंहरथराजानी राणीनां आभूषणो जोइने पोतानां आभूषणोनी निंदा करी रोतां रोतां मने कह्युं के "जो तुं खरो मारो प्रियतम हो, तो राणीनां आभूषणो मने लावी आप." ते सांभळीने तेणीनुं वचन अंगीकार करी हुं रात्रीने समये चोरी करवा माटे राजमहेलमां दाखल थयो. ते वखते राजा तथा राणी वातो करता हता. तेमां राणीए राजाने पूछ्युं के "हे स्वामी! आजे तमारा मुखपर चिंता होय एमज-

---

१ अवन्ति अने उज्जयनी ए एकार्थक छे

णाय छे, तो तमारे शी चिंता छे ? " राजाए जवाब आप्यो के—हे प्रिया ! प्रातःकाळे वज्रकर्ण मारा खड्गथी मृत्यु पामशे, त्यारेज मारी चिंता दूर थशे. " तेथी तेनी वातोथी तमारुं जैनधर्ममां दृढपणुं जाणीने चोरीने तथा ते वेश्याने मूकीने तरतज तमने कहेवा माटे आव्यो छुं. माटे हे वज्रकर्ण राजा ! हवे तमने जेम योग्य लागे तेम करो. " ते सांभळीने वज्रकर्ण राजाए ते श्रावकनो सारो सत्कार करीने तेने विदाय कर्यो. अने पोते किल्ला बहारनां परांओने भांगीने सर्वने किल्लामां लइ द्वार बंध करीने रह्यो. प्रातःकाळ थतां सिंहरथ राजाए आवीने ते नगरने घेरो घाल्यो अने वज्रकर्ण पासे दूत मोकल्यो. ते दूते आवीने वज्रकर्णने कह्युं के " हे वज्रकर्ण ! ते वींटी पहेर्याविना अमारा स्वामी पासे आवी तेने प्रणाम करीने सुखेथी राज्य भोगव. नहींतो तारो नाश थशे. " ते सांभळीने वज्रकर्णे कह्युं के " हे दूत ! तारा राजाने कहे के—मारे राज्यनुं कांइ पण प्रयोजन नथी परंतु मने मात्र धर्मद्वार आप के जेथी हुं बीजे स्थाने जइने मारा नियमनुं पालन करुं. " ते सांभळीने दूते जइने सिंहरथने कह्युं, तेथी सिंहरथ क्रोध युक्त थइने ते पुर रुंधीने रह्यो छे. माटे हे रामचंद्र ! आ देश उजड थवानुं ए कारण छे. "

ते सर्व वृत्तांत सांभळीने रामे लक्ष्मणने कह्युं के " हे वत्स ! आपणे पण त्यां जइने आश्चर्य जोइए, तथा वज्रकर्णनुं साधर्मीवात्सल्य करीए (तेने सहाय करीए). " एम कहीने राम, लक्ष्मण तथा सीता दशपुर तरफ चाल्या. त्यां राम अने सीताने पुर बहार राखी लक्ष्मण एकलो गाममां गयो. वज्रकर्णे लक्ष्मणने भोजननुं निमंत्रण कर्युं. त्यारे लक्ष्मणे कह्युं के मारा मोटा भाइ तेमनी स्त्री सहित गाम बहार देवकुळमां रहेला छे. " ते सांभळीने वज्रकर्णे तेमने पण तेडावी लइ त्रणेने आदर पूर्वक भोजन कराव्युं. पछी रामना कहेवाथी लक्ष्मणे सिंहरथ राजा पासे जइने कह्युं के " हे राजा! मने रामचंद्रे तमारी पासे मोकल्यो छे. ते तमने कहेवरावे छे के—तमे वज्रकर्ण साथे युद्ध न करो. " सिंहरथ बोल्यो के " हुं भरत राजानी आज्ञा मस्तके चढावुं छुं, पण कांइ रामनी आज्ञा मानतो नथी. " त्यारे लक्ष्मणे कह्युं के " तो युद्ध माटे तैयार था. " ते सांभळीने क्रोध पामेलो सिंहरथ हस्तीपर आरुढ थइ संग्राम करवा तैयार थयो. तेने एक क्षणवारमां जीती लइने लक्ष्मणे पृथ्वीपर पाडी बांधी लीधो. त्यारे ते बोल्यो के " में अज्ञानपणाथी आपनुं अपमान कर्युं छे, आप मारा स्वामी छो, तेथी जेम आपनी इच्छा

होय तेम करो. " ते सांभळीने लक्ष्मणे वज्रकर्णने उज्जयिनीनो राजा करी सिंहरथने तेनो सेवक बनावी मुक्त कर्यो. पछी सर्वे पोतपोताने स्थाने गया. वज्रकर्णे लीधेला नियमनुं यथास्थित पालन करी सर्व जीवोने खमावी स्वर्गे गयो. त्यांथी चवीने मोक्षपदने पामशे.

" हे भव्य जीवो ! आ वज्रकर्ण राजानुं चरित्र सांभळी कायशुद्धि धरनारे जिनेन्द्र सिवाय बीजा कोइने नमन करवुं नहीं. जेथी करीने तमने जल्दीथी मुक्तिरूपी स्त्री आलिंगन करशे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादद्वितीयस्थंभस्यअष्टादशंव्याख्यानम्

व्याख्यान १९ मुं.



समकितनां पांच दूषणो विषे.

शंकाकांक्षा विचिकित्सा, मिथ्यादृष्टिप्रशंसनम् ।
तत्संस्तवश्च पञ्चापि, सम्यक्त्वं दूषयन्त्यमी ॥ १ ॥

भावार्थ—" शंका, आकांक्षा, विचिकित्सा, मिथ्यादृष्टिनी प्रशंसा अने तेनो संस्तव (परिचय विगेरे), ए पांच समकितने दूषित करनारां (अतिचार) छे. "

श्री अरिहंते प्ररुपेला धर्मने विषे संदेहनी बुद्धि राखवी, ते शंका कहेवाय छे. ते देश थकी अने सर्व थकी एम बे प्रकारनी छे. देशथी शंका एटले जिनेश्वर प्ररुपित सर्व पदार्थोमां श्रद्धा राखे, पण अमुक एक बे ठेकाणे शंका करे. जेमके जीव छे, ते वातनो खरी पण ते सर्वगत हशे के असर्वगत ? सप्रदेशी हशे के अप्रदेशी ? विगेरे एकाद अंशमां शंका करवी ते देशथी शंका कहेवाय

छे. अने सर्वथी शंका एटले तीर्थंकर ज्ञाषित सर्वे पदार्थोमां शंका करे ते. आ बन्ने प्रकारनी शंका सम्यक्त्वने दूषण रुप छे.

शंकापर वे बाळकनुं दृष्टान्त.

कोइ ग्राममां कोइ एक स्त्रीने वे पुत्रो हता. तेमां एक पुत्र पोतानी शोक्यनो हतो अने एक पोतानो हतो. ते बन्ने छोकरा एक दिवस निशाळेथी घेर आव्या. तेमने ते स्त्रीए माषपेया (अडदनी रावडी) खावा आपी. ते खातां खातां तेमां काळां फोतरां विगेरे जोइने पेलो शोक्यनो छोकरो विचार करवा लाग्यो के " आ रावडीमां माखीओ छे. मारी माता ओरमान होवाथी तेणीए मने मक्षिका नांखीने आपी जणाय छे. " आ प्रमाणे शंका राखवाथी तेने वमन थयुं. तेज रीते हंमेशां शंका थवाथी हंमेशां वमन थतां तेने ऊर्ध्ववातनो महा व्याधि थयो, तेथी ते छेवट मृत्यु पाम्यो. अने बीजा पुत्रे तो एवो विचार कर्यो के " मारी माता मने मक्षिकावाळुं ज्ञोजन आपेज नहीं. " एम निःशंकपणे खावाथी ते सारो रह्यो. आ दृष्टांतथी कोइ पण बाबतमां शंका न करवी. शंकानो त्याग करवो. आ विषय उपर बीजुं दृष्टांत कहे छे—

तिष्यगुप्त निह्नवनुं दृष्टान्त.

श्री महावीर स्वामीने केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी सोळ वर्षे बीजो तिष्यगुप्त नामे निह्नव थयो. तेनुं वृत्तांत आ प्रमाणे छे—

राजगृही नगरीना गुणशील नामना चैत्यमां एकदा चौद पूर्वधारी वसु नामना आचार्य पधार्या. तेमने तिष्यगुप्त नामे एक शिष्य हतो. एकदा आत्मप्रवाद नामना पूर्वनो अज्यास करतां तेना जाणवामां आ प्रमाणे सूत्रालापक आव्यो के— " एगे जंते जीवप्पएसे जीवे त्ति वत्तव्वं सिया ? नो इणट्ठे समट्ठे, एवं दो तिन्नि संखिज्जा असंखिज्जा वा एगप्पएसुणं वि जीवे ? नो जीवे त्ति वत्तव्वं । कह्हं ? जम्हा कसिणे पडिपुन्नलोगागासपएसतुल्ले जीवे जीवे त्ति वत्तव्वं सिया इत्यादि— " हे जगवान ! जीवना एक प्रदेशमां जीव वक्तव्यता थइ शके ?" प्रज्जु कहे " ना, ए अर्थ समर्थ–योग्य नथी. " आ रीते " वे प्रदेशमां, त्रण प्रदेशमां, संख्याता प्रदेशमां, असंख्याता प्रदेशमां, छेवट एक प्रदेशे ऊणा एवा सर्वे प्रदेशमां

जीव कहेवाय के नहीं ?" प्रभु कहे—" ना ए अर्थ पण समर्थ नथी. अर्थात् ते जीव कहेवाय नहीं." त्यारे जीव क्यारे कहेवाय ? प्रभु कहे छे के " परिपूर्ण लोकाकाशना प्रदेश जेटला प्रदेश एकेक जीवना छे, ते समग्र प्रदेशने ' जीव ' कहीए. इत्यादि." आ प्रमाणे जाणतां तिष्यगुप्तने एवी शंका थइ के—" जीवना एक छेल्ला प्रदेशमां ज जीव संज्ञा रहेली जणाय छे, बाकीना सर्व प्रदेशमां जीव संज्ञा नथी एवुं आ सूत्र स्पष्ट बतावे छे." आवा पोताना मतने ते बीजाओ पासे पण कहेवा लाग्यो. ते जाणीने गुरुए मित्र रुप थइ तेने कह्युं के, " हे शिष्य ! जो तुं जीवना एक बे विगेरे प्रदेशोमां जीवपणुं नथी स्वीकारतो, अने मात्र एक छेल्लाज प्रदेशमां जीवपणुं माने छे, तो छेल्ला प्रदेशमां पण जीवपणुं सिद्ध थशे नहीं. केमके सर्वनुं प्रदेशपणुं तो सरखुंज छे. तेथी जेम रेतीना हजारो कणीयामां तेल नथी, तो ते तेल एक छेल्ला कणीयामां पण शी रीते आवे ? माटे तारा मानवा प्रमाणे तो जीवनो अभावज सिद्ध थशे. ते अभाव तो तुं मानतो नथी तेथी तेवो अर्थ तारे पण इष्ट नथी." शिष्ये प्रश्न कर्यो के " हे गुरु ! आपे जे आ युक्ति कही, तेथी तो आगमने बाध आवे छे. केमके हमणांज आवेला सूत्रमां एक बे विगेरे प्रदेशमां जीवनो निषेध करीने छेल्लाज प्रदेशमां जीवपणुं कहेलुं छे. तो आप जगत्बंधु जिनेश्वरे कहेला सूत्रनो केम निषेध करो छो ? " गुरु बोल्या के " हे शिष्य ! जो तुं सूत्रने प्रमाण मानतो हो तो सांभळ, तेमांज कह्युं छे के ' परिपूर्ण लोकाकाश प्रदेश तुल्य जीवमां जीव संज्ञा छे.' तेथी श्रुतने प्रमाण माननाराए तो आमां नवी कुयुक्तिओ करवीज न जोइए. सर्व समुदाय रुप जीवना प्रदेशो जीव छे. जेम तंतुना समुदायनेज पट कहीए छीए. पण एक बे विगेरे तंतुमां समस्त पट रहेलो नथी. माटे तारी शंकानुं स्थान रहेतुं नथी." ए प्रमाणे गुरुए समजाव्या छतां पण ते तिष्यगुप्त समज्यो नहीं. त्यारे तेने गुरुए गच्छ बहार कर्यो.

पछी ते तिष्यगुप्त विहार करतां एकदा आमलकल्पा नामनी नगरीमां गयो. त्यां गामनी बहार उद्यानमां रह्यो. त्यां मित्रश्री नामनो एक श्रावक रहेतो हतो. तेणे तेने निह्नव जाणीने प्रतिबोध करवाना हेतुथी तेनी पासे जइ निमंत्रण आप्युं के " आजे आहार लेवा माटे तमारे जातेज मारे घेर आववुं." ते अंगीकार करीने तिष्यगुप्त मित्रश्रीने घेर गयो. मित्रश्रीए तेने बहुमान पूर्वक आसन पर बेसाडी तेनी सन्मुख घणा उत्साह अने आडंबरथी उत्तम प्रकारनां अ-

नेक भक्ष, भोज्य, अन्न, पान, व्यंजन, वस्त्र विगेरेनो समूह धर्यो. पछी ते सर्वमांथ। छेल्लो एक एक अवयव लइने तेना पात्रमां मुक्यो. एटले के पकवान, शाक विगेरेनो एक एक कणीयो आप्यो. दाळ, कढी, जळ विगेरेनुं एकेक बिंदु आप्युं, अने वस्त्रोमांथी एक एक छेल्लो तंतु काढीने आप्यो. पछी ते श्रावके तेने नमस्कार कर्यो. अने पोताना सर्व बंधुजनोने कह्युं के "तमे सर्व आ साधुने वंदना करो. में आजे तेने परिपूर्ण प्रतिलाभ्या छे. हुं आजे मारा आत्माने धन्य अने पुण्यवान मानुं छुं. केमके गुरु पोतेज मारे घेर पधार्या छे." ते सांभळीने तिष्यगुप्त बोल्यो के "हे श्रावक! आवो एक एक कण आपीने तें आजे मारी हांसी करी छे, ते तें योग्य कर्युं नथी." श्रावक बोल्यो के, "हे पूज्य! तमारोज आ मत छे, ते सत्यज होय, तो आ लाडु तथा भात विगेरेना छेल्ला अवयवथी आपनी तृप्ति थवी जोइए अने आ एक छेल्लो वस्त्रतंतु शीतनुं रक्षण करनारो थवो जोइए, जो तेम न थाय, तो आपे कहेलुं सर्व जूठुं पडशे." ते सांभळीने प्रतिबोध पामेलो तिष्यगुप्त बोल्यो के, "हे श्रावक! तें मने सारो बोध आप्यो. श्रीवीर भगवानना वाक्यमां पडेली शंका अत्यारे दूर थइ." पछी ते श्रावके भक्ति पूर्वक सारी रीते तेमने पडिलाभ्या. तिष्यगुप्त गुरु पासे जइ आलोयण प्रतिक्रमण करी श्रीजिनेश्वरनी आज्ञानुसार विचरवा लाग्यो. गुरुना चरणमां वर्ततां सम्यग् मार्गने पामीने तेनुं प्रतिपालन करी ते स्वर्गे गयो.

"हे भव्य प्राणीओ! आ तिष्यगुप्तनुं चरित्र सांभळीने श्रीजिनेश्वरना वचनमां किंचित् पण शंका करवी नहीं. केमके शंका सद्बुद्धिने मलीन करे छे."

अहीं निह्नवनो प्रसंग आववाथी सर्व निह्नवो क्यारे क्यारे थया ते बतावे छे.

निह्नवोनी नोंध.

१ श्री महावीर स्वामीना केवळ ज्ञान पछी चौद वर्षे जमालि नामे निह्नव थयो. २ सोळ वर्षे तिष्यगुप्त थयो. ३ बसें चौद वर्ष अव्यक्त नामे निह्नव थयो. ४ बसें वीश वर्षे शून्यवादी थयो. ५ बसें अठावीश वर्षे एक समये बे उपयोग कहेनार गंगदत्त थयो. ६ पांचसो चुंमाळीश वर्षे नोजीवनुं स्थापन करनार छल्लूरोह थयो. ७ पांचसो चोराशी वर्षे गोष्ठामाहिल थयो. ८ छसोने न-

नव वर्षे सहस्रमल्ल नामे दिगंबर मतने स्थापन करनार सर्वविसंवादी थयो. ए. छे-वटे प्रतिमानुं खंडन करनार ढुंकामति उत्पन्न थयो. *

आ प्रमाणे एकएक वाक्यना उथ्थापनार पण निह्नव गणायेला होवाथी जिनेश्वर भगवंते कहेला सूक्ष्म बादर स्वरूपमां किंचित् पण शंका न करवी. केमके एक अर्थमां पण संदिग्धपणुं थवाथी ते कथक सर्वज्ञपणाना प्रत्ययने योग्य रहेता नथी अने तेथी तेवी मिथ्या कल्पना करनारने मिथ्यादर्शन प्राप्त थाय छे अने ते भवभ्रमणना हेतुभूत छे. वळी

यत्रापि मतिदौर्बल्यादिभिर्मोहवशात् क्वचित् ।
संशयो भवति तत्राप्रतिहतेयमर्गला ॥ १ ॥

भावार्थ—" तीर्थंकरना जे वचनने विषे मतिनी दुर्बळतादिक कोइ पण हेतुथी अथवा कोइ ठेकाणे मोहना वशथी संशय थाय छे ते समकित द्वारनी अप्रतिहत अर्गलारूप छे. " आ विषे सिध्धांतमां कह्युं छे के—

कत्थय मइदुब्बल्लेण, तव्विहायरिय विरहओ वावि ।
नेयगहणत्तणेण य, नाणावरणोदयेणं च ॥ १ ॥
हेऊदाहरणसंभवे य, सइ सुट्ठु जं न बुज्झिज्झा ।
सव्वणुमयमवितहं, तहावि तं चिंतए मइमं ॥ २ ॥

भावार्थ— " कोइ ठेकाणे मतिनी दुर्बळताथी (मंदताथी), तथाविध् आचार्यना अभावथी, ज्ञेयनुं ग्रहणपणुं यथार्थ न थवाथी अने ज्ञानावरणीय कर्मना उदयथी हेतु, उदाहरण विगेरेनो संभव छतां पण सूत्रनुं यथार्थ ग्रहण थइ न शके—बराबर समजवामां न आवे तोपण मतिमान पुरुषे एवुंज चिंतववुं के —सर्वज्ञनुं वचन अवितथ—निर्दोषज छे. "

केटलाएक पदार्थो मात्र आगमगम्यज होय छे. एटले ते पदार्थो आपणी

* आ संख्या विगेरेमां प्रतिनी अशुद्धिने लीधे भूल्नो संभव छे तेथी अन्यत्र यथार्थ होय ते प्रमाण गणवा योग्य छे

जेवा प्राकृत जनोना प्रमाणनी परीक्षाने अगोचर छे. परंतु ते पदार्थो आप्त पुरुषोना कहेला होवाथी संदेह करवाने योग्य नथी. इति शंका दूषणाधिकारः

इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्थंभे एकोनविंशतितमं व्याख्यानम्

व्याख्यान २० मुं.



हवे आकांक्षा दोषने स्पष्ट करे छे—

देशतः सर्वतो वाप्यभिलाषः परदर्शने ।
स आकांक्षाभिधो दोषः, सम्यक्त्वे गदितो जिनैः ।

भावार्थ—"देशथी अथवा सर्वथी अन्यदर्शननो जे अभिलाष ते सम्यआकांक्षा नामनो दोष जिनेश्वरोए कहेलो छे."

कोइ दर्शनमां कांइक पण जीवदया विगेरेनो विषय सारो जोइने ते दर्शननी अभिलाषा थाय, ते आकांक्षा कहेवाय छे. तेमां देशथी आकांक्षा एटले कोइ एक ज दर्शननी अभिलाषा अने सर्वथी आकांक्षा एटले सर्व पाखंडी धर्मोनी अभिलाषा. जेम बौध्ध धर्म सारो छे तेमां कांइ पण कष्ट करवानुं कहेलुं नथी. तेमज कपिल अने द्विजादिकना धर्ममां पण अहीं विषयसुखो भोगवनार परभवमां पण सुख पामे छे, माटे ए धर्मो पण सारा छे. आ प्रमाणेना विचारोथी एकांत सुख आपनार जैन दर्शनने दूषित करे छे. आनो भावार्थ जितशत्रु राजा ने तेना मंत्रीना दृष्टांतथी जाणवो.

जितशत्रु राजा ने तेना मंत्रीनी कथा.

सर्व प्रकारना कल्याणना स्थानभूत वसंतपुर नामे नगर छे. त्यां जितशत्रु

नामे राजा राज्य करे छे. तेने मतिसागर नामे मंत्री छे. एकदा राजाए चंद्रमाना किरण जेवा श्वेत बे अश्वो जोइने प्रसन्न थइ तेना मालिकने तेनुं मूल्य आपी खरीद कर्या. पछी तेनी परीक्षा करवा माटे मंत्री सहीत बंने अश्व पर स्वार थइ मंडलिभ्रमादि गति कराववा लाग्या. तेवामां वनमां रहेला लोकोए त्रास पमाड्या सता ते अश्वो कुशिष्यनी जेम विपरीत शिक्षा पामेला होवाथी पवननी गतिनी जेवी गति करीने तेमने कोइ मोटा भयंकर जगलमां लइ गया. त्यां श्रम अने क्षुधाथी पीडा पामेला राजा अने मंत्रीए वनना फळो खाइने घणा दिवसो निर्गमन कर्या. केटलाक दिवसो गया पछी तेमनुं सैन्य के जे तेमने शोधतुं शोधतुं पाछळ आवतुं हतुं ते तेमने मळ्युं. एटले सैन्य साथे राजा तथा मंत्री पोताना पुरमां गया. राजा जाते मूर्ख होवाथी तेणे रसोइयाओने कह्युं के " मारे माटे सर्व जातना पकवान तथा शाक विगेरे तैयार कर, कारण के हुं घणा दिवसथी भूख्यो छुं. " रसोइआओए पण राजानी आज्ञा प्रमाणे जूदा जूदा सर्व जातिना पकवान विगेरे बनावीने राजानी पासे मूक्यां. राजा पण क्षुधाथी पिडित थयेलो हतो तेथी जेम वडवाग्नि समुद्रना जळनुं पान करतां तृप्ति न पामे, तेम राक्षसनी जेम सर्व आहार करतां पण तृप्ति पाम्यो नहीं. छेवट घणो आहार करवाथी तेना पेटमां शूळ उत्पन्न थयुं अने तेनी व्यथाथी तेज रात्रीए ते मृत्यु पाम्यो. पेला मंत्रीए तो घेर जइने थोडुं थोडुं पथ्य भोजन करवा मांड्युं अने साथे वमन तथा विरेचन पण लेवा लाग्यो. एटले भोजन पर अति आकांक्षा राख्या सिवाय पथ्य भोजन करवाथी ते सुखी थयो

आ दृष्टांतनो सारांश ए छे के—राजा अने मंत्रीने स्थाने जीवो छे, तेमां केटलाक राजा जेवा जीवो कांइक तपस्या विगेरे बाह्य गुणो जोइने जूदा जूदा दर्शननी आकांक्षा करे छे. तेओ राजानी जेम तृप्ति पाम्या विना ज मृत्यु पामीने दुर्गतिना भाजन थाय छे. अने जेओ स्याद्वाद—अनेकांत धर्ममां निश्चळ रहे छे, तेओ मंत्रीनी जेम सुखी थाय छे. इति आकांक्षायां नृपमंत्रीप्रबंधः

आ प्रसंग उपर बीजुं पण दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

सर्व देवनी भक्ति करनार श्रीधर श्रावकनुं दृष्टांत.

गुणदोषापरिज्ञानात्, सर्वदेवेषु भक्तिमान् ।

यः स्यात् श्रीधरवत्पूर्वं, स तु नैवाश्नुते सुखम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" गुणदोष जाण्याविना जे मनुष्य सर्व देवोने विषे प्रथमावस्थामां श्रीधरनी जेम भक्तिमान थाय छे, ते परिणामे सुख पामता नथी. "

गजपुरमां श्रीधर नामे एक वणिक रहेतो हतो. ते स्वभावथीज भद्रिक हतो. तेणे एकदा एक मुनि पासे जैन धर्मनुं श्रवण कर्युं, त्यारथी ते हंमेशां श्री जिनेश्वरनी त्रिकाळ पूजा करवा लाग्यो. एकदा श्री प्रभु पासे धूप करीने तेणे अभिग्रह कर्यो के " आ धूप ज्यां सुधी बळे त्यां सुधी मारे निश्चळ बेसी रहेवुं; खसवुं नहीं. दैवयोगे त्यां एक सर्प नीकळ्यो तथापि श्रीधर निश्चळज रह्यो. एटले सर्प तेनी पासे आवी डसवा जाय छे, तेटलामां ते श्रीधरना सत्त्वथी तुष्टमान थयेली देवीए ते दुष्ट सर्पने दूर करीने तेना मस्तकनो मणि लइ श्रीधरने आप्यो. ते मणिना प्रभावथी श्रीधरना घरमां वृष्टिथी लतानी जेम लक्ष्मी वृद्धि पामवा लागी.

एकदा तेना कुटुंबमां कोइ प्रकारनो व्याधि आववाथी कोइए तेने कह्युं के " गोत्र देवीनी पूजा करवाथी गोत्रमां कुशळता रहे छे. " ते सांभळीने भद्रिक श्रीधरे गोत्रदेवीनी पूजा करी. दैवयोगे व्याधि निवृत्त थयो. अन्यदा एक वखत तेने पोताने कांइ व्याधि उत्पन्न थयो, त्यारे कोइना कहेवाथी तेणे यक्षनी पूजा करी. ए प्रमाणे लोकोना कहेवाथी शांतिना लाभने माटे तेमज भावि रोगनी निवृत्ति माटे ते हंमेशा अन्य अन्य देवोनी पूजा करवा लाग्यो. ' भावुक जनो सत्संगथी गुण अने असत्संगथी दोषने पामे छे. ' कह्युं छे के—

एके केचिद्यतिकरगतास्तुंबिकाः पात्रलीलां
गायन्त्यन्ये सरसमधुरं शुद्धवंशे विलग्नाः ॥
अन्ये केचिद् ग्रथितसुगुणा दुस्तरं तारयन्ते
तेषां मध्ये ज्वलितहृदया रक्तमन्ये पिबन्ति ॥ १ ॥

भावार्थ—" तुंबडा तो बधाए एकज जातिना होय छे परंतु तेमां केटलाएक तुंबडा के जेओ यति—मुनिना हाथमां आवे छे ते पात्रनी शोभाने पामे छे, केटलाएक (गवैया पासे जवाथी) शुद्ध वांसनी साथे जोडाइने सरस अ-

ने मधुर गायन करे छे, केटलाएक सारा दोरडाथी गुंथाइने दुस्तर एवा समुद्रथी मनुष्योने तारे छे अने तेमांनाज केटलाएक तुंबडा (कापालीकना हाथमां जवायी) ज्वलित (दुष्ट) छे हृदय—मध्य भाग जेनो एवा थइने लोहीनुं पान करे छे अर्थात् ते कार्यमां कामे लागे छे."

एकदा ते श्रीधरना घरमां प्रवेश करीने चोर लोकोए तेनुं सर्व धन चोरी लीधुं. तेथी ते श्रीधर अत्यंत खेद पामवा लाग्यो. अनुक्रमे तेनी एवी स्थिति थइ गइ के घरमां कांइपण वस्तु न रही अने भोजननो पण संदेह थइ पड्यो. छेवट अत्यंत दुःखी थवाथी तेणे अट्टम करीने सर्व देवनी आराधना करी. त्रीजे दिवसे देवताओ बोल्या के "अरे! तें शा माटे अमारुं स्मरण कर्युं?" श्रीधर बोल्यो के "मने समृद्धि आपो." त्यारे तेओ बोल्या के "तारी कुळदेवी पासे जा. ते आपशे." एटले श्रीधर कुळदेवी पासे जइ अट्टम करीने बेठो. त्रीजे दिवसे ते पण समृद्धि मागवाथी बोली के "हे दुष्ट! मारी पासेथी जलदी उभो था, तुं तारा घर आगळ जे देवोनी पूजा करे छे ते तने आपशे, तेमनी पासे जा." ते सांभळीने श्रीधरे गृहदेवोनी आराधना करी. त्यारे अंदर अंदर हसीने तेओ बोलवा लाग्या. गणपतिए चंडिका देवीने कह्युं के "हे चंडिका! तारा भक्तने मनवांछित आप." चंडिका बोली "तेने तो पेलो यक्ष मनवांछित आपशे, केमके जुओने तेने तेणे उंचा आसन पर बेसाड्यो छे अने वळी मारा पहेलां ते हंमेशां ते यक्षनीज पूजा करे छे." त्यारे यक्ष बोल्यो के "एनुं मनवांछित शासनदेवता आपशे." आ प्रमाणे सर्वे देवोए तेनुं हास्य करीने उपेक्षा करी. त्यारे ते शासनदेवीनी आराधना करवा लाग्यो. शासनदेवी बोली के "हे मूर्ख! तें आ बधुं शुं कर्युं? घणी भूल करी, हवे विकथा अने हास्यमां तत्पर एवा कुदेवोने मूकीने जे देवना पण देव छे, जेना आठे कर्मो क्षीण थया छे अने जे कृपानाज अवताररूप छे एवा त्रिकाळज्ञानी सर्वज्ञनी अर्चा कर के जेथी बन्ने भवमां सुख संपत्ति प्राप्त थाय छे." ते सांभळीने श्रीधरे ते प्रमाणे करवा मांड्युं. पछी तेने आकांक्षा रहित दृढ निश्चयवाळो जाणीने शासनदेवीए फरीथी मणि आप्यो. तेथी पाछो समृद्धिवान थयो अने परभवमां आसन्नसिद्ध थयो. अर्थात् थोडा काळमां सिद्धिपदने पाम्यो.

"हे भव्य जीवो! शास्त्रनिंद्य एवा आकांक्षा दोषनुं सेवन करनार म-

तुच्छ श्रीधरनी जेम हास्यनुं पात्र थाय छे. माटे जिनशासनने जाणनाराए ए दोष सेववो नहीं "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वितीय-
स्तंभे विंशतितमं व्याख्यानम् ॥ २० ॥

व्याख्यान २१ मुं.



त्रीजा विचिकित्सा दोष विषे.

देशतः सर्वतो वापि, कृतक्रियाफलं प्रति ।
क्रियते हृदि सन्देहो, विचिकित्साभिधः सकः ॥ १ ॥

भावार्थ—" करेली धर्मक्रियाना फळ प्रत्ये देशथी अथवा सर्वथी मनमां संदेह करवो, ते विचिकित्सा नामनो दोष कहेवाय छे. "

करेली खेती विगेरे लौकिकक्रियाना फळनी जेम सामायिक विगेरे धर्म-क्रिया कर्यानुं फळ मने प्राप्त थशे के नहीं ? एवी जे शंका करवी, ते विचिकित्सा कहेवाय छे.

अहीं कोइने शंका थाय के. " शंका नामनो जे पहेलो दोष कह्यो तेमां अने आ विचिकित्सामां शो फेर छे ?" तेनो जवाब ए छे के, शंका तो द्रव्य गुण पर्याय रुप सर्व पदार्थमां प्रवर्ते छे, अर्थात् धर्मास्तिकायादि द्रव्योमां, तेना गुणोमां अने पर्यायमां नाना प्रकारनी उद्भवे छे; अने आ विचिकित्सा तो मात्र करेली क्रियामांज प्रवर्ते छे, एटले शंका अने विचिकित्साना विषयो जूदा जूदाज छे. " अथवा बीजी रीते विचिकित्सा एटले मुनिनुं मलथी मलिन शरीर जोइने तेनी जुगुप्सा–निंदा करवी ते. जेमके ' आ मुनिजनो प्रासुक जळथी शरीरनुं प्रक्षालन (स्नान) करता होय तो तेमां शो दोष लागे ? ' एम धारी तेमनी जुगुप्सा करवी

ते पण विचिकित्सा कहेवाय छे. आ विचिकित्सा पण श्री जिनेश्वर प्ररुपित धर्म पर अनास्ता (अश्रद्धा) रुप होवाथी समकितने दूषित करनार छे. आ संबंधमां दुर्गंधा राणीनो प्रबंध जाणवो.

दुर्गंधा राणीनुं दृष्टान्त.

एकदा राजगृहीनो राजा श्रेणिक उद्यानमां समवसरेला श्री वीरप्रभुने वांदवा माटे सैन्य सहित जतो हतो. मार्गमां दुर्गंध सहन न थवाथी वस्त्रना छेडा-वडे नासिका बंध करीने चालता सैनिकोने जोइने राजाए पोताना कोइ सेवकने तेम करवानुं कारण पूछ्युं. त्यारे ते बोल्यो के " हे स्वामी ! अहीं मार्गमां तरतनी जन्मे-ली एक बाळीका पडी छे, तेना शरीरमांथी अत्यंत दुर्गंध छूटे छे. " ते सांभळीने राजा " ए तो पुद्गलनो परिणाम छे " एम कही, ते बाळीकाने जोइ समवसरण-मां गयो. श्री वीरस्वामीने प्रणाम करी देशना सांभळी अवसर जोइने राजाए ते दुर्गंधी बाळीकानो पूर्व भव पूछ्यो. भगवान बोल्या के " अही नजीक रहेला शा-लि नामना गामडामां धनमित्र नाम श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने धनश्री नामनी एक पुत्री हती. एकदा ग्रीष्म ऋतुमां श्रेष्ठीए तेना विवाहनो प्रारंभ कर्यो. तेवामां कोइ मुनि-ओ गोचरीने माटे तेने घेर आव्या. तेमने वहोराववा माटे श्रेष्ठीए पुत्रीने आज्ञा करी. एटले ते मुनिने वहोराववा गइ. परंतु कदिपण स्नान विलेपनादिक वडे शरी-रनी सुश्रूषा नहीं करनारा ते महात्माओना वस्त्रोमांथी अने शरीरमांथी स्वेद तथा मळ विगेरेनी दुर्गंध आववाथी ते धनश्रीए पोतानुं मुख मरड्युं. विवाहनो उत्सव होवाथी सर्व अंगे अलंकारोथी शणगारायेली, मनोहर सुगंधी अंगरागथी विले-पन करायेली तथा युवावस्थाना उदयथी मत्त थयेली ते धनश्रीए विचार कर्यो के " अहो ! निर्दोष जैनमार्गमां रहेला आ साधुओ जो कदाच प्रासुक जळथी पण स्नान करता होय, तो तेमां शो दोष ?" ए प्रमाणे तेणीए जुगुप्सा करी. पछी केटलेक काळे ते जुगुप्सा रूप पाप कर्मनी आलोचना कर्या विना मरण पामी. ते अहीं राजगृहीमां ज एक गणिकाना उदरमां पुत्रीपणे उत्पन्न थइ. ते पो-ताना दुष्कर्मने लीधे गर्भमां रही छती पण माताने अत्यंत असुख उत्पन्न करवा लागी. तेथी ते गर्भथी उद्वेग पामीने ते गणिकाए गर्भपातने माटे घणा औषधो कर्यां. परंतु तेणीनुं आयुष्य दृढ होवाथी गर्भपात थयो नहीं. छेवट समय पूर्ण थ-ये ते पुत्रीने गणीकाए प्रसवी. जन्मथीज तेनी दुर्गंध दुःसह होवाने लीधे तेने ग-

णिकाए विष्टानी जेम तजी दीधी. तेने तमे मार्गमां दीठी."

आ प्रमाणेनी तेनी पूर्व हकीकत सांभळीने श्रेणिक राजाए "हवे पछी तेनी शी गति थशे?" एम प्रभुने पूछ्युं, त्यारे भगवान बोल्या के "हे राजा! ते दुर्गंधाए पूर्वे करेली मुनिनी जुगुप्सारूप अशुभ कर्मनुं फळ समग्र भोगवी लीधुं छे; हवे ते मुनिने आपेला दानना भोग रूप फळने भोगववानी छे. तेथी तेनुं शरीर कस्तूरी अने कर्पूर करतां पण अधिक सुगन्धि थइ गयुं छे. हे राजा! ते आठ वर्षनी थशे, त्यारे तारी पट्टराणी थशे. तेनी निशानी ए छे के—तमे बन्ने सोगठे रमशो, तेमां एवी शरत थशे के 'जे जीते ते हारनारना पृष्ठ पर चढे.' पछी ते रमतमां तुं हारीश, त्यारे तारा पृष्ठ पर ते दुर्गंधा चढशे." ते सर्व वृत्तान्त सांभळीने श्रेणिक राजा आश्चर्य पामी प्रभुने वंदना करी पोताने स्थाने गयो.

अहीं दुर्गंधाने जोइने श्रेणिक राजा समवसरण तरफ गया, त्यार पछी तेणीनुं शरीर सुगंधमय थइ गयुं हतुं. तेवामां त्यांथी कोइ गोवाळनी स्त्री नीकळी तेणीए ते बाळकीने जोइने लइ लीधी अने पोते संतति विनानी होवाथी तेने पुत्री तरीके पाळीपोषीने मोटी करवा मांडी.

एकदा कौमुदी उत्सव आवतां नगरीना सर्व लोको नगरनी बहार उद्यानमां क्रीडा करवा गया हता. ते वखते स्त्रीओनी क्रीडा जोवा माटे श्रेणिक राजा पण अभयकुमारने साथे लइने गया. त्यां ते दुर्गंधा पण पोतानी मानी साथे उत्सव जोवा आवी. तेनी सुंदर देहलता एवी हती के—

श्यामा यौवनशालिनी सुवचना सौभाग्यभाग्योदया ।
कर्णान्तायतलोचना कृशकटी प्रागल्भ्यगर्वान्विता ॥
रम्या बालमरालमन्थरगतिर्मत्तेभकुंभस्तनी ।
बिंबोष्टी परिपूर्णचन्द्रवदना भृंगालिनीलालका ॥ १ ॥

भावार्थ—"ते सुंदर स्त्री युवावस्थाथी सुशोभित हती, तेनुं वचन अति मिष्ट हतुं, ते सौभाग्यरूप भाग्यना उदयवाळी देखाती हती, तेणीना लोचन कर्णपर्यंत दीर्घ हतां, तेणीनो कटिप्रदेश सिंह जेवो कृश हतो, ते प्रगल्भपणाना गर्वथी युक्त जणाती हती, तेणीनी सुंदर चाल राजहंसना बाळक जेवी मंद अने

मनोहर हती, तेना स्तन मदोन्मत्त हाथीना कुंभस्थळ जेवा पुष्ट हता, तेना ओष्ठ पाकेला बिंबना फळ जेवा रक्त हता, तेनुं मुख पूर्णिमाना चंद्र जेवुं कान्तिमान हतुं, अने तेणीना केश भ्रमरनी श्रेणी जेवा श्याम वर्णना हता.

आवी मनोहर स्वरुपवान ते गोपपुत्रीने जोइने श्रेणिक राजा तेणीना पर अत्यंत मोहित थइ कामातुर थया. तेथी राजाए अभयने पण खबर न पडे तेवी रीते पोतानी मुद्रिका (वींटी) तेणीना वस्त्रने छेडे बांधी दीधी. थोडी वार राजाए पोताना हाथ सामे दृष्टि नांखी अभय कुमारने कह्युं के " मारी मुद्रिका अहीं पडी गइ, ते कोइ लइ गयु जणाय छे, माटे ते चोरने शोधी मारी पास लाव. " ते सांभळीने सरळताथी अभयकुमारे पितानुं वचन अंगीकार करी उद्यानना सर्व दरवाजा बंध करावी एक दरवाजेथी सर्व मनुष्योने एक पछी एक जुदा लइने बहार काढवा मांड्या. सर्व स्त्रीओना हाथ तथा वस्त्रना छेडा विगेरे तपासतां तपासतां पेला गोपपुत्रीनी ओढणीना छेडेथी ते मुद्रिका निकळी. ते लइ अभयकुमारे तेणीने पूछ्युं के " तें आ राजानी वींटी शी रीते लीधी?" तेणीए काने हाथ मूकीने कह्युं के " हुं कांइ पण जाणती नथी. " तेणीना वचनथी तथा तेणीना इंगित (आकार) परथी अभयकुमारे तेणीने निर्दोष धारीने विचार्युं के " आ गोपपुत्री चोर नथी, परंतु आनापर आसक्त थयेला पिताजीनुं आ कर्म छे. " एम विचारीने अभयकुमार तेणीने राजा पासे लइ गया. अने राजाने कह्युं के " हे स्वामी ! आणे आपना चित्तने चोर्युं छे, मुद्रिका चोरी नथी, माटे मुद्रिकानी वात करवी नकामी छे. " राजाए ते वात कबूल करी. पछी तेणीना मावापने कहीने तेणीनी साथे राजाए विवाह कर्यो अने तेने पट्टराणी बनावी.

एकदा राजा तथा दुर्गंधा पासे रमवा लाग्या, तेमां हारनारना पृष्ठ पर जीतनार चढे एवी शरत करी. तेमां राजा हार्यो. तेथी राणी राजाना पृष्ठ पर शंका रहित आरुढ थइ. कह्युं छे के—

कुलं स्वकृत्यैरकुलप्रसूतः, सन्मानितोऽपि प्रकटीकरोति ।
श्रीश्रेणिकांसे निदधे यदंध्रिर्दुर्गन्धया पण्यवधूभवत्वात् ॥१॥

भावार्थ—" नीच कुळमां उत्पन्न थयेलो मनुष्य राजादिकथी मान

पाम्यो होय, तोपण ते पोतानां कृत्योए करीने पोतानुं नीच कुळ प्रगट करे छे. जुओ ! दुर्गन्धा वेश्यानी पुत्री होवाथी तेणीए श्रेणिक राजाना स्कन्ध(खांध) पर पग धारण कर्यो. ”

ते वखते राजाने श्रीवीर प्रभुनुं वचन याद आववाथी हसवुं आव्युं. राणीए तत्काळ राजाना पृष्ठपरथी उतरी जइने अकस्मात हास्य थवानुं कारण पूछ्युं. त्यारे राजाए तेणीना पूर्व जन्मथी आरंभीने हास्य पर्यंतनुं सर्व वृत्तांत भगवानना कह्या प्रमाणे कही संभळाव्युं. ते सांभळीने तेणीए वैराग्य पामी राजानी रजा लइ श्री वीरप्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी.

“ आ श्रेणिक राजानी राणी दुर्गंधानुं चरित्र सांभळीने पुण्यशाळी जीवोए मुनिओनी जुगुप्सा कदापि पण चित्तमां धारण करवी नहीं. ”

इत्यब्ददिन परिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वितीयस्थंभे एकविंशतितमं व्याख्यानम्

व्याख्यान २२ मुं.



मिथ्यात्वीनी प्रशंसा नामना चोथा दूषण विषे.

अतीतानागता ये च, सन्ति वा येऽन्यलिंगिनः ।
तेषां प्रशंसनं शंसाभिधो दोषश्चतुर्थकः ॥ १ ॥

भावार्थ—“ जे अन्य लिंगीओ थइ गया, थवाना छे, अने वर्तमान काळे हयात छे. तेओनी प्रशंसा करवी, ते मिथ्यात्वीनी प्रशंसा नामनुं चोथुं समकीतनुं दूषण जाणवुं. ”

आ दोष पण सर्वथी अने देशथी एम बे प्रकारनो छे. तेमां सर्व द-

र्शनो सत्य छे, एम मानीने सर्वनी प्रशंसा करवी ते सर्वथी प्रशंसा दोष जाणवो. अने बौद्धनुं अमुक वचन अथवा सांख्यनुं अमुक वचन वधारे श्रेष्ठ छे एम कही एकाद मतनी प्रशंसा करवी ते देशथी प्रशंसा दोष जाणवो. ए बन्ने प्रकारनां सम्यक्त्वना दोषनो त्याग करवो. आ विषयपर महानिशीथ सूत्रमां सुमति नागिलनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

सुमति नागिलनुं दृष्टांत.

मगध देशमां कुशस्थळ नामना नगरमां जीवाजीवादिक तत्त्वोने जाणनारा सुमति अने नागिल नामना बे धनाढ्य भाइओ रहेता हता. केटलेक काळे कोइ पापकर्मना उदयथी तेओ निर्धन थया, त्यारे ते बन्नेए परस्पर विचार कर्यो के "आपणे द्रव्य रहित थया छीए तेथी धन उपार्जन करवा माटे परदेश जइए." एम विचारीने तेओ शुभ दिवसे नीकळ्या. मार्गे चालतां एक दिवस तेमणे एक श्रावक साथे पांच साधुओने जता जोया. सारो संघात मळ्यो जाणीने तेओ तेमनी साथे चाल्या. केटलेक दिवसे ते साधुओनी चेष्टा तथा वाणी उपरथी तेमने कुशीलीया जाणीने नागिले सुमतिने कह्युं के "आपणे आ साधुओ साथे चालवुं योग्य नथी, केमके में श्रीनेमिनाथना मुखथी एक वार एम सांभळ्युं हतुं के 'एवंविहे अणगाररूवे भवंति, ते कुसीले, ते दिठ्ठिए वि निरक्खिउं न कप्पंति—एवा प्रकारना साधुना वेषधारी होय छे, तेओने कुसीलीया जाणवा, तेओ दृष्टिथी पण जोवा योग्य नथी.' माटे हे भाइ! आपणे आ कुदृष्टि (मिथ्यादृष्टि)ओने छोडीने आगळ जइए." ते सांभळीने सुमतिए कह्युं के "हे नागिल! तुं वक्रदृष्टिए दोष जोनारो देखाय छे, माटे आ साधुओ साथे वातो करवी तथा गमन विगेरे करवुं ते मने तो योग्य लागे छे." नागिले जवाब आप्यो के "हे भाइ! हुं मनथी पण साधुना दोषने ग्रहण करतो नथी, परंतु मे भगवान तीर्थंकरनी पासे कुशीलीयाने नही जोवानो निश्चय कर्यो छे." सुमति बोल्यो "जेवो तुं बुद्धिविनानो छे, तेवो ते तीर्थंकर पण हशे, के जेणे तने आवो निषेध कर्यो." ए प्रमाणे बोलता सुमतिना मुखने नागिले पोताना हाथवडे बंध कर्युं अने कह्युं के "हे बंधु! अनंत संसारना कारणरूप वाक्य तुं न बोल. तीर्थंकरनी आशातना तुं न कर. आ साधुओमां बाळतपस्वीपणुं जणाय छे. केमके तेओ अनेक गुप्त विषया-

दि दोषोथी दूषित छे, माटे हुं तो तेमनो संग मूकीने जाउं छुं." सुमति बोल्यो के "हुं तो मरणांत थतां सुधी पण एमनो संग छोडवानो नथी." ते सांभळीने नागिल एकलो जूदो पड्यो. पछी सुमतिए ते साधुओ पासे दीक्षा ग्रहण करी. ते पांच साधुओमांथी चार साधुओ तो अनेक भवमां परिभ्रमण करी छेवट मोक्षपदने पामशे. अने पांचमो तो अभव्य होवाथी अनंत संसार भटकशे.

श्री गौतम गणधरे जिनेश्वरने पूछ्युं के "हे भगवान! सुमति भव्य छे के अभव्य?" भगवान बोल्या "हे गौतम! सुमतिनो जीव भव्य छे." गौतमे पूछ्युं "त्यारे ते हाल कइ गतिमां छे?" भगवान बोल्या के "हे गौतम! कुशीलीयानी प्रशंसा तथा जिनेश्वरनी आशातना करवाथी ते परमाधार्मिक देवपणे उत्पन्न थयो छे." गौतमे पूछ्युं "हे भगवान! आगळ उपर तेनुं शुं थशे?" प्रभु बोल्या "हे गौतम! तेणे अनंत संसार उपार्जन कर्यो छे तेथी अनंतकाळ भटकशे तोपण हुं संक्षेपथी कहुं छुं ते सांभळ.—लवण समुद्रमां जे स्थाने गंगा अने सिंधु ए बे मोटी नदीओ प्रवेश करे छे. ते स्थाननी दक्षिण दिशामां जंबुद्वीपनी जगतीनी वेदिकाथी पंचावन योजन दूर साडाबार योजनना विस्तारवाळो अने साडा छ योजन उंचो हस्तिना कुंभस्थळने आकारे एक द्वीप छे. ते द्वीपमां काजळ (मेस), केश, मेघ अने भ्रमरनी कांतिने तिरस्कार करे तेवी कांतिवाळी, भगंदरना व्याधिने आकारे सुडताळीश गुफाओ छे. ते गुफाओमां जळचारी मनुष्यो वसे छे. तेओ प्रथम संहननवाळा, मद्यपान करनारा. मांस भक्षण करनारा, मसीना कुचा जेवी कांतिवाळा, अति दुर्गन्धी शरीरवाळा होय छे. तेओ अंडगोलीकना नामे ओळखाय छे. तेओना अंडनी गोळीने चमरी गायना पुछना केशथी गुंथीने कान साथे बांधी वेपारीओ समुद्रमां प्रवेश करे छे. तेना प्रभावथी तेमने कोइपण जळजंतुओ उपद्रव करी शकता नथी अने समुद्रमांथी रत्नादिक लइने ते वेपारीओ कुशळ क्षेमे बहार आवे छे." ते सांभळीने गौतम स्वामीए पूछ्युं के "हे भगवान! ते वेपारीओ केवा उपायथी ते अंडगोलीओ ले छे?" प्रभु बोल्या के "हे गौतम! लवणसमुद्रमां रत्न नामनो द्वीप छे. तेमां रत्नना वेपारीओ रहे छे. तेओ समुद्रनी समीपे जे स्थाने घंटीने आकारे वज्रशिलाना संपुटो (बे पड) होय छे, त्यां आवीने ते संपुटो

उघाडी तेमां चार महाविकृतिओ (मद्य, मांस, मध ने माखण) भरे छे. पछी जे स्थाने ते अंडगोळीआ रहे छे, ते ठेकाणे तेओ मद्य मांस विगेरे लइने आवे छे. तेओने दूरथीज आवता जोइने ते अंडगोळीआ तेमने हणवा माटे दोडे छे. एटले ते वेपारीओ पगले पगले तेमने खावा माटे मद्य मांसादिकथी भरेलां पात्रो मूकता मूकता एकदम नासवा मांडे छे. ते अंडगोळीया पण तेमनी पाछळ मार्ग-मां पडेला मद्य मांसना पात्रोमांथी मांसादि खाता खाता दोडे छे. छेवटे वज्रशि-लाना संपुटो पासे आवतां तेमां रहेला मद्यमांसादिक खावा माटे तेनी अंदर तेओ पेसे छे, एटले ते वेपारीओ पोताने स्थाने जाय छे. तेनी अंदर मद्यमांस खाता तेओ पांच, छ, सात, आठ, के दश दिवसो व्यतीत करे छे, तेटलामां ते वेपारीओ बखतर पहेरी खड्ग, भाला विगेरे शस्त्रो धारण करी ते वज्रशिलाना संपुटो पासे आवी सात आठ मंडळ करीने ते संपुटोने घेरी ले छे. पछी तेओए प्रथम जे संपुटोने उघाड्या हता, तेने ढांकी दे छे. तेमांथी जो कदाच एक पण अंडगोळीओ नीकळी जाय तो ते सर्वेने मारी नांखे एवो ते बळवान होय छे. पछी ते वेपारीओ यंत्रवडे ते वज्रनी घंटीमां तेमने दळे छे. परंतु ते अत्यंत बळवाला होवाथी एक वर्ष महा वेदना पामीने मरण पामे छे. तेमने दळतां ते-मना शरीरना अवयवो चूर्ण (लोट)नी जेम बहार नीकळता जाय छे. तेमांथी ते वेपारीओ तेना अंडनी गोळीओ शोधी ले छे. पछी ते गोळीओनो उपर क-ह्या प्रमाणे उपयोग करी तेओ समुद्रमांथी रत्नो ग्रहण करे छे. हे गौतम ! ते सुमतिनो जीव परमाधार्मिकना भवथी चवीने ते अंडगोलिक मनुष्य, थशे. त्यां-थी फरीने परमाधार्मिक थशे, पाछो अंडगोलिक थशे. ए रीते सातभव कर्या पछी अनुक्रमे व्यंतर, वृक्ष, पक्षी, स्त्री, छठी नरके नारकी अने कुष्टी मनुष्य एवा भवो मां अनंतकाळ सुधी परिभ्रमण करीने छेवटे कर्मनो क्षय थये चक्रवर्ती पद पामी प्रव्रज्या ग्रहण करीने मुक्तिए जशे. पेलो नागिल तो तेज भवमां बावीशमा ती-र्थंकर पासे दीक्षा लइने मुक्तिपद पाम्यो छे. " (आ प्रबंध विस्तारथी महानि-शीथना चोथा अध्ययनमांथी जोइ लेवो.)

" आ सुमतिनुं वृत्तांत सांभळीने भव्य प्राणीओए कुशीलीयानी प्र-शंसानो निरंतर त्याग करवो. केमके तेथी ते दुर्गतिने पाम्यो छे अने शुद्ध

समकितथी सुशोभित एवो नागिल तेज भवे सारी संगतिथी मोक्षपदने पाम्यो छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वितीय-
स्तंभे द्वाविंशतितमं व्याख्यानम् ॥ २२ ॥

व्याख्यान २३ मुं.



पांचमा मिथ्यादृष्टि संस्तव नामना दूषण विषे.

मिथ्यात्विभिः सहालापो, गोष्ठी परिचयस्तथा ।
दोषोऽयं संस्तवो नाम, सम्यक्त्वं दूषयत्यसौ ॥ १ ॥

भावार्थ—" मिथ्यात्वीओनी साथे वातचीत, गोष्ठी तथा परिचय करवो, ते संस्तव नामनो दोष कहेवाय छे. ए दोष समकितने दूषित करे छे."

मिथ्यात्वीओनी साथे परिचय करवाथी समकितमां दोष लागे छे. तेमनी क्रीयाओ सांभळवाथी तथा जोवाथी स्याद्वाद मतने नहीं जाणनार मंदबुद्धिवाळा पुरुषने समकितथी भ्रष्ट थवानो संभव रहे छे; परंतु स्याद्वादना संपूर्ण स्वरुपना ज्ञानवाळाने ते दोष लागतो नथी. केमके केटलाएक समकितवंतो मिथ्यात्वीओनो परिचय छतां पण गुणनेज ग्रहण करे छे, अने पोताना समकितने उलटा स्फूटतर-अति निर्मळ करे छे. ते उपर धनपाळ कविनुं दृष्टांत छे, ते नीचे प्रमाणे—

धनपाळ कविनुं दृष्टान्त.

धारा नगरीमां लक्ष्मीधर नामे एक ब्राह्मण हतो. तेने धनपाळ अने शोभन नामे बे पुत्रो हता. ते ब्राह्मणना घरमां कोइ स्थळ निधि दाटेलो हतो. तेनी जरुर पडतां घणी जग्याए शोधतां पण हाथ लाग्यो नहीं. आखा घरमां चोतरफ

खोदी नांख्युं, पण ते निधि देखायो नहीं, तेथी लक्ष्मीधर चिंतातुर थइ गयो. एकदा स्वपर शास्त्रमां प्रवीण श्री जिनेश्वर सूरि धारानगरीमां पधार्या. तेमने लक्ष्मीधरे निधान विषे प्रश्न कर्यो. त्यारे सूरि बोल्या के—" जो तुं तारा बे पुत्रोमांथी एक पुत्र अमने आपे, तो तने निधान बतावीए." ते सूरिना वचनने लक्ष्मीधरे कबूल कर्युं एटले आचार्य महाराजे अहिवलय चक्रने अनुसारे जोइने अमुक स्थाने निधि छे, एम कह्युं. त्यां खोदवाथी लक्ष्मीधरने ते निधि हाथ लाग्यो. परंतु ते कबुलात प्रमाणे पुत्र आपी शक्यो नहीं. पछी केटलेक काळे पोतानो मरण समय नजीक आव्यो, त्यारे तेणे सूरि पासे करेली प्रतिज्ञा स्मरणमां आववाथी खेद युक्त थइ बन्ने पुत्रोने ते प्रतिज्ञा जणावी. ते सांभळीने नानो शोभन बोल्यो, " हे पिता ! हुं तमने ऋणथी मुक्त करीश." तेथी लक्ष्मीधरे संतोष पामी पोतानो देह छोडी दीधो. पछी शोभने पोताना स्वजनोने पूछया विनाज गुरु पासे जइने दीक्षा ग्रहण करी.

अहीं धारा नगरीमां धनपाळनुं बहु मान होवाथी तेनाथी भय पामीने गुरुए माळव देशमां विहार करवो छोडी दीधा, अने साधुओने पण निषेध कर्यो. गुरुनी साथे रहीने शोभन मुनि पण महा विद्वान थया. एकदा शोभनमुनि गोचरी माटे गया हता, ते वखते तेमनु चित्त जिनेश्वरनी स्तुति रचवामां व्यग्र हतुं. तेथी कोइ श्रावकने घेरथी आहार लइने भरेलुं पात्र झोळीमां मूकवाने बदले पासे पडेलुं पाषाणनुं पात्र मूकी गुरु पासे आव्या. आहारने समये झोळीमां पथ्थरनुं पात्र जोइने शोभन मुनिनी स्पर्धा करनारा बीजा मुनिओ तेनी हांसी करता बोल्या के, " अहो ! आजे शोभनने तो मोटा लाभनो उदय थयो." गुरुए शोभनने ते विषे पूछयुं, त्यारे तेणे बनेली हकीकत कहीने पोते करेलां जिनस्तुतिना काव्यो कही बताव्यां. ते सांभळी गुरू बहुज प्रसन्न थया.

एकदा गुरुए शोभनने कह्युं के, " हे वत्स ! तुं धारा नगरीए जइने जैनधर्मना द्वेषी तारा भाइ धनपाळने प्रतिबोध कर." गुरुनी आज्ञा अंगीकार करीने शोभन मुनि अवंतीए गया. नगरमां पेसतां ज धनपाळ सामो मळयो. तेणे मुनिने जोइ हास्यथी पूछयुं के, " गर्दभदन्त भदन्त नमस्ते—हे गधेडाना सरखा दांतवाळा भगवंत ! तमने नमस्कार छे." ते सांभळीने मुनि बोल्या के " मर्कटकास्य वयस्य सुखं ते—मांकडानी जेवा मुखवाळा हे भाइ!

तुं सुखी छे ? " आ प्रमाणे मुनिना वचननी चतुराइथी 'मारो पराजय थयो' एम विचारतो धनपाळ बोल्यो के, " कस्य गृहे वसति नव साधो—हे साधु ! तमे क्यां उतरवाना छो ? " मुनिए जवाब आप्यो के, " यस्य रुचिर्वसति मम तत्र—जेनो अमने राखवानी इच्छा होय तेने घेर अमारे रहेवुं छे. " ते सांभळीने मुनिने विद्वान जाणी धनपाळ पोताने घेर तेमने लइ गयो. पछी धनपाळ भोजन करवा बेसतो हतो, तेवामां मुनिनुं स्मरण थवाथी तेणे मुनिने वहोरवा माटे बोलाव्या. ते ज दिवसे धनपाळने मारी नांखवाना हेतुथी तेना कोइ शत्रुए तेना भोजनना मोदकमां विष नांखेलुं हतुं. ते मोदक लइने धनपाळ मुनिने वहोराववा लाग्यो. ते जोइ मुनि बोल्या के, " आ मोदक अमारे कल्पे नहीं. " धनपाळ बोल्यो, " केम ! शुं आमां झेर वेर छे ? " मुनि बोल्या, " हा, एमां झेर ज छे. " ते सांभळीने धनपाळे तपास करी, तो तेमां कोइ शत्रुए झेर नांखेलुं जणायुं. तेथी आश्चर्य पामीने पोताना जीवने बचावनार मुनिने तेणे पूछ्युं के " हे मुनि ! आ मोदकमां झेर छे, तेनी तमने शी खबर पडी ? " मुनि बोल्या के—हे धनपाळ !

> दृष्ट्वान्नं सविषं चकोरविहगो धत्ते विरागं दृशो—
> हंसः कूजति सारिका च वमति क्रोशत्यजस्रं शुकः ।
> विष्टां मुञ्चति मर्कटः परभृतः प्राप्नोति मृत्युं क्षणात्
> क्रौञ्चो माद्यति हर्षवांश्च नकुलः प्रीतिं च धत्ते द्विकः॥१॥

भावार्थ—" विषवाळुं अन्न जोइने चकोर पक्षी नेत्रमां विराग धारण करे छे (नेत्र मींचे छे), हंस शब्द करे छे, सारिका वमन करवा लागे छे, पोपट वारंवार आक्रोश करे छे, वानर विष्टा करे छे, कोयल क्षणवारमां मृत्यु पामे छे, क्रौंच पक्षी खुशी थइने नाचे छे, नोळीयो हर्ष पामे छे, अने कागडो प्रसन्न थाय छे. "

आवां चिन्हो थता होवाथी में आ पंजरमां रहेला पोपटना आक्रोश वडे तेमां विष छे एम धार्युं. " ते सांभळीने विस्मय पामता धनपाळे मुनिने वास्ते दहीं लावी ते आपवा मांड्युं. त्यारे साधु बोल्या के " आ दहीं त्रण दिवसनुं होवाथी अमारे कल्पे नहीं. " धनपाळे पूछ्युं के, "शुं आ दहींमां जीवडा

पडी गया छे ? " मुनिए हा कहीने तेनी खात्री माटे तेमां अळतानो रस नांखी जीवो देखाड्या. पछी धनपाळे मुनिने निर्दोष आहार आप्यो. मुनिना गया पछी धनपाळ भोजन करवा बेठो. भोजन करीने ते मुनि पासे गयो. वातो करतां धनपाळ बोल्यो के " हे मुनि ! तमने जोइने मने मारो भाइ वारंवार याद आवे छे. " मुनि बोल्या के " हे वयस्य ! तारी पासे (आ हुं) तारो भाइज बेठेलो छे. " एम कहीने तेनी प्रतीतिने माटे पूर्वावस्थानी केटलीएक निशानीओ कही बतावी. ते सांभळीने खात्री थवाथी धनपाळ अति आनंद पाम्यो. पछी शोभन मुनि केटलाक दिवस त्यां रही धनपाळने निश्चळ श्रावक बनावी अन्यत्र विहार करी गया.

धनपाळ पंडित भोजराजानी सभामां पांचसो पंडीतोमां मुख्य थयो. एकदा भोज राजा पांचसो पंडीतोने साथे लइने शीकार करवा वनमां गयो. त्यां राजाए एक बाणथी एक हरणने मार्युं. तेथी बीजा सर्वे पशुओ चारे बाजु नासवा लाग्या. ते जोइने राजाए कविने पूछयुं के—

किं कारणं तु कविराज मृगाश्च एते,
व्योम्न्युत्पतन्ति विलिखंति भुवं वराहाः ।

" हे कविराज ! आ मृगलांओ आकाशमां कूदे छे, अने आ भुंडो (वराहो) पृथ्वीने खोदे छे तेनुं शुं कारण ? "

एक कविए जवाबमां कह्युं के—

देव त्वदस्त्रचकिताः श्रयितुं प्रयान्ति
एके मृगांकमृगमादिवराहमन्ये ॥ १ ॥

" हे स्वामी ! आपना शस्त्रथी भय पामीने आ मृगो चंद्रमां रहेला मृगनो आश्रय लेवा माटे ऊंचे कूदे छे, अने आ वराहो (भुंडो) आदि वराहनो आश्रय लेवा माटे पाताळमां जवा इच्छे छे. "

पछी राजाए धनपाळ पंडितने कह्युं के " तुं मारी मृगयानुं वर्णन कर. " त्यारे धनपाळ बोल्यो के—

रसातलं यातु यदत्र पौरुषं, कुनीतिरेषाऽशरणो ह्यदोषवान् ।
निहन्यते यद्बलिनातिदुर्बलो, हा हा महाकष्टमराजकं जगत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" आ वराह एम कहे छे के—हे राजा ! तारुं पुरुषार्थ रसातळमां जाओ. आ प्रत्यक्ष अनिति छे, केमके शरण रहित अने निर्दोष एवा दुर्बल प्राणी बळवानवडे हणाय छे. अहो महा संकट छे, के आ जगत् राजा विनानुं (नधणीयातुं) छे."

पदे पदे सन्ति भटा रणोत्कटा, न तेषु हिंसारस एष पूर्यते ।
धिगीदृशं ते नृपते कुविक्रमं, कृपाश्रये यः कृपणे मृगे मयि ॥ २ ॥

भावार्थ—" अने आ मृगो एम कहे छे के—हे राजा ! संग्राममां शूरवीर एवा योद्धाओ आ दुनियामां पगले पगले (ठेकाणे ठेकाणे) छे. तोपण तेओने विषे आ तारो हिंसारस पूरो थतो नथी ? के जेथी दयाना स्थानरुप एवा मारे विषे तुं निर्दय थाय छे ? माटे आवा तारा निंद्य पराक्रमने धिक्कार छे."

आ प्रमाणे धनपाळे करेलुं वर्णन सांभळीने राजाए क्रोधयुक्त दृष्टिथी धनपाळने कह्युं के—" अरे धनपाळ ! आ तुं शुं बोले छे ? " त्यारे धनपाळ फरीथी बोल्यो के—" हे स्वामी !

वैरिणोऽपि हि मुच्यन्ते, प्राणान्ते तृणभक्षणात् ।
तृणाहाराः सदैवैते, हन्यन्ते पशवः कथम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" ज्यारे प्राण नाशनो वखत आवे, त्यारे शत्रुओ जो तृणनुं भक्षण करे—मुखमां तृण ले तो ते शत्रुओ छतां पण तेमने मूकी देवामां आवे छे; तो पछी आ निरपराधी पशुओ तो निरंतर तृणभोज आहार करनारा छे तेमने शी रीते हणी शकाय ? "

ते सांभळीने राजाना हृदयमां दया उत्पन्न थइ. तेथी तेणे पोतानुं धनुष तथा बाण भांगी नांखीने शिकार न करवानी प्रतिज्ञा करी. वनथी पाछा फरीने नगर तरफ जतां राजाए करावेलुं सरोवर आव्युं. ते जोइने राजाना कहेवाथी एक कविए ते सरोवरनुं वर्णन कर्युं के—

हंसैर्युक्तः प्रशस्तैस्तरलितकमलैः प्राप्तरंगैस्तरंगै-
र्नीरैरन्तर्गभीरैश्चटुलबककुलग्रासलीनैश्च मीनैः ।
पालीरूढद्रुमालीतलसुतशयितस्त्रीप्रणीतैश्च गीतै-
र्भाति प्रक्रीडनाभिः क्षितिप तव चलच्चक्रवाकस्तटाकः ॥

भावार्थ—" प्रशस्त हंसोए करीने, चपळ कमळोए करीने, रंगने प्राप्त थयेला तरंगोए करीने, गंभीर जळवडे करीने. चंचळ बगलाना समूहना कवळ रुप थता मत्स्यो वडे करीने, पाळ उपर उगेला वृक्षोतळे सुवाडेला बाळकोने हींचकावती स्त्रीओना मनोहर गीतोवडे करीने तथा बीजी अनेक क्रीडाओए करीने युक्त अने चक्रवाक पक्षीओना मिथुन जेमां रहेला छे एवुं आ सरोवर अत्यंत शोभा आपे छे."

पछी राजानी आज्ञाथी धनपाळ बोल्यो के—" हे राजा !

एषा तटाकमिषतो वरदानशाला,
मत्स्यादयो रसवतीप्रगुणा बभूव।
पात्राणि यत्र बकसारसचक्रवाकाः,
पुण्यं कियद्भवति तत्र वयं न विद्मः ॥

भावार्थ—" आ सरोवरना मीषथी श्रेष्ठ दानशाळा छे, तेमां मत्स्य विगेरे जळजंतुओ रुपी पुष्कळ भोजन तैयार छे, तेमां पात्र रुपे (खानारा) बगला, सारस अने चक्रवाक विगेरे पक्षीओ छे, तो आने विषे पुण्य केवुं थतुं हशे, ते अमे जाणता नथी."

ते सांभळीने राजाए क्रोधयुक्त दृष्टिथी धनपाळ सामुं जोयुं. पछी सरोवरथी नगर तरफ जतां मार्गमां राजानो यज्ञमंडप आव्यो. ते मंडपमां एक थांभले केटलाएक पशुओ बांधेला हता. ते पशुओनो पोकार सांभळीने राजाए कविओने पूछ्युं के—" आ पशुओ शुं कहे छे ? " त्यारे कोइ एक कवि बोल्यो के—" हे राजा ! आ पशुओ कहे छे के—

असमान् घ्नन्तु पदे पदे बलिकृते दग्धाश्च जग्धैस्तृणै–
रस्मत्कुक्षिररक्ष दक्षमनुजैर्नामोच्यते पश्विति ।
जानीमो न कलत्रभेदविकलाः सत्क्षुत्पिपासा वयं
तेनास्मान्नय देव देवसदनं प्रार्थ्यामहे त्वामिति ॥ १ ॥

भावार्थ—" अमने पगले पगले बळिदानने माटे हणो, केमके अमे तृण भक्षणथी बळी रह्या छीए, अमारी कुक्षि भरातो नथी, अमोने डाह्या माणसो पण पशु कहीने बोलावे छे, अमे क्षुधा तृषाथी आकुळ थइने स्त्री, माता विगेरेनो भेद पण जाणता नथी. तेथी हे स्वामी ! अमने देवलोकमां लइ जाओ, एवी अमारी तमने प्रार्थना छे."

पछी राजानी आज्ञाथी धनपाळ बोल्यो के—

नाहं स्वर्गफलोपभोगतृषितो नाभ्यर्थितस्त्वं मया
संतुष्टस्तृणभक्षणेन सततं साधो न युक्तं तव ।
स्वर्गं यान्ति यदि त्वया विनिहता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो
यज्ञं किं न करोषि मातृपितृभिः पुत्रैस्तथा बान्धवैः ॥ १ ॥

भावार्थ—" आ पशुओ कहे छे के ' हे राजा ! मने स्वर्गना भोग भोगववानी तृष्णा नथी, तेमज तेने माटे में तमारी पासे प्रार्थना पण करी नथी; हुं तो निरंतर तृणना भक्षणथी संतुष्टज छुं. माटे तमारे मने हणवो योग्य नथी. जो कदाच तमारा यज्ञ माटे हणेला प्राणीओ अवश्य स्वर्गेज जता होय, तो तमे माता, पिता, पुत्रो अने बांधवो वडे यज्ञ केम करता नथी ?,"

आ प्रमाणे सांभळीने राजाए क्रोधथी धनपाळने कह्युं के " अरे ! आ तुं शुं बोले छे ? " त्यारे फरी धनपाळ निःशंकपणे बोल्यो के " हे स्वामी ! हुं सत्य कहुं छुं. केमके—

यूपं कृत्वा पशून् हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमम् ।
यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ २ ॥

नावार्थ—" हे राजा ! यज्ञस्तंज रोपीने, पशुओनो वध करीने तथा रुधिरनो कीचम करीने जो कदाच स्वर्गे जवातुं होय, तो पछी नरके कोण जशे ? "

हे राजा ! मांसमां लुब्ध थयेला आ राक्स जेवा ब्राह्मणोए तमने आवा यज्ञनी प्रशंसा करीने कुमार्गे दोर्या छे. आवा पशु वध करवामां कदी पण धर्म होयज नहीं ; केवळ महा पापज होय छे. शास्त्रमां पण खरा यज्ञनुं स्वरूप तो एवुंज बताव्युं छे के—

सत्यं यूपं तपो ह्यग्निः, कर्माणि समिधो मम ।
अहिंसामाहुतिं दद्यादेवं यज्ञः सतां मतः ॥ ३ ॥

नावार्थ—" सत्यरुपी यक्तस्तंभ करीने तप रुपी अग्नि सळगावीने तेमां कर्मरूपी समिध् (लाकमां) नांखी अहिंसारुपी आहुति देवी. ए खरो यज्ञ सत्पुरुषोए मानेलो छे. "

स्वर्गः कर्तृक्रियाद्रव्यविनाशे यदि यज्विनाम् ।
तदा दावाग्निदग्धानां, फलं स्याद्भूरि भूरुहाम् ॥ ४ ॥

नावार्थ—" जो कदाच यज्ञकर्त्तानी क्रियाना अने द्रव्यना विनाशने विषे यज्ञाचार्यने स्वर्ग प्राप्ति थती होय तो दावानळथी बळेलां वृक्षोने घणुं फळ मळवुं जोइए. "

निहतस्य पशोर्यज्ञे, स्वर्गप्राप्तिर्यदीष्यते ।
स्वपिता यजमानेन, किं तु तस्मान्न हन्यते ॥ ५ ॥

नावार्थ—" जो कदाच यज्ञमां हणेला पशुने स्वर्ग प्राप्ति थाय छे, तेटला माटे ते इच्छवामां आवतो होय तो ते यज्ञमां यजमान पोतानाज पिताने केम हणतो नथी. "

आ प्रमाणे यज्ञनी निंदा सांजळीने राजाए धनपाळ सामुं वक्र दृष्टिथी जोइ तेना आखा कुटुंबनो निग्रह करवा विचार कर्यो. ते अनिप्राय धनपाळे जाणयो. तो पण तेणे पोतानो सत्य बोलवानो नियम छोड्यो नहीं.

आगळ चालतां राजा कोइ शिवालयमां गयो. त्यां एक धनपाळ सिवाय बीजा सर्वेए महादेवने नमस्कार कर्यो. त्यारे राजाए धनपाळने पूछ्युं के ' हे धनपाळ ! तुं आ महादेवने केम नमस्कार करतो नथी ? त्यारे तेणे निःशंकपणे जवाब आप्यो के—

जिनेन्द्रचन्द्रप्रणिपातलालसं, मया शिरोऽन्यस्य न नाम नाम्यते ।
गजेन्द्रगल्लस्थलदानलालसं, शुनीमुखे नालिकुलं निलीयते ॥१॥

जावार्थ—" हे राजा ! जिनेन्द्ररुपी चंद्रने नमस्कार करवामां लालसा वाळुं मारुं मस्तक हुं बीजा कोइ पासे नमावतो नथी. केमके मदोन्मत्त हस्तीना गंडस्थळमांथी झरता मदमां लालसा वाळो ज्रमरनो समूह कदापि कूतरीना मुखमांथी नीकळती लाळमां लीन थतो नथी. "

ते सांजळीने राजा तेना पर विशेष क्रोध युक्त थयो. आगळ चालतां ते सर्वे पुरना द्वार पासे आव्या. त्यां राजाए आखा शरीरे कंपती एक मोशीने एक बाळकीना हस्तनुं अवलंबन करीने सन्मुख आवती जोइ. तेथी तेणे पंमितोने पूछ्युं के " आ वृध्धा हाथ अने मस्तक केम धुजावे छे ? " त्यारे एक पंडित बोल्यो के—

करकंपावइ सीर धुणे, बुढ्ढी काहु कहेइ ।
हंकारंता यमजमां, नंनंकार करेइ ॥ १ ॥

जावार्थ—" हे राजा आप कहो गे के—आ वृध्धा हाथ कंपावे छे, अने शीर धुणावे छे, ते शुं कहे छे ? (तेनो उत्तर) ते तेने हंकारता एवा यमना दूतोने ' ना, ना, हुं नही आवुं ' एम कहे छे. "

ते वखते बीजो कोइ पंमित बोल्यो के—

जरायष्टिप्रहारेण, कुब्जीभूता हि वामना ।
गततारुण्यमाणिक्यं, निरीक्षते पदे पदे ॥ १ ॥

जावार्थ—" वृद्धावस्थारुपी लाकमीना प्रहारथी वांकी वळी गयेली

आ वामन स्त्री पोताना चाल्या गयेला युवावस्था रुपी माणिक्यने पगले पगले शोधे छे. "

ते सांभळीने राजाए धनपाळने कह्युं के—" हे वक्रमतिवाळा धनपाळ ! आ वद्धा स्त्री आ वालिकाने शुं पूछे छे ? " त्यारे राजानो क्रोध शान्त करवा माटे धनपाळ बोल्यो के—" हे स्वामी ! आ वालिका प्रत्ये आ वृध्धा तेना प्रश्नोना उत्तर कहे छेः—

किं नन्दी किं मुरारि किमु रतिरमणः किं नलः किं कुबेरः,
किं वा विद्याधरोऽसौ किमुत सुरपतिः किं विधुः किं विधाता ।
नायं नायं न चायं न खलु न हि न वा नापि नासौ न वैष
क्रीडां कर्तुं प्रवृत्तः स्वयमिह हि हले भूपतिर्भोजदेवः ॥ १ ॥

भावार्थ—" डोशीने वाळिका पूछे छे के—' हे हले ! शुं आ महादेव छे ? शुं विष्णु छे ? शुं कामदेव छे ? शुं नळ राजा छे ? शुं कुबेर छे ? शुं ए विद्याधर छे ? शुं इन्द्र छे ? शुं चन्द्र छे ? के शुं ते ब्रह्मा छे ? ' डोशी कहेछे के —ए नहीं, ए नहीं, ए नहीं, नक्की नहीं, ना, ना, ना, ना, तेओमांथी तो आ कोइज नथी, (केमके तेओ सर्वे तो कलंकवाळा छे. [१]) परंतु आतो क्रीडा करवा प्रवर्तेला भूपति भोजदेव छे. "

आ काव्य सांभळीने भोज राजा प्रसन्न थयो, अने तेणे धनपाळने कह्युं के—" हे पंडित, हुं प्रसन्न थयो छुं माटे वरदान माग. " ते सांभळीने धनपाळ बोल्यो के—" हे स्वामी ! जो आप प्रसन्न थया हो, तो मारी लीधेली वस्तु मने पाछी आपो. " राजाए कह्युं के—" में तो तारुं कांइ लीधुं नथी. " धनपाळ बोल्यो—" हे नाथ ! तमे शिकारमां हरिणीनो वध कर्यो, ते वखते मारुं काव्य

---

१ नदी शब्दे आ नदराजा छे? ना, ते तो महालोभी हतो, आ तो उदार छे. मुरारी के० कृष्णछे? ना ते तो काळा हता, आ उज्वळ छे. रतिना स्वामी कामदेव छे? ना, ते तो अंग विनानो छे, आ शुभ देहवाळो छे नळ राजा छे? ना, ते तो जुगटीयो हतो, आतो व्यसन रहित छे कुबेर छे? नहीं, ते तो पराधिन छे, आ स्वाधिन छे. विद्याधर छे? ना ते तो आकाशमा फरे छे, आ तो जमीन पर विचरे छे. सुरपति के० इंद्र छे? ना ते तो श्रापितछे आ श्राप रहित छे. विधुके० चंद्र छे? ना ते तो कलंकी छ, आ निष्कलंक छे. ब्रह्मा छे? ना ते तो वृद्ध छे, आ युवान छे

सांभळीने तमने क्रोध थतां मारी एक आंख लेवानुं तमे धार्युं हतुं, अने मरीचना वर्णन वखते बीजी आंख लेवानुं धार्युं हतुं, त्यार पछी सर्व कुटुंबनो निग्रह करवानुं धार्युं हतुं; माटे भावथी ग्रहण करेलां मारां बे नेत्रो मने पाछां आपो. ते सांभळीने राजाए प्रसन्न थइ धनपाळने क्रोड द्रव्य आप्युं. अने कह्युं के—" तुं श्रावक थवाथी सर्वज्ञपुत्र थयो छे ते न्याययुक्त छे. "

एकदा धनपाळनुं चित्त व्यग्र जोइने भोजराजाए तेनुं कारण पूछ्युं, त्यारे ते बोल्यो के " हुं हालमां युगादीशनुं चरित्र रचुं छुं. तेथी मनमां व्यग्रता रहे छे. " पछी ते चरित्र पूर्ण थयुं. त्यारे राजाए तेनुं श्रवण करवा मांड्युं. तेनो अद्भुत रस सांभळतां राजाए विचार्युं के " आनो अर्थरूप रस भूमिपर न पडो. " एम धारीने ते पुस्तकनी नीचे एक मोटो सुवर्णनो थाळ रखाव्यो. एवी रीते ते चरित्रना रसनुं पान करतां ते राजाने रात दिवसनी पण खबर पडी नहीं. ते चरित्र पूर्ण सांभळ्या पछी राजाए धनपाळने कह्युं के "हे पंडित ! जो तुं आ ग्रंथमां विनीता नगरीने स्थाने अवन्ती नगरी, भरतचक्रीने स्थाने मारुं नाम अने आदीश्वरने स्थाने महादेवनुं नाम स्थापन करे, तो आ ग्रन्थ सुवर्ण अने सुगन्धी जेवो अति श्रेष्ठ थाय. अने जो तुं तेम करे, तो हुं तने एक करोड सोनामहोर आपुं. " ते सांभळीने धनपाळ बोल्यो के—

मेरुसर्षपयोर्हंसकाकयोः खरताक्ष्र्ययोः ।
अस्त्यन्तरमवन्त्यादेरयोध्यादेश्च भूपते ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे राजा ! मेरु पर्वत अने सरसवना कणमां, हंस अने कागडामां तथा गधेडा अने गरुडमां जेटलुं अन्तर छे, तेटलुं अंतर (अनुक्रमे) अवंति, तुं अने महादेव तथा अयोध्या, भरत अने आदीश्वरमां छे. "

ते सांभळीने अति क्रोधयुक्त थइ राजा बोल्यो के " अरे धनपाळ! आवां वचन बोलतां तारी जिह्वाना सहस्र ककडा केम न थया ? " ते सांभळी धनपाळ निःशंकपणे बोल्यो के—

हे दोमुहय निरक्खर, लोहमइय नाराय किंत्ति भणिमो ।
गुंजा हि समं कणयं, तुल्लं न गओसि पायालं ॥ १ ॥

भावार्थ—"बे मुखवाळा,[1] निरक्षर[2] अने लोहमतिवाळा[3] हे नाराच (त्राजवुं) अमे त तने केटलुं कहीये? त चणोठीनी साथे सुवर्णने तोल्युं! ते करतां तुं पातालमां केम न गयुं?"

आ प्रमाणे पोतानी निंदा सांभळीने राजाए अति क्रोधथी ते ग्रंथने बाळी नांख्यो.

धनपाळ राजाना भयथी अने ग्रंथना नाशथी उद्वेग पामी शोक सहित घेर आव्यो. त्यां तेनी तिलकमंजरी नामनी पुत्रीए पूछ्युं के "हे पिता! तमे आज शोकातुर केम छो?" त्यारे पंडिते तेणीने सर्व वृत्तांत कह्युं. पुत्री बोली "हे पिता! फिकर करो नहीं. मारे मुखे ते आखो ग्रंथ छे, आप लखी ल्यो." ते सांभळीने हर्ष पामी पंडीते ते ग्रंथ लखी लीधो, अने पुत्रीना नामनी याद-गिरिमाटे तेणे ते ग्रंथनुं नाम तिलकमंजरी राख्युं. पछी राजाना भयथी धनपाळ पोताना कुटुंब सहित अन्य ग्रामे जइने रह्यो.

एकदा भोजराजानी सभामां कोइ पंडिते आवी सर्व विद्वानोनो पराजय कर्यो. तेथी खेद पामीने राजाए जाते जइ धनपाळने मनावी आदर सत्कार पूर्वक पोतानी नगरीमां आण्यो. धनपाळने आवेलो सांभळतांज ते विदेशी पंडित भय पामीने रात्रीने समये गुप्त रीते नाशी गयो. लोकमां जैनधर्मनी घणी प्रशंसा थइ. धनपाळ राजानी पासे सुखेथी रह्यो. अने धर्मनुं आराधन करी अंते स्वर्गे गयो.

"द्रव्यथी मिथ्यात्वीओनो परिचय छतां पण भावथी पापसंगना नाशनी स्पृहावाळा धनपाळे सर्व दोप रहित समकितने दृढ धारण कर्युं. तेवी रीते सर्व जीवोए करवुं."

---

१ त्राजवाने बे छावडा, राजाने चालु काळक अने चालु काळक ए बे मुख. २ त्राजवुं अने राजा बन्ने निरक्षर एटले मूर्ख. ३ त्राजवाने लोह—लोढानी मति—डांडी, राजाने लोह-लोभना मति—बुद्धि. कांतिनो अत्यंत लोभ.

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे त्रयोविंशतितमं व्याख्यानम् ॥ २३ ॥

व्याख्यान २४ मुं.

छठो प्रभावक संबंधी अधिकार.

(पहेला प्रवचन प्रभावक विषे).

कालोचितं विजानाति, यो जिनोदितमागमम्।
स प्रावचनिको ज्ञेयस्तीर्थं शुभे प्रवर्तकः ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे मुनि जिनप्ररुपित आगमनी समयने अनुसारे प्ररुपणा करी जाणे, तथा तीर्थने शुभ मार्गे प्रवर्तावे, ते प्रवचन प्रभावक कहेवाय छे. "

काळ एटले सुषमा दुषमादिक[1] समयने विषे यथायोग्य जिनप्रणित सिद्धांतने गौतमादिकनी जेम जे सूरि जाणे ते तीर्थ एटले चतुर्विध संघने शुभ मार्गमां (धर्म मार्गमां) प्रवर्तावी शके तेने प्रवचन प्रभावक जाणवो. तेनो भावार्थ वज्रस्वामीना चरित्रथी समजी शकाय तेम छे ते आ प्रमाणे—

वज्रस्वामीनुं दृष्टान्त.

यः पालनस्थःश्रुतमध्यगीष्ट, षाण्मासिको यश्चरिताभिलाषी।
त्रिवार्षिकः संघममानयद्यः, श्रीवज्रनेता न कथं नमस्यः ॥१॥

भावार्थ—" जेणे पारणामां सुता सुता श्रुतनो अभ्यास कर्यो, जे छ मासनी उमरे चारित्र लेवाना अभिलाषी थया, अने त्रण वर्षनी वये जेणे संघने मान आप्युं, ते वज्रस्वामी केम नमस्कार करवा लायक न होय ? "

तुंबवन गामना रहीश धनगिरि नामना श्रेष्ठीए पोतानी सुनंदा नामनी गर्भवती स्त्रीने मूकीने दीक्षा ग्रहण करी. पछी समय आवतां सुनंदाए पुत्र प्रसव्यो. प्रसव समयेज माता पासे रहेली स्त्रीओना मुखथी पितानी दीक्षानी

---

१ चोथो आरो विगेरे.

वात सांभळीनें तेने जाति स्मरण थयुं. तेथी माताने उद्वेग पमाडवा माटे ते निरंतर रडवा लाग्यो. तेना रडवाथी अत्यंत खेद पामेली सुनंदाए कायर थइने विचार्युं के " जो आना पिता अहीं आवे, तो आ बाळक तेने आपीने हुं सुखे रहुं. " तेवा समयमां धनगिरि सहित सिंहगुरु ते गामे पधार्या. मध्याह्न समये धनगिरिए आहार लेवा जवा माटे गुरुनी आज्ञा मागी. त्यारे गुरुए कह्युं के—"आजे तने जे कांइ सचित्त के अचित्त मळे ते विना विचार्यें तारे ग्रहण करवुं." धनगिरि गाममां जइ गोचरी माटे फरतां अनुक्रमे सुनंदाने घेर जइ चड्या. ते पोताना पतिने जोइने बोली के—" हे पूज्य ! आ तमारा पुत्रने तमे लइ जाओ." एम कहीने तेणीए ते बाळकने साधुना पात्रमां मूक्यो. एटले तेणीने धर्मलाभ आपीने धनगिरि गुरु पासे लइ आव्या. दूरथी वज्र जेवा भारवाळी झोळी लइने आवता जोइने गुरुए ते झोळीमांथी बाळकने काढीने पोताना उत्संगमां लइ तेनुं वज्रकुमार नाम राख्युं. पछी गुरुए ते बाळकने साध्वीना उपाश्रयमां सोंप्यो. त्यां पाळणुं बांधीने श्राविकाओ तेनुं पालण पोषण करवा लागी. ते बाळक पालणामां सुतो सुतो साध्वीओ श्रुतनो अभ्यास करती हती तेनुं श्रवण करवाथीज अगीयार अंग शीखी गयो. अनुक्रमे ते त्रण वर्षनो थयो त्यारे तेना पिता तथा गुरु विहारना क्रमे फरीथी त्यां आव्या. ते अवसरे वज्रकुमारनी माता सुनन्दाए आवीने मुनि पासे पोतानो पुत्र माग्यो पण तेमणे पाछो आप्यो नहीं. एटले सुनंदाए राजा पासे फरीयाद करी. त्यारे राजाए ठराव कर्यो के—" ते बाळकनो पिता तथा तेनी माता तेने सभानी समक्ष बोलावे, तेमां जेनी पासे ते जाय, तेने ते पुत्र स्वाधीन करवो. " पछी वज्रकुमारने सभामां बोलाव्यो, तेनी एक बाजुए थोडे दूर तेना पिताने अने बीजी बाजुए तेनी माताने बेसाड्यां. पछी हाथमां द्राक्ष, साकर, रमकडां विगेरे राखीने तेने बतावती सुनंदा बोली के—"हे पुत्र ! अहीं आव, अहीं आव, आ ले. " ए सांभळीने लोभ पमाडती माताने जोइ वज्र कुमारे विचार्युं के—" माता ए तीर्थ रूप छे. परंतु ते आ भवमां ज सुख आपी शके छे, अने गुरु तो दरेक भवमां सुख आपे छे. " एम विचारीने ते तेनी पासे न गयो. पछी तेना पिताए पोतानो ओघो (रजोहरण) बतावीने कह्युं के—" आ ले " एटले ते दोडीने त्यां गयो अने पितानो ओघो लीधो. तेथी ते पुत्र तेमने आपवानो निश्चय थयो. एटले सुनंदाए पण

वैराग्य पामीने दीक्षा लीधी. वज्रकुमारे पण त्रण वर्षनी वये चारित्र अंगीकार कर्युं.

एकदा विहार करतां मार्गमां सर्व साधुमांथी वज्रस्वामीनी परीक्षा करवा माटे तेना पूर्वभवनो मित्र के जे देवता थयो हतो तेणे जळनी वृष्टि करी. निरंतर वरसाद पडवाथी सर्व साधुओ वृक्ष नीचे उभा रही स्वाध्याय ध्यान करवा लाग्या. पछी ते देवे मोटो सार्थ विकुर्वीने त्यां आवी पडाव नांख्यो. अने आहारने माटे मुनिओ पासे विनंति करवा गयो. त्यारे गुरु बोल्या के " बीजा कोइने आ वखते आहारनी इच्छा नथी. परंतु आ वज्रमुनि बाळक छे, माटे तेने लइ जाओ. " ए प्रमाणे गुरुनी आज्ञा थतां वज्रमुनि ते सार्थवाहनी साथे आहार लेवा गया. ते देव घेवर विकुर्वीने मुनिने आपवा लाग्यो. त्यारे मुनिए तेनी सामे जोयुं. तो तेनी अनिमेष दृष्टिथी तेने देवता धारी आहार लीधो नहीं. ते जोइने प्रसन्न थइ ते देव बोल्यो के " हे मुनि ! हुं तमारो पूर्व भवनो मित्र देवता छुं. तमारा चारित्रनी परीक्षा करवा माटे आव्यो छुं. पण तमारुं चारित्र चलित करवा मारी शक्ति नथी. माटे हुं तमारापर प्रसन्न थयो छुं. तेथी तमे कांइपण वरदान मागो. " ते सांभळीने वज्रमुनिए कह्युं के " मारे कांइपण इच्छा नथी. " ते सांभळीने अधिक प्रसन्न थयेला ते देवे तेमने वैक्रियलब्धि आपी. फरीथी बीजीवार परीक्षा करीने आकाशगामिनी विद्या आपी. एवी रीते वज्रमुनिने अनेक लब्धिओ प्राप्त थइ.

अनुक्रमे वज्रमुनि आठ वर्षना थया, त्यारे एक वखते गुरु बहिर्भूमिए गया हता अने बीजा मुनिओ गोचरी माटे गया हता, ते वखते वज्रमुनि सर्व साधुओनी उपधी पासे जइ तेओ जे जे सूत्र भणता हता तेनी तेने उद्देशीने वाचना आपवा लाग्या. बहिर्भूमिथी आवेला गुरुए ते बधुं सांभळ्युं तेथी तेने महा विद्वान् जाणीने समग्र शास्त्रनो अभ्यास कराव्यो. पछी तेने योग्य जाणीने सूरिपद आप्युं. ते वज्रस्वामीनी वाणीथी प्रतिबोध पामीने पांचसें मुनिओ तेमना परिवारमां थया. अने बीजा पण अनेक भव्य मनुष्योए व्रतो ग्रहण कर्या.

पाटलीपुरमां धनश्रेष्ठीने रुक्मिणी नामे पुत्री हती. तेणीए साध्वीओना मुखथी वज्रस्वामीना गुणोनी प्रशंसा सांभळीने " आ भवमां मारे वज्रकुमारनेज पति करवो. ते सिवाय बीजा कोइने वरवुं नहीं. " एवी प्रतिज्ञा करी. एकदा व-

वज्रस्वामी पाटलीपुर पधार्या. ते खबर सांभळीने धनश्रेष्ठी एक करोड द्रव्य सहित रुक्मिणीने लइ गुरु पासे जइ तेमने वंदना करीने बोल्यो के "हे सूरि! आ करोड द्रव्य सहित तमे आ मारी पुत्रीने ग्रहण करो (परणो) नहींतो ते मरण पामशे." वज्रस्वामी बोल्या के "अमे साधुओ मलमलिन गात्रवाळी स्त्रीओनी इच्छाज करता नथी." इत्यादि वचनो वडे रुक्मिणीने धर्मोपदेश आप्यो. जेथी तेणीए वैराग्य पामीने तरतज तेमनी पासे दीक्षा लीधी.

एकदा बार वर्षी दुष्काळ पडवाथी समग्र संघ अत्यंत व्याकुळ थयो. ते जोइने वज्रस्वामी समग्र संघने एक कपडापर बेसाडीने आकाशगामिनी विद्याना बळथी सुभिक्षा पुरी (सुकाळवाळी नगरी) ए लइ गया. त्यां रहीने दिवसो निर्गमन करतां पर्युषण पर्व आव्यां. ते वखते ते नगरीनो राजा बौद्ध होवाथी तेणे जिनालयने माटे पुष्प आपवानो निषेध कर्यो. तेथी ते वात संघे मळीने वज्रस्वामीने कही. एटले सूरि आकाशगामिनी विद्यावडे माहेश्वरी पुरीए गया. त्यां पोताना पितानो मित्र एक माळी हतो, तेने पर्युषणना उत्सवनी वात कहीने पुष्पोनी मागणी करी. तेणे एकवीश करोड पुष्पो एकठां करीने आप्यां. ते लइने सूरि हिमवान पर्वतपर गया. त्यां लक्ष्मी देवीए मोटुं कमळ आप्युं ते लइ त्यांथी हुताशन यक्षना वनमां आवतां तेणे घणां पुष्पो आप्यां. ते सर्व पुष्पो लइ पूर्वभवना मित्र जृंभक देवे रचेला विमानमां बेसीने सूरि आकाश मार्गे सुभिक्षा पुरीमां आव्या. पछी ते पुष्पोघ्रो महा महोत्सव कर्यो. जिनधर्मनी प्रभावना थइ. ते जोइ आश्चर्य पामेलो बौद्ध राजा पण श्रावक थयो.

एकदा वज्रस्वामीना शरीरमां कफनो व्याधि थयो. तेथी भोजन कर्या पछी खावा माटे एक सूंठनो ककडो तेमणे कानपर राखी मूक्यो. परंतु भोजन कर्या पछी ते खावानुं भूली गया. ते ककडो प्रतिक्रमण समये कानपरथी पृथ्वी पर पड्यो. ते जोइने "आवो असंभवित प्रमाद थवाथी हवे मृत्यु समय नजीक छे" एम निश्चय करी सूरिए पोताना शिष्य वज्रसेनने सूरिपदे स्थापन कर्या अने पोते रथावर्त गिरिपर जइ अनशन ग्रहण करीने स्वर्ग गया.

श्री वज्रसेनसूरि विहार करतां सोपारकपुरे गया. त्यां जिनदत्त नामे एक श्रावक रहेतो हतो. त्यां दुकाळने लीधे धान्य एटलुं बधुं मोंघुं हतुं के—बे चार माणसोने माटे पण एक लक्ष द्रव्यनो भोजन खर्च थतो हतो. ते श्रेष्ठीए एक लक्ष-

द्रव्यनी हांमली चमावी हती तेमां विष नांखी खाइ जइने तेणे मरवानो निश्चय कर्यो हतो. तेज समये सूरि तेनेज घेर गोचरी माटे गया. गुरुने वंदना करीने श्रेष्ठी बोल्यो के "हे गुरु ! आजे एक लक्षद्रव्यनुं आटलुं धान्य मळ्युं छे तेथी ते रांधी तेमां विष नाखी ते अन्ननुं भक्षण करीने कुटुंब सहित मृत्यु पामवानो में विचार कर्यो छे, कारणके आवा दुष्काळमां जीववा करतां मरवुं सारुं छे." ते सांभळी गुरु बोल्या के "हे श्रेष्ठी ! काले पुष्कळ धान्य आ नगरीमां आवशे. अने दुष्काळनो नाश थशे माटे तुं मरण पामवानो विचार करीश नहीं." गुरुना कहेवा प्रमाणे बीजेज दिवसे चारे बाजुथी पुष्कळ धान्य आव्युं. सर्वत्र सुकाळ थयो. ते जोइने श्रेष्ठीए वैराग्य पामी गुरु पासे दीक्षा लीधी. वज्रसेन सूरि पण चार गणनुं स्थापन करीने जिनशासनना प्रभावक थया. (आ चरित्र वधारे विस्तारथी आवश्यक निर्युक्तिनी मोटी टीकामां आपेलुं छे. त्यांथी जाणी लेवुं.)

"आ श्री वज्रस्वामीना रुडा चरित्रने हृदयरुपी कमळमां भ्रमरनी जेम धारण करीने समग्र सद्गुणोना सारभूत सिध्धान्तना पाठने विषे भव्य मनुष्योए निरंतर प्रयास करवो."

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे चतुर्विंशतितमं व्याख्यानम् ॥ २४ ॥

व्याख्यान २५ मुं.



बीजा धर्मकथक नामना प्रभावक विषे.

व्याख्यानावसरे लब्धिं, यः प्रयुज्योपदेशकः ।
स धर्मकथको नामा, द्वितीयोऽपि प्रभावकः ॥ १ ॥

भावार्थ—" व्याख्यानने अवसरे जे मुनि लब्धिनो उपयोग करी उपदेश आपे छे, ते धर्मकथक नामना बीजा प्रभावक कहेवाय छे."

व्याख्यानमां लब्धि एटले अनुयोगने समये पोतानी शक्ति प्रगट करीने हेतु, युक्ति अने दृष्टान्तोवडे बीजाने जे प्रतिबोध करे छे तेज सूरि धर्मकथा कहेवाने योग्य छे. परंतु जे सूरि घरमां रहेला दीवानी जेम मात्र पोतानेज प्रकाश करे छे ते धर्मकथक थइ शकता नथी. आ प्रसंग उपर सर्वज्ञसूरिनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

सर्वज्ञसूरिनुं दृष्टान्त.

श्रीपुरमां श्रीपति नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. ते समकितने धारण करनारो हतो. तेने कमळ नामे एक पुत्र हतो. ते धर्मथी पराङ्मुख अने साते व्यसनमां तत्पर हतो. देव गुरुनुं दर्शनमात्र पण ते करतो नहीं. तेने एकदा तेना पिताए उपदेश आप्यो के—

बोहत्तरीकलापंडिया वि पुरिसा अपंडिया चेव ।
सव्वकलाण वि पवरं जे धम्मकलं न याणंति ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे पुरुषो सर्व कळाओमां प्रधान एवी धर्मकळाने जाणता नथी तेओ बहोंतेर कळाओमां पंडित होय तो पण तेमने अपंडित (मूर्ख)ज जाणवा."

ते सांभळीने कमळ बोल्यो के—" हे पिता ! जीव क्यां छे ? स्वर्ग क्यां छे ? अने मोक्ष पण क्यां छे ? ते सर्व आकाशने आलिंगन करवा जेवुं अने घोडाना शींगडा जेवुं केवळ असत्यज छे. तप, संयम विगेरे क्रियाओनी तमे प्रशंसा करो छो, पण ते तो केवळ अज्ञानी मनुष्योने छेतरवा माटे ज कहेला छे." इत्यादि कहीने कमळ गाममां फरवा चाल्यो गयो.

एकदा ते नगरमां शंकर नामना सूरि आव्या. तेनी पासे श्रेष्ठी कमळने लइने गयो. श्रेष्ठीए गुरुने वंदना करी कमळने बोध आपवा कह्युं. त्यारे गुरुए कमळने कह्युं—" अमे धर्मोपदेश आपीये छीये. तेमां तारे वच्चे बोलवुं नहीं, आडुं अवळुं जोवुं नहीं, मात्र अमारा सन्मुख जोइने एक चित्ते श्रवण करवुं." एम कहीने गुरुए धर्मकथा कहेवा मांडी. प्रांते कमळने पृछयुं के—" हे वत्स !

तुं कांइ समज्यो ? तें कांइ जाण्युं के नहीं ? " ते बोल्यो—" हे पूज्य ! में कांइक जाण्युं, अने कांइक न पण जाण्युं. केमके तमे बोलता हता, ते वखते तमारा कंठनी घंटडी उंची नीची थती हती, तेमे एक सो ने आठ वार तो गणी; पण केटलाएक गडबड वाळा शब्दो तमे शीघ्रताथी बोल्या, ते वखते ते घंटडी केटली वार उंची नीची थइ, तेनी संख्या हुं करी शक्यो नथी. " ते सांभळीने सर्व सभाजनो हसवा लाग्या के—" अहो ! आ श्रोता बहु डाह्यो जणाय छे ! " गुरुए पण तेने अयोग्य धारीने तेनी उपेक्षा करी.

वळी कोइ एक दिवसे बीजा सूरि त्यां आव्या. तेनी पासे श्रेष्ठीए कमळनुं सर्व वृत्तांत कही तेने कोइ पण रस्ते धर्म पमाडवा विनंति करी. त्यारे सूरिए कमळने बोलावीने कह्युं के—" हे वत्स ! तुं नीचे दृष्टि राखीने अमारो उपदेश एक चित्तथी श्रवण करजे. " एम कहीने तेमणे व्याख्यान आपवा मांड्युं. अंते कमळने " शुं समज्यो ? " एम पूछ्युं, त्यारे ते बोल्यो के—" हे पूज्य ! आ विवरमांथी कीडीओ जती आवती हती तेनी संख्या में एक सोने आठ सुधी गणी. " ए रीते हास्यवाळुं वचन सांभळीने बीजा श्रावकोए तेने काढी मूक्यो.

पछी कोइ दिवसे उपदेशनी लब्धिवाळा सर्वज्ञ नामना सूरि ते नगरमां पधार्या. तेमने पण श्रेष्ठीए कमळनुं वृत्तांत कही तेने प्रतिबोध करवा विनंति करी. ते सांभळीने सूरिए कमळने बोलाव्यो. एटले ते आवीने सूरि पासे बेठो. गुरुए विचार्युं के " आने साम (मीठा लागे तेवा) वचनथी बोध करवो जोइए. " एम विचारी गुरुए तेने पूछ्युं के—" हे वत्स ! तुं कांइ कामशास्त्र जाणे छे ? " कमळे कह्युं के—" हे गुरु ! हुं शुं जाणुं ? आप तेनो कांइ सार होय, ते कहो " गुरु बोल्या के—" हे कमळ ! सांभळ, स्त्रीओ चार प्रकारनी होय छे. पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रणी अने शंखिनी. तेमां पद्मिनी सर्वमां उत्तम कहेवाय छे. अने पछी बीजी तेथी उतरती, त्रीजी तेथी उतरती अने चोथी सर्वथी कनिष्ट छे. तेमां पद्मिनी स्त्रीनुं लक्षण आ प्रमाणे छे.—

व्रजति मृदु सलीलं राजहंसीव तन्वी,
त्रिवलीवलितमध्या हंसवाणी सुवेषा ।
मृदु शुचि लघु भुंक्ते मानिनी गाढलज्जा,

धवलकुसुमवासोवल्लज्ञा पद्मिनी स्यात् ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—" पद्मिनी स्त्री राजहंसनी जेम मंद मंद लीला सहित गमन करे छे, तेणीना कृश उदर उपर त्रिवळी पमेली होय छे, तेणीनी वाणी हंस जेवी मधुर होय छे, तेनो वेष सुंदर होय छे, ते शुद्ध अने कोमळ अन्ननो अल्प आहार करे छे, मानवाळी अने अति लज्जावाळी होय छे, तथा तेणीने श्वेत पुष्पनी जेवा वस्त्रो वधारे प्रिय होय छे. "

आ प्रमाणे गुरुना मुखथी सांज्ञळी " आ सूरि महा पंमित जणाय छे " एम विचारतो कमळ पोताने घेर गयो. पछी बीजे दिवसे ते पोतानी मेळेज गुरु पासे आवीने बेठो. त्यारे गुरुए चित्रणीनुं लक्षण कह्युं के " हे कमळ ! चित्रणी स्त्रीनुं काममंदिर (गुह्य ज्ञाग) गोळाकार होय छे, वळी ते द्वार कोमळ अने अंदर जळथी आर्द्र होय छे, तथा तेना उपर रोम घणा होय छे. तेणीनी दृष्टि चपळ होय छे, ते बाह्य संज्ञोगमां (हास्य क्रीमादि करवामां) वधारे आसक्त होय छे, ते मधुर वचन वमे पतिने आनंद आपनारी होय छे, तथा तेणीने नवी नवी वस्तुओ बहु गमे छे. " ए प्रमाणे सांज्ञळीने कमळ घेर गयो. त्रीजे दिवसे आव्यो, त्यारे गुरुए शंखिनीनुं स्वरूप कह्युं. चोथे दिवसे हस्तिनीनुं वर्णन कर्युं. पछी पांचमे दिवसे गुरुए कह्युं के " हे कमळ ! स्त्रीओना कया कया अंगने विषे कये कये दिवसे काम रहे छे, ते सांज्ञळ—

अंगुष्ठे पदगुल्फजानुजघने नाज्ञौ च वक्षस्थले,
कक्षाकंठकपोलदंतवसने नेत्रेऽलके मूर्धनि ।
शुक्लाशुक्लविज्ञागतो मृगदृशामंगेष्वनंगस्थिति-
मूर्ध्वाधोगमनेन वामपदगाः पक्षद्वये लक्षयेत् ॥ १ ॥

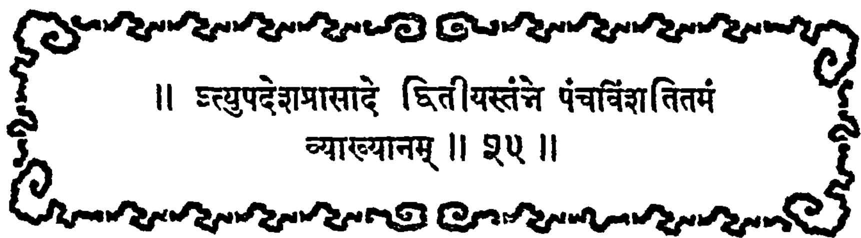
ज्ञावार्थ—" पगनो अंगुठो, फणो, घुंटी, जानु, जघन, नाज्ञि, वक्षस्थळ (स्तन), कक्षा (काख), कंठ, गाल, दांत, ओष्ठ, नेत्र, कपाळ अने मस्तक—ए पंदर अंगमां स्त्रीओने पंदर तिथिए अनुक्रमे काम रहे छे. तेमां शुक्ल पक्षने पमवे अंगुठे काम होय छे, त्यांथी चमतो पुनमे मस्तके आवे छे अने कृष्ण पक्षमां पमवे मस्तके होय छे त्यांथी उतरतो अमासने दिवसे अंगुठे आवे छे. "

आ प्रमाणे जाणीने जो स्त्रीना कामवाळा स्थाने मर्दन कर्युं होय, तो ते स्त्री तत्काळ वश थाय छे. वश थयेली स्त्रीनुं लक्षण आ प्रमाणे छे. "वश थवाने इच्छती स्त्री पोतानां नेत्रने नमावे छे, पुरुषना हृदयपर पडे छे, तथा भृकुटीने वक्र करती शोभाने उत्पन्न करे छे अने संयोग थवाथी लज्जानो त्याग करे छे." आ प्रमाणेनी वातमां रस पडवाथी कमळ हमेशां सूरिनी पासे आववा लाग्यो अने कोइ वखत शृंगारनुं, कोइ वार इन्द्रजाळनुं, कोइ वार बीजुं वर्णन सांभळीने गुरुपर रागी थयो. एम करतां मासकल्प पूर्ण थयो, त्यारे विहार करती वेळाए सूरिए तेने कह्युं के "हे कमळ! हवे अमे विहार करीए छीए तेथी अमारा समागमना स्मरण माटे तुं कांइक नियम ग्रहण कर." ते सांभळीने हास्यपर प्रीतिवाळो कमळ हांसी करतो बोल्यो के "हे पूज्य! मारे घणा नियमो छे, ते आप सांभळो—मारी इच्छाथी कोइ वखत मरवुं नही, पकवान्नमां नळीयां ईंट विगेरे खावां नहीं, दूधमां थोरनुं दूध पीवुं नहीं, आखुं नाळियेर मुखमां नाखवुं नहीं, पारकुं धन लइने पाछुं आपवुं नहीं, स्वयंभूरमण समुद्रने पेले पार जवुं नही, तथा चांडाळनी स्त्री साथे विषय सेवन करवुं नहीं. विगेरे घणा नियमो मारे छे." ते सांभळीने गुरु बोल्या के "अरे कमळ! अमारी साथे पण हास्य करवाथी अनेक भव उपार्जन थाय छे. जेम सोनी सुवर्णना वारंवार भांगीने कुंडळ विगेरे जूदा जूदा आकार घडे छे, तेम गुरुनी आशातना पण जीवने तिर्यंचपणुं, नारकीपणुं, अप्कायपणुं, पृथ्वीकायपणुं विगेरे अनेक दुःखवाळां स्थानो आपे छे, माटे अत्यारे हास्यनो वखत नथी, तेथी काइ पण नियम ले." ते सांभळीने कमळ जरा लज्जा पामीने बोल्यो के—"मारा पाडोशमां एक वृद्ध कुंभार रहे छे, तेना माथानी टाल जोया पछी मारे हंमेशां खावुं, ते विना मारे खावुं नहीं. ए नियम आपो." गुरुए तेवा नियमथी पण तेने लाभ थवानो जाणीने तेने ते नियम आप्यो. पछी तेने बराबर पाळवानुं कहीने गुरुए अन्यत्र विहार कर्यो. कमळ लोकलज्जाथी पण लीधेला नियमनुं पालन करवा लाग्यो.

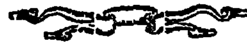
एकदा कमळ राजद्वारे गयो हतो त्यां कामने प्रसंगे वधारे रोकावुं पडवाथी मध्याह्न थइ गयो, जमवानुं घणुं मोडुं थयुं. पछी घेर आवीने ते जमवा बेसे छे, तेटलामां तेनी माताए तेने नियम याद आप्यो एटले ते दिवसे तेणे कुंभारनी टाल जोइ नहोती, तेथी जम्या विना एकदम तेने घेर जइ खबर काढी,

तो ते कुंभार गाम बहार माटी लेवा गयो हतो. तेथी कमळ गाम बहार गयो अने दूरथी एक खाडामां वांको रहीने माटी खोदता ते कुंभारना माथानी टाल जोइने 'जोइ जोइ' एम बोलतो कमळ मुठी वाळीने घर तरफ दोड्यो. ते वखते ते कुंभारने माटी खोदतां सोनामहोरनो निधि प्राप्त थयो हतो. तेथी कमळना 'जोइ जोइ' एवा शब्दो सांभळीने "ते आ निधि जोइ गयो छे, तेथी जो ते राजाने कहेशे, तो राजा सर्व निधि लइ जशे." एवी शंका थवाथी कुंभारे बूम मारीने कमळने कह्युं के "भव्या कमळ! अहीं आव, अर्धो भाग तारो." ते सांभळतां छतां पण कमळ तो 'जोइ जोइ' एम बोलवा लाग्यो. छेवटे कुंभारे कह्युं के "भव्या! आम आव, आ बधुं तुंज लइ जा. पण ताणीने बोल बोल न कर." ते सांभळीने कमळने कांइक शंका थवाथी ते तेनी पासे गयो तो निधि जोयो. एटले कमळे ते लइने तेमांथी थोडुं धन कुंभारने आपी राजी कर्यो. पछी ते सर्व धन घेर लावीने तेणे विचार कर्यो के "अहो! पृथ्वीपर जैनधर्मज श्रेष्ठ छे के जे धर्मना हांसीथी राखेला अल्प नियमवडे पण मने आवो मोटो लाभ मळ्यो. माटे जो दृढ श्रद्धाथी ते धर्म पाळ्यो होय तो केटलो बधो लाभ थाय?" एम विचारीने तेणे शुद्ध हृदयथी गुरु महाराजने आमंत्रण करी श्रावकना बार व्रत तेमनी पासे ग्रहण कर्या अने ते व्रतोनुं आराधन करीने स्वर्गे गयो.

"सर्वज्ञ सूरिए नास्तिक एवा कमळने पण शास्त्रनी युक्तिओथी धर्ममां दृढ कर्यो. आवा श्रेष्ठ आचार्योज भव्य पुरुषोनी जडता दूर करवामां समर्थ होय छे."


॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे पंचविंशतितमं व्याख्यानम् ॥ २५ ॥

व्याख्यान २६ मुं.



उपदेशलब्धि उपर नंदिषेण मुनिनुं दृष्टान्त.

कोइ गाममां एक ब्राह्मण रहेतो हतो. धनना गर्ववडे कुबेरनी पण स्पर्धा करे तेटलुं तेनी पासे धन हतुं. एकदा तेणे यज्ञनो आरंभ कर्यो. तेमां एक लाख ब्राह्मणने भोजन कराववानुं हतुं. ते काममां सहायनी जरूर होवाथी एक गरीब जैनब्राह्मणने कह्युं के " तुं मने आ कार्यमां सहाय कर. ब्राह्मणनुं भोजन थइ रह्या पछी जे कांइ घी, अन्न विगेरे वधशे ते हुं तने तारी महेनत बदल आपीश." एवी शरत करीने ते जैन ब्राह्मणने ते कार्यमां सहायक कर्यो. अनुक्रमे लाख ब्राह्मणोनुं भोजन थइ रह्युं, त्यारे तेणे ते जैन ब्राह्मणने वधेला चोखा, घी विगेरे आप्युं. ते लइने ते गरीब ब्राह्मणे विचार कर्यो के " आ वस्तु न्यायोपार्जित छे, शुद्धमान छे अने प्रासुक छे तेथी कोइ सत्पात्रने आनुं दान करुं, तो ते घणा फळने आपनारुं थाय. शास्त्रमां कृपावंत परमात्माए कह्युं छे के—नायागयाणं कप्पणिज्जाणं अन्नं पाणाइ दव्वाणं पराए भत्तीए अप्पाणुग्गहबुद्धीए संजयाणं अतिहिसंविभागो मुक्खफलो—न्यायथी[1] उपार्जन करेल अने कल्पनीय एवा अन्न पाणी विगेरे द्रव्यो उत्कृष्ट भक्तिथी आत्माना अनुग्रहनी बुद्धिए जो संयम धारी साधुने अतिथिसंविभाग करी आप्यां होय, तो ते मोक्षनुं फळ आपनार थाय छे." एम विचारी तेणे दया तथा ब्रह्मचर्यादिकने धारण करनारा केटलाएक गुणी साधर्मीओने भोजन माटे निमंत्रणा करी. भोजनने समये कोइ महाव्रतधारी मुनि मासक्षपणने पारणे त्यां आव्या. ते जोइने ब्राह्मणे अति आदरसत्कारपूर्वक ते अन्नजळ विगेरे मुनिने वहोराव्युं. तेणे विचार्युं के " आ श्रावको करतां पण यतिरूपपात्र अति उत्तम छे. कह्युं छे के—

मिथ्यादृष्टिसहस्रेषु, वरमेको ह्यणुव्रती ।
अणुव्रतीसहस्रेषु, वरमेको महाव्रती ॥ १ ॥

---

१ अहीं चोभंगी छे. न्यायागत द्रव्यने न्यायमा वापरवु, न्यायागत द्रव्य अन्यायमा वापरवु, अन्यायागत द्रव्यने न्यायमां वापरवु अने अन्यायागत द्रव्य अन्यायमा वापरवुं आमा प्रथम भागो विशुद्ध छे.

महाव्रतिसहस्रेषु, वरमेको हि तात्त्विकः ।
तात्त्विकेन समं पात्रं, न भूतं न भविष्यति ॥ ३ ॥

भावार्थ—" हजार मिथ्यादृष्टि करतां एक अणुव्रती श्रावक श्रेष्ठ छे, हजार अणुव्रतीओ करतां एक महाव्रती साधु श्रेष्ठ छे, हजार महाव्रतीओ करतां एक तत्त्ववेत्ता मुनि वधारे सारो छे. तत्त्ववेत्ताना जेवुं सत्पात्र आ जगतमां कोइ हतुं नहीं, छे नहीं अने थशे पण नहीं. "

पछी ते ब्राह्मण केटलेक काळे आयुष्य पूर्ण थतां मरीने सुपात्रदानना महिमाथी पहेला देवलोकमां देवता थयो. त्यांथी आयुष्यने क्षये चवीने राजगृही नगरीमां श्रेणिक राजानो नंदिषेण नामनो पुत्र थयो. ते युवावस्था पाम्यो, त्यारे राजाए तेने पांचसो राजकन्याओ परणावी. ते स्त्रीओ साथे दोगुंदक देवनी जेम मनोहर भोगविलासरूप सुखसागरमां ते मग्न रहेवा लाग्यो.

हवे पेलो लाख ब्राह्मणने भोजन करावनारो ब्राह्मण के जेणे पापानुबंधी पुण्य उपार्जन कर्युं हतुं, ते तेवा प्रकारनुं विवेक रहित दान करवाथी घणा भवोमां अल्प अल्प भोगादिक सुख भोगवीने कोइएक अरण्यमां हस्ती थयो. तेनुं नाम सेचनक पड्युं. ते नाम थवानुं कारण ए हतुं के—आ हाथीनो पिता जे हाथी हतो, तेणे एवुं धार्युं हतुं के ' मारो पुत्र कोइ हाथी थशे, तो ते मनेज मारीने आ हाथणीओना टोळानो स्वामी थशे. ' तेथी ते हाथी पोतानी हाथणीओमांथी जो कोइ हाथी (नर)ने जन्म आपती, तो ते बच्चाने ते मारी नांखतो हतो. एकदा एक हाथणीने प्रसूतिनो समय आव्यो. त्यारे तेणीए पोताना बच्चांने पण मारी नांखशे एवा भयथी ते हाथीने छेतरीने एक तापसना आश्रममां जइ त्यां एक हाथी (नर)ने जन्म आप्यो. तेने तापसना कुमारोए उछेरी मोटो कर्यो. ते कुमारोनी संगतिथी ते हाथी (बाळक) पण पोतानी सूंढमां पाणी लइने वृक्षोने सींचतो हतो. तेथी तेनुं नाम तापसोए सेचनक पाड्युं हतुं.

एकदा ते सेचनक हाथी फरतो हतो. तेवामां तेणे पेलो हाथणीओना यूथनो स्वामी हाथी के जे पोतानो पिता थतो हतो, तेने जोयो. तेनी साथे युद्ध करतां ते सेचनके तेने मारी नांख्यो, अने पोते यूथनो स्वामी थयो. पछी तेणे पोतानी मातानो प्रपंच जाणीने नवो हाथी उत्पन्न न थवा देवा माटे ते तापसोनो

आश्रम भांगी नांख्यो. तेथी खेद पामेला तापसोए तेनुं वैर लेवा माटे श्रेणिक राजा पासे जइने ते सेचनकनी प्रशंसा करी " हे राजा !

चत्वारिंशत्समधिकचतुःशतसुलक्षणः ।
स द्वीपो भद्रजातीयः सप्तांगं सुप्रतिष्ठितः ॥१॥

भावार्थ—" चारसो ने चालीश शुभ लक्षणोथी युक्त अने साते अंगोमां सुप्रतिष्ठित एवो एक भद्र जातिनो हाथी अरण्यमां फरे छे. "

ते हाथी आपना राज्यमां शोभे तेवो छे. " ते सांभळीने श्रेणिक राजाए माणसो मोकली केटलाएक उपायो वडे तेने पकडाव्यो. पछी ते सेचनकने अनुक्रमे पट्ट हाथी बनाव्यो. तेथी राज्यने योग्य एवा आहार वस्त्रो विगेरेथी पोषण करातो ते सुखी थयो. एक दिवसे पेला तापसो नगरीमां आव्या. त्यारे तेओए सेचनकनी पासे जइने कह्युं के " अमारा आश्रमने भांगी नांखवानुं आ फळ तने मळ्युं छे. " ते वचनथी मर्मस्थानमां वींधायेलो ते हाथी आलान स्तंभ उखेडी नांखी वनमां जइ फरीथी ते तापसोनो आश्रम भांगी नाखी अत्यंत तोफान करवा लाग्यो. राजाए घणो प्रयास कर्यो पण कोइ ते हाथीने पकडी शक्युं नहीं. तेथी राजाए नगरमां पटह वगडाव्यो के " आ दुर्दम हाथीने कोइ पण शक्तिमान होय, ते पकडो. " ते सांभळीने राजानी आज्ञा लइ नंदिषेण कुमारे तेने ' अप्पा चेव दमेअव्वो—आत्मानुंज दमन करवुं जोइए ' इत्यादि वाक्योथी जाग्रत कर्यो. ते कुमारने जोइने सेचनके विचार्युं के " आ कुमार मारो कोइ वखतनो संबंधी लागे छे. " एम तर्क वितर्क करतां तेने जातिस्मरणज्ञान थयुं, एटले ते तरत ज शांत थइ नंदिषेणनी पासे आवीने उभो रह्यो. तेणे तेने आलानस्तंभे लइ जइने बांध्यो. आ हकीकत जोइ श्रेणिकादि विस्मय पाम्या.

अन्यदा श्री महावीर स्वामी वैभारगिरि पर समवसर्या. तेमने वंदन करवा माटे श्रेणिकराजा, अभयकुमार, नंदिषेण विगेरे गया. प्रभुना मुखथी देशनानुं श्रवण करी प्रांते राजाए प्रभुने पूछ्युं के—" हे स्वामी ! सेचनक हाथी नंदिषेण कुमारथी केम शांत थयो ? " त्यारे प्रभुए नंदिषेणना सुपात्रदाननो तथा हाथीना जीवे करावेला लक्ष ब्राह्मणना भोजननो सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. फरीथी

राजाए तेमनी भविष्यनी गति पूछी, त्यारे भगवान बोल्या के—" हे राजा ! न्यायथी प्राप्त करेला द्रव्यनुं सुपात्रे दान करवाथी नंदिषेण कुमार अनेक दिव्य भोग भोगवी चारित्र ग्रहण करी स्वर्गमां जइने अनुक्रमे मोक्षपद पामशे, अने आ हाथीनो जीव पूर्वे पात्र अपात्रनो विचार कर्या विना दान करवाथी थोडा भोग पाम्यो छे. परंतु हवे ते मरीने पहेली नरकमां जशे. " ते सांभळी नंदिषेण कुमारे प्रतिबोध पामी श्रावकधर्म अंगिकार कर्यो.

अन्यदा नंदिषेण चारित्र लेवा तैयार थयो. ते वखते शासनदेवीए तेने कह्युं के " हजु तारे भोग कर्म घणा बाकी रह्या छे, माटे हाल दीक्षा लइश नहीं. " एम निषेध कर्या छतां पण नंदिषेणे दीक्षा ग्रहण करी. जिनेश्वरे पण तेने निषेध कर्यो. तो पण तेणे पोतानो आग्रह मूक्यो नहीं, अने हर्षपूर्वक चारित्रनो स्वीकार करी उग्र तपस्या करतो ते प्रभुनी साथे विहार करवा लाग्यो. अनुक्रमे नंदिषेण मुनि अनेक सूत्रार्थना जाण थया.

केटलेककाळे भोगावळी कर्मनो उदय थवाथी नंदिषेण मुनिने कामविकार उत्पन्न थवा लाग्यो—भोगनी इच्छा थवा लागी. तेने रोकवा माटे तेणे घणी उग्र तपस्या करवा मांडी, आतापना लेवा मांडी, तोपण इन्द्रियोनो विकार शान्त पाम्यो नहीं. तेथी चारित्रनुं रक्षण करवाना हेतुथी पर्वतपर चढीने झंपापात करवानो तेणे विचार कर्यो. पछी जेवा ते पडवा जाय छे तेवा शासनदेवीए तेने उपाडी लीधा. अने कह्युं के " शा माटे फोकट मरवा धारो छो ? भोग भोगव्या विना मरण थवानुं नथी. " एम कहीने देवी अदृश्य थइ. पछी एक दिवसे ते मुनिए छट्ठना पारणाने माटे गाममां फरतां अजाणतां एक गणिकाना घरमां पेसीने धर्मलाभ आप्यो. ते सांभळीने वेश्या हसती हसती बोलीके " हे साधु ! अमारे धर्मलाभनुं कांइ काम नथी, अहींतो अर्थलाभ जोइए छीए. " ते सांभळीने 'आ स्त्री मारी मश्करी करे छे ' एम विचारी अभिमानथी मुनिए उपरथी एक तृण खेंचीने लब्धिवडे दश करोड रत्ननी वृष्टि करी. ते जोइने आश्चर्य पामेली वेश्या तेना चरणकमळने भ्रमरीने जेम वळगी पडीने बोली के " हे प्राणनाथ ! अनाथ अने तमारापर अनुरक्त थयेली एवी मने तजवाने तमे योग्य नथी. " इत्यादि अनेक प्रार्थनानां वाक्यो सांभळीने देवीए कहेला भोगकर्मनुं स्मरण करी तेना वचनोथी रक्त थइ ते वेश्याने अंगीकार करी. परंतु ते वखते तेणे एवो अभिग्रह

लीधो के " अहीं आवता नटवीट पुरुषोने धर्मोपदेश आपीने तेमांथी दररोज दश जणने प्रतिबोध पमाडी तेमने दीक्षा लेवा मोकल्या पछी मारे भोजन करवुं." पछी मुनिवेषनो त्याग करी वेश्या साथे कामक्रीडा करता सता त्यां रह्या अने हंमेशां दश माणसोने प्रतिबोध करी दीक्षाग्रहण करवा माटे प्रभु पासे मोकलवा लाग्या. एवी रीते बार वर्ष व्यतीत थया पछी एक दिवस तेणे नव माणसोने प्रतिबोध पमाड्यो, पण दशमो एक सोनी कोइ रीते प्रतिबोध पाम्यो नहीं. भोजन समय वीती गयो. वेश्याए बे वखत रसोइ करी, ते पण ठरी गइ. तेणी वारंवार भोजन माटे बोलाववा लागी. त्यारे ते बोल्या के " हजु दशमो माणस बोध पाम्यो नथी." ते सांभळी वेश्या हसीने बोली के " हे स्वामी ! त्यारे दशमा तमे ज थाओ ! " ते सांभळीने नंदिषेण तरतज भोगकर्म क्षीण थवाथी उठ्या अने वेश्याए घणा मोहक वाक्योथी आग्रह कर्या छतां तेणीनी किंचित् पण दरकार कर्या विना तेने तृणनी जेम छोडी दइने जिनेश्वर पासे जइ फरीथी दीक्षा ग्रहण करी, अने पोताना दुष्कर्मनी आलोचना करीने नंदिषेण मुनि अनुक्रमे स्वर्गे गया.

" हे भव्य जीवो ! जेओ आगम वाक्यनी युक्ति वडे भवाभिनंदी जीवोने पण प्रतिबोध पमाडे छे, तेओ नंदिषेण मुनिनी जेम दिव्य भोगो भोगवीने अनुक्रमे सिद्धिपदने पामे छे. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे षड्विंशतितमं व्याख्यानम् ॥ २६ ॥

व्याख्यान २७ मुं.

त्रीजा वादी प्रभावक विषे.

बलात्प्रमाणग्रन्थानां, सिद्धान्तानां बलेन वा ।
यः स्यात् परमतोच्छेदी, स वादीति प्रभावकः ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे (सूरि) प्रमाण ग्रन्थोना बळथी अथवा सिद्धान्तना बळथी पर मतनो उच्छेद करे छे, ते वादी प्रभावक कहेवाय छे,

चार्वाकोऽध्यक्षमेकं सुगतकणभुजौ सानुमानं सशाब्दं
तद्वैतं पारमार्षः सहितमुपमया तत्त्रयं चाक्षपादः ।
अर्थापत्त्या प्रभाकृद्वदति तदखिलं मन्यते भट्ट एतत्
साभावं द्वे प्रमाणे जिनपतिगदिते स्पष्टतोऽस्पष्टतश्च ॥ १ ॥

भावार्थ—" चार्वाक (नास्तिक) मात्र एक प्रत्यक्ष ज प्रमाण माने छे. बौद्ध प्रत्यक्ष तथा अनुमान ए बे प्रमाण माने छे. कणाद मतवाळा प्रत्यक्ष, अनुमान अने शब्द ए त्रण प्रमाण माने छे. परम आर्ष अक्षपाद (न्याय) मतवाळा ते त्रण सहित उपमा साथे चार प्रमाण माने छे. प्रभाकर मतवाळा अर्थापत्ति सहित पांच प्रमाण माने छे. भट्ट मतवाळा ते पांचेनी साथे अभाव सहित छ प्रमाण माने छे. अने जैन मतवाळा तो स्पष्ट तथा अस्पष्ट ए बे ज प्रमाण माने छे. (स्पष्ट एटले प्रत्यक्ष अने अस्पष्ट एटले परोक्ष—बीजा सर्व प्रमाणो तेमां अंतर्गत थाय छे.)

ते प्रमाणो जेमां वर्णव्या छे, तेवा ग्रन्थोने आधारे जे परवादीने जीते छे, ते वादी प्रभावक कहेवाय छे. तेनो भावार्थ मल्लवादी सूरिना चरित्रथी जाणवो.

मल्लवादी प्रबंध.

भृगुकच्छ (भरूच) नगरमां राजानी समक्ष वाद थतां बौध साधु बुद्धानंद जीवानंदसूरिने वितंडावाद वडे जीती लीधा. तेथी लज्जा पामीने सूरि महाराज वल्लभीपुरे गया. त्यां पोतानी बहेन दुर्लभदेवीने तेना अजीतयशा, यक्ष अने मल्ल नामना त्रणे पुत्रो सहित प्रतिबोध पमाडीने दीक्षा आपी. पछी ते त्रणेने गुरुए नयचक्रवाल ग्रंथ विना बीजां सर्व शास्त्रो भणाव्यां. त्रणेमां मल्लमुनि विशेष बुद्धिमान थया.

एकदा " ज्ञानप्रवाद नामना पांचमा पूर्वमांथी उद्धरेल, बार आरावाळो दरेक आराना आरंभमां अने प्रांते चैत्यपूजादिक महोत्सव करीने वांचवा लायक अने देवताधिष्ठित एवो द्वादशार नयचक्र नामनो ग्रंथ ज्ञानभंडारमां छे, ते कोइने

देखाडवो नहीं. ” एम पोतानी बहेन[1] साध्वीने भलामण करीने गुरु महाराजे अन्यत्र विहार कर्यो. एकदा मल्लमुनिए पोतानी माताथी छानुं ते पुस्तक कौतकथी लइने उघाडी प्रथम पत्रमां प्रथम आर्या आ प्रमाणे वांची.

“ विधिनियमभङ्गवृत्तिव्यतिरिक्तत्वादनर्थकमवोचत् ।
जैनादन्यच्छासनमनृतं भवतीति वैधर्म्यम् ॥ १ ॥ ”

आ प्रथम आर्या मल्लमुनिए वांची, के तरतज ते पुस्तक शासनदेवीए हरी लीधुं. ते जोइ मल्लमुनिए अति खेद सहित पोतानी माताने तथा संघने ते हकीकत यथास्थित कही बतावी. तेओए तेने घणो उपालंभ आप्यो. पछी मल्लमुनिए ते ग्रंथनी प्राप्ति थाय त्यां सुधी छए विकृतिनुं प्रत्याख्यान कर्युं, अने केवळ वालनुं पारणुं करीने छठ तप करवा लाग्या. चतुर्मासना पारणाने दिवसे संघे अत्यंत आग्रह करीने तेने विकृति ग्रहण करावी. पछी श्रीसंघे आराधेली श्रुतदेवीए मल्लसाधुनी परीक्षा करवा माटे रात्रीए आवीने तेने कह्युं के—‘ के मिष्टाः ? ’—‘ कइ चीज स्वादीष्ठ छे ?’ मुनिए जवाब आप्यो के—‘ वल्लाः—वाल’

त्यार पछी छ मासे फरीथी शासन देवीए पूछ्युं के—‘ के न ? ’—कोण नहीं ? (कइ वस्तु मिष्ट नथी ?) त्यारे मुनिए कह्युं के—‘ गुडघृते न ’—‘ गोळ अने घी (मीठा) नथी. ’ आवो प्रत्युत्तर सांभळीने तेनी धारणाशक्तिथी तुष्टमान थयेली देवीए ‘ वरदान माग ’ एम कह्युं. त्यारे तेणे ‘ नयचक्र पुस्तक आपो. ’ ए वरदान माग्युं. एटले देवीए तेने ते पुस्तक[2] आप्युं. तेथी ते मल्लमुनि अधिक शोभा पाम्या. त्यार पछी केटलेक काळे गुरु महाराज विहारना क्रमे पाछा त्यां पधार्या अने मल्लने सूरि पदे स्थापन कर्या. श्री मल्लसूरिए चोवीश हजार श्लोक प्रमाण पद्म चरित्र रच्युं.

त्यार पछी मल्लसूरि भृगुकच्छमां आव्या. त्यां शिलादित्य राजानी समक्ष बौद्ध साधु बुद्धानंद साथे तेमने वाद थयो. तेमां मल्लाचार्ये नयचक्रना अभिप्राय-

१ पोतानी बहेन साध्वी समक्ष मल्लसाधुने कर्युं. एवुं प्रभावक चरित्रमा छे.

२ देवीए ते पुस्तक तेने आप्युं नही, पण कह्युं के ‘ ए ग्रंथ प्रगट थवाथी, द्वेषी देवताओ उपद्रव करशे परंतु तेना एकज श्लोकथी तमे आखा शास्त्रनो अर्थ जाणशो ’ एम कही शासनदेवता अदृश्य थइ. त्यार पछी तेणे दश हजार श्लोक प्रमाण नयचक्र ग्रंथ नवीन कर्यो. एवुं प्रभावक चरित्रमा कह्युं छे.

ने अनुसारे छ मास[1] सुधी अविच्छिन्न वाग्धाराए पूर्व पक्ष कर्यो. ते पूर्व पक्षने धारण करवामां अशक्त एवो बुध्धानंद पोताना मकाने नासी गयो, अने वादीना पूर्वपक्षने संज्ञारी संभारीने खमीवमे लखवा मांड्यो, पण विस्मरण थवाथी लखी शकायुं नहीं. तेथी अत्यंत खेद पामता ते बुध्धानंदनुं हृदय फाटी गयुं, अने तत्काळ ते मृत्यु पाम्यो. प्रातःकाळे शासनदेवीए ते वृत्तांत मल्लसूरिने जणावी तेना पर पुष्पवृष्टि करी. पछी राजाए मल्लसूरिने 'वादीमदज्ञंजक' एवुं बिरुद आपी सर्व बौध्धोने पोताना देशमांथी काढी मूक्या, अने पोते जैनी थयो. त्यार पछी बौध्द लोको फरीथी आ देशमां आव्याज नथी.

आ प्रबंध राजशेखर सूरिकृत ग्रंथमां नीचे प्रमाणे छे—

खेटक (खेमा) पुरमां देवादित्य नामना ब्राह्मणने एक विधवा पुत्री हती. तेणे कोइ गुरु पासेथी सूर्यनो मंत्र पामीने तेनो जाप कर्यो. तेथी सूर्ये आवीने तेणीनी उपर मोह पामी तेनी साथे ज्ञोग कर्यो. ते दिव्य शक्तिथी तेणी गर्ज्ञवती थइ. गर्भनी वात जाणीने तेना पिताए तेने ठपको आप्यो, त्यारे तेणीए यथार्थ वृत्तांत कह्यो. ते सांज्ञळीने तेना पिताए लज्जाथी ते पुत्रीने वल्लज्ञीपुरे मोकली. त्यां तेणीए पुत्र तथा पुत्री युग्म रुपे प्रसव्यां. तेओ योग्य वयनां थयां त्यारे पुत्र लेखशाळामां ज्ञणवा गयो. त्यां निशाळना छोकराओ नबापो (पिता विनानो) कहीने तेनी मश्करी करवा लाग्या. तेथी तेणे तेनी माताने पूछ्युं के ' मारा पिता कोण छे ?' तेना जवाबमां माताए कह्युं के ' हुं जाणती नथी. ' ते सांज्ञळीने ते पुत्र खेदयुक्त थइ मरवा तैयार थयो. ते वखते सूर्ये साक्षात् प्रगट थइने कह्युं के " हे वत्स ! हुं तारो पिता छुं. तारो जे कोइ पराज्ञव करे, तेने तारे कांकरावती मारवो. ते कांकरो तेने मारीने पाछो तारी पासे आवशे. " त्यारपछी ते पुत्रे केटलाक बाळकोने अने बीजा माणसोने हण्या. ते जाणी वल्लज्ञीपुरना राजाए तेनी तर्जना करी, तेथी ते राजाने पण मारीने पोते शिलादित्य नामे राजा थयो. अनुक्रमे ते जैनधर्मी थयो, अने तेणे शत्रुंजयगिरि उपर उद्धार कर्यो.

ते शिलादित्ये पोतानी बेनने भृगुकच्छना राजा साथे परणावी. तेणीने मल्ल नामनो पुत्र थयो.

---

१ कोइ ग्रंथमा छ दिवस कह्या छे

एकदा वल्लभीपुरमां देशत्यागनी प्रतिज्ञा पूर्वक राजानी समक्ष वाद थतां दैवयोगे बौध्धोए जैनोनो पराभव कर्यो. तेथी जैन मुनिओ परदेशमां गया, अने राजा बौध्ध धर्मी थयो. ते राजानी बेने पोताना पतिना मरणथी वैराग्य पामीने पोताना मल्ल पुत्र सहीत दीक्षा ग्रहण करी. ते मल्ल मुनिए महा प्रयासे नयचक्र ग्रंथ पामीने बौध्धोनो पराजय कर्यो. तेथी तेओने देशपार करी जैनो पाछा देशमां आव्या, अने शिलादित्य राजाने पण पाछो जैन धर्ममां दृढ कर्यो.

“हे भव्य प्राणीओ! जिनशासनना प्रभावनी उन्नति करवाथी पवित्रता करनारुं मल्लवादीनुं चरित्र सांभळीने काव्यादिकनी विचित्र लब्धिवडे जिनशासननी उन्नति करवा तत्पर थवुं.”

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे सप्तविंशतितमं व्याख्यानम् ॥ २७ ॥

व्याख्यान २८ मुं.

वादी प्रभावक देवसूरिनुं दृष्टान्त.

तर्ककर्कशवाक्येन, बुध्धिशालिमहात्मना ।
जेतव्या वादिनः सद्यः, शासनोन्नतिहेतवे ॥ १ ॥

भावार्थ—“बुध्धिशाळी महात्माए शासननी उन्नतिने माटे तर्क (न्याय) शास्त्रना कर्कश (दुर्जेय) वाक्योवडे करीने तत्काळ वादीनो पराजय करवो.”

आ श्लोकनो भावार्थ नीचेना दृष्टांतवडे जाणवो.

श्री पाटणमां सिध्धराज राज्य करतो हतो. ते वखते तेनी सभामां कुमुदचंद्र नामे दिगंबर आचार्य आव्या. राजाए पोताना मातामहनो (माताना पि-

तानो) गुरु होवाथी सत्कार पूर्वक रहेवा माटे मकान आप्युं. पछी वाद करवा माटे राजाए हेमचंद्र सूरिने पूछ्युं, त्यारे तेओ बोल्या के " वादीनी विद्याने तोडनारा अने वादीरुप हाथीमां सिंहसमान श्री देवसूरिने बोलावो. " ते सांभळीने राजाए पोताना सेवको मोकली श्री देवसूरिने तेडाव्या. राजाना आग्रहथी सूरिए सरस्वतीनी आराधना करी. त्यारे देवीए प्रत्यक्ष थइ कह्युं के " वादी वेताळ[1] शांतिसूरिए करेली उत्तराध्ययन सूत्रनी वृत्तिमां दिगंबरना मत खंडनने प्रसंगे बतावेला चोराशी विकल्पोनो विस्तार करवाथी दिगंबराचार्यनुं मुख बंध थशे. " एम कहीने देवी अदृश्य थइ. पछी सूरिए ते दिगंबराचार्यनी कया शास्त्रमां कुशळता छे ते जाणवा रत्नप्रभाव नामना पोताना मुख्य शिष्यने तेनी पासे गुप्त रीते मोकल्यो. ते रात्रीने समये गुप्त वेषे देवनी जेम त्यां गयो. तेने कुमुदचंद्रे पूछ्युं के " तुं कोण छे ? " तेणे कह्युं " हुं देव छुं. " कुमुदचंद्रे पूछ्युं " देव कोण ? " तेणे कह्युं " हुं. " कुमुदचंद्रे पूछ्युं " हुं कोण ? " तेणे कह्युं " तुं श्वान. " कुमुदचंद्रे पूछ्युं " श्वान कोण ? " तेणे कह्युं " तुं. " कुमुदचंद्रे पूछ्युं " तुं कोण ? " तेणे कह्युं " हुं देव. " एवी रीते चक्रभ्रमण[1] वादवडे पोताने देव अने तेने श्वान स्थापित करीने ते शिष्य पोताने उपाश्रये गया, आ प्रमाणे चक्रदोष प्रगट करवाथी खेद पामेला दिगंबराचार्ये श्वेतांबरना कोइ साधु आवी मारी निंदा करी गया, एम जाणी देवसूरिपर एक श्लोक लखी मोकल्यो के—

> हंहो श्वेतपराः किमेष विकटाटोपोक्तिसंटंकितैः
> संसारावटकोटरेऽतिविकटे मुग्धो जनः पात्यते ।
> तत्त्वातत्त्वविचारणासु यदि वा हेवाकलेशस्तदा
> सत्यं कौमुदचन्द्रमंघ्रियुगलं रात्रिन्दिवं ध्यायत ॥ १ ॥

भावार्थ—" अरे श्वेतांबरो ! खोटा आडंबरवाळा वाक्योना प्रपंचे करीने तमे आ मुग्ध लोकोने अति विकट एवा संसाररूपी अंधकूपना कोटरमां केम नांखो छो ? जो कदाच तमारी तत्त्व अने अतत्त्वना विचारमां लेश पण इच्छा थती होय, तो तमे साचेसाचुं रात्री दिवस मुकुदचंद्रना चरणयुग्मनुं ध्यान धरो. "

---

१ आवुं तेमने बिरुद मळेलुं हतुं.

१ कस्त्वं ? अहं देवः । देवः को ? अहं । अहं कः ? त्वं श्वा । श्वा कः ? त्वं । त्वं कः ? अहं देवः । आ प्रमाणे चक्रभ्रमणवाद समजवो.

दिगंबराचार्ये मोकलेलो आ श्लोक जोइने बुद्धिना वैभवथी चाणाक्यने पण नहीं गणनारा—तेनाथी पण वधे तेवा देवसूरिना शिष्य माणिक्य मुनि नामना पंडिते नीचेनो श्लोक कर्यो.

कः कंठीरवकंठकेसरसटाभारं स्पृशत्यंघ्रिणा
कः कुन्तेन शितेन नेत्रकुहरे कण्डूयनं कांक्षति ।
कः सन्नह्यति पन्नगेश्वरशिरोरत्नावतंसश्रिये
यः श्वेतांबरशासनस्य कुरुते वन्द्यस्य निन्दामिमाम् ॥१॥

भावार्थ—" एवो कयो पुरुष छे के जे सिंहना कंठनी केशवाळीना समूहने पगवडे स्पर्श करे ? एवो कयो पुरुष छे के जे तीक्ष्ण भालावडे नेत्रना गोलकनी खरज मटाडवा इच्छे ? अने एवो कयो पुरुष छे के जे शेषनागना मस्तकनो मणि लइ अलंकार करवा तैयार थाय ? तेवो पुरुष तेज छे के जे श्वेतांबरना पूज्य शासननी आवी निंदा करे ? "

पछी रत्नाकर नामना साधुए पण एक श्लोक लख्यो.—

नग्नैर्निरुद्धा युवतीजनस्य, यन्मुक्तिरत्नं प्रकटं हि तत्त्वम् ।
तत्किं वृथा कर्कशतर्ककेलौ, तवाभिलाषोऽयमनर्थमूलम् ॥२॥

भावार्थ—" अहो नग्न लोकोए स्त्रीओनुं मुक्तिरुपी रत्न बंध कर्युं तेज तेमणे पोतानुं तत्त्व प्रगट कर्युं छे. तो हवे शामाटे कठिन एवा तर्क शास्त्रनी क्रीडामां तुं फोगट अभिलाषा करे छे ? तेवी तारी अभिलाषा तारा अनर्थनुंज मूळ छे, एम समज. "

आ बन्ने श्लोक तेओए उपहास पूर्वक दिगंबराचार्य पासे मोकल्या.

राजानी राणी दिगंबरना पक्षमां हती, तेथी तेणीए सभ्यजनोने आग्रह पूर्वक दिगंबरनो जय थाय तेम करवानुं कही राख्युं हतुं. पछी कुमुदचंद्रे पोताना वादनो विषय लखीने आ प्रमाणे मोकल्यो.

केवलि हुंतं न भुंजइ, चीवरसहिअस्स नत्थि निव्वाणं ।
इत्थी हुवा न सिज्झई, इयमयं कुमुदचंदस्स ॥ १ ॥

भावार्थ—" तीर्थंकर केवळ ज्ञान पाम्या पछी आहार करे नहीं, वस्त्र धारण करनारनो मोक्ष थाय नहीं, अने स्त्री वेदे कोइ सिद्धि पामे नहीं, एवो कुमुदचंद्र दिगंबरनो मत छे. "

ते श्लोकपर श्वेतांबरोए जवाब आप्यो के—

केवलि हुत्त वि भुंजइ, चीवरसहिअस्स अत्थि निव्वाणं।
इत्थी हुवा वि सिज्झई, इयमयं सियवयस्स[1] ॥ १ ॥

भावार्थ—" तीर्थंकर केवळी थया पछी पण आहार करे छे, वस्त्र धारण करनारनो मोक्ष थाय छे, अने स्त्री वेदे पण सिद्धि पदने पामे छे, एवो श्वेतांबरोनो मत छे. अथवा देवसूरिनो आ मत छे. "

पछी निर्णयने माटे मुकरर करेला दिवसे सिद्धराजनी सभामां छए दर्शनना पंडितो सभ्य तरीके बेठा. ते वखते कुमुदचंद्र वादी वाजतेगाजते राजसभामां आव्यो, अने राजाए मानपूर्वक आपेला ऊंचा सिंहासनपर चढीने बेठो. श्री देवसूरि पण श्री हेमचंद्राचार्य सहित राजसभामां आवी एकज सिंहासनपर बन्ने बेठा. बाल्यावस्थाथी कांइक मुक्त थयेला एवा श्री हेमचंद्रसूरिने जोइने वृद्धावस्थाए पहोंचेलो दिगंबराचार्य मश्करीमां बोल्यो के " पीतं तक्रं भवता—तें छाश पीधी. " ते सांभळीने हेमाचार्य तरतज बोल्यो के " अरे जडमति ! आवुं असमंजस भाषण केम करे छे ? श्वेतं तक्रं, पीता हरिद्रा ' छाश तो श्वेत–धोळी होय, अने पीत (पीळी) तो हळदर होय. (अहीं दिगंबरे पीत शब्द पीवाना अर्थमां लीधो हतो, तेनी मश्करी करवा माटे हेमाचार्य पीत शब्दनो पीळो अर्थ करीने बोल्या.) ते सांभळीने दिगंबराचार्ये लज्जा पामीने नीचे जोयुं. पछी दिगंबरे पूछ्युं के " तमारा बेमां वादी कोण छे ? " त्यारे देवसूरि तेनो तीरस्कार करवा माटे बोल्या के " तमारो पराजय करवा माटे आ हेमचंद्र प्रतिवादी थशे. " दिगंबराचार्य बोल्या के " आ बाळकनी साथे मारे वृद्धने शो वाद करवो ? " ते सांभळीने हेमाचार्य बोल्या के " हे कुमुदचंद्र! मोटो तो हुं छुं, अने तुंज बाळक छे. केमके हजु सुधी तें कटीए दोरो पण बांध्यो नथी, अने लुगडां

---

१ आ चोथा पदने बदले मयमेयं देवसूरिणं एवुं पद पण कोइ प्रतमां छे.

पण पहेरतां शीख्यो नथी. तो बाळक ते तुं के हुं ? " आ प्रमाणे ते बन्ने वच्चे थतो वितंडावाद राजाए निषेध कर्यो. पछी बन्ने पक्ष वच्चे एवी शरत थइ के " जो श्वेतांबरनो पराजय थाय, तो तेओए दिगंबरपणुं अंगीकार करवुं अने दिगंबरनो पराजय थाय तो तेमणे देशनो त्याग करवो. " एवी प्रतिज्ञा थया पछी स्वदेश कलंकभीरु श्री देवसूरिए सर्व प्रकारना अनुवादनो परिहार कराववा तत्पर थइने ते कुमुदचंद्रने कह्युं के " तमे प्रथम पक्ष करो. " त्यारे ते दिगंबरे प्रथम राजाने आशीर्वाद आप्यो के—

खद्योतद्युतिमातनोति सविता जीर्णोर्णनाभालय—
च्छायामाश्रयते शशी मशकतामायान्ति यत्राद्रयः ।
इत्थं वर्णयतो नभस्तव यशो जातं स्मृतेर्गोचरं
तत्तस्मिन् भ्रमरायते नरपते वाचस्ततो मुद्रिता ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे राजा ! तमारा यशनी पासे सूर्य खद्योत (पतंगीया) ना जेवो लागे छे, चंद्र जीर्ण करोळीयाना पड जेवो लागे छे, अने पर्वतो मच्छर जेवा लागे छे; छेवट तमारा यशनुं वर्णन करतां आकाश मारा स्मरण पथमां आव्युं, परंतु ते आकाश पण तमारा यशनी पासे एक भ्रमर जेटलुं नानुं लागे छे, तेथी तमारा यशना वर्णन माटे कोइ वस्तु नहीं देखावाथी मारी वाणीज बंध थइ जाय छे. "

आ श्लोकमां छेवट—वाचस्ततो मुद्रिता—मारी वाणी बंध थइ जाय छे. एम अपशब्द बोलवाथी सभामां बेठेला प्रवीण पंडितोए धार्युं के—" आ वादी पोताने हाथे ज बंधाइ जशे—हारी जशे. " एम धारीने तेओ आनंद पाम्या. त्यार पछी देवाचार्ये राजाने आ प्रमाणे आशीर्वाद आप्यो.—

नारीणां विदधाति निर्वृतिपदं श्वेतांबरप्रोल्लसत्—
कीर्तिस्फातिमनोहरं नयपथो विस्तारभंगीगृहम् ।
यस्मिन् केवलिनो विनिर्मितपरोच्छेकाः सदा दन्तिनो*
राज्यं तज्जिनशासनं च भवतश्चौलुक्य जीयाच्चिरम् ॥ १ ॥

---

* यस्मिन् केवलिनो विनिजित परोच्छेकात्सदा दन्तिनो । आवुं पाठ पण छे

भावार्थ—" हे चौलुक्य राजा ! जे जिन शासन स्त्रीओने पण मोक्ष-स्थाननी प्राप्ति थवानुं विधान करे छे, जे श्वेतांबरो (साधुओ) नी उल्लास पामती कीर्तिथी मनोहर छे, जे सप्त नय संबंधी मार्गना विस्तार रुप भांगानुं स्थान छे तथा जेमां केवळीने पण आहार करवानुं विधान कर्युं छे, एवुं जिनशासन तथा तमारुं राज्य चिरकाळ जय पामो. " आ श्लोकमां कहेला सर्वे विशेषणो राज्यना पक्षमां पण आ प्रमाणे लागे छे—" जे राज्य शत्रुओने निरांते रहेवा देतुं नथी, जे गगनतलने श्वेत करीने उल्लास पामती कीर्ति वडे मनोहर छे, जे न्याय-विस्तारनी रचना करवानुं घर छे, तथा जेमां शत्रुओनो उच्छेद करवामां निपुण एवा हाथीओ विराजमान छे, एवुं तमारुं राज्य चिरकाळ जय पामो."

पछी दिगंबरे स्खलना पामती वाणी वडे केटलोएक पोतानो मत स्थापित करी श्री देवसूरिने तेनो जवाब आपवानुं कह्युं, त्यारे श्रीदेवसूरिए उत्तराध्ययननी वृत्तिमां कहेला चोराशी विकल्पो जवाबमां मूक्या. ते विकल्पो समजवाने पण अशक्त एवो दिगंबराचार्य फरीने तेनो ते पक्ष करवा लाग्यो. तेना सर्व पक्षोने सूरिए अनेक युक्तिथी तोडी नांखी तेनो तिरस्कार कर्यो. एटले छेवटे दिगंबर पोतेज सभा समक्ष बोल्यो के—" आ देवसूरिथी मारो पराजय थयो. " ते सांभळीने राजाए पराजय पामेलानो जूदो रस्तो बताववा माटे ते दिगंबरने सभाना पाछला द्वारथी काढी मूक्यो. कुमुदचंद्र आर्त्तध्यान वडे केटलेक काळे मृत्यु पाम्यो. राजाए श्री देवसूरिने मोटा उत्सव पूर्वक घणो सत्कार करीने उपा-श्रय तरफ विदाय कर्या. ते वखते जिनशासननी मोटी प्रभावना थइ.

" स्याद्वाद रत्नाकर नामना ग्रंथने रचनार अने वादी रुप हाथीओनो पराजय करवामां सिंहसमान श्री देवसूरिए कुमुदचंद्र दिगंबरनो पराजय करी जिनशासननी शोभा वधारी. तेवी रीते बीजाओए पण पोतानी शक्ति प्रमाणे शासननी शोभा वधारवी."

इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे अष्टाविंशतितमं व्याख्यानम् ॥ २८ ॥

व्याख्यान २९ मुं.

वादने योग्य पुरुषना लक्षण विषे.

नयन्यासप्रमाणानि, प्रोक्तानि यानि शासने ।

तानि तथैव जानाति, स वादे कुशली भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" शासनने विषे जे नय, निक्षेप अने प्रमाणो कहेलां छे, ते सर्व यथार्थ रीते जे जाणे, ते वाद करवामां कुशळ होय छे. " आ संबंधमां वृद्धवादीसूरिनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

वृद्धवादीसूरिनुं दृष्टान्त.

विद्याधर गच्छमां श्री पादलिप्तसूरिनी परंपरामां स्कंदिलाचार्य पासे मुकुंद नामना एक वृद्ध ब्राह्मणे दीक्षा लीधी. ते वृद्ध मुनि रात्रे मोटे स्वरे पाठ गोखता हता. तेने गुरुए कह्युं के—" हे वत्स ! रात्रे ऊंचे स्वरे भणवुं योग्य नथी. " पछी दिवसे ते वृद्ध साधु ऊंचे स्वरे गोखता हता, ते सांभळीने श्रावको हसता हसता बोल्या के—" आ वृद्ध साधु भणीने शुं सांबेलुं नवपल्लवित करशे ? " ते सांभळीने खेद पामेला वृद्ध मुनिए विद्या प्राप्तिने माटे सरस्वती देवी पासे बेसी एकवीश उपवास कर्या. तेथी तुष्टमान थयेली ब्राह्मी देवीए कह्युं के " हे मुनि ! हुं तमारापर तुष्टमान थइ छुं, तेथी वरदान आपुं छुं के तमे सर्व विद्यासिद्ध थशो. " ते वरदानथी आनंद पामेला वृद्ध मुनिए चौटामां जइ एक सांबेलुं जमीनपर ऊभुं राखी तेने प्रासुक जळ वडे सिंचवा मांड्युं. अने—

अस्मादृशा अपि जडा, भारति त्वत्प्रसादतः ।

भवेयुर्वादिनः प्राज्ञा, मुशलं पुष्प्यतां, तदा ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे सरस्वती देवी ! अमारी जेवा जड मनुष्यो पण तारा प्रसादथी विद्वान वादी थइ जाय छे, माटे आ मुशळ (सांबेलुं) पण पुष्पित थाओ. "

ए श्लोक बोलीने ते मुशळने पत्र, पुष्प अने फळ वाळुं (नव पल्लवित) कर्युं. तेनो आवो चमत्कार जोइने गरुडना नामथी सर्पनी जेम वादी लोको तेनुं नाम सांभळतांज नाशी जवा लाग्या. गुरुए तेने योग्य जाणीने सूरिपद आप्युं.

ए समयमां देवर्षि नामना ब्राह्मणनी देवश्री नामनी स्त्रीथी उत्पन्न थयेलो सिद्धसेन नामनो पंडित ब्राह्मण विक्रमराजानो घणो मानीतो हतो. ते मिथ्यात्वी होवाथी पोतानी बुद्धिना अतिशयपणाने लीधे आखा जगतने तृण समान मानतो हतो. कह्युं छे के—

वृश्चिको विषमात्रेणाप्यूर्ध्वं वहति कंटकम् ।
विषभारसहस्रेऽपि, वासुकिर्नैव गर्वितः ॥ १ ॥

भावार्थ—" वींछी थोडा विषथी पण गर्व पामीने पोतानो आंकडो ऊंचो राखे छे, परंतु वासुकि नाग (तेनी दाढमां) हजार भार विष छतां पण गर्व करतो नथी. "

ए सिद्धसेने एवी प्रतिज्ञा करी हती के—" मने कोइ वादमां जीते तेनो हुं शिष्य थइ जाउं. " एकदा वृद्धवादीनी कीर्ति सांभळीने तेने नहीं सहन करतो सिद्धसेन पालखीमां बेसी अनेक छात्रो सहित भृगुपुर (भरुच) तरफ तेमनी सामे चाल्यो. मार्गमांज तेने वृद्धवादी मळ्या. परस्पर वातो करतां सिद्धसेने कह्युं के—" वाद करो. " वृद्धवादी बोल्या के—" बहु सारु, परंतु अहीं कोइ सभ्य (मध्यस्थ) नथी, तेथी मध्यस्थ विना जय पराजयनी शी खात्री थाय ? " ते सांभळीने गर्वथी उद्धत थयेलो सिद्धसेन बोल्यो के—" आ गोवाळ लोकोज मध्यस्थ थाओ. " गुरुए ते वात मंजुर करी. गोवाळोने मध्यास्थ राखी कह्युं के—" हे सिद्धसेन ! प्रथम तुं ज वाद शरु कर. " त्यारे ते सिद्धसेन तर्क शास्त्रनी अवच्छेदकावच्छिन्न प्रसंगवाळी शब्दोथी कठोर लागे तेवी संस्कृत वाणी ऊंचे स्वरे बोलवा लाग्यो. ते बहु वखत सुधी बोल्यो, एटले गोवाळीयाओए कह्युं के—" अरे ! आ तो वाचाळ जणाय छे, कांइ समजतो ज नथी; केवळ भेंसनी जेम बराडा मारीने कानज फोडी नांखे छे. माटे आ तो मूर्खज छे. तेथी हे वृद्ध ! तमे कांइ कानने सारुं लागे तेवुं बोलो. " ते सांभळीने अवसरने जाणनारा सूरि नाटकने योग्य संगीतने अनुसारे गण, छंद, ताल

पूर्वक ऊंचे स्वरे ताळोटा देता बोल्या के—

न वि मारिइं न वि चोरिइं, परदारागमण निवारिइं ।
थोवा थोवं दाइइं, तउ सग्गि टगाटग जाइयइं ॥ १ ॥
गेहु गोरस गोरडी, गज गुणिअण ने गान ;
छ गग्गा जो इहां मीले, तो सग्गहचुंशुं काम ॥ २ ॥
चूडो चमरी चुंदडी, चोली चरणो चीर ।
छहुं चच्चे सोहे सदा, सोहव तणुं सरीर ॥ ३ ॥

भावार्थ—" कोइ प्राणीने मारवो नहीं, कोईनुं धन चोरवुं नहीं, परस्त्री प्रत्ये गमन करवुं नहीं अने थोडामांथी थोडुं पण दान आपवुं, तेथी तरतज स्वर्गे जवाय छे. गोधम (घउं), गोरस (दुध, दहीं विगेरे), गोरडी (स्त्री), गज (हाथी), गुणीजननी गोष्टि अने गान (गानतान) ए छ गकार जो अहींज मळे तो पछी स्वर्गनुं शुं काम छे ? चूडो, चमरी (केश), चुंदडी, चोळी, चरणो (घाघरो) अने चीर ए छ चकारवडे सौभाग्यवती स्त्रीओनुं शरीर सदा शोभे छे. "

आ प्रमाणे सूरि बोलता हता, ते वखते तेमना शब्दनी साथे ते गोवाळीया पण गायन करता सता नाचवा कूदवा लाग्या अने बोल्या के " आ सूरिए आ ब्राह्मणने हराव्यो. " आ प्रमाणे पोतानी निंदा सांभळीने सिद्धसेने सूरिने कह्युं के " हे पूज्य ! मने दीक्षा आपो. " सूरि बोल्या के " हजु आपणे वाद माटे राजसभामां जइए. " एम कहीने तेओ राजसभामां गया. त्यां पण अवसरना जाण सूरिए सिद्धसेननो पराजय कर्यो. तेथी सत्य प्रतिज्ञावाळा सिद्धसेने सूरिपासे दीक्षा ग्रहण करी. पछी अनुक्रमे ते जैनशास्त्रमां प्रवीण थया, त्यारे तेने सिद्धसेन दिवाकर एवुं बिरुद आपी गुरुए तेने पोतानुं स्थान आप्युं. अर्थात् सूरिपदे स्थापन कर्या.

भव्य प्राणीओरुपी कमळने प्रबोध पमाडता सूर्य जेवा वादीन्द्र सिद्धसेनसूरि अवन्ती नगरीमां आव्या. तेमने सर्वज्ञपुत्र कहेवाता सांभळी तेमनी परीक्षा करवा माटे विक्रमार्क राजाए तेमने मनथीज नमस्कार कर्यो. ते जाणीने सू-

रिए तेने ऊंचे स्वरे धर्मलाभ आप्यो, त्यारे राजाए कह्युं के "हे सूरीन्द्र! नहीं नमस्कार करनारा अमने पण धर्मलाभ केम आप्यो?" सूरी बोल्या के "हे राजा! आ धर्मलाभरूप आशीर्वाद क्रोम चिंतामणि करतां पण अधिक दुर्लभ छे. तेवो आशीर्वाद मनथी नमन करता एवा तमने अमे आप्यो छे. केमके—

[1]दीर्घायुर्भव वर्ण्यते यदि पुनस्तन्नारकाणामपि
सन्तानाय च पुत्रवान् यदि पुनस्तत्कुर्कुटानामपि ।
तस्मात्सर्वसुखप्रदोऽस्तु भवतां श्रीधर्मलाभः श्रिये ॥१॥

भावार्थ—" हे राजा! तुं दीर्घ आयुष्यवाळो था, एवो आशीर्वाद आपीए तो दीर्घ आयुष्य तो नारकी जीवोने पण छे, सन्ताननने माटे पुत्रवान् था एआशीर्वाद आपीए तो कुकडाओने पण घणां बच्चां होय छे, * * * * माटे सर्व प्रकारनां सुख आपनार धर्मलाभरूपी आशीर्वाद तमारी लक्ष्मीने माटे हो."

ऊंचा हाथ करीने धर्मलाभरूप आशीष आपता सूरिना उपर संतुष्ट थयेला राजाए तेने कोटी द्रव्य आप्युं. परंतु निःस्पृही होवाथी तेमणे ते द्रव्य लीधुं नहीं, एटले राजाए श्रावकोने आप्युं, तेमणे जीर्णोद्धारादिकमां ते द्रव्यनो व्यय कर्यो.

एकदा सूरि विहार करतां चितोडगढ गया. त्यां एक स्तंभ हतो. तेनी अंदर पूर्वनी आम्नायवाळां पुस्तको गुप्त राखेलां हतां. तेने जळ, अग्नि, शस्त्र, विगेरेथी अभेद्य एवी औषधीओथी लिप्त करेलो जोइने सूरिए ते सर्व औषधिओ गंधवडे ओळखीने तेनी प्रतिस्पर्धि औषधिओवडे मिश्रित जळ छांटी ते स्तंभ कमळनी जेम विकसित कर्यो (खोल्यो). पछी तेमांथी एक पुस्तक लइ तेनुं प्रथम पानुं वांच्युं, तो तेमां सरसव विद्या अने सुवर्ण विद्या ए बे विद्याओ जोइ. पहेली विद्यानो चमत्कार एवो हतो के ते मंत्रवडे मंत्रेला जेटला सरसवना दाणा जळाशयमां नांखे, तेटला घोडेस्वारो तेमांथी नीकळीने शत्रुना सैन्यनो पराभव करी पाछा अदृश्य थइ जाय. बीजी विद्या एवी हती के, ते मंत्रवडे मंत्रित करेला चूर्णना योगथी कोटी सुवर्ण उत्पन्न थाय. पछी आगळ बीजुं पानुं

१ [illegible]

वांचवा जाय छे, तेवामां देवीए सूरिने निषेध करी हाथमांथी पुस्तक लइ लीधुं, अने ते स्तंभ पण हतो तेम पाछो मळी गयो.

त्यांथी विहार करीने सूरि कुमारपुरे आव्या. त्यांना राजा देवपाळे सूरिने नमन करीने कह्युं के " हे गुरु ! मारा सीमाडाना राजाओ मारुं राज्य लेवाने इच्छे छे, माटे जो आप कांइ कृपा करो, तो मारुं राज्य स्थिर थाय. " ते सांभळीने गुरुए सरसव विद्याना बळे शत्रुना सैन्यनो पराभव कर्यो, तेथी देवपाळ राजा जैनधर्मी थइ आचार्यनो एकांत भक्त थयो. पछी राजाना आग्रहथी सूरि हंमेशां सुखासनमां बेसी बंदीजनोथी स्तुति कराता राजसभामां जवा लाग्या. आ प्रमाणेना तेमना प्रमादनी वात सांभळीने तेमना गुरु वृद्धवादी वेष बदलीने त्यां आव्या. ते वखते सिद्धसेन सूरि राजसभामां जवा माटे नीकळ्या हता. तेना सुखासनना एक दंडने वृद्धवादीए पोताना स्कंध उपर लइ लीधो. ते वखते अस्तव्यस्त चालता ते वृद्धने जोइने गर्विष्ठ सूरि बोल्या के—" हे वृद्ध !

भूरिभारभराक्रान्ते, स्कन्धोऽयं तव बाधति ।

भावार्थ—" घणो भार उपाडवाथी तारा स्कंधने बाधा थाय छे ? " ते सांभळीने वृद्धवादी बोल्या के—" हे सूरि !

न तथा बाधते स्कन्धो, बाधति बाधते यथा ॥ १ ॥

जेवो तमारो बाधति प्रयोग बाधा करे छे तेवो मारो स्कंध मने बाधा करतो नथी. " (आथी वृद्धवादीए एवो जवाब आप्यो के " हे सूरि ! तमे बाधति ए अशुद्ध प्रयोग बोल्या ते मने घणो बाधा करे छे; केमके बाधते बोलवुं जोइए.)

ते सांभळीने सूरिने शंका थइ के—" जरुर मारा गुरु विना बीजो कोइ मारी भूल काढे तेवो नथी. " एम विचारीने ते तरतज सुखासनमांथी उतरी गुरुना पगमां पड्या. पछी पोताना प्रमादनी आलोचना लइ राजानी रजा मागीने पोताना गुरु साथे त्यांथी विहार कर्यो.

केटलेक काळे वृद्धवादी स्वर्गे गया पछी एकदा ' भगवयाणं ' इत्यादि प्राकृत भाषानां सूत्रो बोलतां लोकोए मश्करी करी, तेथी लज्जा पामीने तथा वा-

व्यावस्थार्थीज संस्कृतनो अभ्यास होवाथी अने कांइक कर्मना वशथी पण गर्व पामेला सिध्धसेन सूरिए संघनी समक्ष कह्युं के " हुं संघनी अनुमतिथी प्राकृत जाषामां रचायेला सिद्धान्तोने संस्कृत जाषामां करुं. " ते सांजळीने संघे यथार्थ स्वरूप कही वताव्युं के—

बालस्त्रीमन्दमूर्खाणां, नृणां चारित्रकांक्षिणाम् ।
अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः , सिध्धान्तः प्राकृतः कृतः ॥

जावार्थ—" चारित्रनी इच्छावाळा एवा बाळ, स्त्री, मन्द अने मूर्ख मनुष्योना उपकारने माटे तत्त्वज्ञ पुरुषोए सिद्धान्तने प्राकृत जाषामां कर्या छे. "

अने बुद्धिमानने माटे तो चौद पूर्व संस्कृत जाषामांज रचायेला अमे सांजळ्या छे. माटे हे सूरि ! तमे श्री जिनेश्वर विगेरेनी मोटी आशातना करी, तेने माटे तमारे मोटुं प्रायश्चित्त करवुं पडशे. " ते सांजळी सूरिए संघनी आज्ञाथी साधुवेषने गोपवी अवधूतनो वेष धारण कर्यो, अने संयम सहित मौनव्रत धारण करी माणसो ओळखी शके नहीं तेम विचरवा लाग्या. एवी रीते सात वर्ष व्यतीत थयां, त्यारे सूरि उज्जयिनी गया. त्यां महाकाळेश्वर महादेवना देरामां रह्या. महादेवने प्रणाम के वंदना कर्याविना तेनी उपर पग राखीने बेठा. ते जोइने तेना पूजारीए सूरिने पग उठावी नमन करवा कह्युं, पण ते मौनधारी सूरि कांइ बोल्या नहीं अने तेनुं कहेवुं सांजळ्युं पण नही. एटले पूजारीए राजाने जाहेर कर्युं. तेथी आश्चर्य पामीने राजाए त्यां आवी अवधूतने कह्युं के " अरे ! तमे महेश्वरने केम वांदता नथी ? " सूरिए जवाब आप्यो के " जेम कोइ ज्वरार्दित मनुष्य मोदक पचाववा समर्थ होतो नथी तेम आ देव मारी स्तुतिने सहन करवा समर्थ नथी. " ते सांजळीने राजाए कह्युं के " हे जटिल ! एवुं असंजवित वचन केम बोलो छो ? तमे स्तुति करो, अमे जोइए छीये, के आ देव शी रीते सहन करी शकता नथी ? " पछी सूरि बोल्या—

स्वयंभुवं भूतसहस्रनेत्रमनेकमेकाक्षरजावलिंगम् ।
अव्यक्तमव्याहतविश्वलोकमनादिमध्यान्तमपुण्यपापम् ॥१॥

जावार्थ—" पोतानी मेळे ज्ञानने प्रगट करनारा, ज्ञानरूपी हजारो

नेत्रने धारण करनारा, अनेक गुणवान, अद्वितीय अने अविनाशी भावलिंगने धारण करनारा, अव्यक्त, समस्त विश्वना जीवोने व्याघात नहीं करनारा, आदि मध्य अने अन्त रहित तथा पुण्य पाप रहित एवा देवने नमस्कार हो. ”

इत्यादि काव्योवडे सूरिए श्री महावीरस्वामीनी बत्रीश बत्रीशीवडे स्तुति करी. पछी मोटा महिमावाळा श्री पार्श्वनाथस्वामीनी स्तुति करी, तेमां कल्याण मंदिर नामना स्तोत्रनुं अगीयारमुं काव्य बोलतां ते शिवलिंग फाट्युं अने तेनी अंदरथी वीजळीनी जेवी कांतिवाळुं श्री अवंतिपार्श्वनाथनुं बिंब प्रगट थयुं. ते जोइने विस्मय पामेला विक्रम राजाए सूरिने पूछ्युं के “ हे स्वामी ! आ देव कोणे निर्माण कर्यो छे ? ” सूरि बोल्या “ आ अवन्ति नगरीमांज भद्रश्रेष्ठीनी भद्रा नामनी स्त्रीथी उत्पन्न थयेलो अवंतीसुकुमाल नामे पुत्र हतो. ते युवावस्था पाम्यो, त्यारे तेना मातपिताए तेने बत्रीश स्त्रीओ परणावी. ते सर्वनी साथे कामविलास करतां ते काळ निर्गमन करतो हतो. एकदा ते गवाक्षमां बेठो हतो, त्यां आर्यसुहस्ती सूरिना मुखथी नलिनीगुल्म विमानना वर्णनवाळुं अध्ययन सांभळीने तेने जातिस्मरण थयुं. एटले तेणे सूरि पासे जइने पूछ्युं के “ हे स्वामी ! शुं तमे नलिनीगुल्मविमानथी अहीं आव्या छो ? ” गुरु बोल्या “ ना, परंतु तेनुं स्वरूप अमे श्री सर्वज्ञना कहेला वचन (शास्त्र)परथी जाणीए छीए. ” तेणे पूछ्युं के “ हे गुरु ! ते विमान शी रीते प्राप्त थाय ? ” गुरुए कह्युं—चारित्रथी प्राप्त थाय. ते सांभळीने तरतज तेणे दीक्षा ग्रहण करी. पछी हमेशां तपस्या करवाने अशक्त होवाथी तेणे गुरुनी आज्ञा लइ स्मशानमां जइ अनशन ग्रहण कर्युं. ते समये तेना पूर्वभवनी अपमानित स्त्री के जे शीयाळणी थइ हती ते पोतानां बच्चां सहित त्यां आवी, अने पूर्वना वैरने लीधे ते मुनिना शरीरने चावीजवा लागी. त्रण प्रहरमां तेनुं आखुं शरीर तेणीए भक्षण कर्युं. एटले चोथा प्रहरमां ते मुनि शुभ ध्यानने योगे मृत्यु पामी नलिनीगुल्म विमानमां उत्पन्न थया. प्रातःकाळे ते सर्व वृत्तांत जाणीने वैराग्यथी तेनी माता भद्राए अवंतीसुकमाळनी एक गर्भिणी स्त्रीने मूकीने वाकीनी एकत्रीश स्त्रीओ साथे दीक्षा करी. योग्य काळे ते गर्भिणी स्त्रीने पुत्र प्रसव थयो. ते पुत्रे पोताना पिताना मृत्युस्थाने आ प्रासाद करावी तेमां आ पार्श्वनाथ स्वामीनुं बिंब स्थापन कर्युं हतुं. अनुक्रमे केटलेककाळे ब्राह्मणोए आ बिंब उपर शिवलिंग स्थापन कर्युं. तेथी हे राजा ! ते शिव अमारी

करेली स्तुतिने केम सहन करी शके ?" ते वृत्तांत सांभळीने राजा घणोज प्रसन्न थयो, अने ते बिंबनी पूजा माटे तेणे सो गाम आप्यां. पछी विक्रमराजा सूरिनी प्रशंसा करतां बोल्या के "हे गुरु ! तमारा जेवा महर्षि दुनियामां क्यांथी होय ? भाग्येज कोइक होय. केमके—

अहयो बहवः सन्ति, भेकभक्षणदक्षिणाः ।
एकः स एव शेषः स्यात्, धरित्रीधरणक्षमः ॥ १ ॥

भावार्थ—"देडकानुं भक्षण करवामां प्रवीण एवा सर्पो तो दुनियामां घणा होय छे, पण पृथ्वीने धारण करवामां समर्थ एवो शेषनाग तो ते एकज छे."

इत्यादि गुरुनी स्तुति करीने राजा पोताने स्थाने गयो. आ प्रमाणे श्री जैन शासननी घणीज उन्नति थवाथी श्री संघ सूरि पर प्रसन्न थयो. तेथी सूरिनी आलोयणनां बाकी रहेलां पांचे वर्षो माफ करीने तेने पाछा सूरिपदे स्थापन कर्या.

एकदा कुवादी रुपी अंधकारनो नाश करवामां सूर्य समान सूरि ओंकार पुरे गया. त्यांना श्रावकोए तेमने विज्ञप्ति करी के "हे स्वामी ! अहीं मिथ्यात्वीओनुं घणुं जोर होवाथी तेओ जैनचैत्य करवा देता नथी." ते सांभळीने सूरि चार श्लोक (नवा) हाथमां लइ विक्रम राजाना सभास्थानमां गया अने द्वारपाळना हाथमां एक श्लोक आपी ते राजाने आपवा कह्युं. एटले तेणे जइने राजाने ते श्लोक आप्यो, ते आ प्रमाणे हतो.

भिक्षुर्दिदृक्षुरायातस्तिष्ठति द्वारवारितः ।
हस्तन्यस्तचतुःश्लोकः, किं वागच्छति गच्छति ॥ १ ॥

भावार्थ—"कोइ भिक्षु आपने मळवा आव्यो छे, ते द्वारपाळना अटकाववाथी द्वारे उभो छे, तेना हाथमां चार श्लोक छे, ते सभामां आवे के जाय ?"

ते वांची राजाए जवाबमां एक श्लोक लखी मोकल्यो के—

दीयते दशलक्षाणि, शासनानि चतुर्दश ।
हस्तन्यस्तचतुःश्लोक, यद्वागच्छतु गच्छतु ॥ १ ॥

न्नावार्थ—"जेना हाथमां चार श्लोक छे तेमने दश लाख रुपिया अने चौद गाम आपवामां आवे छे, हवे जो आववुं होय तो आवो, अने जवुं होय तो जाओ."

ते वांचीने सूरि सन्नामां गया, अने राजाए आपेला आसनपर सन्मुख बेठा. पछी सूरि चारे दिशाए रहीने एक एक श्लोक बोल्या, अने राजा दरेक श्लोके एक एक दिशा बदलीने बेठो, एटले चार श्लोके करीने चारे दिशामां तेणे मुख कर्युं. ते श्लोको आ प्रमाणे—

अपूर्वेयं धनुर्विद्या, न्नवता शिक्षिता कुतः ।
मार्गणौघः समभ्येति, गुणो याति दिगन्तरम् ॥ १ ॥

न्नावार्थ—"हे राजा! तमे आवी अपूर्व धनुर्विद्या क्यांथी शीख्या? के जेथी [1]मार्गणनो समूह समीपे आवे छे, अने गुण दिगन्तमां जाय छे."

सरस्वती स्थिता वक्त्रे, लक्ष्मीः करसरोरुहे ।
कीर्तिः किं कुपिता राजन्, येन देशान्तरं गता ॥ २ ॥

न्नावार्थ—"हे राजा! सरस्वती तो तमारा मुखमां रही छे, अने लक्ष्मी हस्तकमळमां रही छे, परंतु कीर्ति तमारा पर कोपायमान केम थइ? के जेथी ते देशांतरमां गइ."

सर्वदा सर्वदोऽसीति, मिथ्या त्वं स्तूयसे बुधैः ।
नारयो लेभिरे पृष्ठं, न वक्षः परयोषितः ॥ ३ ॥

"हे राजा! तमे सर्वदा सर्वनुं दान करो छो, एवी तमारी प्रशंसा पंमित लोको करे छे, ते खोटी छे. केमके तमारा शत्रुने तमे तमारी पीठ आपता नथी, अने परस्त्रीने वक्षःस्थळ आपता नथी, माटे तमे सर्वनुं दान करनार क्यां थया?"

---

[1] मार्गण एटले बाणनो समूह समीप आवे अने गुण–धनुषनी दोरी दिशाना अंतरमा जाय, ते विरोध थयो. तेना परिहारमां मार्गण–मागणनो समूह पासे आवे, अने दयादिक गुणो अर्थात् गुणोनी कीर्ति दिगतमां जाय.

कीर्तिस्ते जातजाड्येव, चतुरंभोधिमज्जनात् ।
आतपाय धरानाथ, गता मार्तंडमंडलम् ॥ ४ ॥

"हे राजा ! तमारी कीर्ति चार समुद्रमां मग्न थवाथी तेने जाणे टाढ चडी गइ होय, तेम ते आतप लेवा माटे सूर्यमंडळ तरफ गइ छे. अर्थात् समुद्र पर्यंत विस्तरेली तमारी कीर्ति स्वर्ग लोकमां पण गवाय छे."

ते चारे श्लोके चारे दिशामां फरेलो राजा तुष्टमान थइने बोल्यो के "हे सूरि ! आ चारे दिशामां फरीने में मारुं चारे दिशानुं राज्य तमने आपी दीधुं छे, ते तमे ग्रहण करो" सूरि बोल्या "हे राजा ! अमारे निर्ग्रंथने राज्यनुं शुं प्रयोजन छे ? कांइज नथी." राजाए पूछ्युं "त्यारे तमारी शी इच्छा छे ?" सूरि बोल्या "ॐकारपुरमां महादेवना प्रासादथी उंचो चार द्वारनो प्रासाद करावीने तेमां श्री पार्श्वनाथना बिंबने स्थापन करो." ते सांभळीने राजाए तेवी रीते करावी आप्युं.

पछी सूरि विचरता विचरता दक्षिण दिशामां गया. त्यां प्रतिष्ठानपुर (पैठ)मां पोताना आयुष्यनो अंत जाणीने अनशन ग्रहण करी स्वर्ग निवास कर्यो. सूरिना मृत्यु समाचार चितोडगढ पहोंचाडवा माटे त्यांना संघे एक हुशियार ब्राह्मणने मोकल्यो. ते ब्राह्मण चितोडगढमां आवीने गाममां टेल नांखतो अर्धो श्लोक बोलवा लाग्यो.

"इदानीं वादिखद्योता, द्योतन्ते दक्षिणापथे" ।

"हालमां वादीरूपी पतंगीयाओ दक्षिण देशमां प्रकाश करे छे."

ते बे पद सांभळीने सिद्धसेन दिवाकरनी बेन सरस्वती सूरिना मरणनो निश्चय करी बोली के—

नूनमस्तंगतो वादि,सिद्धसेनो दिवाकरः ॥ १ ॥

"अहो ! नक्की वादी सिद्धसेन दिवाकर (सूर्य) अस्त पाम्यो छे, एम आ ब्राह्मणना बे पदथी सिद्ध थाय छे."

पछी ब्राह्मणे सर्व वृत्तांत यथार्थ कही संभळाव्यो. ते सांभळीने सर्व संघ घणो शोकातुर थयो.

" जेम सिंहनो शब्द सांभळीने मोटा हस्तीओ पण पोतानो मद तजी दे छे, तेम वृद्धवादी अने सिद्धसेन दिवाकरनो शब्द सांभळीने न्यायशास्त्रमां प्रवीण वादीओ पण गर्वनो त्याग करे छे."

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे एकोनत्रिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ २९ ॥

व्याख्यान ३० मुं.

निमित्त शास्त्रना जाण चोथा प्रभावक विषे.

योऽष्टांगनिमित्तानि, शासनोन्नतिहेतवे ।
प्रोच्यते प्रयुज्यमानश्चतुर्थोऽयं प्रभावकः ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे मुनि अष्टांग निमित्तनो शासननी उन्नतिने माटे उपयोग करे छे, ते चोथो प्रभावक कहेवाय छे. " आ प्रसंग उपर भद्रबाहु स्वामीनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

भद्रबाहु स्वामीनुं दृष्टांत.

दक्षिण देशमां प्रतिष्ठानपुरने विषे भद्रबाहु अने वराहमिहर नामना बे पंडित भाइओए यशोभद्र सूरिनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे मोटा भद्रबाहुए चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो, तेथी तेने योग्य जाणीने गुरुए सूरिपद आप्युं. तेमणे दशवैकालिक, आवश्यक विगेरे दश सूत्रोपर निर्युक्ति रची. एकदा वराहमिहरे ज्ञाननी गर्वताथी मोटा भाइ पासे सूरिपदनी मागणी करी. त्यारे मोटा भाइए कह्युं के—" हे भाइ ! तुं विद्वान छो छतां, अभिमानी होवाथी तने सूरिपद आपवुं योग्य नथी. " ते वाक्य वराहने गम्युं नहीं, तेथी तेणे साधुनो वेष छोडी दइ फरीथी ब्राह्मणनो वेष अंगीकार कर्यो.

पछी लोकोमां प्रसिद्धि पामवा माटे ते एवी वातो करवा लाग्यो के—" हुं बाल्यावस्थाथी ज निरंतर [1]लग्नना विचारमां रहेतो हतो. एकदा गाम बहार एक शिला पर में सिंह लग्न आलेख्युं. पछी ते लग्नने एमनुं एम रहेवा दइने हुं घेर आवी सुतो. तेवामां मने स्मरण थयुं के ते सिंह लग्न भूंसवुं भूली गयो छुं, तेथी हुं ते लग्न भूंसवा माटे त्यां गयो. तो ते लग्ननी उपर में सिंहने बेठेलो जोयो. तो पण तेनाथी भय पाम्या विना तेनी नीचे हाथ नाखीने में ते लग्न भूंसी नाख्युं, एटले ते लग्नना स्वामी सूर्ये मारी हिंमतथी प्रत्यक्ष थइने मने कह्युं के—" हे वत्स ! हुं तारापर प्रसन्न थयो छुं माटे तुं वरदान माग." में कह्युं—" जो तमे प्रसन्न थया हो तो मने तमारा विमानमां बेसारीने बधुं ज्योतिश्चक्र बतावो." तेथी मने तेणे विमानमां बेसारीने सर्व ग्रह नक्षत्रो विगेरेनी गति, मान विगेरे बताव्युं. ते जाणीने हुं कृतार्थ थयो छुं. हवे हुं लोकोना उपकार माटेज फर्या करुं छुं." आ प्रमाणेनी ते ब्राह्मणनी हकीकत लोकोद्वारा राजाना सांभळवामां आवी, तेथी तेणे वराहने राज्यपुरोहित बनाव्यो.

वराह गर्वने लीधे श्वेतांबरो पर द्वेष राखी तेमनी निरंतर निंदा करतो हतो. ते निंदा सहन नहीं करनारा केटलाएक श्रावक भक्तोए भद्रबाहु स्वामी पासे जइ तेमने ते नगरे लावी मोटा उत्सव पूर्वक प्रवेश कराव्यो. तेमनुं आगमन सांभळीने वराहने घणो खेद थयो. थोडा दिवस पछी राजाने घेर पुत्रजन्म थयो. तेनी जन्मपत्रिका वराहे करीने तेनुं सो वर्षनुं आयुष्य नक्की कर्युं, तथा बीजा पण केटलाएक शुभ योगोनुं वर्णन कर्युं. ते सांभळीने राजा प्रसन्न थयो. त्यारे वराह बोल्यो के—" हे स्वामी ! आपने घेर पुत्रप्रसवनो हर्ष देखाडवा माटे गामना सौ लोको आवी गया, पण इर्ष्यालु भद्रबाहु श्वेतांबर आव्या नथी, माटे ते हर्ष विनाना भद्रबाहुने देशनीकालनो दंड करवो जोइए." ते सांभळीने राजाए पोताना मंत्रीने सूरिपासे नहीं आववानुं कारण जाणवा माटे मोकल्यो. मंत्रीए सूरिने पूछ्युं, त्यारे सूरि बोल्या के—" बे वखत जवा आववानो क्लेश शा माटे करवो जोइए, केमके सातमे दिवसे ते पुत्र बिलाडीना मुखथी मरण पामशे." ते वात मंत्रीए जइने राजाने कही. ते

[1] ज्योतिष शास्त्रनुं मुहूर्त

सांभळीने राजाए पुत्रना बचाव माटे आखा गामनी बिलाडीओ गाम बहार काढी मूकावी. सातमे दिवसे ते बाळकने तेनी धाव माता बारणामां बेठी बेठी धवरावती हती, तेवामां अकस्मात् बारणानी अर्गला जेने बिलाडी कहे छे ते बाळकना मस्तक पर पडी, अने तरतज ते मरण पाम्यो. तेथी राजाए वराहनो तिरस्कार कर्यो. पछी गुरुने राजाए पूछ्युं के–"हे स्वामी! तमे तेनुं सात दिवसनुं आयुष्य शी रीते जाण्युं? वळी तमे बिलाडीना मुखथी मरणनुं कह्युं हतुं, तेवी रीते न थयुं, तेनुं कारण शुं?" गुरुए जवाब आप्यो के–"बिलाडीना मुखथी ज तेनुं मरण थयुं छे. ते अर्गलाना अग्रभाग उपर बिलाडीनुं चित्र छे, ते जोइ खात्री करो. आयुष्यनी बाबतमां अमे पूर्वनी आम्नायने अनुसारे लग्न लइने शास्त्रानुसार निश्चय कर्यो हतो, अने वराहे तो पुत्रजन्म थया पछी ज्यारे दासीए उंचा पीठ पर चडीने घंट वगाड्यो त्यारे पुत्रजन्म थयो एम जाणी लग्न लीधुं हतुं तेथी तेना लग्नमां फरक पड्यो छे." ते सांभळीने वराहने घणो खेद थयो. एटले ते सर्व पुस्तकोने जळमां बोळी देवा तैयार थयो. सूरिए तेनो निषेध करीने कह्युं के–"हे भाइ! ए सर्व शास्त्रो सर्वज्ञ प्रणीत होवाथी शुद्ध ज छे.

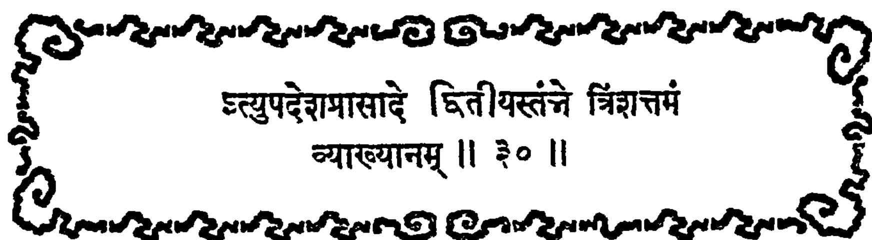
अमंत्रमक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधम्।
अनाथा पृथ्वी नास्ति, आम्नायाः खलु दुर्लभाः॥ १॥

"मंत्र विनानो एके अक्षर नथी, औषध विनानुं एक पण मूळीयुं नथी अने नाथ विनानी जरा पण पृथ्वी नथी, परंतु तेनी आम्नाय प्राप्त थवी दुर्लभ छे."

इत्यादिक समजावीने सूरिए तेने शांत कर्यो. पछी एक दिवसे राजाए सूरिने तथा ब्राह्मणने पूछ्युं के "आजे नवीन शुं थशे? ते कहो." त्यारे वराह बोल्यो के "आजे सायंकाळे अमुक स्थाने अकस्मात् जलवृष्टि थशे, अने मुकरर करेला मंडळमां एक बावन पळनो मत्स्य आकाशमांथी पडशे." पछी गुरु बोल्या के "ते वात खरी, पण एकावन पळनो मत्स्य पडशे अने ते मंडळनी बहार पूर्व दिशामां पडशे." सायंकाळे गुरुना कह्या प्रमाणे थयुं. तेथी राजाए जैन धर्म अंगीकार कर्यो, वराहे खेद पामीने तापसी दीक्षा लीधी, अने अज्ञान कष्ट

करीने आयुष्य क्षये मरण पामी व्यंतर थयो. पूर्वनो द्वेष सांभरतां तेणे साधुओने उपद्रव करवा विचार्युं, पण तेमनापर तेनी शक्ति चाली शकी नहीं, तेथी ते दुष्टे श्रावकोमां रोगो उत्पन्न करवा मांड्या. श्रावकोए गुरुने विज्ञप्ति करी, त्यारे गुरुए उपसर्गमात्रनो नाश करनार उपसर्गहर स्तोत्र बनावीने श्रावकोने तेनो हमेशां पाठ करवा कह्युं. तेथी ते व्यंतर श्रावकोने पण कांइ करी शक्यो नहीं. ते 'उवसग्गहर' स्तोत्र हजु पण पाठ करवाथी उपद्रवोनो नाश करे छे. अनुक्रमे अनेक भव्य जीवोने प्रतिबोध करी भद्रबाहु स्वामी स्वर्गे गया.

"भद्रबाहु स्वामीए शुभ निमित्तना बळथी राजाने जैनधर्मी कर्यो ; तेवी रीते बीजाओए पण शासननी उन्नतिने माटे यथा शक्ति प्रयास करवो."



इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे त्रिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ३० ॥

॥ इति द्वितीयस्तंभः ॥



श्री उपदेश प्रासादे

॥ तृतीयस्तंभः ॥

व्याख्यान ३१ मुं.

पांचमा तपस्वी प्रभावक विषे.

विविधाभिस्तपस्याभिर्जैनधर्मप्रकाशकः ।

विज्ञेयः पञ्चमो भव्यैः, स तपस्वी प्रभावकः ॥ १ ॥

अर्थ—" जे विविध प्रकारनी तपस्याए करीने जैन धर्मनो प्रकाश ते तपस्वीने भव्य प्राणीओए पांचमो प्रभावक जाणवो." आ प्रसंग उपर मुनिनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

काष्ठमुनिनुं दृष्टान्त.

राजगृह नगरमां काष्ठ नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने वज्रा नामे कुलटा स्त्री हती. ते स्त्रीथी उत्पन्न थयेलो देवप्रिय नामनो तेने एक पुत्र हतो. ते लेखशाळामां अभ्यास करतो हतो. ते श्रेष्ठीने घेर पुत्रनी जेम पालन करेलां पोपट, मेना अने कूकडो ए त्रण पक्षीओ हतां. एक ब्राह्मणना पुत्रने घरनी संभाळ करवा राखेलो हतो. एकदा श्रेष्ठी पोताना घरनो कार्यभार पोतानी स्त्रीने तथा मेनाने सोंपीने लक्ष्मी मेळववा माटे परदेश गयो. पाछळ ते ब्राह्मणपुत्र युवावस्था पाम्यो, त्यारे वज्रा तेनी साथे विषय सुख भोगववा लागी. एकदा ते बन्नेने विषयासक्त जोइने मेनाए पोपटने कह्युं के ' पापकर्ममां तत्पर थयेला आ बन्नेने आपणे निवारवा जोइए. त्यारे पोपट बोल्यो के—

उपदेशो हि मूर्खाणां, प्रकोपाय न शान्तये ।
पयःपानं भुजंगानां, केवलं विषवर्धनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" मूर्खने उपदेश आपवो, ए तेने कोप उत्पन्न करवा माटे थाय छे, पण शांतिने माटे थतो नथी. जुओ ! सर्पने जे दूग्धपान कराववुं, ते केवळ विषनी वृद्धिने माटे ज थाय छे."

माटे हे प्रिया ! हमणां तेमने उपदेश आपवानो समय नथी." ते सांभळीने मेना बोली के " सत्य बोलवाथी जो कदाच मारुं अकाळे मृत्यु थाय, तो ते श्रेष्ठ छे, पण आ पितातुल्य श्रेष्ठिना घरमां अकार्य थतुं जोवुं, ते श्रेष्ठ नथी ; हुं ते जोइ शकती नथी." आ प्रमाणे ते मेनाने बोलती सांभळीने वज्राए क्रोधथी ते मेनाने पकडी अग्निमां नांखी दीधी. ते जोइ पोपट तो मौन ज धारी रह्यो.

एकदा ते वज्राने घेर बे मुनि भिक्षाने माटे आव्या. तेमांथी वृद्ध मुनिए लघु मुनिने कह्युं के ' आ कूकडानुं मस्तक मांजर सहित जे खाय, ते राजा थाय." ते वचन पेला ब्राह्मणपुत्रे भींतनी आंथे उभा रहीने सांभळ्युं. पछी तेणे वज्राने कह्युं के ' आ कूकडानुं मस्तक मांजर सहित रांधीने मने खावा आप. ' ते सांभळीने वज्राए प्रथम ना कही, पण तेना वधारे आग्रहथी तेणीए तेम करवानुं स्विकार्युं. पछी ते कूकडाने मारीने तेने पकाववा माटे अग्निपर मूक्यो. ते वखते ते ब्राह्मणपुत्र स्नान करवा गयो, तेवामां वज्राना पुत्रे लेखशाळामांथी घेर आवी खावानुं माग्युं. एटले वज्राए तेना जारनुं कहेवुं भूलीजवाथी पेला कूकडानुं मस्तक तेने खावा आप्युं. ते खाइने ते शाळामां गयो. थोडीवारे पेलो ब्राह्मण स्नान करीने घरे आवी खावा बेठो. ने वखते कूकडाना मस्तक विनानुं केवळ शरीरनुं मांस जोइने ते बाबत तेणे वज्राने पूछ्युं. एटले तेणीए कह्युं के ' मारा पुत्रने भूलथी आप्युं छे. ' ते सांभळी क्रोधथी ब्राह्मण बोल्यो के ' जो तारा छोकराने मारीने तेना पेटमांथी कूकडानुं मस्तक मने खावा आपीश तो आपणी प्रीतिनो भंग नहीं थाय, नहीं तो हुं तारी साथे प्रीति राखीश नहीं.' ते सांभळीने वज्राए तेम करवानुं स्वीकार्युं. (कामी पुरुषो शुं शुं अकार्य स्विकारता नथी !) ते वात ते पुत्रनी धात्री (धाव माता)ए सांभळी. तेथी ते लेखशाळामांथी परभार्यो ज पुत्रने

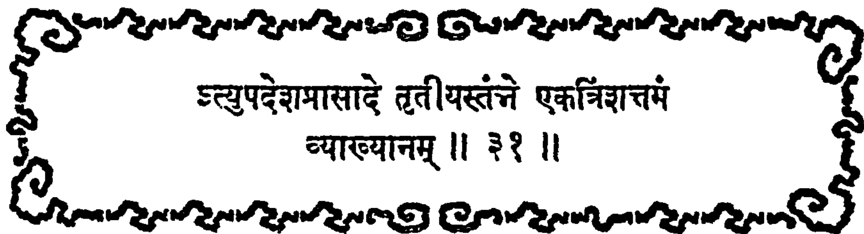
लइ करी बेसारीने नगर बहार नीकळी. अनुक्रमे चालती चालती ते धात्री पृष्ठचंपा नगरीना उद्यानमां आवी. ते वखते ते नगरीनो राजा पुत्ररहित मरण पामेलो होवाथी प्रधानोए पंच दिव्य कर्यां हतां. ते पंचदिव्ये उद्यानमां सुतेला पेला पुत्रने प्रमाण कर्यो. तेथी प्रधानोए तेने राज्याभिषेक कर्यो. एटले ते धात्री सहित त्यां रही राज्यनुं पालन करवा लाग्यो.

अहीं केटलेक काळे काष्ठ श्रेष्ठी परदेशथी घेर आव्यो. त्यां पुत्र, धात्री, मेना अने कूकडो ए चार वस्तु तेणे जोइ नहीं, तेथी तेणे पोपटने ते विषे पूछ्युं. त्यारे पोपट बोल्यो के 'हे श्रेष्ठी ! मने पांजरामांथी बहार काढो, तो हुं निर्भय थइने सर्व वृत्तान्त कहुं.' त्यारे श्रेष्ठीए तेने पांजरामांथी मुक्त कर्यो. एटले ते पोपटे वृक्षपर बेसीने वज्रा तथा ब्राह्मणना अयोग्य संबंधनी सर्व वात कही. ते सांभळीने श्रेष्ठीए वैराग्य पामी तरतज दीक्षा लीधी.

राजाना भयथी वज्रा पण ब्राह्मणने लइ त्यांथी नीकळी गइ. तेओ चालतां चालतां दैवयोगे पुत्रना राज्यवाळा नगरमांज आवीने रह्या. काष्ठ साधु पण विहारना क्रमे फरता फरता तेज नगरमां आव्या, अने अकस्मात् ते वज्रानेज घेर भिक्षा लेवा गया. वज्राए पोताना पतिने ओळखीने विचार्युं के 'जो आ मने ओळखशे, तो मारी हीलना करशे.' पछी तेणीए भिक्षाना पात्रमां भिक्षानी साथे पोतानुं एक आभूषण मूकी दइ पोकार कर्यो. तेथी राजसेवकोए ते साधुने चोर धारीने पकड्या अने राजा पासे लइ गया. ते वखते राजा पासे बेठेली धात्रीए तेमने ओळखीने राजाने कह्युं के 'आ तारा पिता छे.' एटले राजाए सर्व वृत्तांत जाणी पिताने हणवा इच्छती माताने गाम बहार काढी मूकी, अने पोते श्रावक थयो. पछी पोताना पिताने बहु आग्रहथी तेणे त्यां राख्या. राजा हमेशां सर्व समृद्धि सहित गुरुने वंदना करवा माटे जवा लाग्यो. ए प्रमाणे जैन शासननी उन्नति जोइने ब्राह्मणो द्वेष करवा लाग्या, तेथी तेओ मुनिनां छिद्र जोवा लाग्या. पण ते तपस्वी मुनिमां एक पण दूषण जोवामां आव्युं नहीं, तेथी निराश थइने ब्राह्मणोए प्रपंच कर्यो. तेओए एक गर्भवती दासीने द्रव्यनो लोभ बतावीने कह्युं के 'तुं आ साधुने कलंक आप.' द्रव्यना लोभथी तेणीए हा कही. पछी काष्ठ साधु विहार करवा माटे तैयार थया अने राजा विगेरे घणा लोको त्यां आव्या. ते वखते पेली दासी साध्वीनो वेष पहेरी मुनि पासे आवी सर्व सांभळतां बोली के

‘ हे पूज्य ! आ तमाराथी रहेला गर्भने एमने एम मूकीने तमे विहार करो छो, ते युक्त नथी. ’ एम कहीने तेणीए मुनिनुं वस्त्र पकड्युं. एटले आश्चर्य पामेला मुनि बोल्या के ‘ हे मुग्धा ! शामाटे असत्य बोलीने तुं अमने कोप पमाडे छे ? ’ ते बोली के ‘ हुं असत्य बोलती नथी. ’ ते सांभळीने शासननी उन्नतिने माटे सर्व लोक समक्ष लब्धिवान मुनि बोल्या के ‘ जो आ गर्भ माराथी रहेलो होय तो ते तेमने तेम स्थित रहो, परंतु जो आ गर्भ माराथी रहेलो न होय, तो तत्काळ तेणीनी कुक्षि भेदीने नीकळी पडो. ’ एवुं कहेतांज ते गर्भ तेनी कुक्षिमांथी नीकळीने पृथ्वीपर पड्यो, एटले भयथी कंपती ते दासी बोली के ‘ हे पूज्य ! में ब्राह्मणोना कहेवाथी आवुं अकृत्य कर्युं छे, माटे मारापर क्षमा करो.’ एम कहीने ते मुनिना पगमां पडी. ब्राह्मणो पण कंपता कंपता त्यां आवीने मुनिना पगमां पड्या. पछी राजा विगेरेनी विनंतिथी मुनिनो क्रोध शांत थयो. सर्व लोको मुनिना उपदेशथी धर्म पाम्या, अने ब्राह्मणोए जैन धर्मनी निंदा करवी मूकी दीधी. मुनि पण उत्कृष्ट तपवडे सर्व कर्मनो क्षय करी मुक्ति पदने पाम्या.

“ हे भव्य जीवो ! जो तमने मुक्तिना सुखनी अभिलाषा होय, तो आ काष्ठ मुनिनुं अद्भुत चरित्र सांभळीने विविध प्रकारनी तपस्याओ करी जिन धर्मनी उन्नति करो. ”



व्याख्यान ३२ मुं.

छठा विद्याप्रभावक विषे.

मंत्रयन्त्रादिविद्याभिर्युक्तो विद्याप्रभावकः ।
संघाद्यर्थे महाविद्यां, प्रयुञ्जयति नान्यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे मंत्र, यंत्र विगेरे विद्याथी युक्त होय, ते विद्याप्रभावक कहेवाय छे. ते विद्या प्रभावक संघ विगेरेना कार्यने माटे महाविद्यानो उपयोग करे छे; बीजा कार्य माटे तेनो उपयोग करता नथी. " अहीं हेमचंद्राचार्यनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

श्री हेमचंद्र सूरिनी कथा.

धंधुका गाममां मोढ ज्ञातिमां उत्पन्न थयेला चांगदेवे देवचंद्रसूरि पासे दीक्षा लीधी. गुरुए अनुक्रमे तेनुं हेमचंद्रसूरि एवुं नाम पाड्युं. अनुक्रमे पाटणमां कुमारपाल राजा थये सते श्री हेमसूरिए त्यां जइने उदयन मंत्रीने पूछ्युं के—' राजा अमने कोइवार संभारे छे के नहीं ? ' उदयने कह्युं के ' संभारता नथी.' त्यारे सूरिए कह्युं—हे मंत्री ! आजे तुं राजाने एकांतमां कहेजे के ' आजे तमारे नवी राणीने महेले सुवा जवुं नहीं. ' मंत्रीए तेज प्रमाणे कह्युं. ते रात्रे नवी राणीना महेल पर वीजळी पडी, तेथी ते महेल बळी गयो, राणी पण मृत्यु पामी. ते जोइ आश्चर्य पामेला राजाए मंत्रीने पूछ्युं के, तने आवी खबर प्रथम केवी रीते पडी ? ' आवुं उत्कृष्ट ज्ञान कोनुं छे ? ' त्यारे मंत्रीए ' हेमसूरिए ते वात कही हती ' एम कह्युं. ते सांभळीने राजा तरतज हेमसूरि पासे जइ तेमने प्रणाम करीने बोल्यो के ' हे पूज्य ! आपनो मारापर परम उपकार छे माटे आ राज्य ग्रहण करीने मारा पर अनुग्रह (कृपा) करो. ' सूरि बोल्या " हे राजा ! अमारे राज्यनो खप नथी, परंतु—

> कृतज्ञत्वेन राजेन्द्र, चेत्प्रत्युपचिकीर्षसि ।
> आत्मनीने तदा जैनधर्मे धेहि निजं मनः ॥१॥

भावार्थ—" हे राजेन्द्र ! जो तुं कृतज्ञपणाए करीने (करेला गुणना जाणवापणाए करीने) प्रत्युपकार करवा इच्छतो हो, तो आत्माने हितकारक एवा जैन धर्मने विषे तारुं मन स्थापन कर. अर्थात् जैन धर्मनो स्विकार कर. "

ते सांभळीने राजा बोल्यो, ' हे स्वामी ! आप जेम कहेशो तेम हुं करीश.' एकदा राजा सूरिने साथे लइने सोमेश्वरनी यात्राए गयो. त्यां राजाए महादेवने वंदना करी. ते वखते राजाने ब्राह्मणोए कह्युं के " जैन धर्मीओ तेमना तीर्थंकर

शिवाय बीजा देवने नमता नथी." ते सांजळीने राजाए सूरिने कह्युं के 'हे पूज्य! आप शिवने वंदना करो.' त्यारे सूरि बोल्या के—

भवबीजाङ्कुरजनना, रागाद्याः क्षयमुपागता यस्य।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा, हरो जिनो वा नमस्तस्मै ॥१॥

यत्र तत्र समये यथा तथा, योऽसि सोऽस्यभिधया यथा तथा।
वीतदोषकलुषः स चेद्भवानेक एव भगवन्नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

ज्ञावार्थ—"जेना जवबीजना अंकुरने उत्पन्न करनारा रागादिक क्षय पामेला छे, एवा ब्रह्मा, विष्णु, शिव के जिन जे होय, तेने मारो नमस्कार हो. जे ते समये, जे ते प्रकारे, जे ते नाम वडे, ज छे ते तुंज छे. सर्व दोष अने पाप रहित जो कोइ होय तो तुं एकज छे, माटे हे जगवान्! तमने मारो नमस्कार हो." १-२

आवी स्तुति सांजळीने राजा आश्चर्य पाम्यो. पछी तेणे गुरुने कह्युं के, 'हे पूज्य! मत मतांतरनो आग्रह मूकीने खरुं तत्त्व शुं छे? ते मने कहो.' सूरि बोल्या 'हे राजा! शास्त्रनो संवाद दूर रहो, मात्र आ शिवज तमारी पासे तत्त्वनुं निरूपण करशे ते तमे आदरजो. पछी मध्यरात्रिए सूरिना ध्यानथी प्रत्यक्ष थइने शिवे राजाने कह्युं के, हे राजा! श्रीतीर्थंकरोए प्ररूपित करेला स्याद्वाद तत्त्वनुं आचरण करवाथी तुं वांछित फळने पामीश. ते सांजळीने राजा समकितनी सन्मुख थयो.

एकदा वायुने स्थंजन करवानी क्रियामां एटले शरीरमां चालता वायुने रोकीने शरीरने हलकुं बनाववानी क्रियामां निपुण एवो देवबोधि नामनो ब्राह्मण कमळना नाळना दांडा करी, केळनां पांदडानुं आसन (शिबिका—पालखी) करी, काचा सुतरना तांतणाथी ते नाळ अने पांदडां बांधी ते शिबिका नाना शिष्योना स्कंधपर उपडावी, पोते तेमां बेसीने राजसजामां आव्यो. ते जोइ विस्मय पामेला राजाए तेने सन्मान आप्युं. पछी पूजाने समये जिनेश्वरनी पूजा करता राजाने जोइने देवबोधिए कह्युं के, 'हे राजा! तारा कुळधर्मनुं उल्लंघन करवुं तने युक्त नथी. कह्युं छे के—

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवंतु,

लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥१॥

भावार्थ—" नीतिशास्त्रमां निपुण एवा पुरुषो निंदा करो अथवा स्तुति (प्रशंसा) करो, लक्ष्मी प्राप्त थाओ अथवा मरजी मुजब चाली जाओ, आजेज मृत्यु प्राप्त थाओ, अथवा बीजा युगमां मृत्यु थाओ, तोपण धीर पुरुषो कांइ पण दरकार राख्या विनाज न्यायना रस्ताथी एक पगलुं पण चलित थता नथी."

माटे हे राजा ! तारे कुळपरंपरानो शिवधर्म छोडवो योग्य नथी." ते सांभळीने राजा बोल्यो के " सर्वज्ञे कहेलो होवाथी जैनधर्मज सत्य छे." देवबोधि बोल्यो के " हे राजा ! जो तने शिवधर्मनी प्रतीति आवती न होय, तो महेश्वरादिक त्रणे देवताओ अने तेमनी पूजा करता तारा पूर्वजोने साक्षात् अहीं आवेला जोइने तारा मुखथीज तेमने पूछी निश्चय कर." एम कहीने तेणे पोतानी विद्याशक्तिथी ते देवोने तथा कुमारपाळना पूर्वजोने प्रत्यक्ष देखाड्या. ते देवो अने पूर्वजो बोल्या के—' हे वत्स ! तारे देवबोधिना कहेवा प्रमाणे करवुं.' तेथी राजा विस्मय पामीने जड जेवो बनी गयो. त्यारे उदयन मंत्रीए कह्युं के ' हे राजा ! हेमसूरि पण अनेक विद्यामां कुशळ छे.' ते सांभळीने राजा प्रातःकाळे देवबोधि विगेरेने लइने सूरि पासे वंदना करवा आव्या, ते वखते हेमचंद्रसूरि शरीरनी अंदरना पांचे (प्राण, अपान, व्यान, उदान अने समान) वायुने रुंधीने आसनथी कांइक उंचा रही व्याख्यान आपवा लाग्या. ते वखते पूर्वथी संकेत करी राखेला शिष्योए सूरिनी नीचेथी आसन (पाट विगेरे) खेंची लीधुं. एटले सूरि जमीनथी घणा उंचा रही व्याख्यान आपवा लाग्या. ते जोइ राजा विगेरे सर्वे महा आश्चर्य पाम्या. पछी सूरि महाराजे 'अमारा देवोने जो.' एम कही कुमारपाळ राजाने एक ओरडामां लइ गया. त्यां समवसरणमां रहेला चोवीश तीर्थंकरोनी पूजा करता तेना एकवीश पेढीना पूर्वजोने तेणे जोया. तेओ (तीर्थंकरो) पण बोल्या के ' दयाधर्म पाळवाथी तुंज विवेकी छो, आ हेमसूरि तारा गुरु छे, ते जेम कहे तेम करजे.' तथा तेना पूर्वजो पण बोल्या के " हे वत्स ! तें जैनधर्मनो आदर कर्यो, तेथी अमे सुगतिना भाजन थइ आवी महा ऋद्धि पाम्या छीए."

एम कही ते सर्व अन्तर्धान (अदृश्य) थया. ते जोइ हींचका खाता मनवाळा राजाए सूरिने तत्त्व पूछ्युं के " हे महाराज ! देवबोधिए बताव्युं ते सत्य के आ सत्य ? आ बाबतमां मारुं मन चकडोळे चड्युं छे. " त्यारे सूरि बोल्या के " हे राजा ! प्रथम देवबोधिए तने जे बताव्युं, तथा में तने जे आ बताव्युं ते सर्व इन्द्रजाळ छे. आकाशपुष्पनी जेम असत्यज छे; परंतु तत्त्व तो जे तने सोमेश्वर महादेवे कह्युं हतुं तेज छे. " ते सांभळीने राजाए मिथ्यात्वनो त्याग कर्यो, अने अनुक्रमे ते बारव्रतधारी थयो.

अन्यदा आश्विन मास आव्यो त्यारे नवरात्रिना दिवसे देवीना पूजारीए आवी राजाने कह्युं के " हे राजा! कुळदेवीनी पासे बळिदान माटे सातमने दिवसे सातसो पाडानो वध थाय छे, आठमने दिवसे आठसो पाडानो वध थाय छे अने नोमने दिवसे नवसो पाडानो वध करवामां आवे छे. आवो तमारी वंशपरंपरानो नियम छे. ते प्रमाणे जो न थाय तो देवी विघ्न करे छे. " ते सांभळीने राजाए सूरि पासे जइ ते वात करी. त्यारे सूरिए कह्युं के " जे दिवसे जेटलां प्राणीओ हणाय छे, ते दिवसे तेटलां प्राणीओ ते देवीनी पासे धरीने कहेवुं के–' हे देवी ! आ शरण रहित पशुओ तमारी पासे मूक्यां छे, हवे जेम तमने योग्य लागे तेम करजो ' पछी राजाए सूरिना कहेवा प्रमाणे कर्युं. एटले देवीए एके प्राणीनुं भक्षण कर्युं नहीं. परंतु नवमीनी रात्रिए हाथमां त्रिशूळने धारण करनारी कंटेश्वरी देवीए प्रत्यक्ष थइ राजा पासे आवीने कह्युं के ' हे राजा ! तें परंपराथी चाली आवती रीतने केम मूकी दीधी ?' राजाए जवाब आप्यो के ' हे देवी! हुं जीवुं छुं त्यांसुधी तो एक कीडीनो पण वध करीश नहीं. ' ते सांभळीने क्रोध पामेली देवी राजाना मस्तकमां त्रिशूळ मारीने अदृश्य थइ. ते देवीना प्रहारथी राजाना शरीरमां तत्काळ कुष्ट व्याधि उत्पन्न थयो, अने तेनी असह्य पीडा थवा लागी. तेथी राजाए अग्निमां प्रवेश करवानो विचार कर्यो. तेनो निषेध करीने उदायन मंत्रीए ते वृत्तान्त सूरिने जणाव्यो. त्यारे सूरिए जळ मंत्रीने उदायनने आप्युं. ते जळ राजा पर छांटवाथी तेनो देह सुवर्णनी कांति जेवो थइ गयो. पछी प्रातःकाळे राजा गुरुने वांदवा गयो. उपाश्रयमां प्रवेश करतां ज राजाए एक स्त्रीनुं करुणावाळुं रुदन सांभळ्युं. एटले राजाए ते स्त्रीनी सन्मुख जोयुं तो रात्रे जोयेली देवीने त्यां रुदन करती दीठी. पछी गुरु पासे जइ राजाए कह्युं के ' हे पूज्य ! थांभले बां-

थेली आ स्त्रीने मूकी दो. सूरि बोल्या ' हे राजा ! तेणीनी पासेथी कांइ मागी ले.' त्यारे राजाए पोताना अढार देशोमां जीव रक्षा माटे कोटवाळ (रखवाळ) पणुं करवानुं माग्युं. ते वात देवीए स्विकारी, एटले ते बन्धन थकी मुक्त थइ अने राजभवनना द्वारे जइने रही.

एकदा राजसभामां सूरिए स्थूलभद्र मुनिनी प्रशंसा करी के—

वेश्या रागवती सदा तदनुगा षड्भी रसैर्भोजनं
सौधं धाम मनोहरं वपुरहो नव्यो वयःसंगमः ।
कालोऽयं जगदाविलस्तदपि यः कामं जिगायादरात्
तं वन्दे युवतिप्रबोधकुशलं श्री स्थूलभद्रं मुनिम् ॥१॥

भावार्थ—"वेश्या पोतापर रागवाळी अने निरंतर तेमने अनुसरनारी हती, हमेशां छ रसवाळुं भोजन खावानुं हतुं, कामशास्त्रना चित्रवाळी शाळामां वसवानुं हतुं, शरीर पण मनोहर हतुं, अवस्था पण युवान हती अने काळ पण वर्षाऋतुनो हतो; तोपण जेणे आदर पूर्वक कामदेवने जीत्यो एवा स्त्रीजनोने प्रतिबोध पमाडवामां कुशळ श्री स्थूलभद्र मुनिने हुं वंदना करुं छुं."

आ प्रमाणे सांभळीने राजानी पासे बेठेला द्वेषी ब्राह्मणो बोल्यो के—

विश्वामित्रपराशरप्रभृतयो ये चाम्बुपत्राशिन—
स्तेऽपि स्त्रीमुखपङ्कजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहं गताः ।
आहारं सघृतं पयोदधियुतं भुञ्जन्ति ये मानवा—
स्तेषामिन्द्रियनिग्रहः कथमहो दम्भः समालोक्यताम् ॥१॥

भावार्थ—" विश्वामित्र अने पराशर विगेरे ऋषिओ के जेओ जळ अने पांदडां मात्रनोज आहार करता हता, तेओ पण स्त्रीनुं सुन्दर मुखकमळ जोइनेज मोह पामी गया हता; तो जे लोको घृत, दूध अने दहींवाळो आहार करे, तेओने इन्द्रियोनो निग्रह शी रीते कही शकाय ? अहो ! जुओ ! केवो दंभ छे ? एटले जैनो केवो दंभ करे छे ? "

ते सांभळीने सूरिए तेनो जवाब आप्यो के " हे राजा ! शीलनुं पालन करवामां आहार के नीहार कारणभूत नथी. परंतु मननी वृत्तिज कारण छे. केमके-

सिंहो बली द्विरदसूकरमांसभोजी,
संवत्सरेण रतिमेति किलैकवारम् ।
पारापतः खरशिलाकणमात्रभोजी,
कामी भवत्यनुदिनं ननु कोऽत्र हेतुः ॥ १ ॥

भावार्थ—" बळवान सिंह हाथी अने सूकरनुं मांस खाय छे, तोपण ते एक वरसमां एकज वार कामक्रीडा करे छे, अने पारेवां मरडीया कांकरा अने जुवारना कण खाय छे ते छतां तेओ हमेशां कामीज रहे छे तो तेनुं शुं कारण ?"

ते सांभळीने कुवादीओनां मुख श्याम थइ गयां. आ विगेरे अनेक प्रबंधो कुमारपाळना चरित्रथी जाणी लेवा. पछी सूरि पण अनुक्रमे अनेक भव्यजीवोने प्रतिबोध करीने तथा जैनधर्मनी प्रभावना करीने स्वर्गे गया.

" विद्यारूप कांतिवाळा, जैनधर्मरूप जगतने विषे सूर्य समान, अज्ञानरूप अन्धकारनो नाश करनार, अने चौलुक्य वंशमां सिंह समान कुमारपाळ राजाने प्रतिबोध पमाडनार एवा श्री हेमचंद्र गुरुने हुं नमन करुं छुं."

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे द्वात्रिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ३२ ॥

व्याख्यान ३३ मुं.

सातमा सिद्धप्रभावक विषे.

अञ्जनचूर्णलेपादिसिद्धयोगैः समन्वितः ।
जिनेन्द्रशासने ह्यत्र, सप्तमः स्यात्प्रभावकः ॥ १ ॥

भावार्थ—" अंजन, चूर्ण अने लेप विगेरे सिद्ध करेला योगोए करीने सहित जे होय, तेने आ जिनेन्द्रना शासनने विषे सातमा प्रभावक कहेला छे. अर्थात् शासननी उन्नतिने माटे अंजनादिकनो उपयोग करे, ते सिद्ध प्रभावक कहेवाय छे." आ श्लोकनो भावार्थ श्री पादलिप्तसूरिना दृष्टांतवडे दृढ करवामां आवे छे.

पादलिप्तसूरिनुं दृष्टांत.

अयोध्या नगरीमां नागहस्ती नामना सूरिनी पासे पद्मिमा नामनी श्राविकाना पुत्रे आठ वर्षनी वये दीक्षा ग्रहण करी. एकदा ते क्षुल्लक (बाळक) साधु श्रावकने घेरथी कांजी (भातनुं ओसामण) वहोरी लावीने गुरु पासे आवी उभा रह्या. तेने गुरु महाराजे पूछ्युं के 'हे वत्स ! तुं आलोचना जाणे छे ?' (अहीं गुरुने प्रश्न करवानो हेतु ए हतो के कांजी सर्व जातनी अचित्त नथी, माटे आ कांजी सचित्त अचित्तनो विचार करीने लाव्यो छे के नहीं ? ए प्रश्ननुं तात्पर्य छे.) ते सांभळीने क्षुल्लके कह्युं के 'हे पूज्य गुरु ! हुं आलोचना जाणुं छुं, तेमां (आलोचना शब्दमां) आ ए उपसर्ग छे, अने तेनो अर्थ—ईषदर्थे क्रियायोगे मर्यादाऽभिविधौ च यः। एटले थोडुं, चोतरफ, मर्यादा, अभिविधि विगेरे थाय छे तथा क्रियानी साथे पण ते आवे छे, अने लोचना एटले जोवुं ते. अर्थात् चोतरफ जोवुं ते आलोचनानो अर्थ हुं जाणुं छुं. अने

अंबंतं वच्छीए, अपुप्फियं पुप्फदंतपंतीए ।
नवसालिकंजियं नवहू हूइ कुंडएणमह दिन्नं ॥[1]

लाल वर्णना वस्त्रवाळी अपुष्पित (रुतुमां नहीं आवेली) अने पुष्पनी कळीसमान दांतवाळी नवोढा स्त्रीए आ नवी डांगेरना भातनी कांजी मने प्रफुल्लित मनथी आपी छे." आ प्रमाणे शृंगारनां वचनो सांभळी गुरु क्रोध करी बोल्या 'अरे पलित्त (प्रलिप्त) एटले प्रकर्षे करीने (पापथी) लिंपायेला ! तुं ए शुं बोले छे ?' ते वखते ते क्षुल्लक साधु गुरुना चरणकमळमां नमन (वंदना) करीने बोल्यो—

[1] आ गाथानो अर्थ बराबर बेठो नथी.

गुरुचरणे नमिउं, विन्नवइ देह पसिऊण ।
अहियं एगं मत्तं, जेणं हवेमि पालित्तं ॥

" हे पूज्य ! मारापर कृपा करीने पलित्त शब्दमां एक कानो वधारी आपो, के जेथी हुं पालित्त (पादलिप्त) थाउं. " अर्थात् पाद एटले पगे, लिप्त एटले लेपायेलो, अर्थात् पगे लेप करवाथी आकाशे उमी शकाय तेवी विद्यावाळो थाउं. ते सांजळीने तेनी बुद्धिथी प्रसन्न थयेला गुरुए तेने पादलेपनी विद्या आपी अने अनुक्रमे तेने योग्य जाणी सूरिपद आपी तेनुं पादलिप्त सूरि एवं नाम स्थापन कर्युं.

पादलिप्ताचार्य विहार करतां अन्यदा खेटकपुरमां आव्या. त्यां जीवाजीवोत्पत्ति प्राभृत, निमित्त प्राभृत, विद्या प्राभृत, अने सिद्धि प्राभृत ए चार पाहुडा[१] तेमने मळ्या. पछी सूरि हमेशां पादलेप विद्याए करीने पांचे तीर्थोए जइ त्यां रहेल जिनबिंबोने वंदना करीने पछी जोजन करवा लाग्या.

एकदा सूरि ढंकपुरे आव्या. त्यां जेणे घणा लोकोने वश कर्या छे एवो नागार्जुन नामनो योगी सूरि पासे आवी विद्या शीखवानी इच्छाए श्रावक थइने निरंतर तेमना चरणनी सेवा करवा लाग्यो. निरंतर गुरुना चरणकमळमां वंदना करवाथी औषधीओना गंधवमे तेणे एकसोने सात औषधीओ ओळखी लीधी. पछी ते सर्व औषधिओने जळ साथे मेळवी वाटीने तेनो पगे लेप करी आकाशमां उमवा लाग्यो. पण थोमे दूर उमीने पाछो जे ते स्थाने ते पमवा लाग्यो. तेथी तेना शरीरे चाठां पड्यां. ते जोइने एकदा गुरुए तेने पूछ्युं के ' हे जद्र ! आ तारा शरीरे क्षत शेनां छे ? ' त्यारे ते योगीए गुरु पासे सत्य वात कही बतावी. ते सांभळीने तेनी बुद्धिथी रंजित (आनंदित) थयेला गुरुए तेने शुद्ध (सत्य) श्रावक बनाव्यो. पछी विहार समये गुरुए तेने कह्युं के " हे श्रावक ! जो तारे आकाशमां उमवानी इच्छा होय तो ते एकसोने साते औषधिओने साठी चोखाना ओसामणमां एकत्र करीने तेनो लेप करजे, जेथी तने स्खलना नहीं थाय. " आ प्रमाणेना गुरुवचनथी तेनो मनोरथ पूर्ण थयो एटले ते पण स्वस्थाने गयो.

एकदा ते नागार्जुने घणा द्रव्यनो व्यय करीने सुवर्णसिद्धि निपजावी.

---

[१] ग्रन्थो (पूर्वमांथी उद्धरेला)

पछी गुरुनो उपकार संभारीने तेनो बदलो वाळवा माटे तेना रसनी एक कुंपी ल-इने पोताना शिष्यद्वारा गुरुने ते भेट तरीके मोकली. ते जोइ गुरुए ते शिष्यने कह्युं के 'अमे तृणने तथा सुवर्णने समान गणीये छीये, माटे आ अनर्थकारक रसनी अमे इच्छा राखता नथी.' एम कहीने गुरुए राख मंगावी ते सर्व रस रा-खमां नांखी दीधो अने ते कुंपीमां पोतानुं मूत्र भरीने ते कुंपी पाछी आपी. ते लइने ते शिष्ये नागार्जुन पासे आवी सर्व वृत्तांत कह्युं. ते सांभळीने क्रोधथी आरक्त थयेला योगीए विचार्युं के 'अहो! ते साधु केवा अविवेकी छे?' एम कही तेणे ते कुंपीने एक पथ्थरपर पछाडी फोडी नांखी. क्षणवारमां ते शिला सु-वर्णमय थइ गइ. ते जोइने आश्चर्य पामेला योगीए विचार्युं के 'अहो!

मया क्लेशसहस्रेण, रससिद्धि विधियत ।
अमीषां तु स्वभावेन, स्ववपुस्थैव विद्यते ॥

"मैं हजारो क्लेश सहन करीने आ रससिद्धि उत्पन्न करी, अने आ गुरुना तो शरीरमां ज ते सिद्धि स्वभावथी ज रहेली छे." त्यारपछी नागार्जुने ते कल्पवृक्ष समान गुरुनी वंदना अने स्तुति वगेरे करीने चिरकाळ सेवा करी.

ते समयमां शालिवाहन राजानी सभामां चार ऋषिओ लाख लाख श्लोकना ग्रन्थ रचीने राजा पासे आवीने बोल्या के 'हे राजा! अमारा ग्रन्थ तमे सांभळो.' राजाए जवाब आप्यो के 'एवडा मोटा ग्रन्थो सांभळवानो मने अवकाश नथी.' त्यारे तेओ पचास पचास हजार श्लोकना ग्रन्थ करीने आव्या. त्यारे पण राजाए तेटला मोटा ग्रन्थ सांभळवानी अशक्ति जणावी. त्यारे तेओ तेथी अर्धा ग्रन्थ करी लाव्या. एम छेवट ओछा करतां करतां एक एक श्लोक करीने लाव्या. तो पण राजाए सांभळवानी ना कही. त्यारे तेओ एक एक पाद करीने आव्या. ते वखते राजाए सांभळवानी हा कही. त्यारे प्रथम आत्रेय नामना ऋषि चिकित्सा (वैदक) शास्त्रनां रहस्य रुप एक पाद बोल्या. 'जीर्णे भोजन मात्रेयः' आत्रेय कहे छे के एक वार जमेलुं जीर्ण थया पछी (पच्या पछी) बीजुं भोजन करवुं. बीजा कपिले कह्युं 'कपिलः प्राणिनां दया' प्राणी मात्र पर दया राखवी एज खरो धर्म छे. एम कपिले धर्मशास्त्रनो सार कह्यो. त्रीजा बृह-स्पतिए नीतिशास्त्रनो सार आ प्रमाणे कह्यो 'बृहस्पतिरविश्वासः' बृहस्पति कहे-

छे के कोइनो विश्वास करवो नहीं. चोथा पंचाले कामशास्त्रनुं रहस्य आ प्रमाणे जणाव्युं 'पञ्चालः स्त्रीषु मार्दवम्' पंचाल कहे छे के 'स्त्रीओने विषे मृदुता (कोमळता) राखवी. आ प्रमाणे चार लाख श्लोकनुं रहस्य मात्र एकज श्लोकमां बतावी आप्युं. ते सांभळीने राजाए तेमने सारुं सन्मान आपीने वारंवार तेमनी प्रशंसा करी. ते वखते राजानी राणी भोगवती बोली के—

ता गज्जंति वाइंदगयघडा मयभरेण दुप्पिच्छा ।
जावन्न पायलित्तयं, पंचवयणनाउ समुल्लसई ॥१॥

भावार्थ—"ज्यांसुधी पादलिप्ताचार्य रुपी सिंहनुं लांगूल (पूछडुं) उल्लासपाम्युं नथी (सिंहनाद थयो नथी), त्यांसुधी ज मदना समूह वडे गर्विष्ट थयेला दुःप्रेक्ष्य एवा मोटा वादीओ रुपी हस्तीओना समूहो गर्जना करे छे."

ते सांभळीने राजाए पोताना प्रधानोने मोकली पादलिप्ताचार्यने तेडाव्या. तेओ सूरिने लइने आवता हता, ते वखते सर्व विद्वानोए एकठा थइने एक घृतथी भरेलो थाळ सूरिनी सामे मोकल्यो. ते जोइने सूरि महाराजे तेमां एक सोय नांखीने ते थाळ पाछो मोकल्यो. ते जोइने राजाए पंडितोने तेनो भाव पूछयो. त्यारे तेओ बोल्या के "हे राजा ! घीना थाळनी जेम आ नगर विद्वानोथी पूर्ण छे, माटे तमारो प्रवेश तेमां शी रीते थशे? एवो अमारो भाव हतो. तेमां सोय नांखीने सूरिए ए थाळ पाछो मोकल्यो, तेमणे ए अभिप्राय जणाव्यो के जेम घीना थाळमां सूक्ष्मताने लीधे आ सोयनो प्रवेश थयो, तेम हुं पण आ नगरमां प्रवेश करीश." ते सांभळी राजा आश्चर्य पाम्यो. पछी सर्व पंडितो सहित राजा सूरिनी सामो गयो. अने तेमने महोत्सव पूर्वक पुरी प्रवेश कराव्यो. पछी गुरुए निर्वाणकलिका, प्रश्न प्रकाश, विगेरे शास्त्रो बनावी राजाने संभळाव्यां. तेथी राजा प्रसन्न थइ जैनी थयो. तथा सर्व ब्राह्मणो पण पोतानो गर्व तजीने श्रीगुरुना चरणकमळमां भ्रमररूप थया. सुरि पण जैनशासननी प्रभावना करी शत्रुंजय गिरिपर जइ बत्रीश दिवसनुं अनशन करीने स्वर्गे गया.

"आ प्रमाणे श्री पादलिप्त सूरिनी अमृत समान कथानुं श्रोत्ररुप पात्रवडे पान करीने (सांभळीने) शक्तिवान माणसोए अंजन विगेरेना गुणोवडे शासननो

महिमा वधारवो. ”

आ दृष्टांत दर्शन सप्ततिका ग्रंथमां वधारे विस्तारवाळुं छे त्यांथी जाणी लेवुं.

॥ इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे त्रयस्त्रिंशत्तमं व्याख्यानम्॥३३॥

व्याख्यान ३४ मुं.

आठमा कविप्रभावक विषे.

अत्यद्भुतकवित्वस्य, कृतौ शक्तिर्भवेद्यदि ।
सम्यक्त्वे स कविर्नाम, प्रोक्तोऽष्टमः प्रभावकः ॥ १ ॥

भावार्थ—“ जो अति अद्भुत कविता करवानी शक्ति होय, तो ते समकितने विषे कवि नामनो आठमो प्रभावक कहेलो छे. ”

कवि बे प्रकारना छे. सत्य अर्थनुं वर्णन करनार अने असत्य अर्थनुं वर्णन करनार. तेमां जिनमतना रहस्यने जाणीने सद्भुत अर्थवाळा शास्त्रना रचनारने सत्यार्थनुं वर्णन करनार जाणवा. ए प्रमाणेना सत्यार्थवाळा श्रीहेमचंद्रसूरिए त्रेसठ शलाकापुरुष चरित्र, अने शब्दानुशासन व्याकरण विगेरे मळी त्रण करोड ग्रन्थ[1] बनाव्या छे. श्री उमास्वाति वाचके तत्त्वार्थ विगेरे पांचसो ग्रन्थ रच्या छे. वादी देवसूरिए चोराशी हजार श्लोकप्रमाण स्याद्वाद रत्नाकर ग्रन्थ बनाव्यो छे. श्री हरिभद्रसूरिए चौदसोने चुमाळीश ग्रन्थो रच्या छे. श्री हरिभद्रसूरिनी कथा नीचे प्रमाणे—

श्री हरिभद्रसूरिनी कथा.

चित्रकूट (चितोडगढ)मां हरिभद्र नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो, ते चौद विद्यामां निपुण हतो, सर्व शास्त्रार्थने जाणनार हतो, तेथी जाणे पोतानुं

१ ग्रंथ शब्द श्लोक वाचक छे एम केटलाक कहे छे, अन्यत्र साडात्रण क्रोड पण लखेला छे.

पेट फाटी जाय तेवी बीक राखतो होय तेम पोताना पेटपर सोढानो पाटो बांधी राखतो हतो अने ' जो हुं कोइनुं बोलेलुं न समजुं, तो हुं तेनो शिष्य थाउं ' एवी प्रतिज्ञा करीनें ते फरतो हतो. एकदा ते नगरमां फरतो हतो तेवामां याकिनी नामनी साध्वीना मुखथी तेणे आ प्रमाणेनी एक गाथा सांजळी—

चक्किडुगं हरिपणगं, पणगं चक्कीण केसवो चक्की ।
केसव चक्की केसव, डुचक्की केसि अ चक्की अ ॥ १ ॥

जावार्थ—" प्रथम बे चक्रवर्ती, पछी पांच वासुदेव, पछी पांच चक्री, पछी एक वासुदेव, पछी एक चक्री, पछी एक केशव (वासुदेव), पछी एक चक्री, पछी एक केशव, पछी बे चक्री, पछी एक केशव अने पछी एक चक्री—ए प्रमाणे बार चक्री अने नव वासुदेव आ चोवीशीमां थयेला छे. "

आ गाथा सांजळीने तेनो अर्थ नहीं समजवाथी ते हरिजद्रे साध्वी पासे जइने कह्युं के ' हे माता ! आ शुं चिकचिक करो छो ? ' साध्वीए जवाब आप्यो के ' जे नवुं होय ते चिकचिक शब्द करे छे; परंतु आ तो जुनुं छे. ' ते सांजळीने हरिभद्रे विचार्युं के ' अहो ! आ साध्वीए मने उत्तर आपतांज जीती लीधो. ' पछी तेणे साध्वीने कह्युं के ' हे माता ! आ गाथानो अर्थ मने कहो. ' त्यारे ते बोल्या के ' मारा गुरु तमने तेनो अर्थ कहेशे. ' तेणे पूछ्युं के ' ते गुरु क्यां छे ? ' त्यारे साध्वी तेने लइने गुरु पासे गया. त्यां देरासर हतुं, तेनी अंदर प्रथम तेओ गया. त्यां श्री वीतराग देवनी मूर्ति जोइने हरिजद्रे स्वयमेव स्तुति करी के—

वपुरेव तवाचष्टे, भगवन् वीतरागताम् ।
न हि कोटरसंस्थेऽग्नौ, तरुर्भवति शाड्वलम् ॥ १ ॥

जावार्थ—" हे जगवान ! तमारुं शरीरज (मूर्तिज) तमारा वीतरागपणाने बतावी आपे छे, केमके वृक्षना कोटरमां जो अग्नि रहेलो होय तो ते नवपल्लव देखायज नहीं. "

ए प्रमाणे स्तुति करीने ते गुरु पासे गया. गुरुने नमन करीने तेणे गाथानो अर्थ पूछ्यो, त्यारे गुरुए तेनो अर्थ कर्यो. एटले प्रथम प्रतिज्ञाथी बंधायेला ते हरिजद्रे गुरु पासे दीक्षा लीधी. त्यां तेणे जैनशास्त्रोनो अभ्यास कर्यो. तेथी तेनुं

समकित दृढ थयुं. अनुक्रमे तेने योग्य जाणी गुरुए आचार्य पद आप्युं. ते हरिभद्र सूरिए आवश्यक निर्युक्तिनी मोटी वृत्ति (टीका) करी, तेमां 'चक्किदुगं' ए गाथानुं सारी रीते विवरण (स्पष्टीकरण) कर्युं छे.

एकदा हरिभद्रसूरिना हंस अने परमहंस नामना बे शिष्यो जेओ जैन दर्शनमां सारा विद्वान थया हता, तेमणे सूरिने विज्ञप्ति करी के "हे पूज्य! बौद्ध धर्मना शास्त्रनुं रहस्य जाणीने अमे तेमनो पराजय करीए माटे अमने तेमनी पासे भणवा जवानी आज्ञा आपो." सूरिए कह्युं के 'भले, वेषान्तर करीने जाओ.' ते सांभळीने ते बन्ने वेषपरावर्त्तन करीने बौद्धलोकोनी शाळामां जइ अभ्यास करी तेमना शास्त्रना मर्मने जाणनारा थया. एकदा ते बौद्धना गुरुने तेमनी क्रिया प्रवृत्ति जोवाथी तेओ श्वेतांबरी छे एवी शंका आवी; तेथी तेमनी खात्री करवा माटे ज्यारे सर्व छात्रो अभ्यास करता हता, ते वखते शाळाना दादरना पगथीया उपर खडी वडे अर्हतनुं बिंब चितर्युं. पछी जती वखते सर्वे छात्रो ते बिंबपर पग मूकी मूकीने उतर्या, परंतु पेला बे जण तो ते बिंबना कंठपर प्रथम त्रण रेखा करी, पछी तेपर पग मूकीने उतर्या. पण ते बन्नेने भय लाग्यो के 'जरूर आपणने तेओए श्वेतांबरी जाण्या छे, माटे हवे आपणे अहीं रहेवुं योग्य नथी.' एम विचारीने ते बन्ने पोतानां पुस्तको लइने त्यांथी नाठा. तेनी खबर थतां गुरुना कहेवाथी त्यांना बौद्ध राजाए तेमनी पाछळ सैन्य मोकल्युं. तेमां हंसे सैन्यनो घणो भाग हणी नाख्यो; परंतु छेवट घणुं सैन्य एकठुं थयुं अने तेणे हंसने मारी नाख्यो. बीजो जे परमहंस हतो ते नासीने चित्रकूटनी नजीक आवी कोइ स्थाने विश्राम माटे सुइ गयो. त्यां आवीने ते बौद्धना सैन्ये तेने पण मारी नाख्यो.[1] ते वृत्तांत जाणीने हरिभद्रसूरिने महा कोप थयो, तेथी उकाळेला तेलना कटाहमां ते चौदसो ने चुमाळीश बौद्धोने होमवा माटे आकर्षण करवा सारु तेओ मंत्रजाप करवा लाग्या, ते वृत्तांत तेमना गुरुए जाण्यो; तेथी गुरुए बे साधुओने नीचेनी गाथाओ लखी आपी तेमनी पासे मोकल्या. तेओए आवीने ते गाथाओ सूरिने वांची संभळावी—

---

१ आ बन्नेना मरणनी हकीकत अन्यत्र बीजी रीते कहेली छे.

गुणसेन अग्गिसम्मा, सीहाणंदाय तह पिआ पुत्ता ।
सिहि जालिणी माइ सुओ,धण धन्नसिरिमो अ पइभज्झा ॥१॥
जय विजयाय सहोयर, धरणो लच्छी अ तह पइभज्झा ।
सेण विसेणा पित्तिअ, उत्ता जंमंमि सत्तमए ॥ २ ॥
गुणचंद वाणमंतर, समराइच्च गिरिसेण पाणो उ ।
एक्कस्स तओ मुक्खो, ऽणंतो वीअस्स संसारो ॥ ३ ॥
जइ जलइ जलं लोए, कुसत्थपवणाहओ कसायग्गी ।
तं जुत्तं न जिणवयणअमिअसित्तोवि पज्जलइ ॥ ४ ॥

भावार्थ—" गुणसेन राजाए अग्निशर्मा ऋषिने मासक्षपणना पारणानुं निमंत्रण आप्युं हतुं, पण कारणने लीधे ते तेने पारणुं करावी शक्यो नहीं, तेथी अग्निशर्माए तेनापर वैरभाव राख्यो ने नियाणुं कर्युं ए पहेलोभव. बीजा भवमां सिंहराजाने आणंद (अग्निशर्मानो जीव) नामना पुत्रे झेर दइने मार्यो. त्रीजा भवमां शीखी पुत्रने जालणी माताए झेर आपीने मार्यो. चोथा भवमां धन्नाने धनश्री स्त्रीए मार्यो. पांचमा भवमां जयने विजयभाइए मार्यो. छट्टा भवमां धरण नामना पतिने लक्ष्मीवती स्त्रीए पीडा करी. सातमा भवमां सेननो विसेन नामना पित्राइ भाइए पराभव कर्यो. आठमा भवे गुणचंद्र विद्याधरने वाणमंतरे पीडा करी. अने नवमा भवे समरादित्य (गुणसेननो जीव) मोक्षे गया तथा गिरिसेन (अग्निशर्मानो जीव) चंडाळ थइ अनंत संसार भटक्यो. माटे हे भद्र ! जेम लोकमां कुशास्त्ररूपी पवनथी आहत थयेलो–हणाएलो– वृद्धिपामेलो कषायरूपी अग्नि जळने (जड–मूर्खने) पण बाळे छे, तेम जिनवचनरूप अमृतथी सिंचायेला तमने युक्त नथी. "

आ प्रमाणे सांभळीने श्री हरिभद्र सूरि ते पापकर्मथी निवृत्त थया, अने मनथी करेला पापना प्रायश्चित्त तरीके ते बौद्ध जेटला एटले चौदसो ने चुमाळीश ग्रंथो नवा करवानुं तेमणे कबुल कर्युं. तेमां प्रथम उपरनी चार गाथाने अनुसरीने क्रोधनो सर्वथा निरास करनारुं श्री समरादित्य केवळीनुं चरित्र मागधी गाथाबंध रच्युं.

मालपुर नामना नगरमां धन नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. ते जैन धर्मी हतो. ते नगरमां सिद्ध नामनो एक राजपुत्र (रजपूत–क्षत्रिय) रहेतो हतो. ते जुगारी लोको साथे जुगार रमतां हारी गयो. तेने आपवानुं धन तेनी पासे नहोतुं, तेथी ते लोकोए तेने एक मोटा खाडामां नांखी दीधो. तेनी धनश्रेष्ठीने खबर पडतां तेणे तेनुं देवुं आपी दइने तेने छोडाव्यो. पछी श्रेष्ठीए तेने पोताने घेर नोकर तरीके राख्यो. अनुक्रमे ते बुद्धिमान सिद्धकुमारने श्रेष्ठीए पोतानो सर्व कार्यभार सोंप्यो अने तेने एक कन्या साथे परणाव्यो. पछी ते सिद्धकुमार श्रेष्ठीनुं सर्व काम करीने घणी रात्री गये घेर सुवा जतो. एकदा ते घणो मोडो [असूरो] सुवा गयो. ते वखते निद्रा पामेली तेनी माए तथा स्त्रीए कह्युं के " आटलो बधो मोडो केम आव्यो? अत्यारे हवे कोइ बारणा उघाडतुं नथी, तेथी ज्यां उघाडा बारणां होय त्यां जा. " ते सांभळीने सिद्धकुमार ' बहु सारुं ' कही गाममां भमवा लाग्यो. तेवामां श्री हरिभद्र सूरिनो उपाश्रय उघाडो जोयो. तेथी ते सूरि पासे गयो. त्यां तेणे प्रतिबोध पामीने दीक्षा ग्रहण करी. पछी अनुक्रमे शास्त्रनो अभ्यास करी ते सारो विद्वान थया पछी तर्कशास्त्रनी जिघृक्षावाळा तेणे बौद्ध धर्मनुं रहस्य जाणवा माटे हरिभद्र सूरिनी आज्ञा मागी. त्यारे सूरिए तेने कह्युं के " जो कदाच बौद्धना संगथी तारुं मन फरी जाय अने ते धर्मपर श्रद्धावाळुं थाय, तो तारे अमारो वेष पाछो आपवा माटे अमारी पासे आववुं. " सिद्ध मुनि ते वात अंगीकार करीने बौद्ध लोको पासे भणवा गया. त्यां बौद्धोए कुतर्कथी तेनुं मन फेरवी नाख्युं. एटले ते वेष पाछो आपवा माटे सूरि पासे जवा चाल्या. ते वखते बौद्धोए पण तेने कह्युं के " जो कदाच तमारुं मन हरिभद्र सूरि फेरवी नांखे, तो अमारो वेष पाछो आपवा अहीं आववुं. " तेमनी वात पण कबूल करीने ते हरिभद्र सूरि पासे आव्या. एटले सूरिए तेनो कुतर्क दूर करीने फरी समकित पमाडयुं. त्यारे बौद्धनो वेष पाछो आपवा गया. ते वखते पण सूरिए कह्युं के " जो कदाच तारुं मन फरी जाय, तो अमारो वेष पाछो आपवा अहीं आवजे. " ते कबूल करीने सिद्ध मुनि बौद्ध पासे गया. एटले फरीथी तेओए कुतर्कोथी तेनुं मन फेरव्युं. तेथी ते मुनिवेष पाछो आपवा सूरिपासे आव्या. ते वखते पण बौद्धोए पोतानो वेष पाछो आपवा आववानुं कबूल करावी रजा आपी. एवी रीते तेणे एकवीश वार जाव आव करी. त्यारे सूरिए 'आ बिचारो मिथ्यादृष्टि थइने दुर्गतिमां न पडे."

एम विचारीने अत्यंत तर्कमय ललितविस्तरा नामनी शक्रस्तवनी टीका रचीनें तेने वांचवा आपी. ते वांचीने संतोष पामी दृढ समकितवाळा थयेला ते बोल्या के—

> [1]नमोऽस्तु हरिभद्राय, तस्मै प्रवरसूरये ।
> मदर्थं निर्मिता येन, वृत्तिर्ललितविस्तरा ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे गुरुए मारे ज माटे ललितविस्तरा नामनी वृत्ति रची ते हरिभद्र नामना श्रेष्ठ सूरिने मारो नमस्कार हो."

पछी ते सिद्ध मुनिए सोळ हजार श्लोकना प्रमाणवाळी उपमितिभवप्रपंच नामनी कथा बनावी. प्रांते ते बन्ने सूरि स्वर्गे गया.

"शास्त्ररूप मंदिरनुं निर्माण करवामां सूत्रधार समान जे श्री हरिभद्रसूरि कुदेव अने कुशास्त्रनो त्याग करी पूज्य पदने पाम्या, ते गुरु महाराज अमने कविताना विषयमां सारी शक्ति आपो."

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे चतुस्त्रिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ३४ ॥

व्याख्यान ३५ मुं.

हवे बीजा अतिशयवाळा कविनुं स्वरूप कहे छे.

> सातिशयाढ्यकाव्यानां, भाषणे कुशली भवेत् ।
> सोऽप्यत्र शासने ज्ञेयो, विस्मयकृत्प्रभावकः ॥ १ ॥

१ आ श्लोक उपमिति भव प्रपंचमा मूकेलो छे.

भावार्थ—" जे अतिशयवाळां काव्यो कहेवामां कुशळ होय तेने पण आ जैनशासनने विषे विस्मयकारक प्रभावक जाणवो." आ विषयपर श्री मानतुंगसूरिनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

मानतुंग सूरिनो प्रबंध.

धारा नगरीमां बाण अने मयूर नामना बे पंडितो हता. तेमां बाण मयूरनो साळो थतो हतो. तेवा नजीकना संबंधी छतां तेओ परस्पर एक बीजानी स्पर्धा करता हता. अने पोतपोतानी विद्वत्ता देखाडीने ते बन्ने राजसभामां प्रतिष्ठा पामेला हता. एक वखत बाण पोतानी बेहेनने मळवा माटे मयूरने घेर गयो. त्यां रात्रीए मोडुं थवाथी तेनेज त्यां बहार ओशरीमां सूतो. मयूर पोतानी स्त्री सहित अंदरना भागमां सूतो. रात्रिमां दंपतीने परस्पर कांइक प्रेमकलह थवाथी स्त्री रीसाइ गइ. तेणीने मयूर घणी रीते समजाववा लाग्यो. आखी रात्री तेने मनाववामां ज व्यतीत थइ परंतु ते स्त्री समजी नहीं. (आ सर्व हकीकत बहार सूतेलो बाण सांभळतो हतो) छेवट प्रातःकाळ थवा आव्यो, त्यारे मयूरे पोतानी पत्नीप्रत्ये मानत्याग करवा माटे कह्युं के—

गतप्राया रात्रिः कृशतनु शशी शीर्यत इव
प्रदीपोऽयं निद्रावशमुपगतो घूर्मित इव ।
प्रणामान्तो मानस्त्यजसि न तथापि क्रुधमहो

अर्थ—" हे कृशतनु स्त्री ! (जेनुं शरीर कृश छे एवी) रात्रि लगभग पूर्ण थवा आवी छे, चंद्र पण क्षीण थया जेवो थयो छे, आ दीवो पण निद्राने वश थवाथी घूर्मित थयो होय तेम झांखो देखाय छे, तेमज हुं तने छेवटे प्रणाम पण करुं छुं, तो पण तुं हजु मानने छोडती नथी; अहो! तारो क्रोध ते केवो छे ! "

आटला त्रण पद सांभळतांज बाण बोली उठ्यो के—

कुचप्रत्यासत्त्या हृदयमपि ते चण्डि कठिनम् ॥ १ ॥

" हे चंडिका ! (क्रोधी स्त्री !) स्तननी पासे रहेवाथी तारुं हृदय पण तेना जेवुंज महा कठण जणाय छे. "

आ प्रमाणे पोताना जाइना मुखथी चोथुं पाद सांजळवाथी क्रोध अने लज्जा पामेली ते पतिव्रता स्त्रीए तेना जाइने शाप आप्यो के 'तुं कुष्टी था.' एटले तरतज बाण कुष्टी थइ गयो. प्रातःकाळे ते बन्ने पंडितो राजसजामां एकठा थया. ते वखते मयूरे बाणने कुष्टी कहीने बोलाव्यो. तेथी बाण अत्यंत लज्जित थयो. एटले सजामांथी उठीने नगरीनी बहार जइ तेणे एक मोटो स्थंज खोड्यो. तेनी साथे एक काष्ट बांधी नीचे एक मोटो खाडो खोदी तेमां खेरना अंगारा ज-र्यां. पछी ते स्थंजनी टोचपर बांधेला लाकडा साथे एक सींकुं बांधी तेमां ते बेठो, अने नवा श्लोकोवडे सूर्यनी स्तुति करवा लाग्यो. तेमां एक श्लोक बोलीने सीं-कानी एक दोरी कापी नांखी. एवी रीते पांच श्लोक बोलीने तेणे पांच दोरीओ कापी नांखी. छेवट छठे श्लोके छठी दोरी कापतां सींकुं तमाम तुटी जवाथी ते खेरना अंगारामां पडवानी तैयारीमां हतो, तेवामां सूर्ये प्रत्यक्ष थइने तेनो देह व्याधि रहित सुवर्ण जेवो कर्यो. पछी बीजे दिवसे बाण पंडित मोटा आडंबरथी राजसजामां आवी मयूरने कहेवा लाग्यो के "हे क्षुद्र पक्षी! गरुडनी पासे का-ळा कागडानी जेम मारी पासे तारी शी शक्ति छे? जो होय तो मारी जेम प्र-त्यक्ष देखाड. मारी शक्ति तो में तने प्रत्यक्ष देखाडी छे." ते सांभळीने मयूर बोल्यो के "निरोगीने वैद्यनुं शुं काम छे? तोपण तारुं वचन कुंठित करवा माटे हुं तैयार छुं." एम बोलीने तरतज तेणे छरीवडे पोताना हाथ पग कापी नांख्या. पछी चंडीदेवीनी स्तुति करतां प्रथम श्लोकनो छठो अक्षर बोलतांज चंडीदेवी प्रसन्न थइ, अने तेना हाथ पग साजा करी आखुं शरीर वज्रमय बनाव्युं. ते जोइ राजाए आश्चर्य पामी मयूरने घणुं मान आप्युं.

ते वखते जैनधर्मना द्वेषी ब्राह्मणोए राजाने कह्युं के "जो जैनोमां कोइपण आवो प्रजाववाळो होय, तो श्वेतांबरो (जैनो)ने आ देशमां रहेवा देवा, नहीं तो ते सर्वेने देश बहार काढी मूकवा जोइए." आवुं वचन मानतुंग आचार्य-ना सांजळवामां आव्युं. तेथी तेने जैनशासननो प्रजाव वधारवानी इच्छा थइ. ए-टले ते सूरिए राजसजामां आवी राजा पासे पोताना शरीरपर चुमाळीश बेडीओ नंखावी. तथा एक ओरडामां बीजो ओरडो बीजामां त्रीजो एम चुमाळीशमा ओरडामां पोते रह्या. अने ते दरेक ओरडे ताळां मराव्यां. पछी सूरिए भक्तामर स्तोत्र रच्युं.तेना दरेक श्लोके एक एक बेडी तुटवा मांडी अने एक एक ताळुं तुटी

एक एक ओरडो उघडवा मांड्यो. छेवट चुमाळीशमा श्लोके सर्व बेडीओ तथा सर्व ताळां तुटी गयां. एटले सूरि महाराज सभामां आवी पहोंच्या. तेथी जैनशासननो मोटो प्रभाव प्रकट थयो.

आ विषय उपर बप्पभट्ट सूरिनो पण प्रबंध छे. ते आ प्रमाणे—

बप्पभट्ट सूरि प्रबंध.

मोढेरा गाममां श्री सिद्धसेन सूरि श्री वीरस्वामीने वांदवा पधार्या, ते वखते तेमनी पासे एक छ वर्षनो बाळक आव्यो. तेने सूरि महाराजे पूछ्युं के 'तुं कोण छे ? अने अहीं केम आव्यो छे ?' त्यारे ते बाळक बोल्यो के "पांचाल देशमां डुंब नामे एक गाम छे. त्यां बप्प नामे एक क्षत्रिय वसे छे, तेने भट्टी नामनी स्त्री छे. तेमनो हुं सूरपाळ नामे पुत्र छुं. हुं मारा पिताना शत्रुने हणवा माटे तैयार थयो. ते वखते मारा पिताए मने अटकाव्यो, अने पोते शत्रुने हणवा गया. तेथी मने घणो क्रोध चड्यो. तेथी मारी माताने पण कह्या विना हुं रीसाइने अहीं आव्यो छुं." ते सांभळीने सूरिए विचार्युं के 'आ बाळकनुं तेज (प्रताप) मानुषी (मनुष्य जेवुं) नथी पण कोइ दैवी अंश (शक्ति)वाळो जणाय छे.' एम विचारीने गुरुए तेने कह्युं के 'हे वत्स! त्यारे तुं अमारी पासे रहे.' ते सांभळीने ते बाळक तेमनी पासे रह्यो. सूरिए तेने भणाववा मांड्यो. ते हमेशां एक हजार श्लोक कंठे करवा लाग्यो. तेनी एवी तीव्र बुद्धि जोइने गुरु बहु ज प्रसन्न थया. पछी तेना मावापने समजावीने गुरुए तेने दीक्षा आपी. ते वखते तेना मावापे पोतानुं नाम राखवा प्रार्थना करी. तेथी गुरुए तेनुं बप्पभट्टी नाम राख्युं. पछी एकदा गुरुए तेने सरस्वती देवीनो मंत्र आप्यो. तेनो तेणे यथाविधि जाप कर्यो, तेथी देवी प्रत्यक्ष थइ तेने वरदान आपीने अदृश्य थइ.

एकदा बप्पभट्टी मुनि देवकुळ (देरासर)मां जइ प्रभुनी स्तुति करता हता. ते वखते तेमनी पासे गोपगिरि (ग्वालीयर गढ)ना राजा यशोवर्मानो पुत्र आम नामनो कुमार पोताना पितानी शिक्षाथी रीसाइने क्रोधथी आव्यो. त्यां देवकुळमां बप्पभट्टीनी पासे प्रशस्ति काव्यो वांचवा लाग्यो. आम कुमार काव्यनो रसिक होवाथी बप्पभट्टीनी साथे तेने प्रेम बंधायो. पछी ते बप्पभट्टीनी साथे उपाश्रयमां आव्यो. त्यां गुरुना पूछवाथी तेणे पोतानुं वृत्तांत कह्युं. तेमां पोतानुं नाम

लेवानी जरुर पडी, ते वखते तेणे खडीवडे पोतानुं नाम लखीने गुरुने जणाव्युं, पण पोताना मुखथी तेणे पोतानुं नाम लीधुं नहीं, तेथी गुरु घणा प्रसन्न थया. पछी वप्पभट्टीनी साथे तेने पण गुरुए शास्त्रनो अभ्यास कराववा मांड्यो. एकदा आम कुमारे पोताना मित्र वप्पभट्टी मुनिने कह्युं के 'हुं ज्यारे राज्य पामीश त्यारे ते राज्य हुं तमने आपीश.' पछी केटलेक काळे आम कुमारने राज्य मळ्युं. त्यारे तेणे वप्पभट्टीने तेडाव्या अने सिंहासनपर बेसवा माटे प्रार्थना करी. त्यारे वप्पभट्टी बोल्या के "अमने सूरिपद मळ्या पछी सिंहासनपर बेसवानो अधिकार छे, ते पहेलां अमाराथी बेसी शकाय नहीं." ते सांभळीने राजाए श्री सिद्धसेन गुरु पासे प्रार्थना करी तेमने सूरिपद अपाव्युं. पछी वप्पभट्टी सूरिने सिंहासनपर बेसाडीने राजाए प्रार्थना करी के 'हे स्वामी! आ राज्य आप ग्रहण करो.' सूरि बोल्या के 'हे राजा! अमे अमारा देहने विषे पण निःस्पृह छीये, तो पछी अमारे राज्यने शुं करवुं?' ते सांभळीने राजा अत्यंत आश्चर्य पाम्यो. पछी गुरुना उपदेशथी राजाए एकसो आठ हाथ उंचो एक जैन प्रासाद कराव्यो, अने तेमां अढार भार सुवर्णनी श्री महावीर स्वामीनी मूर्ति स्थापन करी.

एकदा राजाए पोतानी राणीने म्लान मुखवाळी जोइने ते विषे गुरुने समस्या पूछी के 'अज्जवि सा परितप्पइ, कमलमुही अप्पणो पमाएण' (ते कमळना सरखा मुखवाळी स्त्री हजु सुधी पण पोतानाज प्रमादथी परिताप पामे छे.) ते सांभळीने जेने सरस्वती देवी प्रसन्न थयेल छे, एवा आचार्य बोल्या के 'पुव्व विबुद्धेण तए, जा से पच्छाइयं अंगं' (हे राजा! आजे तमे प्रातःकाळे राणीनी पहेलां जाग्या हता, ते वखते राणीनुं कोइ अंग उघाडुं थयुं हतुं, ते अंग तमे ढांक्युं तेथी तेणी हजु सुधी म्लानमुखवाळी छे.) ते सांभळीने राजा आश्चर्य पामी लज्जित थयो. पछी फरीथी एकदा राजाए पगले पगले मंद मंद चालती राणीने जोइने सूरिने पूछ्युं के 'बाला चंकमती पए पए कीस कुणइ मुहं तंगं' (हे पूज्य! ते स्त्री चालती वखते पगले पगले मुखने वांकुं करे छे, तेनुं शुं कारण?) त्यारे गुरु बोल्या के 'नूणं रमणपएसे मेहलिया छिवइ नहपंति' (हे राजा! खरेखर तेणीना रमण प्रदेशे—गुह्यस्थाने नखक्षत थयेला छे, ते स्थाने तेणीनी कटीमेखळा घसाय छे, तेथी ते चालती वखते मुखने मचकोडे छे.) ते सांभळी राजाना मनमां कांइक कोप उत्पन्न थयो. तेथी गुरुपर तेनो अनादर

थयो. राजानो गुप्त कोप जाणीने सूरिए पोताना उपाश्रयना दरवाजापर एक श्लोक लखी त्यांथी विहार कर्यो. ते श्लोक आ प्रमाणे हतो—

आम स्वस्ति तवास्तु रोहणगिरे मत्तः स्थितिं प्रच्युता-
वर्तिष्यन्त इमे कथं कथमपि स्वप्नेऽपि मैवं कृथाः ।
श्रीमत्ते मणयो वयं यदि भवल्लब्धप्रतिष्ठस्तदा
के शृंगारपरायणाः क्षितिभुजो मौलौ करिष्यन्ति न ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे आम राजा ! तारुं कल्याण थाओ. (अहीं अन्योक्तिथी राजापर घटावे छे.) मणिओ रोहणगिरिने कहे छे के—हे रोहणगिरि! तारुं कल्याण थाओ. अने माराथी छुटा पमेला आ मणिओ हवे क्यां जशे ? तेमनी शी दशा थशे ? एम तुं स्वप्नमां पण धारीश नहीं. केमके ताराथी प्रतिष्ठा पामेला अमे श्रीमान् मणिओ छीये. तेथी अलंकार करवाना लालचु एवा कया राजाओ अमने पोताना मुकुटपर धारण नहीं करे ? बधा करशे. " (आ अन्योक्तिथी आम राजाने सूरिए समजाव्युं के—तारी पासेथी छुटा पड्या पछी अमारुं शुं थशे ? एम तारे कदी धारवुं नहीं. केमके अमे मणि जेवा छीये, तो पछी अमने घणा राजाओ मान आपशे. इत्यादि.)

त्यांथी विहार करीने श्री बप्पभट्टी सूरि गौमदेशमां गया. त्यां धर्मराजा राज्य करतो हतो. सूरिने आवेला जाणीने राजाए पोताना नगरमां रहेवा माटे घणा आग्रह पूर्वक प्रार्थना करी, ने त्यां राख्या. तेना आग्रहथी ज्यां सुधी आमराजा पोते बोलाववा न आवे त्यां सुधी त्यांथी विहार न करवो एवी प्रतिज्ञा करीने सूरि त्यां रह्या.

अहीं आमराजाने खबर थया के ' गुरु महाराज द्वारपर एक श्लोक लखीने विहार करी गया छे. ' ते जाणीने तेणे ते श्लोक वांच्यो. त्यारे तेना मनमां ते अति दुःखी थयो. एकदा आमराजा वनमां गयो हतो. त्यां एक कृष्ण सर्प तेना जोवामां आव्यो. ते सर्पनुं मुख राजाए दृढ मूठीथी पकमी तेने एक वस्त्रमां ढांकी सभामां आवीने राजाए सर्व पंडितोने समस्या पूछी के—

शस्त्रं शास्त्रं कृषिर्विद्याऽन्यद्वा यो येन जीवति ।

शस्त्र, शास्त्र, कृषि (खेती), विद्या अथवा बीजुं कांइ के जेनावडे जे (मनुष्य) जीवे छे. (अर्थात् आ बधानुं शुं करवुं ? एवो प्रश्न आ समस्यामां छे.)

आ समस्या कोइपण पंडिते राजाना अभिप्राय प्रमाणे पूर्ण करी नहीं, त्यारे राजाए पटह वगडाव्यो के "आ समस्याने जे कोइ मारा मनना अभिप्राय प्रमाणे पूर्ण करशे, तेने लक्ष सोनामहोर इनाम मळशे." ते सांभळीने कोइ एक द्यूतकारे (जुगारीए) सूरि पासे जइने ते समस्या पूछी. एटले सरस्वतीनी कृपाथी सूरिए ते आ प्रमाणे पूर्ण करी—

सुगृहीतं च कर्तव्यं, कृष्णसर्पमुखं यथा ॥ १ ॥

ते शस्त्र विगेरेने (आजीविकाना हेतुरूप छे तेओने) कृष्ण सर्पना मुखनी जेम सारी रीते ग्रहण करवां. (एटले के राजाए जेम कृष्ण सर्पनुं मुख सारी रीते ग्रहण कर्युं. तेम शस्त्रादिक आजीविकाना कारणने पण सारी रीते ग्रहण करवां.) के जेथी आजीविका बराबर चाली शकशे.

पछी ते द्यूतकारे आमराजा पासे आवीने ते समस्या पूर्ण करी. ते सांभळीने राजाए ते द्यूतकारने अत्यंत आग्रहथी धमकी आपीने पूछ्युं के 'आ समस्या कोणे पूर्ण करी ? सत्य वात कहे.' त्यारे तेणे खरी वात जाहेर करी. ते सांभळीने राजाने विचार थयो के "गुरु आटलावधा दूर छे, तोपण तेणे कृष्ण सर्पनी वात कही, तो मे जे तेमनापर वहेम राख्यो हतो ते केवळ खोटोज छे." इत्यादि विचार आववाथी राजाने घणोज पश्चात्ताप थयो. पछी गुरुने बोलावी लाववा-माटे आमराजाए पोताना प्रधानोने मोकल्या, अने तेमनी साथे एवुं कहेवराव्युं के—

छायाकारण शिर धर्यां, पत्त वि भूमि पडंत ।
पत्तह एहु पडत्तणं, वरतरु कांइ करंत ॥ १ ॥

भावार्थ—"हे गुरु ! वृक्षोए मुसाफरोने छाया करवा माटे पोताना शिरपर पांदडांने धारण कर्यां. ते पांदडां त्यांथी भूमिपर खरी पडे, तो तेमां वृक्ष शुं करे ? ते तो पत्रनुंज पडवापणुं छे"

इत्यादि अन्योक्तिवडे गुरुने विज्ञप्ति करवा प्रधानोने मोकल्या. प्रधानोए

ते प्रमाणे गुरुने जइ विज्ञप्ति करी. त्यारे गुरुए कह्युं के " तमारे आमराजा पासे जइने आ प्रमाणे कहेवुं—

अस्माभिर्यदि कार्यं वस्तदा धर्मस्य भूपतेः ।
सभायां छन्नमागत्य, स्वयमापृच्छ्यतां द्रुतम् ॥ १ ॥

जाते प्रतिज्ञानिर्वाहे, यथायामस्तवान्तिकम् ।
प्रधानाः प्रहिताः पूज्यैरिति शिक्षापुरस्सरम् ॥ २ ॥

भावार्थ—" हे आम राजा ! जो तारे अमारुं काम होय, तो तारे जाते धर्म राजानी सभामां गुप्त रीते आवी अमने आमंत्रण करवुं. तेम थवाथी अमारी प्रतिज्ञा पूर्ण थशे, एटले अमे तमारी पासे आवशुं. आ प्रमाणे शिक्षा आपीने पूज्य गुरुए प्रधानोने पाछा मोकल्या. "

पछी प्रधानोए आवीने गुरुनुं वाक्य आम राजाने संभळाव्युं. एटले तरतज गुरुना दर्शन माटे उत्कंठित थयेलो आम राजा उंटपर चढीने धर्मराजाना नगरमां आव्यो. पछी प्रातःकाळे राजा अने सूरि सहित सर्व सभा भराइ हती, ते वखते स्थगीधरनुं रूप धारण करीने आम राजा पोताना घणा माणसोने साथे लइ राजसभामां आव्यो. तेने दूरथी ज जोइने सूरिए धर्मराजाने कह्युं के ' एते आमनृपा नराः—आ सर्व आमराजाना माणसो अमने बोलाववा माटे आवे छे. ' तेटलामां ते सर्व सभामां दाखल थया, तेमां प्रथम स्थगीधर (आमराजा) हतो. तेने जोइने सूरि बोल्या के ' आगच्छाम=आम आवो. (तेनो गूढ अर्थ—हे आमराजा ! तमे आवो, ए हतो.) ' एम बोली तेने सन्मान आप्युं. एटले ते स्थगीधर गुरु नजीक बेठो. पछी दूते गुरुना हाथमां विज्ञप्तिपत्र आप्यो, ते गुरुए धर्मराजाने बताव्यो. पछी धर्मराजाए दूतने पूछ्युं के ' तमारा आमराजा केवा रुप रंगवाळा छे ? ' त्यारे ते बोल्यो के 'हे राजा ! जेवा आ स्थगीधर छे, तेवाज छे' पछी स्थगीधरना हाथमां बीजोरुं हतुं, ते जोइने गुरुए पूछ्युं के 'आ तमारा हाथमां शुं छे ?' तेणे जवाब दीधो के ' बीजोरा (बीजो—रा एटले राजा. अर्थात् हुं बीजो राजा छुं.) ' पछी दूते आढकी (तुअर)नां पांदडांमां वींटेल पत्र देखाड्यो. ते जोइने राजाए गुरुने पूछ्युं के ' ए शुं छे ? ' त्यारे गुरुए स्थगीधरनी सन्मुख अंगुलि करीने कह्युं के

'तुअरिपत्र'[1] (तुवेरनां पांदडांमां वींटेलो कागळ—तेनो बीजो अर्थ तुं अरि एटले तारा शत्रुनो पत्र के० कागळ छे.')

आ प्रमाणे सर्व गूढार्थथी जणाव्युं, पण सरळपणाने लीधे धर्मराजा कांइ पण समज्यो नहीं. छेवट आमराजा सभामांथी ऊठीने धर्मराजानी वेश्याने घेर पोतानुं एक कंकण (कडुं) आपीने रात्रिवासो रह्यो. प्रातःकाळे वेश्याने घेरथी नीकळी बीजुं कंकण राजद्वारना द्वारपाळने आपीने आमराजा पोताना नगर तरफ चाल्यो.

बीजे दिवसे राजसभामां जइ गुरुए धर्मराजाने कह्युं के 'हे राजा! अमारी प्रतिज्ञा पूर्ण थइ छे माटे हवे अमे आम राजा पासे जइशुं.' ते सांभळीने धर्मराजाए पूछ्युं के 'हे गुरु! आम राजा आव्याविना आपनी प्रतिज्ञा शी रीते पूर्ण थइ?' त्यारे गुरुए 'आम जाते आव्यो हतो.' एम कहीने सर्व गुह्य वाक्योनो बीजो अर्थ राजाने समजाव्यो. तेज वखते वेश्याए तथा द्वारपाळे पण आवीने आमराजानां नामवाळां बन्ने कंकण धर्मराजानी पासे रजु कर्यां. तेथी धर्मराजाने ते वातनी खात्री थइ. धर्मराजाए गुरुने कह्युं के 'हे गुरु! हुं वचनना छळथी (कपटथी) छेतरायो छुं.' पछी धर्मराजानी रजा लइने गुरु विहार करी आम राजाने रस्तामांज मळ्या. अने तेमनी साथे ग्वालीयर गया. त्यां प्रथमनी जेम आमराजाए भक्तिपूर्वक गुरुने बहुमानथी राख्या.

एकदा त्यां शुंबनुं टोळुं आव्युं. तेमां एक सुंदर मातंगी बाळा अति मधुर स्वरे गायन करवा लागी. ते जोइने आमराजा कामातुर थइ बोल्यो के—

> वक्त्रं पूर्णशशी सुधाधरलता दन्ता मणिश्रेणयः
> कान्तिः श्रीर्गमनं गजः परिमलस्ते पारिजातद्रुमः ।
> वाणी कामदुघा कटाक्षलहरी सा कालकूटच्छटा
> तत्किं चन्द्रमुखि त्वदर्थममरैरामन्थि दुग्धोदधिः ॥१॥

भावार्थ—"चंद्र समान मुखवाळी हे स्त्री! तारुं मुख पूर्णिमाना चंद्र

1 धर्मराज अने आमराजा परस्पर शत्रु हता. तेथी आवां छूपां गूढोक्तिवाळां वचनो बोलेलां हता. परंतु तेनो धर्मराजा मात्र सीधो अर्थ समज्यो हतो. गूढ अर्थ समज्यो नहोतो.

जेवुं छे, तारा अधरो सुधा (अमृत) समान छे, तारा दांत मणिनी पंक्ति जेवा छे, तारी कांति लक्ष्मीना जेवी छे, तारी गति (चाल) ऐरावण हाथीना जेवी छे, तारा श्वासनो गंध पारिजात वृक्ष जेवो छे, तारी वाणी कामधेनु जेवी छे, अने तारा नेत्रना कटाक्षनी लहेर काळकूट विषनी छटा जेवी छे (कामी पुरुषोने हत-प्रहत करनारी छे.) तो हे मुग्धा ! शुं तारे माटेज देवताओए क्षीर समुद्रनुं मथन कर्युं छे ? अर्थात् देवोए क्षीरसमुद्रनुं मथन करीने जे रत्नो काढ्यां छे, ते सर्व तारा शरीरना अवयवोमां जोवामां आवे छे. ”

ते सांभळीने सूरिए विचार्युं के अहो ! महा पुरुषोनी मति पण केवी विपर्यास पामे छे ? ’ पछी गायन बंध थयुं, अने सभा विसर्जन थइ. परंतु राजानुं चित्त ते मातंगीपर मोह पामेलुं हतुं, तेथी तेणीनी साथे रहेवा माटे तेणे गामनी वहार एक प्रासाद त्रण दिवसमां तैयार कराव्यो. ते प्रासाद करावबानो हेतु समजीने गुरुए विचार्युं के “ अहो ! आ राजा मारो संग छतां पण कुकर्ममां प्रवर्ते छे तेथी ते अवश्य नरके जशे. माटे कोइपण युक्तिथी तेने प्रतिवोध करुं के जेथी ते आवा नरकना हेतुरुप कुकर्मथी अटके. ” एम विचारीने सूरिए रात्रे गुप्त रीते जइने ते नवा प्रासादना भारवटपर खडीथी तेने प्रतिवोध करवा माटे जळ उपरनी अन्योक्तिवाळा श्लोको लख्या—

शैत्यं नाम गुणस्तवैव भवति स्वाभाविकी स्वच्छता
किं ब्रूमः शुचितां भवन्ति शुचयस्त्वत्सङ्गतोऽन्ये यतः ।
किं चातः परमस्ति ते स्तुतिपदं त्वं जीवितं देहिनां
त्वं चेन्नीचपथेन गच्छसि पयः कस्त्वां निरोध्धुं क्षमः ॥१॥

भावार्थ—“ हे जळ ! तारामां शीतता गुण एकांते रह्यो छे. तारी स्वछता (निर्मळता) स्वाभाविक ज छे. तारी निर्मळता विषे वधारे शुं कहीए ? पण तारा संगथी बीजा लोको पण निर्मळ—पवित्र थाय छे. वळी तुं प्राणीओना जीवितनो आधार छे तो तेथी वधारे तारी शी स्तुति अमारे करवी ? परंतु हे जळ ! जो तुं नीच मार्गे जइश, तो पछी तने रोकवाने कोण समर्थ छे ? ”

लज्जिज्जइ जेण जणे, मइलिज्जई निअकुलक्कमो जेण ।

कंठट्ठिए वि जीए, तं न कुलीणेहिं कायव्वं ॥ २ ॥

भावार्थ—" जे अकार्य करवाथी लोकमां लज्जा पमाय छे, अने जे अकार्य करवाथी पोताना कुळनो क्रम मलीन थाय छे, तेवुं अकार्य कुलीन माणसोए कंठे प्राण आवे (मरवानी तैयारी थाय) तो पण करवुं नहीं." विगेरे.

प्रातःकाळे राजा ते प्रासाद जोवाने माटे गयो. त्यां तेणे ते श्लोको जोया, वांच्या, अने पछी विचार करवा लाग्यो के—' मारा मित्र विना मने आवो बोध कोण आपे ? अरे हुं केवुं अकार्य करवा तैयार थयो ? धिक्कार छे मारा जीवितने ! हवे हुं गुरुने शी रीते मारुं मुख बतावुं ? माटे हवे तो मारा आ कलंकित जन्मने ज धिक्कार छे. " इत्यादि घणी रीते पश्चात्ताप करीने राजाए अग्निमां प्रवेश करवानो निश्चय कर्यो. प्रधानादिकोए ते वात सूरिने आवीने करी. त्यारे गुरु महाराज राजा पासे आवी बोल्या के " हे राजा ! आम आत्महत्या करवाथी शुं फळ मळवानुं छे ? मनथी बांधेलुं कर्म मनथी ज नाश पामे छे. अथवा आ विषे तुं स्मार्त धर्मवाळा ब्राह्मणोने पूछी जो. केमके स्मृतिओमां पण पापनुं प्रायश्चित्त आपेलुं छे. " ते सांभळीने राजाए ब्राह्मणोने बोलावीने तेनुं प्रायश्चित्त पूछ्युं. त्यारे तेओ बोल्या के—

आयःपुत्तलिकां वह्निध्मातां तद्वर्णरूपिणीम् ।
आश्लिष्यन्मुच्यते सद्यः, पापाच्चांडालीसंभवात् ॥ १ ॥

भावार्थ—" लोढानी पुतळीने अग्निमां तपावी अग्निना वर्ण जेवी लाल करीने तेने आलिंगन करे, तो चंडालीना स्पर्शथी उत्पन्न थयेला पापथी माणस तत्काळ मुक्त थाय छे. "

ते सांभळीने राजा तेम करवा तैयार थयो. त्यारे गुरुए तेने कह्युं के " हे राजा ! तें तो संकल्प मात्रथी पाप कर्युं छे. कांइ तेनो संगम कर्यो नथी, तेथी ते पश्चात्ताप करवाथीज मुक्त थयुं छे. तो हवे पतंगीयानी जेम फोगट मृत्यु करवाथी शुं फळ छे ? हवे तुं चिरकाळ सुधी जैनधर्मनुं आचरण कर के जेथी आत्मानुं कल्याण थाय. " ते सांभळीने गुरुनुं वचन मान्य करी राजा पोताने घेर आव्यो.

एकदा राजाए गुरुने पूछ्युं के ' हे गुरु ! हुं पूर्व भवे कोण हतो ? ' त्यारे गुरुए कह्युं के ' आ प्रश्ननो जवाब हुं काले आपीश. ' एम कहीने गुरु उ-

पाश्रये आव्या. रात्रे सरस्वती देवीने पूछीने गुरुए राजानो पूर्वभव जाणी लीधो. पछी प्रातःकाळे सभामां गया. त्यारे गुरुए राजाने तेनो पूर्वभव आ प्रमाणे कह्यो के "हे राजा! पूर्वभवे तुं तापस हतो. तें कालिंजर नामना गिरिना तट उपर शाल वृक्षनी नीचे रहीने एकांतर उपवास करवावडे दोढसो वर्ष सुधी उग्र तपस्या करी हती. त्यांथी आयुषनो क्षय थये, मृत्यु पामीने तुं राजा थयो छे. आ वातनी प्रतीति करवी होय तो ते वृक्षनी नीचे हजु सुधी तारी जटा पडेली छे." ते सांभळीने राजाए पोताना सेवकने मोकली ते जटा मगावी. ते जोइने राजाने खात्री थइ. तेथी ते शुद्ध श्रावक धर्म पाळवा लाग्यो. पछी गुरुना उपदेशथी मोटा आडंबर सहित ते राजाए सिद्धाचळनी यात्रा करी, अने ते वखते दिगंबरीओए दबावेला गिरिनार तीर्थने वाळी श्वेतांबरनुं तीर्थ कर्युं.

आम राजाए राज्यनुं न्यायथी प्रतिपालन करी नमस्कारनुं ध्यान करवामां तत्पर थइ उत्तम धर्मने साध्यो. अने कविनी सभामां सूर्यसमान एवा गुरु पण आयुषने क्षये स्वर्गे गया. आ कथा पूर्वसूरिए रचेला चतुर्विंशति प्रबंधमां सविस्तर आपेली छे.

"कोइथी बोध न पामे एवा आम राजाने प्रतिबोध पमाडी, कवितादिकना गुणे करीने ब्राह्मण वर्गनो पराजय करी, विद्वानोना चक्रवर्ती बप्पभट्टी सूरि शासननी उन्नति करी स्वर्ग सुखने पाम्या."

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे पंचत्रिंशत्तमं
व्याख्यानम् ॥ ३५ ॥

व्याख्यान ३६ मुं.



समकितना पांच भूषणमांना पहेला स्थैर्य नामना भूषण विषे.

धर्माङ्गमेभिर्भूष्यन्ते, भूषणानीति कथ्यते ।
सुरादिभ्योऽप्यक्षोभत्वं, तत्राद्यं स्थैर्यभूषणम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" स्थैर्यादिके करीने धर्म रूपी अंग शोभा पामे छे, माटे ते भूषण कहेवाय छे. तेमां देवादिकथी पण क्षोभ न पामवो, ए पहेलुं स्थैर्य नामनुं भूषण (समकितनुं घरेणुं) कहेवाय छे."

आ स्थैर्य नामना भूषण पर सुलसानुं चरित्र जाणवुं. ते आ प्रमाणे—

तद्दर्शनं किमपि सा सुलसाप येन, साक्षाज्जिनोऽपि महिमानमसमानमस्याः।
नैर्मल्यतःशशिकला न च केतकीस्रग्मालातुलां चहरमूर्ध्निबभारगंगा[1] ॥

भावार्थ—" अलौकिक एवुं ते समकित तो सुलसाए ज प्राप्त कर्युं छे के जेथी तेणीनी निर्मळताने लीधे साक्षात् श्री महावीर स्वामीए पण ते सुलसानो अत्यंत महिमा वधार्यो. पण ते योग्य छे केमके महादेवना मस्तक पर चंद्रनी रेखा, केतकीनी माळा अने गंगा नदी ए त्रण रहेलां छे; पण तेमां निर्मळताने लीधे जेवी गंगा शोभे छे, तेवी चंद्ररेखा के केतकीनी माळा शोभती नथी."

सुलसा चरित्र.

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्रादिक अनेक लोकोथी भरपूर अने श्रीमंत लोकोथी विराजमान एवा राजगृह नगरने विषे श्रेणिक राजा राज्य करता हता. ते समये ते नगरमां नाग सारथि नामे एक श्रावक रहेतो हतो. तेने सुलसा नामनी पत्नी हती. ते सुलसा शीलादिक गुणोथी युक्त हती. परंतु दैवयोगे तेने कांइ पण संतान थयुं नहोतुं. एकदा बीजाना पुत्रोने जोइने तेणीनो पति नाग सारथि शोकातुर थयो. ते जोइने सुलसाए कह्युं के "हे स्वामी! तमे खेद

[1] स्पर्द्धा करता छे.

न करो. आपणो मनोरथ धर्मना आराधनथी फळीजूत थशे." ए रीते पतिने शांत करीने सुलसा निरंतर जिनेश्वरनी त्रिकाळ पूजा करवा लागी, ब्रह्मचर्य पाळवा लागी अने हमेशां आचाम्ल (आंबेल) करवा लागी.

एकदा शक्र इन्द्रे पोतानी सजामां ते सुलसाना सत्वनी श्लाघा करी. ते सांजळीने इन्द्रनो सेनापति हरिणेगमेषी तेणीनी परीक्षा करवा माटे बे साधुनुं रुप धारण करी सुलसा पासे आवीने बोल्यो के 'हे श्राविका! रोगी साधुओने माटे औषधमां लक्षपाक तेलनो खप ढे माटे ते आपो.' ते सांभळीने हर्ष पामेली सुलसा घरमां जइ लक्षपाक तेलनो सीसो लावीने तेने वहोराववा जाय ढे तेटलामां ते देवे दैवी शक्तिथी तेणीना हाथमां रहेलो सीसो पृथ्वी पर पाडी फोडी नांख्यो. एटले सुलसा फरीथी बीजो सीसो लावी, ते पण देवे फोडी नांख्यो. ए प्रमाणे तेणीए सात सीसा आण्या. ते साते ते देवे फोडी नांख्या; तो पण तेणीनो जाव बिलकुल खंडित थयो नहीं. ते जोइने प्रसन्न थयेलो ते देव प्रत्यक्ष थइने बोल्यो के "हे भद्रे! हुं हरिनैगमेषी देव तारी परीक्षा करवा माटे आव्यो हतो. तारो दृढ जाव जोइने हुं तारा पर प्रसन्न थयो छुं; माटे तुं मारी पासे कांइक वरदान माग." त्यारे सुलसा बोली के 'हे देव! जो तमे प्रसन्न थया हो तो मारे पुत्र नथी ते आपो.' ते सांजळीने ते देवे हर्षथी बत्रीश गुटिका (गोळीओ) आपी अने कह्युं के 'आमांथी एक एक गोळी खावी. एटले तेथी एकेक पुत्र थशे.' एम कहीने फोडेला सीसा पाछा हता तेवा करीने ते देव स्वर्गे गयो.

पछी सुलसा ज्यारे ऋतुस्नात थइ त्यारे तेणीए विचार कर्यो के "आ गुटिका एक एक खावाथी बत्रीश वखत गर्भनां तथा सूतिकानां दुःखने सहन करवां पडशे. माटे एक साथे ज बत्रीशे गुटिका खाइ जाउं तो बत्रीश लक्षणवाळो एकज पुत्र थाय." एम धारीने सर्व गुटिकाओ खाइ गइ. तेथी तेने एक साथे बत्रीश गर्ज रह्या. ते गर्जोना अत्यंत जारने लीधे सुलसाने बहु व्यथा थवा लागी. एटले तेणे कायोत्सर्ग करीने ते देवनुं स्मरण कर्युं. तरतज ते देव प्रत्यक्ष थइ तेणीनी व्यथा दूर करीने बोल्यो के "हे सुलसा! तें आ अघटित कार्य कर्युं ढे, केमके बत्रीश गोळी एक साथे खावाथी तने एक साथे बत्रीश पुत्रो थशे, अने तेओनुं आयुष्य सरखुं होवाथी ते सर्वे समकाळेज मृत्यु पामशे. परंतु भवितव्यता दुर्लंघ्य ढे. कह्युं ढे के—

गुणाभिरामो यदि रामभद्रो, राज्यैकयोग्योऽपि वनं जगाम ॥
विद्याधरश्रीदशकन्धरश्च, प्रभूतदारोऽपि जहार सीताम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" अनेक गुणोथी सुंदर अने राज्यने ज योग्य एवा रामचंद्रने पण वनमां जवुं पड्युं. तथा विद्याधर एवा दशकंधर (रावण)ने घणी सुंदर स्त्री ओ हती छतां तेणे सीतानुं हरण कर्युं. (आ सर्व भवितव्यताने लीधेज थयुं.)

आ प्रमाणे कहीने ते देव स्वर्गे गयो. सुलसाए गर्भस्थिति पूर्ण थये बत्रीश पुत्रो एक साथे प्रसव्या. नाग सारथिए ते पुत्रोनो जन्मोत्सव कर्यो. अनुक्रमे ते पुत्रो युवावस्थाने पाम्या. त्यारे तेने बत्रीश बत्रीश कन्याओ परणावी. ते सर्वे श्रेणिक राजाना अंगरक्षक सेवको थया.

एकदा कोइ एक तापसी चेटक राजानी सुज्येष्ठा नामनी पुत्रीनुं चित्र लइने श्रेणिक राजानी सभामां आवी. राजाने ते चित्र जोइने तेणीने परणवानी इच्छा थइ. तेथी राजाए ते विषे अभयकुमारने आज्ञा करी. एटले अभयकुमारे गांधीना वेषे चेडा राजानी विशाळा नगरीमां जइ राजाना अन्तःपुरनी पासे दुकान मांडी. पछी ज्यारे सुज्येष्ठानी दासी तेनी दुकाने कांइ वस्तु लेवा आवे त्यारे अभयकुमार श्रेणिक राजाना चित्रनी पूजा करे. ते जोइने एकदा दासीए तेने पूछ्युं के ' आ कोनुं रुप (चित्र) छे ? ' त्यारे तेणे ' श्रेणिक राजानुं छे ' एम कह्युं. ते सांभळीने दासीए अभयकुमार पासेथी ते चित्र मागी लइने सुज्येष्ठाने बताव्युं. ते जोइने सुज्येष्ठा अत्यंत कामातुर थइने बोली के ' हे दासी ! आ राजा मारो पति थाय, तेवी तुं कांइ पण युक्ति कर. ' ते सांभळीने दासीए ते वात अभयकुमारने जणावी. त्यारे अभये तेणीना अन्तःपुरथी आरंभीने राजगृह नगर सुधी सुरंग करावी. पछी ते रस्ते पिताने अमुक दिवसे त्यां आववानुं जणाव्युं. तेज वखते श्रेणिक राजा पोताना बत्रीश अंगरक्षकोने लइने त्यां आवी पहोंच्या. ते खबर जाणी मोहित थयेली सुज्येष्ठा श्रेणिकनी साथे जवाने तैयार थइ. ते वखते तेनी नानी बेन चेल्लणा बोली के ' हे बेन ! मारो पण एज स्वामी थाओ.' एम कही ते बन्ने बहेनो सुरंगना द्वार पासे आवी. तेवामां सुज्येष्ठा पोताना आभूषणनो करंडीयो (दाबडो) भूली गइ हती. ते लेवा जवा उत्सुक थइ, अने बोली के " हे बहेन ! हुं मारो अलंकारनो करंडीयो लेवा जाउं छुं, मां-

रा विना तुं आगळ जइश नहीं." एम कहीने सुज्येष्ठा पाछी गइ. ते वखते सुलसाना पुत्रो के जेओ श्रेणिक राजानी साथे आव्या हता तेओए राजाने कह्युं के 'हे स्वामी ! अहीं शत्रुना घरमां घणीवार रहेवुं योग्य नथी.' ते सांभळीने राजा चेल्लणाने लइने चालता थया. थोडीवारे सुज्येष्ठा पोतानो करंडीयो लइने आवी. पण राजाने के पोतानी वहेनने के कोइने जोयां नहीं. तेथी इर्ष्याने लीधे तेणीए पोकार कर्यो के 'दोडो, दोडो, मारी बेन चेल्लणाने कोइ हरी जाय छे.' ते सांभळीने चेटक राजानुं सैन्य तरतज आव्युं. अने ते सुरंगमां श्रेणिकनी पाछळ पडयुं. ते सैन्य श्रेणिकनी नजीक आवी पहोंच्युं एटले त्यां युद्ध थयुं. तेमां चेटक राजाना सेनापति वैरंगिके सुलसाना एक पुत्रने हण्यो एटले तेज वखते बीजा (वाकीना) एकत्रीश पुत्रो पण मृत्यु पाम्या. श्रेणिक राजा उतावळो चाली पोताना नगरमां आवी पहोंच्यो. अने तरतज तेणे चेल्लणानुं पाणिग्रहण कर्युं.

अहिं पोताना बत्रीशे पुत्रोनुं मरण सांभळीने नाग सारथि तथा सुलसा अत्यंत रुदन करवा लाग्या. ते वखते अभयकुमारे तेमने कह्युं के—"जैनधर्मना तत्वने जाणनारा तथा अनित्यादिक भावनाना भावनारा एवा तमारे अविवेकी मनुष्योनी जेम शोकसागरमां पडवुं युक्त नथी. कह्युं छे के—

कुशकोटिगतोदकबिन्दुवत्, परिपक्वद्रुमपत्रवृन्दवत् ।
जलबुद्बुदवच्छरीरिणां, क्षणिकं देहमिदं च जीवितम् ॥१॥

भावार्थ—"दर्भना अग्र भागपर रहेला जळना बिंदुनी जेम, वृक्षना परिपक्व थयेला पत्रसमूहनी जेम अने जळना बुद्बुद (परपोटा) नी जेम प्राणीओनो आ देह तथा जीवित क्षणभंगुर छे."

ते सांभळीने नाग सारथि तथा सुलसा शोक रहित थया.

एकदा चंपा नगरीमां श्रीमहावीर स्वामीने नमीने अंबड नामनो परिव्राजक जे जैन धर्म पाम्यो हतो ते राजगृही नगरी तरफ चाल्यो. ते वखते श्री जिनेश्वरे तेने कह्युं के—"हे परिव्राजक ! तमे राजगृही नगरीए जाओ छो तो त्यां सुलसा श्राविका रहे छे, तेने अमारो धर्मलाभ कहेजो." ते प्रभुनुं वाक्य अंगीकार करी अंबड परिव्राजके राजगृही नगरीए आवी विचार कर्यो के—"भगवाने पोते जे सुलसाने धर्मलाभ कहेवराव्यो छे, तेणीनी धर्ममां स्थिरता

केवी छे ? तेनी हुं परीक्षा करुं." एम विचारीने ते परिव्राजके नगरनी पूर्वदिशाना दरवाजा बहार वैक्रिय लब्धिथी चार मुखवाळा, हंसना वाहनवाळा, अने जेना अर्धांगमां सावित्री रहेली छे, एवुं साक्षात् ब्रह्मानुं स्वरुप कर्युं. ते जोइने नगरना सर्व लोको ते ब्रह्माने वंदना करवा गया, परंतु जैन धर्ममां दृढ अनुरागवाळी सुलसा घणा मनुष्योना कह्या छतां पण त्यां गइ नाहिं. पछी बीजे दिवसे दक्षिण दिशाना दरवाजा बहार ते परिव्राजके वृषभना वाहनवाळा, अर्धा अंगमां पार्वतीने धारण करनारा तथा आखा शरीरे भस्मथी शोभित एवा शंकरनुं स्वरुप विकुर्व्युं. त्यां पण सुलसा विना सर्व लोको तेने वांदवा गया. पछी त्रीजे दिवसे पश्चिम दिशाना दरवाजा बहार गरुडना वाहनवाळा, चार हाथवाळा अने सुंदर स्त्रीओथी परिवरेला कृष्णनुं स्वरुप विकुर्व्युं. त्यां पण एक सुलसा विना सर्व लोको तेने वांदवा गया. पछी चोथे दिवसे उत्तर तरफना दरवाजा बहार समवसरणमां बिराजेला तीर्थंकरनुं रुप विकुर्व्युं, तो पण ते सुलसा तेने वंदना करवा गइ नाहिं. त्यारे तेने बोलाववा माटे तेणे कोइ माणसने मोकल्यो. ते माणसे जइने सुलसाने कह्युं के "आपणा नगरनी बहार पच्चीशमा तीर्थंकर समवसर्या छे, तेने वांदवा माटे केम जता नथी ?" ते सांभळीने सुलसा बोली के "हे भाइ ! ते जिनेश्वर नथी पण कोइ पाखंडी पच्चीशमा तीर्थंकरनुं नाम धारण करीने लोकोने छेतरे छे." एवी रीते ते सुलसा लेश पण धर्मथी चलित थइ नाहिं. पांचमे दिवसे ते अंबड परिव्राजक श्रावकनो वेष धारण करीने सुलसाने घेर गयो. एटले सुलसाए तेनो सारी रीते सत्कार कर्यो. पछी तेणे सुलसाने कह्युं के "हे सुलसा ! तमे पुण्यशाळी छो, केमके मारे मुखे परमात्मा श्री महावीर प्रभुए तमने धर्मलाभ कहेवराव्या छे." ते सांभळीने हर्षित थयेली सुलसा उभी थइ भक्तिथी प्रभुनी आ प्रमाणे स्तुति करवा लागी.

मोहमल्लबलमर्दनवीर, पापपंकगमनामलनीर ।
कर्मरेणुहरणैकसमीर, त्वं जिनेश्वरपते जय वीर ॥१॥

भावार्थ—"मोहरूपी मल्लना सैन्यनुं मर्दन करवामां शूरवीर, पापरूपी पंकने धोवामां निर्मळ जळ समान अने कर्मरूपी रजनुं हरण करवामां वायु समान एवा हे श्री जिनेश्वर पति ! हे महावीर स्वामी ! आप जयवंता वर्तो."

आ रीते स्तुति करती सुलसानी प्रशंसा करीने ते परिव्राजक पोताने स्थाने गयो.

शीलगुणथी शोभती सुलसा सद्धर्मनुं आराधन करीने स्वर्गे गइ. त्यांथी चवीने आ भरतक्षेत्रने विषे आवती चोवीशीमां निर्मम नामना पंदरमा तीर्थंकर थशे.

" श्री वर्धमान स्वामीना मुख थकी स्थिरता, उदारता अने महार्थताथी भरेलुं, त्रण जगतने आश्चर्य करनारुं आ निर्मळ सुलसानुं चरित्र सांभळीने हे भव्य प्राणीओ ! तमे पण आ श्रेष्ठ धर्मने विषे स्थिरता राखो, के जेथी समकितवडे विभूषित थयेला तमे मुक्ति रुपी स्त्रीना आलिंगन सुखने पामो. "

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे षट्त्रिंशत्तमं
व्याख्यानम् ॥ ३६ ॥

व्याख्यान ३७ मुं.

प्रभावना नामना बीजा भूषण विषे.

अनेकधर्मकार्येण, कुर्यात्तीर्थोन्नतिं सदा ।
प्रभावनाख्यं विज्ञेयं, द्वितीयं सम्यक्त्वभूषणम् ॥१॥

भावार्थ—" धर्मना अनेक कार्यो करवा वडे निरंतर तीर्थनी (जैन शासननी) उन्नति करवी. ते प्रभावना नामनुं समकितनुं बीजुं भूषण जाणवुं. " आनो भावार्थ देवपाळ राजाना प्रबंधथी जाणवो.

देवपाळ राजानी कथा.

अचलपुरमां सिंह नामे राजा राज्य करतो हतो. ते नगरमां जिनदत्त नामे एक श्रेष्ठी हतो. ते राजानो मानीतो हतो. ते श्रेष्ठीने देवपाळ नामनो एक

चाकर हतो. ते हंमेशां वनमां श्रेष्ठीनी गायो चारवा जतो हतो. एकदा वर्षाऋतुमां देवपाळे नदीना कांठा पर श्रीयुगादि जिनेश्वरनुं सूर्यनी कांति जेवुं प्रकाशित बिंब जोयुं. ते जोइने तेणे एक घासनी झुंपडी करी तेमां ते बिंब पधरावी पुष्पादिकथी पूजा करी नियम ग्रहण कर्यो के ' आजथी हमेशां आ प्रभुनी पूजा कर्या विना मारे भोजन करवुं नहिं. ' एवो नियम लइने ते पोताने स्थाने गयो. पछी एकदा घणी वृष्टिने लीधे नदीमां पूर आव्युं तेथी ते देवपाळ नदीने सामे कांठे जइ शक्यो नहिं. तेथी प्रभुना दर्शन न थवाथी शोक करतो ते घरे पाछो गयो. त्यां श्रेष्ठीए तेने भोजन करवानुं कह्युं. त्यारे तेणे पोतानो नियम कहीने भोजननी ना पाडी. ते सांभळीने हर्षित थयेला श्रेष्ठीए तेने कह्युं के ' आपणा गृहचैत्यनी पूजा करी ले. ' ते सांभळीने तेणे गृहचैत्यनी पूजा करी पण भोजन कर्युं नहिं. एम करतां सात दिवस वीती गया. तो पण नदीनुं पूर उतर्युं नहीं. तेथी ते सातदिवस सुधी भोजन रहितज रह्यो. आठमे दिवसे पूर उतर्युं त्यारे प्रातःकाळे देवपाळ ते पर्णकुटीमां आदिनाथनी पूजा करवा गयो. त्यां तेणे एक भयंकर सिंहने जोयो. पण तेनाथी जरा पण डर्या विना तेनी शीयाळनी जेम अवगणना करीने तेणे प्रभुनी पूजा करी. पछी ते बोल्यो के—

त्वद्दर्शनं विना स्वामिन्ममाभूत्सप्तवासरी ।
अकृतार्था यथारण्यभूमिरुहफलावलिः ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे स्वामी ! आपना दर्शन विना अरण्यमां रहेला वृक्षोना फळ समुदायनी जेम मारा सात दिवसो अकृतार्थ (निष्फळ) गया. "

ते वखते तेना सत्त्व अने भक्तिथी प्रसन्न थयेलो कोइ देव बोल्यो के ' हे भद्र ! हुं तारा पर प्रसन्न थयो छुं माटे तुं वरदान माग. ' त्यारे देवपाळे कह्युं के ' हे देव ! जो प्रसन्न थया हो तो मने आ नगरनुं राज्य आपो. ' ते सांभळीने देव बोल्यो के ' आजथी सातमे दिवसे तने अवश्य राज्य मळशे. ' एम कहीने देव अदृश्य थयो. देवपाळे पण पोताने स्थाने जइ भोजन कर्युं.

सातमे दिवसे ते गामनो अपुत्रीयो राजा मरण पाम्यो. तेथी प्रधान विगेरेए पंचदिव्य प्रकट कर्यां. ते फरतां फरतां अरण्यमां ज्यां देवपाळ ढोर चारतो हतो त्यां आव्यां. एटले हाथीणीए देवपाळ पर कळश ढोळ्यो. तेथी प्रधानोए

तेने राज्याभिषेक करी गादीपर बेसाड्यो. ते देवपाळ राजा थयो, परंतु ते प्रथम चाकर हतो; तेथी तेनी आज्ञा कोइ मानतुं नहिं. तेथी तेणे खेद युक्त थइ राज्य आपनार देवने संभार्यो. ते प्रकट थयो, एटले तेने कह्युं के "हे देव ! मारे तमारुं आपेलुं राज्य जोइतुं नथी, मने पाछुं चाकरपणुंज आपो, केमके ज्यां मारी आज्ञा कोइ माने नहिं, त्यां राज्यने शुं करवुं ?" ते सांभळीने देवे कह्युं के "हुं कहुं तेम तुं कर, एटले तारी आज्ञा सर्व कोइ मानशे. तारे कुंभार पासे माटीनो एक मोटो हाथी जेवडो हाथी कराववो, पछी तेनापर बेसीने फरवुं, एटले सौ कोइ तारी आज्ञा मानशे." देवपाळे ते प्रमाणे कर्युं. एटले दिव्य प्रभावथी ते माटीनो हाथी गंध हस्तिनी जेम मार्गमां चालवा लाग्यो. ते जोइ सर्व लोको आश्चर्य पामी तेनी आज्ञा मानवा लाग्या. पछी ते देवपाळ राजाए पोताना पूर्वना स्वामी श्रेष्ठीने प्रधानपद आप्युं, अने नदीने कांठे झुंपडीमां स्थापन करेला बिंबने लावी गाममां एक मोटो भव्य प्रासाद करावी तेमां स्थापन कर्युं. ते जिनबिंबनी त्रिकाळ पूजा करीने ते देवपाळ राजाए जिनशासननी प्रभावना करी.

ते देवपाळ राजा पूर्वना राजा सिंहनी पुत्री साथे परणीने तेणीनी साथे भोगविलास करवा लाग्यो. एकदा ते राणी राजानी साथे पोताना महेलना गोखमां उभी हती, तेवामां एक वृध्ध पुरुष पोताने माथे काष्ठनो भारो लइने महेल पासेथी नीकळ्यो. तेने जोइने राणी तरतज मूर्छा पामी. राजाए शीत उपचार करीने तेणीने सज्ज करी. त्यारे तेणीए ते वृद्धने महेलमां बोलावी तेनी समक्ष पोतानुं वृत्तांत राजाने कही संभळाव्युं के "हे स्वामी ! हुं पूर्वभवे आ पुरुषनी स्त्री हती. ते वखते में तमे जे बिंबनी पूजा करोछो तेज बिंबनी पूजा करी हती. ते पूजाना प्रभावथी आ भवे हुं राजपुत्री थइने आपनी राणी थइ छुं. पूर्वभवे में आ पुरुषने घणुं कह्युं हतुं पण तेणे बीलकुल धर्म अंगीकार कर्यो नहिं, तेथी ते हजु सुधी आवी अवस्था भोगवे छे." ते सांभळीने ते वृध्ध काष्ठवाहक कांइक धर्मनो रागी थयो.

देवपाळ राजाए अनुक्रमे परमात्मानी पूजा प्रभावना करीने तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन कर्युं. अने भांते प्रव्रज्या ग्रहण करीने स्वर्गे गयो.

"रंक एवो देवपाळ पण जिनेश्वरनी पूजाना प्रभावथी तेज भवे अश्व हस्ती विगेरे सैन्यथी व्याप्त एवुं राज्य पाम्यो अने जिनमतनी प्रभावना करवाथी तीर्थंकर

नाम कर्म उपार्जन कर्युं. तेवी रीते अन्य जव्य प्राणीओए पण जिनधर्मनी प्रजावना करवी, जेथी अक्षय सुख प्राप्त थाय."

॥ इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे सप्तत्रिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ३७ ॥

व्याख्यान ३८ मुं.

क्रियाकुशळता रूपी त्रीजा जूषण विषे.

कौशल्यं विद्यते यस्य, क्रियास्वावश्यकादिषु ।
द्वितीयेतरमाचर्यमेतत्सम्यक्त्वजूषणम् ॥ १ ॥

जावार्थ—" आवश्यकादिक क्रियाओने विषे जेनी कुशळता होय ते समकितनुं त्रीजुं जूषण (जूषणवान्) कहेवाय छे. तेनुं जव्यप्राणीए आचरण करवुं." आ संबंधमां उदायी राजानी कथा छे. ते नीचे प्रमाणे—

उदायी राजानी कथा.

राजगृह नगरमां कोणिक राजानी राणी पद्मावतीए पूर्णसमये पुत्रने जन्म आप्यो. तेनुं नाम उदायी पाड्युं. एकदा कुणिक राजा पोतानो डाबी जंघा उपर उदायी कुमारने वेसाडी जोजन करवा बेठो हतो. तेणे अर्धुं जोजन कर्युं एटलामां ते बाळके घीनी धारानी जेम राजानी थाळीमां मूत्रनी धारा करी. ते वखते वत्सलताने लीधे राजाए ते बाळकने मूतरवाज दीधो, जरा पण हलाव्यो नहिं. केमके हलाववाथी मूत्रनो निरोध थाय. अने तेथी व्याधि उत्पन्न थाय. पछी राजाए ते मूत्रवाळुं जोजन हाथवडे काढी नांखी बाकीनुं जोजन कर्युं. 'अहो ! मोहनो विलास केवो छे ?' पछी स्नेहथी परवश थयेला राजाए पोतानी माता चेलणाने कह्युं के " हे माता ! आ पुत्रनापर मारो जेवो स्नेह छे, तेवो स्ने-

ह कोइनो हतो नहिं, छे नहिं, अने थशे पण नहिं. " ते सांभळीने चेलणा देवी बोल्या के " हे वत्स ! तारो स्नेह शी गणत्रीनो छे ? जेवो स्नेह तारा पिताने तारापर हतो, ते स्नेहना करोडमे अंशे पण तारो तारा पुत्रपरनो स्नेह नथी." कोणिके पूछ्युं 'हे माता ! मारापर मारा पिताने स्नेह केवो हतो ? ' त्यारे चेलणा बोल्या के " हे वत्स ! ज्यारे तुं मारा गर्भमां हतो, त्यारे मने तारा पितानां आंतरडां खावानो दोहद थयो हतो. ते कोइ प्रकारनी युक्तिथी अभयकुमारे तारा पितानुं रक्षण करीने पूर्ण कर्यो हतो. पछी पूर्ण समये तारो जन्म थयो त्यारे ' आ पुत्र तेना पितानुं अहित करनार थशे ' एम धारीने में तने तरतज दासीने आपी उद्यानमां तजी दीधो. त्यां एक कुकडाए तारी टचली आंगळीने चांचथी करडी. ते आंगळीमां कीडा पडवाथी ते पाचवाळी थइ गइ. में तने तजी दीधानो वृत्तांत तारा पिताना जाणवामां आव्यो. एटले तेणे मारी निर्भत्सना करी पोतेज तने उद्यानमांथी पाछो लइ आव्या. पछी स्नेहने आधीन थयेला तारा पिता सर्व राजकार्यनो त्याग करी तारी आंगळीनी सारवार करवा लाग्या. परंतु ते आंगळीनी असह्य व्यथाने लीधे तुं घणोज रोवा लाग्यो. एटले तारा पिताए ते आंगळी पोताना मुखमां राखी, त्यारे तुं रोतो बंध थयो. अने तने कांइक पीडानी शांति थइ. आ रीते रात दिवस ते आंगळी पोताना मुखमांज राखीने तारा पिताए तने आराम उपजाव्यो. ते वखते में तारा पिताने घणी रीते वार्या, पण तेणे मारुं कहेवुं मान्युं नहिं. एवो तारापर तेनो अपूर्व स्नेह हतो. " इत्यादि हकीकत सांभळीने कुणिक राजा घणो पश्चात्ताप करवा लाग्यो. पछी पोताना पिताने पोते पांजरामां पूरीने राज्यपर बेठो हतो तेथी तेने पांजरामांथी मुक्त करवाना हेतुथी ते हाथमां एक मोटो दंड लइने पांजरा तरफ दोड्यो. तेने तेवी रीते यमराजनी जेम आवतो जोइने ते कुपुत्रना हाथथी अपमृत्युए मरवा करतां जातेज मरवुं उचित धारी श्रेणिके तरतज तालपुट विषनुं आस्वादन कर्युं. तरतज ते मृत्यु पाम्या. पिताने आत्मघातथी मृत्यु पामेला जोइ पोताना दुराचरणनी निंदा करतो अने पिताना स्नेहनुं स्मरण करतो कुणिक अत्यंत विलाप करवा लाग्यो. रात दिवस महा शोक करी अत्यंत दुःखने अनुभवता कुणिकराजाने जोइने मंत्रीओए तेनो शोक ओछो करवा माटे राजगृहीथी राजधानी फेरवीने चंपानगरी नामनी नवी राजधानी वसावी. त्यां रहेवाथी कुणिकनो शोक ओछो थयो.

कुणिक राजा महा बळवान हतो. तेणे अनुक्रमे दक्षिण भरतार्धना सर्व राजाओने जीती लीधा. पछी पोताना बळथी तेणे कृत्रिम चौदे रत्नो बनाव्यां, अने 'हुं आ भरतक्षेत्रमां संप्रत नामनो तेरमो चक्रवर्ती थयो छुं' ए रीते गर्वथी बोलवा लाग्यो. पछी वैताढ्य पर्वतनी तमिस्रा गुहाना द्वार पासे जइ तेणे द्वारना बंध कमाड पर जोरथी दंडनो प्रहार कर्यो. ते जोइ ते गुफाना अधिष्ठायक कृतमाळ देवने अति क्रोध चड्यो. तेथी तेणे तेने तेजक्षणे बाळीने भस्म करी नांख्यो. पछी मंत्रीओए तेनी गादी पर बाळक छतां पण उदायी कुमारने स्थापन कर्यो. ते उदायी पण निरंतर पिताना स्नेहनुं स्मरण करी शोकातुर रहेवा लाग्यो. तेथी तेना शोकने दूर करवाना हेतुथी मंत्रीओए नवी राजधानी करवानो विचार करी शिल्प शास्त्रमां निपुण एवा शिल्पीओने राजधानीने योग्य एवा क्षेत्र (भूमि) नी शोध करवा माटे मोकल्या. ते शिल्पीओ पण उदयवाळी भूमिने शोधतां शोधतां गंगा नदीने कांठे आव्या. त्यां अर्णिकासुत नामना महामुनिए काळ कर्यो हतो. तेनां अस्थि ते स्थाने पड्यां हतां. तेना पर एक पाटल नामनुं वृक्ष उग्युं हतुं. ते वृक्ष पर पोपट बेठा हता. ते पोपटना मुखमां आवी आवीने पतंगीआओ स्वयमेव पडता हता. ते जोइने ते शिल्पीओए विचार कर्यो के "जेम आ पतंगीआओ पोतानी मेळेज पोपटोना आहार माटे आवे छे तेम जो अहीं नगर कर्युं होय, तो तेना राजा पासे पण शत्रुओनी लक्ष्मीओ आयास विनाज भोगववा लायक थाय, अर्थात् प्राप्त थाय." एम विचारीने ते शिल्पीओए ते ज स्थाने राजधानीनुं खात मुहूर्त्त करीने पाटल वृक्षना नामथी पाटलीपुर नामनुं नगर वसाव्युं. पछी उदायी राजा त्यां आवीने राज्य करवा लाग्यो.

ज्यारथी उदायी राजा पाटलीपुरमां आव्यो त्यारथी तेना प्रताप रूपी सूर्यना उदयने नहीं सहन करता शत्रु राजाओ घुवडनी जेम अंध थइ गया. उदायी राजाए प्रतिदिन दान, युध्ध ने धर्मनो घणो विस्तार कर्यो. जैनधर्मनी पृथ्वीपर सर्वत्र प्रभावना करी. सद्गुरु पासे बार व्रतो अंगीकार कर्या. ते व्रतना खंडनमां कदापि पण प्रवर्त्यो नहीं. तेनुं समकित अत्यंत दृढ हतुं. चार पर्वणीने विषे कायम चतुर्थ (उपवास) करी, देवगुरुने वंदना करी, छ आवश्यकनी क्रिया करी, पौषध ग्रहण करीने आत्माने पवित्र करतो हतो. तेणे अंतःपुरमां ज पौषधशाळा करावी हती. तेमां रात्रिने समये विश्रांति लइने साधुनी जेम संथारो करतो

हतो. आ प्रमाणे ते जैनधर्मनी सर्व क्रियाओमां अत्यंत कुशळ थयो हतो.

उदायी राजाए रणसंग्राममां कोइ राजाने मार्यो हशे, तेनो पुत्र पितानुं वेर लेवा माटे अहर्निश चिंता कर्या करतो हतो. पण उदायी राजाने मारवाने ते शक्तिमान थयो नहोतो. छेवट अन्य स्थान नहीं पामवाथी ते उज्जयिनीमां जइने त्यांना राजानी सेवा करवा लाग्यो. एकदा तेणे अवंतिना राजाने विज्ञप्ति करी के "हे स्वामी ! जो आपनी आज्ञा होय तो आपना शत्रु उदायी राजाने हुं मारी नाखुं. परंतु जो हुं तेम करुं तो मारा पर कृपा करीने आपे मने मारा पितानुं राज्य पाछुं मेळववामां मदद करवी." ते सांभळीने ते राजाए हर्षथी तेनुं वचन कबूल कर्युं. पछी तेने केटलुंक द्रव्य आपीने त्यांथी विदाय कर्यो. ते राजपुत्र पाटलीपुरमां जइने उदायी राजानो सेवक थइ निरंतर तेनां छिद्र जोवा लाग्यो. परंतु ते कांइ पण छिद्र पाम्यो नहीं. परंतु राजाना गृहने विषे निरंतर अस्खलित गतिए जता आवता जैन मुनिओने तेणे जोया; बीजा कोइनो तेमां प्रवेश थतो दीठो नहीं. पछी उदायी राजाना गृहमां प्रवेश करवानी इच्छावाळा ते राजपुत्रे कपटथी मुनि थवानो विचार करीने गुरु पासे जइ वंदना करीने विज्ञप्ति करी के "हे पूज्य ! हुं संसारथी वैराग्य पाम्यो छुं, माटे मारा पर अनुग्रह करीने मने दीक्षा आपी कृतार्थ करो." ते सांभळीने ते कृपाळु महात्माए तेनो हृद्गत भाव जाण्या विना तेने दीक्षा आपी. ते मायावीए कपटथी पोताना ओघामां गुप्त रीते एक कंकलोहनी छरी संतामी राखी हती. एवी रीते मायाथी तेणे सोळ वर्ष सुधी व्रतनुं पालन कर्युं, तो पण तेनी माया कोइना जाणवामां आवी नहीं. कह्युं छे के—

> दत्तं प्रधानं श्रामण्यं, न तच्चालक्षि केनचित् ।
> सुप्रयुक्तस्य दंभस्य, ब्रह्माप्यन्तं न गच्छति ॥ १ ॥

भावार्थ—"उत्कृष्ट चारित्र आप्युं, तोपण तेनी माया कोइए जाणी नहीं. केमके अत्यंत गुप्त करेला कपटने ब्रह्मा पण जाणी शकता नथी."

कपटमांज मननी एकाग्रताने राखता अने अस्थिर चित्तवाळा ते मायावी साधुए यथास्थित व्रतनुं चिरकाळ पालन कर्युं. तोपण कांगरु मगनी जेम

तेनो एक वाळ पण दयाना रसथी आर्द्र थयो नहीं. एकदा गुरु पाटलीपुरे पधार्या. तेमनुं आगमन सांभळीने उदायी राजा गुरुने वांदवा आव्यो. अने गुरुने तथा बीजा साधुओने वंदना करी पछी गुरुना मुखथी व्याख्यान सांभळी पोताने स्थाने गयो. अन्यदा पर्वणीने दिवसे राजा प्रातःकाळे उठी विधिपूर्वक प्रतिक्रमण करी अष्ट प्रकारी जिनपूजा करी गुरु पासे गयो. त्यां गुरुने चारसो ने ओगणत्रीश स्थानकवडे उपशोभित द्वादशावर्त वंदना करी, अतिचार आलोवी, गुरुने खमावीने चतुर्थ (उपवास)नुं पच्चख्खाण लीधुं. पछी सायंकाळे पोताना अंतःपुरनी पौषधशाळामां पौषध ग्रहण करवानी इच्छाथी राजाए गुरुने बोलाव्या. कह्युं छे के—

जं किंचि अणुठाणं, आवस्सयमाइयं चरणहेउ ।
तं करणं गुरुमूले, गुरुविरहे ठवणापुरओ ॥ १ ॥

भावार्थ—" चरणना हेतुरुप जे कांइ आवश्यकादिक अनुष्ठान करवुं होय ते गुरुनी समक्ष करवुं. गुरुने अभावे स्थापनाचार्यनी पासे करवुं. "

राजाना आमंत्रणथी सूरि महाराज महेलमां आव्या. अने सोळ वर्षथी चारित्र लइ विनयथी गुरुनी एकांत सेवा करनार ते मायावी विनयरत्न नामना साधुने साथे लइ गया. पछी राजाए गुरुने अभिवंदना करी शास्त्रोक्त विधिपूर्वक पौषध लइ गुरु साथेज प्रतिक्रमण कर्युं. अने पहेलो प्रहर वीत्या पछी प्रतिलेखना करी संथारो पाथरीने ते पर कुर्कुटनी जेम चरणने संकोचीने सुइ गयो. सूरि पण धर्म संभळावीने बीजे पहोरे सुइ गया. ते समये पेलो दुष्ट मायावी कपटथी थोडीवार सुइ रही ' आज पिताना वैरीनुं वेर लेवानो समय छे ' एम विचारी निद्रावश थयेला राजाना कंठपर कंकलोहनी छरी मूकी दीधी. पछी ते पापी अभव्य पौषधशाळामांथी नीकळी स्थंडिल जवानुं मीष वतावी द्वारपाळोए नहीं रोकवाथी राजमहेलमांथी नीकळी अनुक्रमे नगरनी पण बहार नीकळी चालतो थयो. अहीं राजाना कंठमांथी रुधिरनो प्रवाह नीकळ्यो. ते गुरुना संथारा सुधी आव्यो. साक्षात् जाणे आपत्तिनोज प्रवाह होय, तेवा ते रुधिरना स्पर्शथी गुरु महाराज जागृत थइ गया. पछी तेवी रीते मृत्यु पामेला राजाने जोइ गुरुए विचार कर्यो के " अहो ! ते दुरात्माए जिनशासनने मलिन करनार अने

युगना अंतसुधी अपकीर्ति करावनार आवुं महा दुष्ट कार्य कर्युं; पण हवे हुं आत्मघात करीने श्री अरिहंत दर्शननी म्लानीनुं रक्षण करुं." एम विचारीने सूरिए भवचरिम पच्चख्खाण करीने तेज छरी पोताना कंठपर मूकी. जेथी तत्काळ देह छोडीने स्वर्गे गया. प्रातःकाळे राजसेवकोए तेवुं अमंगळिक कार्य जोइने पोकार कर्यो. जेथी सर्व एकत्र थइ गया. तपास करतां जणायुं के पेला दुष्ट साधु वेषधारीए आ अकार्य कर्युं छे. तेनी घणी शोध करी, पण तेनो पत्तो लाग्यो नहीं.

पेलो दुष्ट अभव्य त्यांथी नाशीने उज्जयिनीए पहोंच्यो. अने त्यांना राजाने पोते उदायी राजाने मारीने आव्या संबंधी सर्व वृत्तांत यथास्थित कही वताव्युं. ते सांभळीने ते राजाए तेनो अत्यंत तिरस्कार करी कह्युं के "अरे दुष्ट! तने धिक्कार छे. अरे अप्रार्थ्य (मृत्यु)ना प्रार्थनारा! काळी चौदशना जन्मेला महा पापी! तारुं मुख काळुं कर. हे पापीष्ठ! धर्मना मीषथी धर्म करता एवा उदायी राजानो तें घात कर्यो! आवुं अधर्म कार्य करनार तुं मारा देशमांथीज चाल्यो जा." इत्यादि अत्यंत निर्भर्त्सना करीने तेने पोताना देशमांथी काढी मूक्यो. 'पापी पुरुषोने कोइ पण स्थाने इच्छितनी सिद्धि थतीज नथी.' ते दुष्ट अभव्य हतो तेथी बार[1] वर्ष सुधी आगमनुं श्रवण कर्युं, कराव्युं, अनेक प्रकारनी धर्मक्रिया करी, परंतु ते सर्व निष्फळ गयुं.

उदायी राजा तथाप्रकारनी धर्मक्रियामां कुशळ होवाथी मृत्यु पामीने देवलोकमां गयो. तेनी गादीपर नंद राजा थयो.

"आ प्रमाणे घणी पृथ्वीने भोगवनार श्री उदायी राजाना आश्चर्यकारक मनोहर चरित्रने कमळनी जेम कर्णमां धारण करीने हे पंडित पुरुषो! श्री जैनधर्मनी सर्व क्रियाने विषे कुशळतानो विस्तार करी समकितने शोभावो, के जेथी तमने मनवांछित लक्ष्मी आनंदथी आलिंगन आपे."

---

१ प्रथम सोळवर्ष लखेला छे.

॥ इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे अष्टत्रिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ३८ ॥

व्याख्यान ३९ मुं.



अरिहंतादिकने विषे अंतरंग भक्ति रूप चोथा भूषण विषे.

यथार्हमर्हदादीनां, यद्भक्तिरान्तरीयकी ।
अलंकारश्चतुर्थः स्यात्सम्यक्त्वगुणद्योतकः ॥ १ ॥

भावार्थ—"यथायोग्य अर्हदादिकनी जे अभ्यंतर भक्ति करवी, ते सम्यक्त्व गुणने उद्योत करनार चोथुं भूषण कहेवाय छे."

धर्म पर अंतरंग प्रीति विषे एक स्त्रीनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

एक स्त्रीनुं दृष्टांत.

राजपुर नगरमां अमिततेज नामे राजा हतो. ते नगरमां एक परिव्राजक मंत्रनो जाणनारो हतो. ते विद्याना बळथी नगरमां सर्वत्र चोरी करतो हतो अने लोकोनी रूपवंत स्त्रीओनुं हरण करतो हतो. कह्युं छे के—

जं जं पासइ जुवमणतेणिं, अलिउलसामलकुंतलवेणिं ।
भालत्थलअठ्ठमिससिकरणिं, मयणंदोलत्तोलियसवणिं ॥ १ ॥
रूवविणिज्जियसुरवरतरुणिं, रइरससायरतारणतरणिं ।
तणुपहदासीकयनवतरणिं, तं तं सामिय हरइ स रमणिं ॥ २ ॥

भावार्थ—"भ्रमराना समूह जेवो जेनो श्याम केशपास छे, जेणीनुं कपाळ अष्टमीना चंद्र जेवुं शोभे छे, कामदेवना आंदोलन (हींचका) जेवा जेणीना कर्ण छे, जेणीए पोताना स्वरुपथी देवांगनाओने जीती लीधी छे, जे क्रीडारसना सागरने तरवामां प्रवहण समान छे, जेणे शरीरनी कांतिथी नवा उगता सूर्यने पण दासरूप कर्यो छे, एवी जे जे युवती स्त्रीओने ते जोतो, ते ते स्त्रीओनुं ते हरण करतो हतो."

तेना दुःखथी व्याकुळ थयेला पौरजनोए राजाने विज्ञप्ति करी, त्यारे राजा पोते ते चोरनी शोध करवा नीकळ्यो. पांचमे दिवसे राते राजाए कोइ पुरु-

पने गाममांथी सुगंधी वस्तुओ, तेल अने तांबूल विगेरे लेतो जोयो. तेज पुरुषने चोर जाणीने राजा तेनी पाछळ चाल्यो. ते पुरुष अरण्यमां जइ एक मोटी शिला-थी ढांकेला पोताना गुप्तगृहमां जवा माटे ते शिलाने उपाडवा जतो हतो, तेट-लामां राजाए खड्ग वडे तेनो शिरच्छेद कर्यो. पछी राजाए पौरजनोने बोलावीने ते गुप्तगृहमांथी सौ सौनी वस्तुओ आपी. तथा सर्व स्त्रीओने बहार काढी जेनी हती तेने सोंपी. तेमां एक स्त्री ते परिव्राजकना कामणथी अस्थि मज्जा पर्यंत तेना पर रागी थइ हती, तेथी तेणीए परिव्राजकनी पाछळ बळी मरवानो नि-श्चय कर्यो, पण पोताना स्वामी पासे रहेवानी तेणीनी इच्छा थइ नहीं. तेवामां कोइ मंत्र जाणनारे तेना स्वामीने कह्युं के "जो ते परिव्राजकना अस्थिने पाणी-मां वाटीने तेणीने पावामां आवशे तो ते परिव्राजके करेलुं कामण दूर थशे अने स्वस्थता पामशे." ते सांभळीने ते स्त्रीना भर्तारे तेम कर्युं. एटले तेणीनो स्नेह परिव्राजक परथी उतरी गयो अने पोताना भर्तार पर थयो.

आ दृष्टान्तनो उपनय (तात्पर्य) ए छे के जेम ते स्त्रीए परिव्राजकनी उपर दृढ अनुराग कर्यो हतो, तेवो दृढ अनुराग जो जैनधर्म पर करवामां आवे, तो अवश्य मोक्षपदनी प्राप्ति थाय.

आ संबंधमां जीर्ण श्रेष्ठीनी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

जीर्ण श्रेष्ठीनी कथा.

ध्यातः परोक्षेऽपि जिनस्त्रिभक्त्या, जीर्णाभिधश्रेष्ठिवदिष्टसिद्ध्यै।
सिन्धुप्रवृद्ध्यै कुमुदौघलक्ष्म्यै, चकोरतुष्ट्यै विधुरभ्रगोऽपि ॥१॥

भावार्थ—"जेम वादळमां रहेलो पण चंद्र सागरनी वृद्धिने माटे, कुमु-दना समुहनी लक्ष्मी माटे (तेना विकास करवा माटे) अने चकोर पक्षीनी प्रीतिने माटे थाय छे तेम परोक्ष रहेला जिनेश्वरनुं पण मन, वचन कायावडे शुद्ध भक्तिथी ध्यान कर्युं होय, तो ते जीर्णश्रेष्ठीनी जेम इष्टसिद्धिने माटे थाय छे."

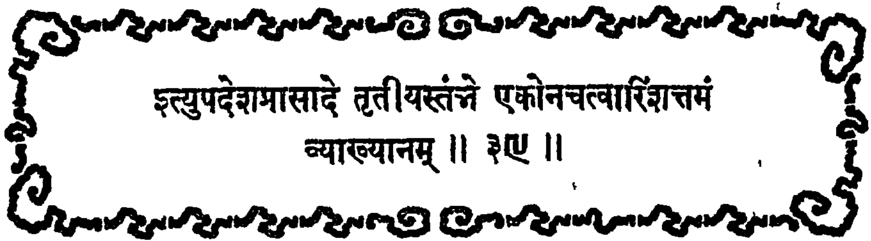
विशाला नगरीना उद्यानमां श्री महावीर स्वामी चातुर्मासी तप करीने प्रतिमा धारण करी रह्या हता. ते नगरना रहेवासी जीर्णश्रेष्ठीए प्रभुने जोइ विज्ञ-प्ति करी के "हे प्रभु ! आजे पारणा माटे मारे घेर लाभ देवा पधारजो." एम

कहीने ते श्रेष्ठी पोताने घेर गयो. नोजन समये तेणे घणी वार सुधी प्रनुनी राह जोइ पण प्रनु तो आव्या नहीं. त्यारे बीजे दिवसे 'आजे बठ्ठनुं पारणुं हशे' एम धारी प्रनु पासे जइ बोल्या के 'हे कृपासागर स्वामी! आजे मारा घरने अने मने पवित्र करवा पधारजो.' ते वखते स्वामी तो मौन धारीनेज रह्या. (कांइ बोल्या नहीं.) ए रीते ते जीर्णश्रेष्ठी हमेशां आवीने जिनेश्वरने निमंत्रण करतो हतो. तेम करतां चातुर्मास पूर्ण थयुं त्यारे चातुर्मासने अंते तेणे विचार कर्यो के 'अवश्य आजे जिनेश्वरने पारणानो दिवस होवो जोइए' एम धारी तेणे प्रनुने कह्युं के "दुर्वार संसार रूपी व्याधिने दूर करवामां धन्वंतरी वैद्य समान हे स्वामी! कृपा दृष्टिथी मारा सामुं जोइने आजे तो जरूर मारी विज्ञप्ति मनमां अवधारजो." एम कहीने ते पोताने घेर गया. मध्यान्ह समये हाथमां मोतीनो थाळ लइ प्रनुने वधाववा माटे घरना द्वार पासे उन्ना रही विचार करवा लाग्या के "आजे विश्व-बंधु नगवान अहीं पधारशे, तेमने हुं परिवार सहित वंदना करीश, पछी प्रनुने हुं घरमां पधरावीश, पछी श्रेष्ठ नोजन अने जळवमे हुं तेमने प्रतिलान्नीश अने बाकी रहेलुं अन्न हुं खाइश." इत्यादि मनोरथनी श्रेणीपर आरूढ थइने तेणे बारमा देवलोकने योग्य एवुं कर्म उपार्जन कर्युं. तेवामां श्री नगवान् अभिनव ना-मना श्रेष्ठीने घेर निक्षा माटे पधार्या. ते श्रेष्ठीने घेर समय थइ जवाथी सौ जमी रह्या हता तेथी कांइ अन्न नहीं होवाथी थोमा बाकी रहेला अमदना बाकळा वहोराव्या. ते दानना प्रन्नावथी त्यां पंच दिव्य प्रकट थयां. ते वखते दुन्दुभिनो शब्द सांभळीने जीर्णश्रेष्ठीए विचार कर्यो के "मने धिक्कार बे, हुं अधन्य बुं, के जेथी मारे घेर प्रभु पधार्या नहीं." एम विचारतां तेना ध्याननो नंग थयो.

अन्यदा ते गाममां कोइ ज्ञानी मुनि पधार्या. तेनी पासे राजाए कह्युं के "हे पूज्य! मारुं नगर धन्य छे के ज्यां श्री महावीर प्रनुने पारणुं करावनार नाग्यशाळी अन्निनव श्रेष्ठी वसे बे." ते सांनळीने ते मुनि बोल्या के "हे रा-जा! एम न बोलो. जो के ते अन्निनव श्रेष्ठीए प्रनुनी द्रव्यन्नक्ति करी बे, परंतु नावन्नक्ति तो जीर्णश्रेष्ठीएज करी बे. माटे खरो पुण्यवान तो जीर्णश्रेष्ठी बे. जो जीर्णश्रेष्ठीए ते समये नावना नावतां देवदुंदुन्निनो शब्द सांनळ्यो न होत, तो तेज वखते तेने उज्वळ एवुं केवळज्ञान प्राप्त थयुं होत." आ प्रमाणे गुरुनुं वा-क्य सांनळीने राजा विगेरे लोको देवगुरुनी नक्तिने विषे आदरवंत थइ पोताने

स्थाने गया.

" श्री प्रभुने विषे भक्तियुक्त चित्तवाळो जीर्णश्रेष्ठी बारमा स्वर्गनुं सुख भोगवीने अनुक्रमे शिवपद (मोक्ष)ने पामशे. "



इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे एकोनचत्वारिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ३९ ॥

व्याख्यान ४० मुं.

पांचमा तीर्थसेवारूप समकितना भूषण विषे.

तीर्थानां सततं सेवा, संगः संविग्नचेतसाम् ।
कथिता तीर्थसेवा सा, पंचमं बोधिभूषणम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" निरंतर तीर्थोनी सेवा करवी, तथा संविग्न छे चित्त जेनुं एवा मुनिओनो संग करवो, ते तीर्थसेवा नामनुं पांचमुं समकितनुं भूषण कहेलुं छे. "

जेनाथी संसाररूपी सागर तरी शकाय छे ते तीर्थ कहेवाय छे. श्री शत्रुंजय, अष्टापद विगेरे तीर्थो छे. तेनी निरंतर (अश्रांतपणे) सेवा एटले यात्रा करवी. संविग्नचित्तवाळा साधुओनो संसर्ग करवो. कह्युं छे के—

साधूनां दर्शनं पुण्यं, तीर्थभूता हि साधवः ।
तीर्थं फलति कालेन, साधवस्तु पदे पदे ॥ १ ॥

भावार्थ—" साधुओनुं दर्शन पुण्यरूप छे, केमके साधुओ जंगमतीर्थरूप छे. स्थावर तीर्थ तो काळे करीने फळदायक थाय छे, पण जंगम तीर्थ साधुओ तो पगले पगले फळदायी थाय छे. "

आ प्रमाणे सत्तीर्थनी सेवा मोटो गुण उत्पन्न करे छे. परंतु अप्रशस्त तीर्थनी सेवा कांइपण गुणकारक थती नथी. ते उपर एक दृष्टांत कहे छे—

लौकिक तीर्थसेवापर तुंबडीनो दृष्टांत.

न श्लाघ्यतीर्थैरमलीभवन्ति, जीवा दुरन्तैर्दुरितैः प्रलिप्ताः ।
मीष्टा सुतीर्थे स्नपितापि मातुर्वाग्भिस्तनूजेन न तुंबिकासीत् ॥१॥

भावार्थ—" दुरन्त पापोथी लिप्त थयेला जीवो प्रशस्त तीर्थो करवाथी पण निर्मळ थता नथी. माताना वचनथी पुत्रे सुतीर्थमां स्नान कराव्युं तोपण तुंबडी (कडवी तुंबडी) मीठी थइ नहीं. "

विष्णुस्थळ नगरमां गोमती नामे एक सार्थवाहनी स्त्री परम श्राविका हती. तेने गोविंद नामनो पुत्र हतो. ते गाढ मिथ्यात्वी हतो. माताए तेने जैन धर्म पमाडवा माटे घणो घणो प्रतिबोध कर्यो, पण तेणे मिथ्यात्वनो त्याग कर्यो नहीं. एकदा गोविंद तीर्थयात्रा करवाने जवा तैयार थयो. त्यारे तेने तेनी माताए कह्युं के " हे वत्स ! गंगा, गोदावरी, त्रिवेणीसंगम, प्रयाग, विगेरे लौकिक तीर्थमां जळ, दर्भ अने माटी विगेरे वडे स्नान करवाथी हिंसा, असत्य, चोरी, विगेरेथी बंधायेलां पापोनो नाश थतो नथी. " आ प्रमाणे अनेक रीते उपदेश आप्या छतां ते पुत्रे पोतानो आग्रह मूक्यो नही, त्यारे तेने बोध करवा माटे एक कडवी तुंबडी आपीने कह्युं के " हे पुत्र ! सर्व तीर्थोमां तारी साथेज विधि पूर्वक आ तुंबडीने पण स्नान करावजे. आटलुं मारुं वचन तारे अवश्य करवुं." ते सांभळीने मातानुं वचन अंगीकार करी पोतानी इच्छा प्रमाणे गोविंद तीर्थ यात्रा करवा नीकळयो अने घणा तीर्थोमां माताना कह्या प्रमाणे तुंबडीने पण पोतानीज जेम स्नानादिक कराव्युं. अने पोते केटलेक ठेकाणे मुंडन करावी हाथ उपर घणी छापो मरावी पोताना नगरमां पाछो आव्यो. पछी पोताने घेर आवी माताने विनय पूर्वक वंदन करी तुंबडीनुं वृत्तांत कहीने ते माताने आपी. भोजन वखते गोविंद जमवा बेठो, त्यारे माताए पेली कडवी तुंबडीनुं शाक करीने तेने पीरस्युं. गोविंदे ते शाक लेशमात्र चाख्युं के तरतज ते बोल्यो के ' अरे ! आ तो शाक कडवुं झेर जेवुं छे, ते खाइ शकाय तेवुं नथी. ' त्यारे माता बोली के " हे पुत्र ! जे तुंबडीने तें सर्व तीर्थोमां स्नानादिक कराव्युं छे, ते तुंबडीना शाकमां कडवाश क्यांथी ? " गोविंद बो-

ह्यो--'हे माता ! जळमां नवराववाथी तेनी अंतरनी कडवाश शी रीते जाय ?' माताए कह्युं "हे वत्स ! ज्यारे आनो कडु दोष पण गयो नहीं, त्यारे हिंसा, मृषावाद, चोरी, मैथुन विगेरेथी आत्माने लागेल पाप समूह मात्र स्नान करवाथी शी रीते जाय ?" आ प्रमाणेनुं मातानुं वचन सत्य मानीने गोविंदे माता साथे गुरु पासे जइ श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो. प्रांते ते गोविंद शत्रुंजय तीर्थपर सिद्धि सुखने पाम्यो.

आ प्रसंग उपर बीजो पण एक प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

सुतीर्थनी यात्रा पर त्रिविक्रमनी कथा.

श्रावस्ती नगरीमां त्रिविक्रम नामे राजा हतो. ते एकदा अरण्यमां गयो हतो. त्यां एक पक्षीने तेना माळामां रहीने विरस शब्द करतुं सांभळीने अपशुकन थयुं जाणी राजाए तेने बाण वडे प्रहार कर्यो. एटले तरतज ते पक्षी पृथ्वी पर पडी तरफडीया मारवा लाग्युं. ते जोइने राजाने तेना पर बहु अनुकंपा आवी. तेथी ते पश्चात्ताप करतो त्यांथी आगळ चाल्यो. थोडे दूर जतां एक महामुनिने जोइ तेमने नमन करीने राजा तेमनी पासे बेठो. ते वखते मुनिए तेने अहिंसा धर्मनो उपदेश कर्यो. ते सांभळीने राजाए विचार्युं के "अहो ! में जे हिंसानुं कर्म कर्युं ते कोइना जाणवामां नहोतुं, तोपण आ मुनिए जाणी लीधुं. तो ते पापनो नाश करवा माटे आवा ज्ञानी मुनिनी पासे दीक्षा ग्रहण करुं." एम विचारीने तृणनी जेम राज्यनो त्याग करी राजाए ते मुनि पासे दीक्षा लीधी. अनुक्रमे उग्र तपस्या करवाथी ते राजर्षिने तेजोलेश्या उत्पन्न थइ. पछी ते पृथ्वी पर यथेष्ट विहार करवा लाग्या.

पेलो पक्षी मरण पामीने भिल्ल थयो. एकदा ते राजर्षिने विहार करता देखीने ते भिल्ले पूर्वना वैरने लीधे तेना पर क्रोधयुक्त थइ यष्टि वडे प्रहार कर्यो. तेथी राजर्षिए पोताना मुनिपणाने भूली जइने तेजोलेश्या वडे ते भिल्लने बाळी दीधो. ते मृत्यु पामीने कोइ वनमां सिंह थयो. त्यां पण एकदा ते राजर्षिने जोइ ते सिंह पूंछडुं उछाळतो तेनी सामे धस्यो. ते वखते पण मुनिए तेजोलेश्याथी तेने बाळी नांख्यो. त्यांथी मरीने ते सिंह हाथी थयो. ते हाथी एकदा ते मुनिने जोइ तेनी सामे दोड्यो. तेने पण मुनिए बाळी नांख्यो. पछी ते हाथी वननो

सांढ थयो, तेने पण मुनिए बाळी दीधो. त्यांथी ते सांढ सर्प थइ मुनिने करडवा दोड्यो. ते वखते पण मुनिए तेने हण्यो. त्यार पछी ते सर्प ब्राह्मण थयो. ते मुनिनी घणी निंदा करवा लाग्यो. अनुक्रमे तेने पण मुनिए बाळी भस्म कर्यो. 'अहो ! निर्विवेकीने संवर क्यांथी होय ?'

आ प्रमाणे ते मुनिए ममता रहित छतां सात हत्याओ करी. योगीश्वर थइने पण आवां पाप कर्मो कर्यां. 'अहो ! कर्मनी गति केवी विचित्र छे ?' पछी ते ब्राह्मण यथाप्रवृत्तिकरणने लीधे शुभ कर्मना उदयथी वाराणसी पुरीमां महाबाहु नामे राजा थयो. ते राजा एकदा पोताना महेलनी बारीमां उभो हतो ते वखते कोइ मुनिने जता जोइने इहापोह करवाथी तेने जातिस्मरण उत्पन्न थतां तेणे पोताना साते भवो जोया. एटले 'अहो ! ते मुनिने हुं पापनुं कारण थयो.' एम विचारी ते मुनिनी शोधने माटे तेणे अर्धो श्लोक करी ते श्लोक पूरो करनारने लाख सोनामहोर आपवानी उद्घोषणा करावी. ते अर्धो श्लोक आ प्रमाणे—

"विहगः शबरः सिंहो, द्वीपी संढः फणी द्विजः ।"

आ अर्धा श्लोकने पूर्ण करवा माटे सर्व जनो निरंतर हालता चालता पण बोल्या करता हता. परंतु कोइए ते श्लोक पूर्ण कर्यो नहीं. अन्यदा तेज राजर्षि फरता फरता वाराणसी नगरी पासे आव्या. त्यां गाम बहार कोइ एक गोवाळना मुखथी तेणे ते अर्धो श्लोक सांभळ्यो. एटले क्षणवार विचार करीने मुनिए आ प्रमाणे उत्तरार्ध पूर्ण कर्युं के—

"येनामी निहताः कोपात्, स कथं भविता हहा ॥"

ते उत्तरार्ध सांभळीने कोइ गोवाळे राजा पासे जइ ने श्लोक पूर्ण करी आप्यो. अने 'आ समस्या में पूर्ण करी.' एम धृष्टताथी तेणे राजाने कह्युं. ते सांभळीने राजाए विस्मित थइ तेने दबावीने पूछ्युं त्यारे तेणे ते मुनिनुं नाम लइ सत्य वात कही. पछी राजा ते मुनि पासे गयो अने तेमने खमाव्या. साते भवनी वात राजाए तेमने निवेदन करी. एटले मुनिए पण राजाने खमाव्यो. ए रीते ते बन्नेए परस्पर पोतपोताना अपराधनी निंदा गर्हा करतां प्रीतिथी चिरकाळ सुधी वातो करी.

ए समयमां ते नगरीए कोइ केवळज्ञानी मुनि पधार्या. तेमने वंदना करीने ते बन्नेए पोतपोताना पापनी आलोयण मागी. त्यारे केवळी बोल्या के 'तमारुं पाप शत्रुंजय तीर्थे गया विना उग्र तपोथी पण नाश पामे तेम नथी.' ते सांभळीने राजाए दीक्षा लीधी. पछी ते बन्ने जणा शत्रुंजयादिक तीर्थोनी यात्रा करी भावथी संयमनुं प्रतिपालन करी हत्यादिक पापनो नाश करीने शत्रुंजय तीर्थे सिद्धिपदने पाम्या.

" आ प्रमाणे समकितना छेल्ला भूषण—तीर्थसेवानी प्रशंसा सांभळीने हे भव्य जीवो ! कुविकल्पना समूहनो त्याग करीने सुतीर्थनी सेवा करो. "

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे चत्वारिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ४० ॥

व्याख्यान ४१ मुं.

समकितना पांच लक्षणमांना पहेला शम नामना लक्षण विषे.

शमैः शाम्यति क्रोधादीन्नपकारे महत्यपि ।
लक्ष्यते तेन सम्यक्त्वं, तदाद्यं लक्षणं भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे मोटा अपकार करनार उपर पण शमभाव राखीने क्रोधादिकने शांत करे, तेनामां शम नामनुं पहेलुं लक्षण कहीए. तेनाथी समकित ओळखाय छे. अर्थात् एवो शम जेनामां होय ते समकितवंत छे एम जाणी शकाय छे. "

आ प्रसंग उपर कुरुघट मुनिनो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

कुरगडु मुनिनी कथा.

विशाला नगरीमां कोइक आचार्यना शिष्य मासक्षपणने पारणे एक क्षु-

ल्लक साधुनी साथे स्थंडिल जता हता. मार्गमां प्रमादने लीधे ते तपस्वीना पग तळे एक नानी देडकी आववाथी मरी गइ. ते जोइने क्षुल्लक साधु ते वखते कांइ पण न बोलतां मौन रह्या. प्रतिक्रमण वखते ते तपस्वीए ते पापनी आलोयण ली-धी नहीं. त्यारे तेने क्षुल्लक साधुए याद आप्युं के " हे तपस्वी ! तमे पेलुं पाप त्रिकरण शुध्धि पूर्वक केम आलोचता नथी ? " ते सांभळीने ते तपस्वीए विचा-र्युं के "आ दुष्ट बुध्धिवाळो क्षुल्लक साधु सर्व साधु समक्ष मारुं वगोणुं करे छे माटे तेने हुं हणुं. " एम विचारीने तपस्वी मुनि तेने मारवा दोड्या. क्रोधथी अन्ध थयेला ते तपस्वीने वचमां थांभलो आववाथी तेनी साथे ते जोरथी अथडाया, एटले तरतज मूर्छा खाइने मृत्यु पाम्या. क्रोधने लीधे व्रतनी विराधना करवाथी ते मरीने ज्योतिषी देवता थया. त्यांथी आयुष्य पूर्ण थये चवीने दृष्टिविष सर्पना कुळमां देवताधिष्ठित सर्प थया. ते सर्पना कुळमां बीजा सर्वे सर्पो पूर्वभवमां पापनी आलोचना नहीं करवाथीज उत्पन्न थयेला हता. ते सर्वे जातिस्मरण उत्पन्न थवाथी आहार शुध्धि करता हता. तेमने जोइने आ नवा सर्पने पण पूर्वे मुनिना भवमां करेली आहार गवेषणाने संभारतां जातिस्मरण उत्पन्न थयुं. तेथी ' मारी दृष्टिथी कोइपण जीवोनो नाश न थाओ ' एम विचारीने ते सर्प आखो दि-वस बिलमांज मुख राखीने रहेतो हतो, अने रात्रे प्राशुक वायुनुंज भक्षण क-रतो हतो.

एकदा कुंभ नामना राजानो पुत्र सर्पदंशथी मृत्यु पाम्यो. तेथी ते राजा सर्व सर्पजातिपर क्रोध उत्पन्न थवाथी सर्प मात्रने मरावचा लाग्यो. जे कोइ माणस जेटला सर्पने मारीने लावे, तेने राजा तेटला दीनार (महोर) आपे तेम तेणे जा-हेर कर्युं. ते समये केटलाक लोको सर्पने आकर्षण करवानी विद्या (मंत्र)नो अ-भ्यास करवा लाग्या. एकदा कोइ मनुष्य ते दृष्टिविष सर्पना बिल पासे आवी सर्प-विद्यानो मंत्र भणवा लाग्यो. तेथी ते सर्प बिलमां रही शक्यो नहीं. तेणे विचार कर्यो के ' मने जोइने अन्य जीवोनो नाश न थाओ ' एम विचारी तेणे पोतानुं मुख बिलमांज राखी पूछडुं बहार काढ्युं. ते पूछडुं हिंसकोए छेद्युं. फरीथी सर्पे पाछळनो भाग जरा जरा बहार काढवा मांड्यो. एटले ते पण हिंसके काप्यो. एम करतां ते सर्पना आखा शरीरना ककडा करी नांख्या. ते वखते ते सर्प विचारवा लाग्यो के " हे चेतन ! आ देहना ककडा थवाने मीषे ताग दुष्कर्मनाज ककडा

थाय ठे. माटे हे जीव ! परिणामे हितकारक एवी आ व्यथाने तुं समता पूर्वक सहन कर." एम शुज्ज ध्यान ध्यातां ते सर्प मरण पामीने तेज कुंज्ज राजानी राणीनी कुक्तिमां अवतर्यो.

नाग देवताए राजाने स्वप्नमां आवीने कह्युं के 'हवेथी तुं सर्पनो घात करीश नहीं, तने पुत्र थशे.' त्यार पठी राजाए सर्पनी हिंसानो त्याग कर्यो. अनुक्रमे समय पूर्ण थतां राणीए पुत्र प्रसव्यो. राजाए स्वप्नने अनुसारे तेनुं नागदत्त एवुं नाम पाड्युं. ते कुमार अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो. त्यारे एक वखत ते महेलनी बारीमां उज्जो हतो, ते वखते त्यांथी एक मुनिने जता जोइने तेने जातिस्मरण उत्पन्न थयुं. तेथी वैराग्य पामीने ते कुमारे महा प्रयत्नथी माता पितानी आज्ञा लइ सुगुरुनी समिपे दीक्षा ग्रहण करी.

ते साधु तिर्यंच योनिमांथी आवेला हता तेथी तेमज क्षुधावेदनीयनो उदय थवाथी पोरिसीनुं पण प्रत्याख्यान करी शकता नहीं. तेथी तेने गुरुए कह्युं के "हे वत्स ! तुं मात्र एक क्षमानुंज परिपूर्णपणे पालन कर, तेम करवाथी तुं सर्व तपनुं फळ पामीश." ते सांजळी ते गुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवा लाग्या. ते साधु हमेशां प्रातःकाळ थतांज एक गडुक प्रमाण कूर (चोखा) लावीने वापरता हता त्यारेज तेने कांइक शांति थती हती. तेथी लोकमां तेनुं कूरगडुक एवुं नाम पड्युं.

ते गच्छमां चार तपस्वी साधुओ हता. तेमां पहेला साधु मासोपवासी हता, बीजा बे मासना उपवासी हता, त्रीजा त्रण मासना उपवासी हता, अने चोथा चार मासना उपवासी हता. ते चारे तपस्वीओ कूरगडु मुनिने नित्यज्जोजी कहीने तेनी निंदा करता हता. एकदा शासनदेवीए त्यां आवी कूरगडुक मुनिने वंदना करी तथा अनेक प्रकारे तेनी प्रशंसा करी. पठी सर्व साधु समक्ष कह्युं के 'आ गच्छमां आजथी सातमे दिवसे प्रथम एक मुनिने केवळ ज्ञान थशे.' ते सांजळी पेला चारे तपस्वीओ बोल्या के 'हे देवी ! अमारो अनादर करीने तें आ कूरगडुक साधुने केम वंदना करी ?' त्यारे देवी बोली के 'हुं जावतपस्वीने वांदुं बुं.' एम कहीने ते देवी पोताने स्थाने गइ.

सातमे दिवसे कूरगडु मुनिए शुद्ध आहार लावीने गुरुने तथा पेला तप-

स्त्रीओने देखाड्यो. ते वखते पेला तपस्वीओना मुखमां क्रोधथी श्लेष्म (बळखो) आव्यो. ते तेमणे ते आहारमां नांख्यो. ते जोइ कूरगडुए विचार कर्यो के—

धिङ्मां प्रमादिनं स्वल्पतपःकर्मोज्झितः सदा ।
वैयावृत्यमपि ह्येषां ,मया कर्त्तु न शक्यते ॥ १ ॥

" मने प्रमादीने धिक्कार छे. हुं निरंतर जरा पण तपस्याथी रहित छुं, तेमज आ तपस्वीओनी वैयावच्च पण हुं करी शकतो नथी. " इत्यादि आत्मनिंदा करतां अने निःशंकपणे ते आहार वापरतां शुक्लध्यानमां आरुढ थयेला ते मुनिने केवळ ज्ञान प्रगट थयुं. ते वखते देवोए तेनो महिमा कर्यो. ते जोइने पेला चारे तपस्वीओए विचार कर्यो के " अहो ! आ मुनिज खरेखरा भावतपस्वी छे अने आपणे तो द्रव्य तपस्वी छीए. " एम विचारीने ते चारे तपस्वीओए ते केवळीने खमाव्या. ते वखते मन, वचन अने कायानी शुद्धिथी खमावतां ते चारेने पण समकाळे चरम ज्ञान (केवळ ज्ञान) प्रगट थयुं. अनुक्रमे ते पांचे केवळी मोक्षपदने पाम्या.

" शांति, क्षमा, क्षांति, शम विगेरे नामथी आ गुणने सूत्रने विषे समकितना प्रथम लक्षण तरीके वर्णवेलो छे. ते शमगुण धर्मने विषे प्रथम छे, अने छेल्ला ज्ञानने आपनार छे. माटे हे भव्य जीवो ! तमे शमता गुणने धारण करो. "

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे एकचत्वारिंशत्तमं
व्याख्यानम् ॥ ४१ ॥

व्याख्यान ४२ मुं.

समकितना बीजा संवेग नामना लक्षण विषे.

दुःखत्वेनानुमन्वानः, सुरादिविषयं सुखम् ।
मोक्षाभिलाषसंवेगाञ्चितो हि दर्शनी भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे पुरुष देवादिकना सुखने पण दुःख रुपे माने, अने मोक्षना अभिलाप रुप संवेग सहित होय, ते समकितवान कहेवाय छे. "

आ संबंधमां निर्ग्रंथ मुनिनो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

निर्ग्रन्थ (अनाथी) मुनिनी कथा.

राजगृह नगरमां श्रेणिक राजा राज्य करता हता. ते नगरनी बहार उपवनमां क्रीडा करतां राजाए एक मुनिने समाधिमां तत्पर जोया. ते मुनिनुं शरीर अति कोमळ हतुं, अने तेनुं रुप जगतने विस्मय करे तेवुं सुंदर हतुं. तेमने जोइने राजाए विचार्युं के—

अहो अस्य मुने रूपमहो लावण्यवर्णिका ।
अहो सौम्यमहो क्षान्तिरहो भोगेष्वसंगता ॥ १ ॥

भावार्थ—" अहो ! आ मुनितुं रुप ! अहो ! आना लावण्यनी वर्णिका ! अहो ! आनी सौम्यता ! अहो ! एनी क्षमा ! अने अहो ! आनी भोगमां पण असंगता. " अर्थात् ए सर्व अप्रतिम छे.

आ प्रमाणे विचारी तेमने ध्यानमां तत्पर जोइ राजाए तेमना चरणकमळमां प्रणाम करीने पूछ्युं " हे पूज्य! आवी युवावस्थामां तमे आवुं दुष्कर व्रत केम ग्रहण कर्युं ? तेनुं कारण कहो. " त्यारे मुनि बोल्या के—

मुनिराह महाराज, अनाथोऽस्मि पतिर्न मे ।
अनुकंपाकराभावात्तारुण्येऽप्यादृतं व्रतम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" मुनिए कह्युं के हे महाराजा ! हुं अनाथ छुं. मारो कोइ स्वामी नथी. मारापर अनुकंपा करनारनो अभाव होवाथी में युवावस्थामांज व्रत-ग्रहण कर्युं छे. "

ते सांभळीने हास्य करता श्रेणिक राजाए कह्युं के—

वर्णादिनामुना साधो, न युक्ता ते ह्यनाथता ।
तथापि ते त्वनाथस्य, नूनं नाथो भवाम्यहम् ॥ १ ॥
भोगान् भुंक्ष्व यथास्वैरं, साम्राज्यं परिपालय ।
यतः पुनरिदं मर्त्यजन्मातीव हि दुर्लभम् ॥ २ ॥

भावार्थ—" हे साधु ! आ तमारुं रूप विगेरे जोतां तमे अनाथ छो ए वात युक्त जणाती नथी. तोपण जो तमे अनाथ हो, तो हुं तमारो नाथ थवा तैयार छुं. तमे यथेच्छ भोग भोगवो, अने मारा साम्राज्यनुं प्रतिपालन करो. आ मनुष्य जन्म फरीने मळवो अत्यंत दुर्लभ छे. अर्थात् आवी युवावस्था भोग भोगव्या विना निष्फळ जवा देवी योग्य नथी. "

ते सांभळीने मुनि बोल्या के " हे राजा ! तमे पोतेज अनाथ छो तो मारा नाथ शी रीते थइ शकशो ? " आ प्रमाणेनुं कोइ पण वखत नहीं सांभळेलुं वाक्य सांभळीने राजाए आश्चर्य पामीने पूछ्युं के " हे मुनि ! तमारे तेम कहेवुं योग्य नथी. केमके हुं अनेक हस्तीओ, अश्वो, रथो अने स्त्रीओ विगेरेनुं प्रतिपालन करुं छुं, तेथी हुं तेओनो नाथ छुं; मने तमे अनाथ केम कहो छो ? " त्यारे मुनि पण कांइक हास्य करतां बोल्या के " हे राजा ! तमे अनाथ अने सनाथनो मर्म जाणता नथी. माटे ते विषे हुं तमने माराज दृष्टांतथी समजावुं छुं ते सांभळो—

कौशांबी नगरीमां महीपाल नामे राजा मारा पिता छे, तेनो हुं पुत्र छुं. मने बाल्यावस्थामां ज नेत्रनी पीडा थइ. अने तेनी पीडाथी मारा आखा शरीरमां दाहज्वर पेदा थयो. मारी व्यथा दूर करवा माटे अनेक मंत्रवादीओए तथा वैद्योए अनेक उपायो कर्या परंतु तेओ मारी व्यथा दूर करी शक्या नहीं. मारा पिताए मारे माटे पोतानुं सर्वस्व आपी देवानुं कबुल कर्युं, परंतु मने दुःखथी मुक्त

करी शक्या नहीं, माटे हुं अनाथ छुं. मारा पिता, माता, भ्राता, बहेन, अने स्त्री विगेरे सर्व स्वजनो मारी पासे बेसीने रुदन करता हता अने भोजननो पण त्याग करीने मारी पासे ज निरंतर बेसी रहेता हता परंतु तेओ मारा दुःखनो नाश करी शक्या नहीं. तेज मारी अनाथता छे. त्यारपछी में एवो विचार कर्यो के "आ अनादि संसारमां में आ करतां पण अधिक वेदनाओ अनेक वखत सहन करी हशे, पण आजे आटली वेदना पण हुं सहन करी शकतो नथी; तो हवे आगामी काळे अनादि संसारमां हुं आवी वेदना केम सहन करी शकीश ? माटे जो हुं क्षणवार पण आ वेदनाथी मुक्त थाउं, तो तरतज प्रव्रज्या ग्रहण करुं, के जेथी आगामी काळे आवी वेदना सहन करवी पडे नहीं." हे राजा ! आ प्रमाणे विचार करतां हुं सुइ गयो अने तरतज मारी वेदना शांत थइ गइ. तेथी योग ने क्षेमनो करनार होवाथी आ आत्मा ज नाथ छे एवो निश्चय करीने में प्रातःकाळे स्वजनोने समजावी तेमनी रजा लइने चारित्र अंगीकार कर्युं छे. तेथी हवे हुं मारो तथा बीजा त्रसादिक जीवोनो पण नाथ थयो छुं. केमके योग क्षेम करनार मात्र आत्मा ज छे. वळी हे राजा ! बीजी रीते पण अनाथता कहेली छे, ते सांभळो—

प्रव्रज्य ये पञ्च महाव्रतानि, न पालयन्ति प्रचुरप्रमादात् ।
रसेषु गृध्धा अजितेन्द्रियाश्च, जिनैरनाथाः कथितास्त एव॥१॥

भावार्थ—" जेओ प्रव्रज्या ग्रहण करीने अति प्रमादने लीधे पांच महाव्रतोनुं पालन करता नथी, रसोने विषे गृध्ध रहे छे, अने इन्द्रियोने नियममां राखता नथी तेओने ज श्रीजिनेश्वरे अनाथ कहेला छे. "

निरर्थका तस्य सुसाधुता हि, प्रान्ते विपर्यासमुपैति योऽलम् ।
न केवलं नश्यति चेहलोकस्तस्यापरः किंतु भवो विनष्टः॥२॥

भावार्थ—" जे साधु अन्ते विपरीत आचरण करे छे, तेनुं साधुपणुं निरर्थक छे. अने तेथी मात्र आ लोकज तेनो नाश पामे छे एम नहीं, पण तेनो परभव पण नाश पामे छे. "

निराश्रवं संयममात्मबुद्ध्या, प्रपाल्य चारित्रगुणान्वितः सन् ।

क्षिप्त्वाष्टकर्माण्यखिलानि साधुरुपैति निर्वाणमनन्तसौख्यम् ॥३॥

जावार्थ—" चारित्रना गुणोथी युक्त एवो साधु आत्मबुद्धिथी आश्रव रहित संयमनुं प्रतिपालन करीने समग्र आठे कर्मनो क्षय करी, अनंत सुखवाळा निर्वाण (मोक्ष) पदने पामे छे. "

आ प्रमाणे मुनिनां वाक्य सांजळीने श्रेणिक राजा अत्यंत खुशी थयो अने हाथ जोमीने तेणे कह्युं के " हे मुनिराज ! तमे मने जे सनाथ अने अनाथ पणानुं रहस्य कह्युं ते खरेखर सत्य छे. तेमां जरा पण असत्य नथी. हे मुनि ! तमे मनुष्य जन्म पाम्या ते सफळ छे. जगतने विषे तमेज उत्तम लाज पाम्या छो. वळी तमे श्री जिनेश्वरना धर्मने विषे रह्या छो, तेथी तमे ज सनाथ छो अने तमेज बंधु युक्त छो. वळी तमेज खरेखरा चारित्र लीधुं त्यारथी स्थावर अने जंगम एवा अनाथ प्राणीओना नाथ थया छो. तेथी हुं मारा अपराधनो नाश करवा सारु तमने खमावुं छुं. वळी तमारा ध्यानमां विघ्नकारी प्रश्न पूछीने में जे दूषण कर्युं छे तथा सांसारिक जोग जोगववा माटे जे में तमने अघटित निमंत्रण कर्युं छे ते सर्व मारो अपराध क्षमा करो. " आ प्रमाणे कही जक्ति पूर्वक ते मुनिनी स्तुति करीने सर्व राजाओमां चंद्र समान श्रेणिक राजा धर्ममां अनुरक्त थइ पोताना अंतःपुर अने परिवार सहित पोतानी नगरीमां आव्यो.

अमित गुण समूहथी समृद्ध एवा ते निग्रन्थ मुनि पक्षीनी जेम प्रतिबंध रहितपणे पृथ्वी उपर विहार करी त्रण गुप्तिथी गुप्त थइ अने उग्र एवा त्रण दंमथी विराम पामी, मोहादिकनो नाश करी, संवेगना प्रजावथी अनुक्रमे अक्षय सुखवाळा मोक्षपदने पाम्या.

॥ इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे द्विचत्वारिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ४२ ॥

व्याख्यान ४३ मुं.

त्रीजा निर्वेद नामना लक्षण विषे.

संसारकारकागार–विवर्जनपरायणा ।
प्रज्ञा चित्ते भवेद्यस्य, तन्निर्वेदकवान्नरः ॥१॥

भावार्थ—" संसाररुपी कारागृहनुं वर्जन करवामां तत्पर एवी जेना चित्तने विषे दृढ बुद्धि होय छे, ते पुरुष निर्वेदवान् कहेवाय छे. "

सिद्धान्तमां कह्युं छे के " निव्वेएणं भंते जीवे किं जणइ " हे भगवान ! निर्वेदथी जीव शुं उपार्जन करे ? भगवंत कहे छे के " निव्वेएणं ते दिव्वमाणुस्सतिरिच्छएसु कामभोगेसु विरज्जमाणे निव्वेयं हव्वमागच्छइ । सव्वविसएसु विरज्जइ । सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरंभपरिग्गहपरिच्चायं करोति । आरंभपरिग्गह परिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिंदंति सिध्धिमग्गपडिवन्ने य भवति" "निर्वेद थकी देव, मनुष्य अने तिर्यंच संबंधी कामभोगने विषे वैराग्य पामी खरा निर्वेदने प्राप्त थाय छे, अने सर्व विषयोमां विरक्ति पामे छे. सर्व विषयोमां विरक्ति थवाथी आरंभपरिग्रहनो परित्याग करे छे. आरंभपरिग्रहनो परित्याग करवाथी संसार मार्गनो उच्छेद थाय छे, अने सिध्धि (मोक्ष) मार्गनी प्राप्ति थाय छे. " आ प्रसंग उपर हरिवाहन राजानो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

हरिवाहन राजानी कथा.

भोगावती नामनी पुरीमां इन्द्रदत्त नामे राजा हतो. तेने हरिवाहन नामनो पुत्र हतो. ते हरिवाहनने एक सुथारनो पुत्र तथा एक श्रेष्ठीनो पुत्र एम बे मित्रो हता. ते बन्ने मित्रोनी साथे हरिवाहन स्वेच्छाए क्रीडा करतो हतो. ते जोइ राजाए एकदा दुर्वचनथी तेनो तिरस्कार कर्यो. एटले तिरस्कारनुं दुःख सहन न थवाथी हरिवाहन पोताना बन्ने मित्रो सहित मावापना स्नेहनो त्याग करीने त्यांथी चाली नीकळ्यो. चालतां चालतां ते त्रणे मित्रो एक मोटा अरण्यमां जइ पहोंच्या. त्यां तेमणे सूंढने उछाळतो एक मदोन्मत्त हाथी तेमना तरफ आवतो

दीठो. तेथी सुथारनो अने वणिकनो पुत्र तो तेना जयथी कागडानी जेम नाशी गया. अने राजपुत्र तो शूरवीर हतो, तेथी तेणे ते मत्त हाथीने सिंहनाद वडे चेष्टा रहित करी दीधो. पछी पोताना बन्ने मित्रोनी शोध करतो ते राजपुत्र आगळ चाल्यो. परंतु तेमनी शुद्धि तेने मळी नहि. अनुक्रमे जमतां जमतां तेणे एक मनोहर सरोवर जोयुं. ते सरोवरमां स्नान करी राजपुत्र तेनी उत्तर दिशामां रहेला एक उद्यानमां पेठो. ते उद्यानमां सुंदर कमळथी सुशोजित एक वाव दीठी. एटले तेमां ते कौतुकथी उतर्यो. ते वावना मध्य जागमां एक द्वार हतुं. तेमां ते पेठो तो त्यां एक यक्षनुं मंदिर जोयुं. तेवामां रात्री समय थइ जवाथी राजपुत्र ते यक्षना मंदिरमांज सूतो. थोडीवारे नूपुरना रण रण शब्द करती केटलीएक अप्सराओ त्यां आवीने ते यक्षनी पासे नृत्य करवा लागी. नृत्य करी रह्या पछी श्रमनो नाश करवा माटे ते अप्सराओ पोताना घणा किंमती वस्त्रो त्यांज उतारी वावमां नावा पडी. ते वखते राजपुत्रे यक्षमंदिरनुं द्वार उघाडी ते सर्व वस्त्रो उपाडी लीधां, अने मंदिरमां पेसी द्वार बंध करी दीधां. पेली अप्सराओ स्नान करी बहार नीकळीने जुए छे, तो त्यां पोतानां वस्त्रो दीठां नहीं. तेथी तेओ परस्पर बोली के "खरेखर आपणां वस्त्र कोइ धूर्ते हरी लीधां जणाय छे, परंतु ते आपणाथी पण जय पाम्यो नथी तेथी ते दंडथी साधी शकाशे नहीं." एम विचारी साम (मीठ) वाक्योथी तेने लोज पमाडीने ते अप्सराओ बोलवा लागी के 'हे उत्तम पुरुष ! अमारां वस्त्रो आप.' राजकुमारे अंदरथी ज जवाब आप्यो के 'प्रचंड वायु तमारां वस्त्रो हरण करी गयो हशे, माटे तेनी पासे तमे जाओ.' ते सांजळीने तेना साहसथी संतुष्ट थयेली अप्सराओ बोली के " हे वत्स ! अमे तारा साहसथी प्रसन्न थइ छीए माटे आ खड्गरत्न तथा आ दिव्य कंचुक तने आपीए छीए ते ले ने अमारां वस्त्रो आप." ते सांजळीने राजपुत्रे द्वार उघाडी तेमनां वस्त्रो आपी क्षमा मागी. देवीओ ते बन्ने चीजो तेने आपीने स्वस्थाने गइ.

पछी कुमार त्यांथी आगळ चाल्यो. मार्गमां एक निर्जन नगर जोयुं. ते नगरमां कौतुकथी फरतो फरतो ते राजगृहनी समिपे पहोंच्यो. अने तेनी सातमी जूमिका पर चडी गयो. त्यां तेणे कमळना सरखा लोचनवाळी एक सुंदर कन्याने दीठी. तेनुं दिव्य स्वरुप जोइने कुमारे विचार्युं के—

किमेषा प्रथमा सृष्टिर्विधात्रा रक्षिता ध्रुवम् ।
एतां दृष्ट्वा यथा नारीमन्या नारीः सृजाम्यहम् ॥१॥

भावार्थ—" शुं आ नारीने जोइने हुं बीजी नारीओ सरजीश एम धारीने विधाताए आ कन्यारुप प्रथम सृष्टि रची एने अहीं राखी मूकी हशे ! " अर्थात् आ कन्यानुं रुप एवुं सुंदर छे के आने जोइनेज बीजी स्त्रीओ सरजो होय एम जणाय छे. एटले बीजी स्त्रीओ आना करतां ओछी रूपवंत देखाय छे.

आ प्रमाणे विचारतो राजपुत्र ते कन्या पासे गयो. एटले तेणीए तेने आसन नांखी आप्युं. तेपर राजपुत्र बेठो. पछी ते कन्याने शोकातुर जोइने तेणे पुछ्युं के ' हे भद्रे ! तुं शोकातुर केम छे ? ' त्यारे ते कन्या बोली के " हे भाग्यशाळी ! हुं विजय राजानी पुत्री अनंगलेखा नामे छुं. एकदा हुं मारा महेलना गोखमां बेठी हती, ते वखते मने जोइने कोइ विद्याधरे मारुं हरण करी अहीं आ पुर वसावीने मने राखी छे. अने ते मारी साथे लग्न करवा माटे विवाहनी सामग्री लेवा गयो छे. ते आजेज अहीं आवीने मने बळात्कारे परणवानो छे. परंतु पहेलां मने एक ज्ञानी मुनिए कह्युं हतुं के " हे राजपुत्री ! तारो पति हरिवाहन नामे राजपुत्र थशे ' ते मुनिनी वाणी अन्यथा थाय छे. तेथी मारा मनमां अति खेद थाय छे. " ते सांभळी कुमार बोल्यो के " हे सुंदर भृकुटीवाळी स्त्री ! तुं खेद करीश नहीं. " आ प्रमाणे कुमार तेनी साथे वातचित करे छे, तेवामां ते विद्याधर त्यां आवी पहोंच्यो. कुमारने जोइने क्रोध युक्त थयेलो विद्याधर तेनी साथे युध्ध करवा लाग्यो. परंतु कुमारे अप्सराओए आपेला जगतजेतृ खड्गरत्न वडे तेने जीती लीधो. एटले ते बोल्यो के " हे साहसिक शिरोमणि ! हुं तारा पराक्रमथी खुशी थयो छुं. माटे आ स्त्री अने आ पुर तने सोंपुं छुं. तेने तुं सुखेथी भोगव. हुं मारे स्थाने जाउं छुं. " एम कही ते विद्याधर स्वस्थाने गयो. पछी ते विद्याधरनी लावेली विवाहनी सामग्री वडे हरिवाहन ते राजकन्याने परणी तेने पेलो दिव्य कंचुक आपी, ते नगरमां घणा लोकोने वसावी, त्यां राज्यनुं पालन करवा लाग्यो.

एकदा हरिवाहन राजा प्रियानी साथे नर्मदा नदीने किनारे जइ उत्तम वस्त्रोने किनारा पर मूकी जळक्रीडा करवा लाग्यो. एवामां पेलो दिव्य कंचुक के जे वस्त्रोनी साथे किनारापरज मूकेलो हतो तेने पद्मराग मणिनी कांति युक्त होवाथी

मांसनी भ्रांतिए कोइ मत्स्य आवीने गळी गयो. ते जोइ राजा विगेरे खेदयुक्त थया. घणी शोध करतां पण ते मत्स्य हाथ आव्यो नहीं. एटले राजा विगेरे स्वस्थानके गया.

पेलो मत्स्य फरतो फरतो वेनातटे गयो. त्यां कोइ मच्छीमारनी जाळमां ते पकडाइ गयो. तेने विदारतां तेना उदरमांथी पेलो कंचुक नीकळ्यो. ते कंचुकने मच्छीमारे पोताना राजाने भेट कर्यो. ते जोइ राजाए विचार्युं के "विश्वने मोह पमाडनारी आ कंचुकने पहेरनारी कोण हशे के जेनो कंचुक पण मने मोह पमाडे छे ? ते स्त्री कया उपायथी मने मळी शके ?" इत्यादि चिंतामां मग्न थइ गयेला राजाए पोताना प्रधानने कह्युं के "जो मारा जीवितनुं तमारे प्रयोजन होय तो सात दिवसमां आ कंचुकने पहेरनार स्त्रीनी शोध करी लावो." ते सांभळीने मंत्रीए दीर्घ विचार करी राजेश्वरी देवीनी आराधना करी. एटले देवीए प्रगट थइने वरदान मागवानुं कह्युं. मंत्रीए कह्युं के "आ कंचुकने पहेरनारी स्त्रीने लावी मारा राजाने आपो." ते सांभळीने देवीए कह्युं के "हे सचिव !

उदेति यदि वारुण्यां, भानुश्चांगारमुक् शशी ।
तथापि सा सती शीलं, प्राणान्तेऽपि न लुम्पति ॥ १ ॥

भावार्थ—"जो कदाच सूर्य पश्चिम दिशामां उदय पामे अने कदाच चंद्र अंगारानो वरसाद करे तोपण ते सती स्त्री प्राणनो नाश थाय तोपण पोतानुं शील मूके तेम नथी."

तोपण हे सचिव ! तारो स्वामी कदाग्रह मूकतो न होय तो हुं तेने लावी आपुं छुं. पण फरीथी आ कार्य माटे तारे मारुं स्मरण करवुं नहीं." एम कहीने तरतज ते स्त्री पासे जइ तेनुं हरण करी राजा पासे मूकीने ते अदृश्य थइ गइ. राजाए ते अनंगलेखानुं स्वरुप जोइ मोह पामी तेणीनी अनेक प्रकारे प्रार्थना करी. त्यारे ते बोली के 'हे राजा ! हुं प्राणनो नाश थशे तोपण शीलनुं खंडन करीश नहीं.' ते सांभळी राजाए विचार कर्यो के "स्त्रीओ स्वभावथीज मुख वडे ना ना कहे छे. परंतु आ मारे आधीन छे तेथी धीरे धीरे तेणीना दृढ चित्तने पण हुं प्रसन्न करीश. नितिशास्त्रमां पण सहसा कोइपण कार्य करवुं नहीं एम कहेलुं छे." एम विचारी तेणीने एकांत स्थळे राखी राजा पोताने स्थाने ग-

यो. अनंगलेखा हृदयमां पोताना भर्तारनुं स्मरण करती त्यां रही.

अहीं अरण्यमां हाथीथी त्रास पामीने नासी गयेला पेला बे मित्रो जे राजकुमारथी जूदा पडी गया हता तेओए फरतां फरतां वनमां वंशनी जाळमां बेसीने मंत्र साधन करता एक साधकने जोयो. साधके पण ते बन्ने साहसिक पुरुषोने जोइने कह्युं के " हे कुमारो ! तमे जो मारा उत्तरसाधक थाओ तो मारुं कार्य सिद्ध थाय. " ते सांभळीने ते बन्नेए हा कही. एटले ते साधके पोतानी विद्या तेमना सहायथी सिद्ध करी. विद्या सिद्ध थवाथी संतुष्ट थयेला ते साधके ते बन्नेने अदृश्यअंजनी, शत्रुसैन्यमोहिनी अने विमानकारिणी ए त्रण विद्या आपी. त्यांथी फरतां फरतां ते बंने बेनातटे आव्या. त्यां लोकोना मुखथी ' पोताना मित्र हरिवाहननी प्रियाने त्यांना राजाए हरण करावी हरिवाहनने शोकातुर करी मूक्यो छे. ' इत्यादि वात सांभळीने मित्रनो विरह दूर करवा माटे ते बन्ने मित्रो अंजनना प्रयोगथी अदृश्य थइ अनंगलेखानी पासे गया. ते वखते अनंगलेखा पटमां चित्रेला पोताना पति हरिवाहनना चित्रपर दृष्टि राखीने बेठी हती. ते जोइने ते बन्नेए ते चित्रपट अदृश्यपणेज लइ लीधुं. ते आश्चर्य जोइ अनंगलेखाना नेत्रोमां अश्रु भराइ गयां अने बोली के—

अपराद्धं मया किं ते, यच्चित्रितमपि प्रियम् ।
जहर्थ मम हत्याया, अपि त्वं न बिभेषि किम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे विधाता ! में तारो शो अपराध कर्यो छे ? के जेथी चित्रेला पतिने पण तें हरण कर्यो ? आथी मारा आत्मानी हत्या थशे. तेथी पण शुं तने कांइ भय लागतो नथी ? "

ते सांभळी तेणीने दुःखी जोइ ते मित्रोए प्रगट थइ तेणीने चित्रपट आपी पोतानुं वृत्तांत निवेदन कर्युं. ते सांभळी पोताना पतिना मित्रो जाणीने ते बोली " हे भाइओ ! तमो मारा दियर छो तो मने शोकथी मुक्त करो. " ते सांभळीने तेणीने धीरज आपी ते बन्ने त्यांथी कांइक संकेत करीने नीकळी गया. पछी पोते मंत्रवादी छे एवी तेओए लोकमा पोतानी प्रसिद्धि करी. अने राजा पासे जइने बोल्या के " हे राजा ! अमे मंत्रवादी छीए. अमारा सरखुं कार्य बतावी अमारी खात्री करो. " राजाए तेमने कह्युं के " आ कंचुकने पहेरनारी रूपवती

स्त्री जन्म सुधी मारे वश थइने रहे, एवुं तमे करो." ते सांभळी तेमणे राजाने एक तिलक करी तेणीनी पासे मोकल्यो. एटले प्रथमना संकेत प्रमाणे राजाने आवतो जोइ तेणीए उभा थइ आसन विगेरे आपी सन्मान कर्युं. ते जोइ तेने पोताने आधीन थयेली जाणी राजाए वारंवार तेना शरीरनो संग करवानी याचना करी. त्यारे ते बोली के "हे राजा ! हुं हवे तमारे आधीन छुं. परंतु में अष्टापद गिरिनी यात्रा करवानो नियम करेलो छे, माटे ते यात्रा कर्या पछी हुं इच्छित सुख भोगवीश." ते सांभळीने ते कामांध राजाए मधुर वचनथी पेला मंत्रवादीओ पासे अष्टापदनी यात्रा कराववानी प्रार्थना करी. त्यारे तेओए मंत्रशक्तिथी विमान बनाव्युं. ते जोइ राजाए अनंगलेखाने कह्युं के "हे प्रिया ! आ विमानमां बेसी तारो अभिग्रह पूर्ण करी जलदीथी आव, अने मारो मनोरथ पूर्ण कर." त्यारे ते बोली के "हे राजा ! हुं ते अजाण्या पुरुषो साथे जाउं छुं माटे तमारी बे कन्याओने मारी साथे मोकलो, तो तेनी साथे सुखे वार्ताविनोद थइ शके." ते सांभळीने राजाए पोतानी बे कन्याओने तेनी साथे मोकली. पछी जे विमानमां ते बन्ने मित्रो बेठा हता तेमां बन्ने कन्याओ साथे अनंगलेखा पण बेठी. एटले तरतज विमान आकाशमां उंचे चड्युं. थोडे दूर जइने ते बंने मित्रोए राजाने कह्युं के "हे दुष्ट राजा ! आ त्रणे स्त्रीओनी आशा हवे तारे मूकीज देवी." ते सांभळी राजा विलखो थइ गयो, तेनो कांइ पण उपाय रह्यो नहीं.

हवे मित्रना दुःखनो नाश करवा माटे ते बन्ने मित्रोए हरिवाहन राजानी पासे जइ ते विमान उतार्युं. तेमां बंने मित्रोने तथा प्रियाने जोइने हरिवाहन अत्यंत आनंद पाम्यो. पछी राजाए तथा मित्रोए परस्पर पोतपोतानुं वृत्तांत कही संभळाव्युं. बे कन्याओने हरिवाहने बन्ने मित्रोने परणावी.

अन्यदा इन्द्रदत्त राजाने पोताना कुमारनी तथा तेना मित्रोनी शोध मळतां तेमने पोताना राज्यमां बोलाव्या अने हरिवाहन कुमारने राज्यपर स्थापन करी पोते वैराग्य रंगथी प्रव्रज्या ग्रहण करी. केटलेक दिवसे इन्द्रदत्त मुनिने कर्मक्षय थवाथी केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. एटले ते भोगावती नगरीए समवसर्या. ते वखते हरिवाहन राजाए परिवार सहित उद्यानमां जइ केवळीने वंदना करी. केवळीए आ प्रमाणे धर्मदेशना आपी—

विषयामिषसंलुब्धा, मन्यन्ते शाश्वतं जगत् ।
आयुर्जलधिकल्लोललोलमालोकयन्ति न ॥ १ ॥

भावार्थ—" विषयरूपी मांसमां लुब्ध थयेला प्राणीओ आ जगतने शाश्वत—विनाश न पामे तेवुं माने छे, परंतु समुद्रना कल्लोल जेवा चपळ आयुष्यने जोता के जाणता नथी. "

इत्यादि धर्मदेशना सांभळीने राजाए केवळीने पूछ्युं के 'हे स्वामी! मारुं आयुष्य केटलुं बाकी छे ?' केवळीए जवाब आप्यो के 'हे राजा! तारुं आयुष्य मात्र नव प्रहरनुंज बाकी छे.' ते सांभळीने मरणथी भय पामेला ते राजानुं अंग कंपवा लाग्युं. त्यारे मुनीश्वर बोल्या के " हे राजा! जो तुं मृत्युनी चिंताथी भय पामतो हो, तो तुं प्रव्रज्या अंगीकार कर. केमके—

अंतोमुहुत्तमित्तं, विहिणा विहिया करेइ पव्वज्जा ।
दुक्खाणं पज्जंतं, चिरकालकयाइ किं भणिमो ॥ १ ॥

भावार्थ—" एक अन्तर्मुहूर्त मात्र पण जो विधि पूर्वक ग्रहण करेली प्रव्रज्या सारी रीते पाळी होय तो ते सर्व दुःखोनो अंत (नाश) करे छे, तो पछी चिरकाळ दीक्षानुं पालन कर्युं होय, तो तेने माटे तो शुं कहेवुं ? " अर्थात् तेनुं फळ तो सर्व दुःखनो नाश करनार थाय ज एमां आश्चर्य नथी.

आ प्रमाणे ज्ञानीनुं वचन सांभळीने राजाए स्त्री तथा मित्रो सहित तरतज दीक्षा ग्रहण करी. पछी ते राजर्षि 'एगोहं नत्थि मे कोइ' 'हुं एकलोज छुं, मारुं कोइ नथी.' इत्यादिक शुभ ध्यान ध्यातां मृत्यु पामीने सर्वार्थसिद्धि विमानमां देवपणे उत्पन्न थया, त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ मोक्षपद पामशे. तेना मित्रो तथा अनंगलेखा विगेरे पण देवगति पामीने अनुक्रमे मोक्षसुख पामशे.

" श्री जिनेन्द्रना मार्गने विषे 'निर्वेद' शब्दनो अर्थ 'संसारपर विरागता' एवो करेलो छे. ते निर्वेदरूप भावसिंहनो आश्रय करनार हरिवाहन

राजा शीघ्र सर्वार्थ सिद्धि विमानने पाम्या. तेवी रीते अन्य भव्य प्राणीओए निर्वेदने विषे दृढता राखवी."

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे त्रयश्चत्वारिंशत्तमं
व्याख्यानम् ॥ ४३ ॥

व्याख्यान ४४ मुं.

अनुकंपा नामना चोथा लक्षण विषे.

दीनदुःखित दारिद्र्य प्राप्तानां प्राणिनां सदा ।
दुःखनिवारणे वाञ्छा, सानुकंपाभिधीयते ॥ १ ॥

भावार्थ—"दीन, दुःखी अने दारिद्र्यने पामेला प्राणीओनां दुःखोनुं निवारण करवानी निरंतर जे वांछा (इच्छा) करवी ते अनुकंपा कहेवाय छे."

कार्या मोक्षफले दाने, पात्रापात्रविचारणा ।
दयादानं तु सर्वज्ञैर्न क्वापि प्रतिषिध्यते ॥ २ ॥

भावार्थ—"जेनुं फळ मोक्ष छे, एवा सुपात्र दानमां पात्र अपात्रनो विचार करवो, पण दयादान (अनुकंपादान) करवा माटे तो तीर्थकरोए कोइ पण स्थाने निषेध कर्यो नथी."

निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु, दयां कुर्वन्ति साधवः ।
न हि संहरति ज्योत्स्नां, चन्द्रश्चंडालवेश्मनि ॥ ३ ॥

भावार्थ—"साधुजनो (सज्जनो) निर्गुण प्राणीओनी उपर पण द-

या करे छे, केमके चंद्र पोतानो प्रकाश चंडाळना घरपरथी कांइ लइ लेतो नथी." ते तो सर्वत्र एक सरखो प्रकाश आपे छे; तेम सज्जनो पण गुणी अने निर्गुणी सर्वेनापर दया करे छे.

आ विषय उपर एक प्रबंध छे ते संबंधमां कह्युं छे के—

अपकारेऽपि कारुण्यं, सुधीः कुर्याद्विशेषतः ।
दन्दशूकं दशन्तं श्रीवीरः प्राबोधयद्यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—" बुद्धिमान पुरुषो अपकार करनार पर पण विशेषे करीने अनुकंपा (दया) करे छे. जुओ श्री महावीर भगवाने दंश देता सर्पने पण बोध कर्यो हतो. " आ संबंध नीचे प्रमाणे—

चंडकौशिकनी कथा.

श्री महावीर स्वामी छद्मस्थपणामां कनकखल नामे तापसोना आश्रममां चंडकौशिक नामना सर्पने प्रतिबोध करवा माटे गया हता. ते सर्पना पूर्व भवनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे—एक तपस्वी मुनि क्षुल्लक साधुने साथे लइ पारणाने माटे गोचरी करवा गया हता. त्यां मार्गमां तपस्वी मुनिना पग तळे एक नानी देडकी दबाइने मरण पामी. तेनी आलोचना प्रतिक्रमण वखते तेणे करी नहीं, एटले पेला क्षुल्लक साधुए तेने ' देडकी चंपाइ गयानी आलोयण केम लेता नथी ? ' एम कही स्मरण कराव्युं. ते वखते ते क्षुल्लकपर क्रोध आववाथी ते तपस्वी साधु तेने मारवा दोड्या. रस्तामां स्तंभ आडो आववाथी ते साथे अफळाइने ते तपस्वी मुनि मृत्यु पाम्या, अने ज्योतिषिमां उत्पन्न थया. त्यांथी चवीने कनकखल नामना तापसना आश्रममां पांचसो तापसोना अधिपति चंडकौशिक नामे तापस थया.

एकदा केटलाक राजपुत्रोने ते आश्रमना फळो तोडता जोइने क्रोधथी तेमने मारवा माटे हाथमां परशु (कुहाडी) लइने ते चंडकौशिक तापस दोड्यो. मार्गमां मोटा अन्धकूपमां पडी तेज परशुवडे मृत्यु पामी तेज नामथी दृष्टिविष सर्प थयो.

ते सर्पने प्रतिबोध करवानी इच्छाथी बीजा लोकोए निषेध कर्या छतां पण प्रभु तेज रस्ते जइ ते चंडकौशिकना राफडा पासे कायोत्सर्ग करी उभा रह्या.

तेमने जोइने क्रोधथी ज्वलित थयेलो चंडकौशिक सर्प सूर्यनी सन्मुख जोइ जोइने मुखमांथी ज्वाळा मूकवा लाग्यो. परंतु ते ज्वाळाओथी प्रभुने कांइपण थयुं नहीं. त्यारे तेणे प्रभुना पग पर डंख दीधो तेथी प्रभुना पगमांथी गायना दूध जेवुं श्वेत शोणित नीकळवा लाग्युं. ते जोइने तेमज प्रभु बोल्या के 'हे चंडकौशिक ! बोध पाम, बोध पाम,' ए वचन सांभळीने इहापोह करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. तेथी पश्चात्ताप करता ते सर्पे प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा दइ वंदना करीने अनशन ग्रहण कर्युं. पछी 'बीजा जंतुओ मारा विषनी ज्वाळाथी मृत्यु न पामो.' एम विचारीने तेणे पोतानुं मुख राफडानी अंदर बिलमां राख्युं. लोकोने ते वातनी खबर पडतां सर्वे लोको ते रस्ते नीकळवा लाग्या. घी दूध विगेरे वेचवा जनारी महीयारीओए ते सर्पनी पूजा निमित्ते तेनापर घृततुं सिंचन कर्युं. तेथी असंख्य कीडीओ त्यां उत्पन्न थइ अने सर्पनुं शरीर चालणीनी जेम असंख्य छिद्रवाळुं करी दीधुं. ते दुःखथी अत्यंत पीडा पामतां छतां पण प्रभुनी दृष्टिरुप अमृतथी सिंचातो ते सर्प शुभ ध्यान पूर्वक पंदर दिवसतुं अणसण पाळी मृत्यु पामीने सहस्रार देवलोकमां देवता थयो. त्यांथी चवीने तो थोडा भवमांज मोक्ष सुखने पामशे. इति.

आ विषयमां एक बीजुं पण दृष्टांत छे, ते संबंधमां कह्युं छे के—

तथा चौरोऽन्यराज्ञीभिर्लेभे वस्त्राद्यलंकृतः ।
न रतिं लघुराज्ञ्या तु, प्रदत्ताभयतो यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—"कोइ एक चोर नानी राणीए अपावेला अभय दानथी जेवुं सुख पाम्यो, तेवुं सुख बीजी राणीओए (सेंकडो रुपियाना खर्चे वडे) वस्त्रादिकथी शोभाव्या छतां पण पाम्यो नहोतो." ते द्रष्टांत नीचे प्रमाणे—

चार राणीओनुं दृष्टांत.

वसंतपुरमां अरिदमन नामे राजा हतो. ते एकदा पोतानी चार राणीओ सहित महेलना गवाक्षमां बेसी क्रीडा करतो हतो. तेवामां एक चोरने वध्यस्थान तरफ लइ जवातो तेमणे जोयो. ते जोइ राणीओए पूछ्युं के 'आणे शो अपराध कर्यो छे?' ते सांभळीने एक राजसेवक बोल्यो के 'तेणे चोरी करी छे, तेथी तेने वधस्थान तरफ लइ जाय छे.' ते सांभळीने मोटी राणीए राजाने कह्युं के —"हे स्वामी! में तमारी पासे पूर्वे एक वरदान थापण रुपे राखेलुं छे,

ते वरदान आजे मागुं छुं के एक दिवस आ चोरने मुक्त करी मने सोंपो." राजाए ते वात कबूल करीने ते राणीने सोंप्यो. ते राणीए हजार महोरनो खर्च करी ते चोरनो स्नान, भोजन, अलंकार, अने वस्त्रो विगेरेथी सत्कार कर्यो. अने संगीत विगेरे शब्दादिक विषयोथी तेने आखो दिवस आनंदमां राख्यो. बीजे दिवसे ते ज प्रमाणे लक्ष सुवर्णनो खर्च करी बीजी राणीए ते चोरनुं पालन कर्युं. त्रीजे दिवसे त्रीजी राणीए कोटी द्रव्यनो व्यय करी ते ज रीते तेनो सत्कार कर्यो. चोथे दिवसे छेल्ली नानी राणीए राजा पासे वरदान मागी तेनी अनुमतिथी अनुकंपा वडे ते चोरने मरणना भयथी मुक्त कराव्यो; बीजो कांइ पण सत्कार कर्यो नहीं. मोटी त्रण राणीओए तेनी मश्करी करी के "आ नानीए आने कांइ पण आप्युं नहीं. तेम तेने माटे तेणीए कांइ खर्च पण कर्यो नहीं. त्यारे तेणे चोरनो शो उपकार कर्यो?" नानी राणी बोली के-'तमारा त्रणे करतां में वधारे उपकार कर्यो छे. तमे कांइ पण उपकार कर्यो नथी.' आ प्रमाणे ते राणीओ वच्चे उपकारना विषयमां मोटो विवाद थयो. त्यारे तेनो न्याय करवा माटे राजाए ते चोरने ज बोलावीने पूछ्युं के—'तारा पर आ चारेमांथी कोणे वधारे उपकार कर्यो?' ते सांभळी चोर बोल्यो के—" हे महाराजा! मरणना भयथी पीडा पामेला में स्नान भोजनादिक सुखनो कांइ पण अनुभव कर्यो नथी. वाघनी सामे बांधेला लीला जवने खानारा बकरानी जेम में तो केवळ त्रणे दिवस दुःखनो ज अनुभव कर्यो छे. अने आजे तो शुष्क, निरस अने तृण जेवो सामान्य आहार करवाथी पण वणिकने घेर बांधेला गायना वाछरडानी जेम जिंदगी प्राप्त थवाथी केवळ सुखनो ज अनुभव करुं छुं. अने तेथी ज आजे हर्षथी नृत्य करुं छुं." ते सांभळीने राजाए अभयदाननी प्रशंसा करी.

आ दृष्टान्तनुं तात्पर्य ए छे के " जेम राजानी नानी राणीए चोरने मृत्युना दुःखमांथी बचावीने महान् उपकार कर्यो, तेवी रीते आस्तिक मनुष्योए निरंतर प्राणीओ पर अनुकंपा करवी. तेम करवाथी समकितनुं चोथुं लक्षण जे अनुकंपा ते शुद्ध रीते प्रगट थाय छे."

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे चतुश्चत्वारिंशत्तमं व्याख्यानम्॥४४॥

व्याख्यान ४५ मुं.

आस्तिक्यता नामना पांचमा लक्षण विषे.

प्रभुभिर्भाषितं यत्तत्तत्त्वान्तरश्रुतेऽपि हि ।
निःशंकं मन्यते सत्यं, तदास्तिक्यं सुलक्षणम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" बीजा तत्त्व (मत) नुं श्रवण कर्या छतां पण ' प्रभुए जे कह्युं छे ते ज सत्य छे ' एम जे निःशंकपणे माने छे ते आस्तिक्य नामनुं चोथुं लक्षण जाणवुं. " आ विषय पर पद्मशेखर राजानी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

पद्मशेखर राजानी कथा.

पृथ्वीपुरनो पद्मशेखर नामे राजा विनयंधर सूरिथी प्रतिबोध पामीने जैनधर्मी थयो हतो. अने जैनधर्मना आराधनमां तत्पर हतो. ते राजा सभा समक्ष निरंतर लोको पासे गुरुनुं आ प्रमाणे वर्णन करतो हतो—

निवर्तयत्यजनं प्रमादतः, स्वयं च निष्पापपथे प्रवर्तते ।
गृणाति तत्त्वं हितमिच्छुरङ्गिनां, शिवार्थिनां यः स गुरुर्निगद्यते ॥१॥

भावार्थ—"जे गुरु अन्य जनोने प्रमादथी निवृत्ति पमाडे छे, अने पोते निष्पाप मार्गमां प्रवर्ते छे, तथा हितनी इच्छावाळा जे गुरु मोक्षना अभिलाषी प्राणीओने हितकारी तत्वनो उपदेश करे छे, ते सुगुरु कहेवाय छे."

वंदिज्जमाणा न समुक्कसंति, हिलिज्जमाणा न समुज्जलंति ।
दमेति चित्तेण चरंति धीरा, मुणी समुग्घाइयरागदोसा ॥२॥

भावार्थ—" जेओ वंदना कराया सता उत्सुक (खुशी) थता नथी अने हीलना कराया सता खेद पामता नथी तथा जेओ चित्त वडे इन्द्रियोनुं दमन करे छे, धीरता गुणने धारण करे छे, अने जेओ रागद्वेषनो नाश करे छे, तेओज मुनि कहेवाय छे. "

गुरु बे प्रकारना होय ठे. तपस्यायुक्त अने ज्ञानयुक्त. तेमां जे तपस्यायुक्त होय ठे, ते वरुना पांदमानी जेम केवळ पोताना आत्माने ज जवसागरथी तारे छे. अने जे ज्ञानयुक्त होय ठे ते वहाणनी जेम पोताने तथा बीजा अनेक जीवोने तारे ठे.

इत्यादिक गुरुना गुणोनुं वर्णन करीने ते राजाए घणा लोकोने धर्ममां स्थापन कर्या. परंतु ते नगरमां एक जय नामनो वणिक नास्तिक मतवाळो रहेतो हतो, ते एम कहेतो के " इन्द्रियो पोतपोताना विषयमां स्वाजाविक रीते ज प्रवृत्त थाय ठे; ते कोइथी रोकी शकाती ज नथी. तपस्या करवी ते तो केवळ आत्मानुं शोषण करवानुं ठे. तेथी कांइ पण फळ मळतुं नथी. स्वर्ग तथा मोक्ष कोणे जोयां छे ? ते सर्व असत्य ठे. कह्युं ठे के—

हत्थागया इमे कामा, कालिया ते अणागया ।
को जाणई परे लोए, अत्थि वा णत्थि वा पुणो ॥१॥

जावार्थ—" आ काम जोग तो हाथमां आवेला छे अने तपस्यादिथी मळवा धारेला सुख तो अनागत काळमां प्राप्त थवाना ठे; पण कोण जाणे छे के परलोक छे के नहीं ?" एटले प्राप्त थयेलाने ठोमी दइने आगळ मळशे के नहीं तेवी शंकामां कोण पमे ?

माटे जे ठे ते अहीं ज ठे. स्वर्ग, मोक्ष, पुण्य, पाप विगेरे सर्व मानवा योग्य नथी. " आ प्रमाणे लोको पासे उपदेश करीने ते जय वणिके घणा लोकोने जरमाव्या हता. ए रीते ते नगरमां पुण्य अने पापनो उपदेश आपवामां कुशळ एवा ते राजा अने वणिक बन्ने प्रत्यक्ष सुगति अने दुर्गतिना मार्गरूप देखाता हता.

एकदा राजाए जय वणिकनुं स्वरूप जाण्युं, तेथी तेने बराबर शिक्षा आपवा माटे गुप्त रीते पोताना सेवक पासे पोतानो लक्ष मूल्यनो हार ते वणिकना घरमां तेना घरेणाना दाबमामां नखाव्यो. पछी आखा नगरमां पटह वगमावी सर्व लोकोने जणाव्युं के—" राजानो हार कोइ चोरी गयुं ठे, ते जो कोइ तरतमां लावीने राजाने आपशे, तो तेने कांइ पण शिक्षा करवामां आवशे नहीं. अने जो पछी कोइना घरमांथी नीकळशे, तो तेनो सखत दंम थशे. " आ प्रमाणे आघोषणा करावी. पण कोइए हार लावीने आप्यो नहीं. पछी राजाना हुकमथी राज-

सेवकोए गामना दरेक घरनी जप्ती लेवा मांडी. अनुक्रमे शोध करतां करतां जय वणिकना घरमांथी ते हार नीकळ्यो एटले राजपुरुषो तेने बांधीने राजा पासे ला-व्या. राजाए तेनो वध करवानो हुकम कर्यो. ते वखते तेने कोइए छोडाव्यो नहीं, परंतु तेना स्वजनो राजानी घणी प्रार्थना करवा लाग्या. त्यारे राजाए कह्युं के "जो मारे घेरथी तेलनुं संपूर्ण भरेलुं पात्र लइने ते चाले, मार्गमां जरा पण तेलनुं बिंदु पडवा न दे, अने आखा नगरमां फरीने अहीं मारी पासे आवे, तो हुं तेने मरणनी शिक्षाथी मुक्त करुं, ते विना तेने मुक्त करीश नहीं." ते सांभळीने जयश्रेष्ठीए मरणना भयने लीधे तेम करवानुं अंगीकार कर्युं. पछी पद्मशेखर रा-जाए आखा नगरमां सर्व लोकोने हुकम कर्यो के "मार्गमां ठेकाणे ठेकाणे वीणा, वांसळी अने मृदंग विगेरे वाजित्रो वगडावो, अति मोह उत्पन्न करनार अने सुं-दर वेष धारण करनार वेश्याओना हाव, भाव अने कटाक्ष पूर्वक नृत्य, गान वि-गेरे करावो, तथा सर्व इंद्रियोने सुख उपजे तेवा प्रेक्षणको स्थाने स्थाने रचावो." राजानी आज्ञा प्रमाणे आखा नगरमां अनेक जातनी ध्वजा विगेरेथी शोभा करी-ने लोकोए अनेक प्रकारना नाटको विगेरेथी आखुं शहेर मनोहर करी दीधुं. पछी जयश्रेष्ठीना हाथमां तेलथी परिपूर्ण भरेलुं पात्र आप्युं. ते पात्रमां ज बराबर दृष्टि राखीने ते चाल्यो. जो के ते संगीतादिक इंद्रियोना विषयनो घणो रसिक हतो, परंतु मृत्युना भयथी तेणे मननी एकाग्रता तेलना पात्रपर ज राखी हती. तेनी बन्ने पडखे राजाना सुभटो उघाडी तरवारे चालता हता अने "जो पात्रमांथी एक बिंदु पण पडशे, तो तरतज आ खड्गथी शिरच्छेद थशे" एवी धमकी आप-ता हता. एवी रीते आखा शहेरमां फेरवीने ते सुभटो तेने राजा पासे लाव्या. ते वखते राजाए कांइक हास्य करीने कह्युं 'हे श्रेष्ठी! मन अने इंद्रियो अति चपळ छे, तेने तें शी रीते रोक्यां?' त्यारे श्रेष्ठी बोल्यो के 'हे स्वामी! मरणना भयथी रोक्यां.' राजाए कह्युं "ज्यारे एक ज भवना मरणना भयथी तें प्रमादनो त्याग कर्यो, त्यारे अनंता मरणथी भय पामेला साधु विगेरे उत्तम जनो शी रीते प्रमाद करे? माटे हे श्रेष्ठि! मारुं हित वचन सांभळ—

> अनिर्जितेन्द्रियग्रामो, यतो दुःखैः प्रबाध्यते ।
> तस्माज्जयेदिन्द्रियाणि, सर्वदुःखविमुक्तये ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेणे इंद्रियोनो समूह जीत्यो नथी, ते पुरुष दुःखोथी पी-

नाय छे; माटे सर्व दुःखनी मुक्ति थवा सारु इंद्रियोनो जय करवो."

न चेन्द्रियाणां विजयः, सर्वथैवाप्रवर्तनम् ।
रागद्वेषविमुक्त्या तु, प्रवृत्तिरपि तज्जयः ॥ १ ॥

भावार्थ—" इन्द्रियोनी प्रवृत्तिनो सर्वथा रोध करवो तेज कांइ इंद्रियोनो जय नथी, परंतु रागद्वेषनो त्याग करीने इंद्रियोनी प्रवृत्ति करवी ते पण इंद्रियजय कहेवाय छे."

हताहतानीन्द्रियाणि, सदा संयमयोगिनाम् ।
अहतानि हितार्थेषु, हतान्यहितवस्तुषु ॥ २ ॥

भावार्थ—" संयमधारी योगीओनां इंद्रियो हत (रुंधेलां) अने अहत (प्रवर्तावेलां) बंने प्रकारनां होय छे. तेमां हितकारी कार्यने विषे अहत होय छे, अने अहितकारी वस्तुने विषे हत–रुंधेलां होय छे."

आ प्रमाणे सांभळीने जयश्रेष्ठी प्रतिबोध पाम्यो, अने जिनेश्वरना धर्मनुं तत्त्व समजीने श्रावक धर्म पाम्यो. एम अनेक जनोने धर्ममां स्थापन करीने पद्मशेखर राजा स्वर्गे गयो.

" गुणवान एवा आस्तिक पुरुषोए निर्मळ अंतःकरणथी आ पद्मशेखर राजानुं चरित्र जाणीने जिनेश्वरना मतने विषे शुभ आस्था (श्रद्धा) धारण करवी."

॥ इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे पंचचत्वारिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ४५ ॥

स्तंभ ३ जो संपूर्ण.

श्री उपदेशप्रासाद

स्तंभ ४ थो.

व्याख्यान ४६ मुं.

समकितनी छ यतनामांनी पहेली बे यतना विषे.

अन्यतीर्थिकदेवानां, तथान्यैर्गृहीतार्हताम् ।
पूजनं वन्दनं चैव, विधेयं न कदापि हि ॥ १ ॥

अर्थ—" अन्य तीर्थीओना देवोनुं तथा अन्ये गृहण करेल अरीहंतनी मूर्त्तिओनुं पूजन वंदन कदापि करवुं नही. "

भावार्थ—" अन्य तीर्थीओना शंकरादिक देवोनुं पूजन वंदन विगेरे कदापि करवुं नहीं, ते पहेली यतना. तथा सांख्य, बौध्धादिक अन्य दर्शनीओए ग्रहण करेली जिनप्रतिमानुं पूजन वंदन विगेरे कदापि न करवुं, ते बीजी यतना. अन्य मतीओए ग्रहण करेली जिनप्रतिमानुं पूजनादिक करवाथी अन्यमतीओना प्रसंग वडे अनेक दोषनी वृध्धि थाय, माटे तेनुं वंदनादिक वर्जवुं. " आ यतना पर संग्रामसूर राजानी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

संग्रामसूर राजानी कथा.

पद्मिनीखंड नामना नगरमां संग्रामदृढ नामे राजा हतो. तेने संग्रामसूर नामे पुत्र हतो. ते हमेशां शिकार करी अनेक प्राणीओनो वध करतो हतो. तेने तेना पिताए घणी रीते समजाव्यो तोपण तेणे पोतानो कदाग्रह छोड्यो नहीं. त्यारे तेनो तिरस्कार करीने तेने नगर बहार काढी मूक्यो. एटले ते कुमार गाम व-

हार एक पर्ण वसावीने त्यां रह्यो. पछी हमेशां प्रातःकाळे कूतराओने लइने ते वनमां जइ प्राणीओनो वध करी प्राणवृत्ति करवा लाग्यो. एकदा कूतराओने त्यां राखीने संग्रामसूर कोइ गाम तरफ गयो. ते वखते ते उद्यानमां कोइ सूरि महाराज समवसर्या. अवसर जोइने ते सूरिए ते कूतराओने प्रतिबोध करवा माटे मधुर वचनथी कह्युं के—

खणमित्तसुखकज्जे, जीवे निहणंति जे महापावा ।
हरिचंदणवणखंडं, दहंति ते छारकज्जम्मि ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे महा पापी प्राणीओ क्षण मात्रना सुखने माटे बीजा जीवोने हणे छे, तेओ रक्षा (राख) ने माटे हरिचंदन वृक्षोना वनने बाळे छे, एम जाणवुं. "

आ प्रमाणे सांभळीने ते कूतराओए प्रबोध पामीने जीवन पर्यंत प्राणीवधनो नियम ग्रहण कर्यो. संग्रामसूर परगामथी पोताने घेर आव्यो, त्यारे तेणे प्राणीओना वधने माटे कूतराओने मूक्या. पण ते कूतराओ तो जरा पण आगळ चाल्या नहीं, चित्रमां आळेखेला होय तेम स्तब्ध थइने उभा रह्या. ते जोइने तेणे तेना रक्षकोने आम थवानुं कारण पूछ्युं. त्यारे तेओ बोल्या के "हे स्वामी ! अमे विशेष कारण कांइ पण जाणता नथी, परंतु तेमनी चेष्टाथी एम जणाय छे के—अत्रे एक साधु आव्या हता, तेना वचनथी तेओ प्रतिबोध पाम्या छे. " ते सांभळीने संग्रामसूरे विचार कर्यो के ' अहो ! मने धिक्कार छे, के, हुं पशु जेवो पण नहीं !' एम विचारीने ते गुरु पासे गयो. त्यां तेणे नीचे प्रमाणे धर्म श्रवण कर्यो.

देवो जिणोट्ठारसदोसवज्जिओ, गुरु सुसाहु समलोट्ठकंचणो।
धम्मो पुणो जीवदयाइ सुंदरो, सेवेह एयं रयणत्तयं सया॥१॥

भावार्थ—" अढार दोषथी रहित जे जिनेश्वर तेज देव, पथ्थर अने कांचनमां समान बुद्धिवाळा जे सुसाधु तेज गुरु, अने जीवदया विगेरेथी सुन्दर एवो जे धर्म तेज धर्म. ए प्रमाणेना रत्नत्रयनुं तुं सदा सेवन कर. "

ते सांभळी संग्रामसूरे श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो. ते जाणी राजाए तेने नगरमां बोलावी युवराज पदे स्थापन कर्यो.

हवे कुमारनो मित्र मतिसागर चिरकाळथी द्रव्य उपार्जन करवा समुद्र रस्ते गयो हतो, ते घणुं धन उपार्जन करीने आव्यो, त्यारे प्रथम मित्रने मळवा माटे गयो. तेने कुमारे कुशळ वार्ता पूछीने पछी द्वीप समुद्र विगेरेमां कांइ आश्चर्य जोयुं होय तो ते कहेवा कह्युं. त्यारे मतिसागर बोल्यो के " हे मित्र ! हुं वहाणमां बेसीने समुद्रमां जतो हतो, त्यारे में भरतखंडनी मर्यादामां एक उंचा कल्पवृक्षनी शाखापर हींचको बांधीने ते हींचका रूप पल्यंकपर रहेली एक सुंदर स्त्रीने जोइ. ते स्त्री समग्र स्त्रीओना तिलकरूप हती, अने पोताना संगीत शब्दथी तेणीए किंनरी अने देवांगनाओने पण किंकर (दासी) रूप बनावी दीधी हती. तेवी रूप अने लावण्यवती स्त्रीने जोइने कौतुकथी में मारुं वहाण तेणीनी तरफ हंकार्युं. परंतु हुं तेणीनी पासे पहोंचुं एटलामां तो ते मारा मनोरथनी साथेज कल्पवृक्ष सहित समुद्रमां निमग्न थइ गइ. ते आश्चर्यकारक बनाव जोइन हुं घणुं विस्मय पाम्यो. हे मित्र ! आज में ते आश्चर्य तमारी पासे निवेदन कर्युं छे. " ते सांभळीने कामदेवना बाणथी जेनुं अंग जर्जरित थयुं छे, एवो कुमार मित्रने साथे लइने वहाणमां बेसी समुद्रना ते भागमां आव्यो. एटले तेणे पण दूरथी तेणीने तेज रीते क्रीडा करती जोइ. कुमार तेणीनी पासे गयो, तेटलामां ते स्त्री प्रथमनी जेम समुद्रमां पडीने अदृश्य थइ गइ. ते जोइ साहसिक कुमारे हाथमां उघाडुं खड्ग लइने तेणीनी पाछळ झंपापात कर्यो. एटले ते कुमार जळकांत मणिथी बनावेला सात माळना प्रासाद उपर पड्यो. पछी धीमे धीमे नीचे उतरीने कुमार नीचेना माळमां आव्यो. त्यां कल्पवृक्षनी शाखा साथे बांधेला पल्यंकमां अत्यंत सुंदर अने सूक्ष्म वस्त्रथी आखुं शरीर ढांकीने सुतेली ते स्त्रीने कुमारे जोइ. तेणे वस्त्र जरा उंचुं कर्युं, एटले तरतज ते स्त्रीए उभी थइने कुमारने तेज पल्यंकपर बेसाड्यो. पछी तेणीए कुमारने तेनुं कुळ, नाम विगेरे पूछ्युं. तेनो यथास्थित जवाब आपीने कुमारे तेणीने तेनुं वृत्तांत पूछ्युं. त्यारे ते पण पोतानुं यथास्थित स्वरुप कहेवा लागी.

वैताढ्य पर्वतनी दक्षिण श्रेणीमां विद्युत्प्रभ नामे राजा छे. तेनी हुं मणिमंजरी नामनी पुत्री छुं. एकदा मारा पिताए मने योग्य वयमां आवेली जोइने कोइ नैमित्तिकने पूछ्युं के ' मारी पुत्रीने योग्य पति क्यारे मळशे ? ' त्यारे नैमित्तिके कह्युं के ' हे राजा ! समुद्रमां जळकांत मणिनो महेल करावीने कल्पवृक्षनी शाखा

साथे पल्यंक बांधी त्यां तमारी पुत्रीने राखो. त्यां सूरसेन[1] राजानो पुत्र संग्रामसूर आवशे, ते तेनो पति थशे.' आ प्रमाणे ते निमित्तिये कह्याथी मारा पिताए ते प्रमाणे सर्व करावी मने अहीं राखी. अहीं रहेतां मने घणे दिवसे तमारुं दर्शन थयुं.

आ प्रमाणे ते बन्ने परस्पर प्रेमवार्ता करता हता. तेवामां हाथमां उघाडी तरवार धारण करीने ताल तमाल वृक्षना पांदडा जेवो श्याम अने भयंकर कपाळ वाळो एक राक्षस एकदम प्रगट थइ कुमार प्रत्ये बोल्यो के "हे कुमार! हुं सात दिवसथी भूख्यो छुं, तुं मारा भक्ष्यने परणवाने केम इच्छे छे?" एम कहीने ते राक्षसे मणिमंजरीने झांझर सहित पगेथी गळवा मांडी. ते जोइ कुमारे तेना पर जोरथी खड्गनो प्रहार कर्यो. परंतु ते खड्ग राक्षसने कांइ पण इजा कर्या विना बे ककडा थइ गयुं. त्यारे कुमारे तेनी साथे बाहुयुद्ध करवा मांड्युं. तेमां राक्षसे ते कुमारने भूमिपर पाडीने बांधी लीधो. पछी राक्षसे तेने कह्युं के 'हे राजपुत्र! जो तारे तारी प्रियाने छोडाववी होय, तो मने बीजी कोइ स्त्री अथवा तारी स्थूलकाया नामनी दासी खावा माटे आप. कदी तेपण तुं न करी शके तो मारा गुरु चरक परिव्राजकने तुं प्रणाम कर अथवा मारा प्रासादमां विष्णुनी मूर्ति साथे जिनप्रतिमा पण छे तेने प्रणाम करीने तुं पूजा कर. अथवा मारी ज प्रतिमा करावी तेनुं हमेशां पूजन कर. नहीं तो आने हुं आखी खाइ जइश." ते सांभळी कुमार बोल्यो "हे राक्षस! मारा जीवितनो अंत थाय, तोपण जिनेश्वरने अने सुसाधुने मूकीने हुं बीजाने नमस्कार करीश नहीं. तेमज कारण विना स्थावर जीवनी पण हिंसा हुं करतो नथी तो बीजा जीवोनी हिंसा करवा देवानी तो वातज शा माटे करवी? हे देव! तारे पण ते प्रमाणे बोलवुं योग्य नथी." ते सांभळीने राक्षस बोल्यो के "हे राजपुत्र! त्यारे तुं आ जिनालयने विषे चाल, त्यां वीतरागनुं बिंब छे, तेनी तुं पूजा कर." ते वात कबूल करी कुमार हर्षथी जिनालयमां गयो, तो ते बिंब बौद्ध लोकोए पूजेलुं हतुं, तेथी तरतज कुमार त्यांथी पाछो वळीने बोल्यो के 'हे देव! शिरच्छेद थाय तोपण हुं तारुं वचन कबूल करीश नहीं.' तेवो तेनो दृढ निश्चय सांभळीने राक्षस मणिमंजरीने पगथी गळवा लाग्यो. ते वखते ते बाळा अत्यंत करुण स्वरे विलाप करवा लागी के 'हे प्राण-

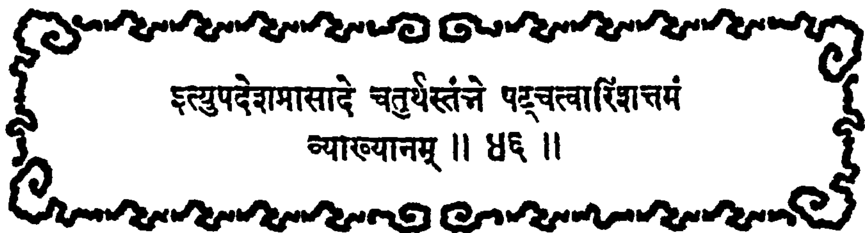
---

१ राजानुं नाम संग्रामदृढ प्रथम आव्युं छे.

प्रिय ! हे नाथ ! मारुं मरणथी रक्षण करो, रक्षण करो.' ए प्रमाणे विलाप करती ते बाळाने कंठ पर्यंत गळीने राक्षसे कुमारने कह्युं के "हे मूर्खशिरोमणि ! जो तुं दासीने पण आपवा ना कहेतो होय तो छेवट एक बकरो ज आप, नहीं तो आ स्त्रीनुं भक्षण करीने पछी तारुं पण भक्षण करीश." ते सांभळी कुमार बोल्यो "कल्पांत काळे पण तारा कहेवा प्रमाणे करनार नथी, तो शामाटे तुं वारंवार पूछया करे छे ?" आ प्रमाणे तेना दृढ निश्चयथी संतुष्ट थयेलो ते राक्षस तरतज पोतानुं दिव्य रूप प्रगट करीने बोल्यो के "हे साहसिकशिरोमणि ! देवेंद्रे करेली तारी प्रशंसाने नहीं मानतो हुं तारी परीक्षा करवा आव्यो हतो, तारा प्रसादथी मने पण समकित प्राप्त थयुं छे." एम कही ते देव तेमना गांधर्व लग्न करी स्वर्गे गयो. पछी कुमार पण मणिमंजरीने महोत्सव पूर्वक परणी पोताने नगरे आव्यो.

कुमारने राज्य पर बेसाडीने तेना पिताए दीक्षा ग्रहण करी. संग्रामसूर राजा पण श्रावक धर्मनुं प्रतिपालन करी पांचमा देवलोकमां देवता थयो. त्यांथी च्यवी एक अवतार धारण करी मोक्षपदने पामशे.

"राजाओने विषे श्रेष्ठ एवो संग्रामसूर राजा बे यतनाने विषे सावधान चित्तवाळो थइने कष्टमां पण अहिंसादिक नियमो पाळी पांचमा देवलोके गयो."



व्याख्यान ४७ मुं.

वाकीनी चार यतना विषे.

मिथ्यात्वलिप्तचित्तानां, संलापालापवर्जनम् ।
सकृद्वा बहुवारं वा, न यच्छेदशनादिकम् ॥ १ ॥

जावार्थ—" मिथ्यात्वे करीने लीप्त छे चित्त जेनां एवा चरकादिक ताप-सोने ' तमे कुशळ छो ?' एम स्नेह पूर्वक वारंवार पूछवुं ते संलाप अने एक वार पूछवुं ते आलाप–ते बन्नेनुं वर्जवुं ते त्रीजी तथा चोथी यतना जाणवी. तेमज ते मिथ्यात्वीओने एकवार अथवा वारंवार अशनादिक आपवुं नहीं, ते पांचमी तथा छठ्ठी यतना जाणवी. "

उपासक दशांग सूत्रमां श्री भगवाने समकित ग्रहण करनारने आ प्रमाणे वर्तवा कह्युं छे के "नो मे कप्पइ अज्जपन्नई अन्नउत्थियदेवयाणि वा अन्नउत्थिय-परिगाहियाणि अरिहंतचेइयाणि वा वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुव्विं अणालत्तेणं आलवित्तएण वा संलवित्तएवा तेसिं असणं वा पाणं वा दाओ अणुप्पयाओ वा— इत्यर्थः—"आजथी आरंजीने मारे अन्य तीर्थिकोना हरिहरादिक देवोने तथा अन्यतीर्थिकोए ग्रहण करेलां अरिहंतना बिंबोने वांदवा न कल्पे, नमन करवुं नकल्पे; पूर्वे नहीं बोलावेला एवा ते मिथ्यात्वीओनी साथे मारे आलाप के संलाप करवो न कल्पे, तथा तेओने अशन, पान विगेरे एकवार आपवुं के वारंवार आपवुं न कल्पे." आ प्रसंग उपर सद्दालपुत्र श्रावकनुं दृष्टांत छे, ते उपासक दशांग सूत्रथी अहीं लख्युं छे.

सद्दालपुत्रनी कथा.

पोल्लासपुर नामना नगरमा मंखलीपुत्र (गोशाळा)ना मतने माननारो स-द्दालपुत्र नामनो श्रावक रहेतो हतो. ते पांचसो कुंजारनी दुकानोनो स्वामी हतो. तेनी पासे त्रण करोड सोनामहोरो हती, अने ते दसहजार गायोनो पोषक हतो. तेने अग्निमित्रा नामनी पत्नी हती. एकदा ते श्रेष्ठिनी पासे आवी आकाशमां अदृश्य रहीने एक देवे कह्युं के " हे श्रेष्ठी ! काले आ नगरमां महामाहन अरि-हंत सर्वज्ञ पधारशे, तेनी तारे कल्याणकारक अने मंगळकारक देव स्वरूपज छे एम धारी सेवा करवी. " एम कहीने ते देव गयो त्यारे तेणे विचार कर्यो के " खरे-खर मारो धर्मगुरु गोशाळोज महामाहन अने सर्वज्ञ छे, तेथी तेज काले पधार-शे. हुं तेनी अशनादिकवमे सेवा करीश. "

पछी बीजे दिवसे प्रातःकाळे गोशाळाने बदले श्री महावीर स्वामीनुं आगमन सांभळीने ते घणो हर्षित थयो. अने महोत्सव पूर्वक तेमने वांदवा गयो.

દૂરથીજ પ્રાતિહાર્યાદિકની શોભા જોઇને 'અહો ! મારા ગુરુની શક્તિ અચિંત્ય જણાય છે.' એમ વિચારીને પ્રભુ પાસે જઇ તેમને વંદના કરીને પાસે બેઠો. પ્રભુએ દેશના દીધી તે સાંભળી. પછી પ્રભુએ પૂછ્યું કે 'હે સદ્દાલપુત્ર ! કાલે તને દેવતાએ જે કહ્યું હતું તે સાંભરે છે ?' ત્યારે 'હા' કહીને તેણે વિનંતિ કરી કે 'હે પ્રભુ ! મારી કુંભારની દુકાને આપ પધારો, જેથી હું આપની સેવા કરું.' પ્રભુ પણ ત્યાં પધાર્યા.

એકદા માટીનાં વાસણોને તડકામાં મૂકેલાં જોઇને જિનેશ્વરે તેને પૂછ્યું કે 'હે શ્રેષ્ઠી ! કયા ઉપાયથી આ વાસણો બનાવ્યાં ?' તે બોલ્યો 'હે સ્વામી ! માટીનો પિંડ કરી ચક્રપર મૂકીને આ વાસણો તૈયાર કરેલાં છે.' પ્રભુએ પૂછ્યું 'હે ભદ્ર ! આ વાસણો તું ઉદ્યમથી તૈયાર કરે છે કે ઉદ્યમ વિના ?' આ પ્રમાણે ભગવાને પ્રશ્ન કર્યો. ત્યારે ગોશાળાના મતમાં રહેલો તે નિયતિવાદી હોવાથી 'ઉદ્યોગવડે બને છે' એવો ઉત્તર આપે તો પોતાના મતની ક્ષતિ થાય અને બીજા મતનું પ્રતિપાદન થાય તેથી તેણે 'ઉદ્યમ વિના થાય છે.' એવો જવાબ આપ્યો. પ્રભુએ ફરીથી પ્રશ્ન કર્યો કે "હે સદ્દાલપુત્ર ! કદાચ કોઇ માણસ આ તારાં વાસણો ચોરીને લઇ જાય, અથવા ભાંગી નાંખે, અથવા તારી સ્ત્રી સાથે ભોગ વિલાસ કરે, તો તેનો તું શું દંડ કરે ?" તેણે જવાબ આપ્યો કે 'હે ભગવાન્ ! તે માણસના પ્રાણ હું અકાળેજ નાશ પમાડું, તેને અત્યંત તર્જના કરું.' ત્યારે સ્વામી બોલ્યા કે "આ પ્રમાણે તું ઉદ્યમની પરતંત્રતાથીજ સર્વ કાર્ય કરતાં છતાં 'ઉદ્યમ વિનાજ થાય છે' એમ જે બોલે છે તે મિથ્યા છે. એકાંતપણે માનેલું સર્વ અસત્ય છે અને સ્યાદ્વાદપણે જે માનવામાં આવે તેજ સત્ય છે." ઇત્યાદિ ભગવાનની યુક્તિથી પ્રતિબોધ પામેલા તે શ્રેષ્ઠીએ પોતાની સ્ત્રી સહિત જિનેશ્વરની પાસે પાંચ અણુવ્રત અને સાત શિક્ષાવ્રત રૂપ શ્રાદ્ધ ધર્મ અંગીકાર કર્યો. પછી શ્રી જિનેશ્વરે અન્યત્ર વિહાર કર્યો.

અન્યદા સદ્દાલપુત્રે ભગવંતનો ધર્મ સ્વીકાર્યાની વાત સાંભળીને ગોશાલો તેને ઘેર આવ્યો. તેને જોઇ સદ્દાલપુત્ર મૌન ધારીને બેસીજ રહ્યો. ઉભા થઇને આવકાર પણ આપ્યો નહીં. તે વખતે લજ્જા વડે મંખલીપુત્રે ભગવાનના ગુણનું આ પ્રમાણે વર્ણન કર્યું કે—'હે દેવાનુપ્રિય ! અહીં મહામાહન પધાર્યા હતા ?' તે સાંભળી સદ્દાલપુત્રે પૂછ્યું—'તમે કોને મહામાહન કહો છો ?' ગોશાળાએ જવાબ

आप्यो के—" हे सद्दालपुत्र ! सूक्ष्म अने बादर बंने प्रकारना जीवोनी हिंसाथी विरमेला होवाथी श्री महावीर ज महामाहन छे. हे श्रमणोपासक! अहींआं महा-गोप, महा सार्थवाह, महा धर्मकथक, अने महा निर्यामक आव्या हता?" ते सांभ-ळीने श्रेष्ठीए पूछयुं—'तमे आ कोनुं वर्णन कर्युं ?' गोशाळाए जवाब आप्यो के 'में आ सर्व वर्णन त्रिशलाना पुत्र श्री महावीर स्वामीनुं कर्युं छे.' ते सांभळीने हर्षित थयेला श्रेष्ठिए बहुमानपूर्वक गोशाळाने कह्युं के—'तमे ते मारा गुरु साथे वाद करी शकशो ?' गोशाळे जवाब दीधो—" हे भद्र ! हुं तेमनी साथे वाद करवा समर्थ नथी. केमके तारा ते धर्मगुरु तो मने एक ज वचनमां जीती ले तेवा छे." ते सांभळी सद्दालपुत्रे कह्युं के—" तमे ते सर्वज्ञनुं यथार्थ वर्णन कर्युं छे,तेथी हुं तमने सत्कार पूर्वक अशन, वस्त्र विगेरे आपुं छुं, परंतु धर्मबुद्धिथी आपतो नथी." आ प्रमाणेना अनेक युक्तियुक्त वाक्योथी तेने प्रभुना धर्ममां दृढ जाणीने गोशाळे विलक्ष थइ त्यांथी अन्यत्र विहार कर्यो.

एकदा एक निष्ठावाळो सद्दालपुत्र श्राद्धधर्म पाम्या पछी पंदर वर्षे पौषध लइने पौषधशालामां रह्यो हतो. ते वखते रात्रीए हाथमां तीक्ष्ण खड्ग धारण करीने कोइ देव पिशाचनुं रूप लइ त्यां आवी उपसर्ग करवा लाग्यो. तेना घरमांथी एक एक पुत्रने लावीने शस्त्रवडे तेने कापी तेना रुधिर वडे पौषधमां बेठेला ते श्रेष्ठीना शरीरपर सिंचन करवा लाग्यो. तोपण श्रेष्ठिने तेनापर जरा पण क्रोध आव्यो नहीं तेम ते भय पण पाम्यो नहीं. ते जोइ पिशाचे तेने कह्युं के—" हे मृत्युनी प्रार्थना करनार ! हजु पण जो तुं धर्मनो त्याग नहीं करीश तो हुं तारी समक्ष तारी स्त्रीनो पण घात करीश." आ प्रमाणे वारंवार कहेला तेना वाक्यो सांभळीने श्रेष्ठीए विचार कर्यो के—' खरेखर आ कोइ अनार्य (पापी) जणाय छे, माटे तेने हुं पकडी लउं.' एम विचारी मोटो पोकार करी तिरस्कार पूर्वक तेने पकडवा जाय छे तेवामां ते देव अदृश्य थइ गयो. ते वखते पोताना पतिना मुखथी पोकार सांभ-ळीने तेनी स्त्री तरतज पौषधशाळामां आवी, अने पतिने पोकार करवानुं कारण पूछयुं. एटले तेणे यथार्थ वृत्तांत कह्युं. ते जाणीने ते बोली के—" हे स्वामी ! तमारा पुत्र विगेरे सर्व कुटुंबने कोइए हण्या नथी, ते सर्वे आपणा घरमां सुतेला छे. माटे कोइ देवतानो करेलो आ उपसर्ग छे एम जणाय छे. परंतु तमे व्रतनो भंग कर्यो ते योग्य न कर्युं, माटे ते पापनी आलोयणा करो." ते सांभळीने श्रेष्ठीए

लागेला दोषनी आलोयणा प्रतिक्रमणा करी. अनुक्रमे श्रावकनी अग्यार प्रतिमा वहन करी सौधर्म देवलोकमां चार पल्योपमना आयुष्यवाळो देवता थयो. त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ सिद्धिपदने पामशे. (आ कथा उपासक दशांगमांथी लखी छे.)

" श्री जिनेंद्रना वाक्यथी जेनुं चित्त बोध पाम्युं छे, जेणे गोशाळाना पक्षनो त्याग कर्यो छे अने जे सम्यक्त्वनी यतनाओ धारण करवामां प्रवीण छे तेवो सद्दालपुत्र श्रावक स्वर्गे गयो. "

इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे सप्तचत्वारिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥४७॥

व्याख्यान ४८ मुं.

छ आगार विषे.

आगाराः षड्विधाः प्रोक्ता, अपवादे जिनादिभिः।
राजगुरुवृत्तिकान्तारगणदेवबलैर्युताः ॥ १ ॥

भावार्थ—" श्री जिनेश्वरोए अपवाद मार्गे छ प्रकारना आगार कहेला छे. राजानी आज्ञाथी, गुरुजननी आज्ञाथी, आजिवीकाने माटे, समुदायना कहेवाथी, देवना बळात्कारथी अने कोइ बळवानना बळात्कारथी—ए प्रमाणे छ प्रकार छे. "

समकितने विषे आ आगारो अपवाद मार्गेज अपेक्षा छे, पण उत्सर्ग मार्गे अपेक्षा नथी. कह्युं छे के—

उस्सग्गसुअं किंचि, किंचि अ अववायं भवे सुत्तं ।

तदुभयसुत्तं किंचि, सुत्तस्स भंगा मुणेयव्वा ॥ १ ॥

भावार्थ—कोइक सूत्र उत्सर्गनुं छे, कोइक सूत्र अपवादनुं छे, अने कोइक सूत्र उत्सर्ग तथा अपवाद ए बन्नेने लागु पडे छे. ए प्रमाणे सूत्रना त्रण भांगा समजवा.

माटे गुणनो विभाग जोइने बन्ने पक्षनी सेवा करवी. (बन्ने पक्षो ग्रहण करवा.) कह्युं छे के—

तम्हा सव्वाणुन्ना, सव्वनिसेहो य पवयणे नत्थि ।
आयं वयं तुलिज्जा, लाहोकंखिव्व वाणियओ ॥ १ ॥

भावार्थ—"तेथी करीने जिन प्रवचनने विषे कोइ पण कार्यनी सर्वथा आज्ञा के सर्वथा निषेध कहेल नथी. परंतु लाभनी आकांक्षा (इच्छा) राखनारा वणिकनी जेम आय ने व्ययनी (लाभ ने हानीनी) तुलना (सरखामणी) करीने विशेष लाभवाळा कार्यनो स्वीकार करवो." अर्थात् जेमां व्यय करतां लाभ वधारे मळे तेम होय ते कार्य करवुं.

उत्सर्ग मार्गमां सर्वथा तो यथाख्यात चारित्रवाळानो जे निरतिचार (अतिचार रहित) मार्ग छे ते ज छे. परंतु हालना समयमां तेवा प्रकारना संघयणादिकना अभावने लीधे तेवा प्रकारनो उत्सर्ग मार्ग पाळी शकाय नहीं, तेथी अपवाद मार्गनुं पण सेवन करीने पछी आलोयणादिवडे आत्मानी शुद्धि करवी.

प्रथम राजाभियोग नामनो आगार कहे-छे.—

दाक्षिण्येन क्षितीशस्य, बलाद्वा वाक्यतोऽथवा ।
कुदृष्टीनां नमस्कारो, राजाभियोग उच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—"राजानी दाक्षिण्यता वडे, तेना बळात्कारथी अथवा तेना वचनथी कुदृष्टीओ (मिथ्यात्वीओ)ने नमस्कार करवो पडे ते राजाभियोग कहेवाय छे."

आ प्रसंग उपर कार्तिक श्रेष्टीनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

कार्तिक श्रेष्ठीनुं दृष्टान्त.

पृथ्वीभूषण नगरमां श्री मुनिसुव्रत स्वामीथी धर्मनो प्रतिबोध पामेलो कार्तिक नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो. एकदा ते नगरमां गैरिक नामनो तापस आव्यो. ते कायम मासोपवास करीने पारणुं करतो हतो. तेना एक कार्तिक शेठ विना बीजा सर्वे लोको भक्त थइ गया, एटले ते तापस कार्तिक शेठ उपर गुस्से थयो. एकदा राजाए ते गैरिकने पोताने त्यां पारणुं करवा माटे निमंत्रण कर्युं. त्यारे तेणे कह्युं के " हे राजा ! जो कार्तिक श्रेष्ठी मने पीरसे, तो हुं तमारे घेर पारणुं करवा आवुं. " राजाए ते वात कबूल करी. पछी श्रेष्ठीने बोलावीने राजाए कह्युं के ' मारे घेर तुं गैरिकने पीरसीने जमाड. ' श्रेष्ठीए कह्युं के ' हे राजा ! आपनी आज्ञाथी हुं जमाडीश. ' रायाभियोगेणं आगार होवाथी राजाना आग्रह वडे निषिद्ध कार्य करवामां व्रतनो भंग थतो नथी, एम मानीने श्रेष्ठीए हा पाडी. पछी गैरिकने भोजन कराववा ते राजाने त्यां गयो. तेने पीरसतां तापसे पोताना नाक पर आंगळी घसीने इसारो कर्यो के ' तारुं नाक कपायुं. ' ते जोइ श्रेष्ठीए विचार कर्यो के " जो प्रथमथी ज दीक्षा ग्रहण करी होत तो आ तापस मारो पराभव करी शकत नहीं. " एम विचारीने तेणे एक हजार ने आठ वणिकपुत्र (वाणोतर) सहित दीक्षा ग्रहण करी.

अनुक्रमे द्वादशांगीनो अभ्यास करी बार वर्ष संयम पाळी सौधर्मेन्द्र थया. गैरिक तापस पण मरण पामी पोताना धर्मने प्रभावे तेज सौधर्मेन्द्रनो ऐरावण हाथी[1] थयो. तेणे विभंगज्ञान वडे कार्तिक शेठने ओळखीने नासवा मांड्युं. एटले तेने पकडीने इन्द्र तेनापर चड्या. इन्द्रने भय पमाडवा माटे ते ऐरावणे पोतानां बे रूप कर्यां, त्यारे इन्द्रे पण बे रूप कर्यां. हाथीए चार रूप कर्यां, त्यारे इन्द्रे पण चार रूप कर्यां. छेवट इन्द्रे अवधिज्ञानथी जोयुं तो ते हाथीने गैरिक तापसनो जीव जाण्यो, तेथी इन्द्रे तेनी तर्जना करी, एटले तेणे पोतानुं स्वाभाविक रूप कर्युं. त्यांथी चवीने ते इन्द्र महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य थइ सिद्धि पदने पामशे. आ कथा भगवती सूत्रमां विस्तारथी आपेली छे.

---

१ देवलोकमां तिर्यंच होता नथी पण तेवां प्रकारनां अभियोगिक देवने इंद्रनी आज्ञा थतां ऐरावण हाथीनुं रूप विकुर्वीने फरज बजाववी पडे छे

इति कार्त्तिक श्रेष्ठी दृष्टांतः

केटलाएक राजानी आज्ञा छतां पण पोताना व्रतनो भंग करता नथी, ते पर कोशा गणिकानी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

कोशा गणिकानी कथा.

पाटलीपुरमां अनुपम रुप, लावण्य अने कलाकुशळतादिक गुणरत्नोना कोश (भंडार) समान कोशा नामनी वेश्या रहेती हती. तेने प्रतिबोध करवा माटे गुरुनी आज्ञा लइने स्थूलभद्र मुनि तेने घेर आवी चातुर्मास रह्या हता. वेश्याए तेमने वश करवा माटे अनेक प्रकारना हाव, भाव, विभ्रम, विलास विगेरे कर्या. पण तेथी तेमनुं चित्त किंचित् पण चलित थयुं नहीं. छेवट मुनिए तेने प्रतिबोध पमाड्यो. तेथी तेणीए बार व्रत लेतां चोथा व्रतमां राजानी आज्ञाथी आवेला पुरुष विना बीजा पुरुषनो संग नहीं करवानो नियम लीधो.

एकदा कोशाए लीधेला व्रतनो भंग करवा माटे नंदराजाए रूपमां कामदेव समान अने अति कामातुर एवा एक रथकार (सुथार) ने तेनी पासे मोकल्यो. ते रथकारे कोशाना मननुं रंजन करवा माटे त्यांज उभा रहीने धनुर्विद्यानी निपुणताथी एक पछी एक बाण मूकी लांबी लाकडीनी जेम बनेला बाणना अग्रभागथी आंबानी टोचनी लुंब तोडीने ते लुंब पोताना हाथमां लइ कोशाने आपी. तेमज पोतानी वाणीनी सर्व प्रकारनी चतुराइ अने सर्व प्रकारनुं बळ बताव्युं. ते सर्व जोइने विषयमां विरक्त थयेली कोशा बोली के—

वरं ज्वलदयःस्तंभपरिरंभो विधीयते ।
न पुनर्नरकद्वाररामाजघनसेवनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" तपावेला लोढाना स्तंभनुं आलिंगन करवुं सारुं, पण नरकना द्वार समान स्त्रीना जघननुं सेवन करवुं सारुं नहीं. "

इत्यादिक वैराग्यना वचनो कहीने पछी तेना गर्वनो नाश करवा माटे सरसवनो ढगलो करी, तेनी उपर एक सोय मूकी, ते सोयना अग्रभाग पर एक पुष्प मुकी, ते पुष्प पर नृत्य करती बोली के—

न दुक्करं अंबयलुंबतोडनं, न दुक्करं सरिसवनच्चियाणं ।
तं दुक्करं तं च महाणुभावं, जं सो मुणी पमयवणम्मी वुच्छो ॥१॥

भावार्थ—" आंबानी लुंब तोडवी दुष्कर नथी, तेमज सरसवना ढगला-पर नाच करवो ते पण दुष्कर नथी; परंतु महानुभाव श्री स्थूलभद्र मुनि प्रमादना अथवा प्रमदाना वनमां प्रमादी न थया, तेज एक दुष्कर छे."

गिरौ गुहायां विजने वनान्तरे, वासं श्रयन्तो वशिनः सहस्रशः।
हर्म्येऽतिरम्ये युवतीजनान्तिके, वशी स एकः शकटालनंदनः ॥२॥

भावार्थ—"पर्वतनी गुफामां अने निर्जन वनमां निवास करनारा हजारो मनुष्यो जितेन्द्रिय होइ शके छे, परंतु अति मनोहर हवेलीमां सुंदर युवतिजननी साथे वसीने तो मात्र एक शकटालमंत्रीना पुत्र श्री स्थूलभद्र ज जितेन्द्रिय रह्या छे."

इत्यादिक श्री स्थूलभद्र मुनिनी प्रशंसा करीने तेणीए ते रथकारने प्रतिबोध पमाड्यो. तेथी ते रथकारे विषयथी पराङ्मुख थइने दीक्षा ग्रहण करी. अने अनुक्रमे स्वर्ग सुख प्राप्त कर्युं. कोशा पण चिरकाळ जैनधर्मनी प्रभावना करीने स्वर्ग सुख पामी.

" कोशा वेश्यानी जेम स्वधर्ममां रागी एवा जे मनुष्यो राजानी आज्ञा छतां पण स्वधर्मनो त्याग करता नथी तथा जेओ अन्य जनोने पोतानी बुद्धिथी प्रतिबोध पमाडे छे तेओ खरेखरा मुक्ति मार्गना मुसाफर जाणवा."

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभेऽष्टचत्वारिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ४८ ॥

व्याख्यान ४९ मुं.

बीजा गणाभियोग आगार विषे.

समुदायो जनानां हि, स एवोक्तो जिनैर्गणः ।
क्रियते तस्य वाक्येन, निषिद्धमपि सेवनम् ॥ १ ॥
गणाभियोग आगारो, द्वितीयोऽयं निगद्यते ।
केचिदुत्सर्गपक्षस्था, नैवं मुञ्चत्यभिग्रहम् ॥ २ ॥

भावार्थ—" मनुष्योना समुदायने जिनेश्वरोए गण कहेलो छे. ते गणना वाक्यथी निषिद्ध कार्यनुं पण सेवन करवुं पडे ते बीजो गणाभियोग नामनो आगार कहेवाय छे. उत्सर्ग पक्षमां दृढ एवा कल्लाएक गणाभियोगथी पण पोताना अभिग्रहने छोडता नथी. " आ प्रसंग उपर सुधर्म राजानी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

सुधर्म राजानी कथा.

पंचाल देशमां सुधर्म नामे राजा हतो. ते जैनधर्ममां दृढ हतो. एकदा राजा पासे आवीने दूते कह्युं के—' हे देव ! महावज्र नामनो चोर लोकोने बहु पीडा करे छे. ' राजाए जवाब आप्यो के—'हुं जाते त्यां जइने तेनो निग्रह करीश. केमके

तावद्गर्जन्ति मातंगा, वने मदभरालसाः ।
शिरोविलग्नलाङ्गूलो, यावन्नायाति केसरी ॥ १ ॥

भावार्थ—"ज्यां सुधी पूंछडाने मस्तक पर राखीने केसरीसिंह आव्यो न-होय (दृष्टिए पडयो न होय) त्यां सुधीज वनने विषे मदना समूहथी आळसु थयेला हाथीओ गर्जना करे छे. "

एम कहीने सैन्यना भारथी पृथ्वी तळने पण नमावतो सुधर्म राजा ते चोरनो निग्रह करवा गयो. त्यां क्रीडा मात्रथी ज ते चोरनो पराभव करीने राजा

पोताना नगर तरफ पाछो फर्यो. नगरमां प्रवेश करती वेळाए नगरनो मुख्य दरवाजो एकाएक तुटी पड्यो. ते जोइने अपशुकन थया जाणी राजा पाछो वळी गामनी बहार ज रह्यो. मंत्रीओए जलदीथी नवो दरवाजो कराव्यो. ते पण प्रसंग वखते पडी गयो. एटले त्रीजो दरवाजो कराव्यो. ते पण तेज रीते पडी गयो. ते जोइ राजाए मंत्रीने पूछ्युं के 'आ दरवाजो वारंवार केम पडी जाय छे?' मंत्रीए कह्युं "हे देव! जो पोताना हाथथी एक पुरुषने हणीने तेनुं बलिदान आपो, तो आ दरवाजानो अध्यक्ष यक्षदेव प्रसन्न थाय; बीजी रीते पूजा, नैवेद्य के बलिदानथी ते संतुष्ट थाय तेम नथी." आ प्रमाणे चार्वाक मतवाळा मंत्रीनुं वचन सांभळीने राजा बोल्यो "जे नगरमां जवा माटे जीववध करवो पडे, ते नगरमां जवानुं मारे शुं प्रयोजन छे? केमके जे अलंकार पहेरवाथी कान तुटी जाय, ते अलंकार शा माटे पहेरवो? राजनीतिमां पण आ प्रमाणे कह्युं छे—

न कर्तव्या स्वयं हिंसा, प्रवृत्तां च निवारयेत् ।
जीवितं बलमारोग्यं, शश्वद्वाञ्छन्महीपतिः ॥१॥

भावार्थ—"जीवितने, बळने अने आरोग्यताने निरंतर इच्छता राजाए पोते हिंसा करवी नहीं अने थती हिंसानुं पण निवारण करवुं."

राजानो आवो निश्चय जाणीने मंत्रीए समग्र पौरजनोने बोलावीने कह्युं के "हे लोको! सांभळो. जो राजा एक मनुष्यनो वध करी बलिदान आपे, तो आ दरवाजो स्थिर थाय तेम छे. ते वात में राजाने जाहेर करी, त्यारे तेणे मने जवाब आप्यो के "हुं जीवहिंसा करीश नहीं, करावीश नहीं, अने तेम करता अनुमोदन पण आपीश नहीं. तो हवे तमारा सौना विचारमां जेम आवे तेम करो." ते सांभळीने महाजने राजा पासे आवी कह्युं के "हे स्वामी! अमे बधुं करशुं पण आप मौन रहेजो." राजाए कह्युं "जो प्रजा कांइपण पाप करे, तो तेनो छठो भाग राजाने आवे छे. कह्युं छे के—

यथैव पुण्यादिसुकर्मभाजां, षष्ठांशभागी नृपतिः सुवृत्तः ।
तथैव पापादिकुकर्मभाजां, षष्ठांशभागी नृपतिः कुवृत्तः॥१॥

भावार्थ—"जेम पुण्यादिक सुकर्म करनारा मनुष्योना पुण्यनो छठो भा-

ग राजाने मळे छे, तेमज पापादिक कुकर्म करनार मनुष्योना पापनो पण छट्ठो भाग राजाने मळे छे."

फरीथी महाजने कह्युं के "हे स्वामी! ते पापनो भाग सघळो अमारे माथे, तेमां आपनो भाग नहीं." इत्यादि कहीने महा प्रयत्ने राजानी पासे मौन रहेवा हा पडावी. पछी महाजने पोतपोताना घरमांथी द्रव्य काढीने एकठुं करी तेनो सुवर्णमय एक पुरुष बनाव्यो. ते सुवर्णना पुरुषने एक गाडामां नांखी गाममां फेरवी आघोषणा करावी के "जो कोइ माता पोताना पुत्रने पोताना हाथे विष खवरावे अने तेनो पिता पोताने हाथे तेनुं गळुं मरडी नांखे, तो तेने आ सुवर्णमय पुरुष तथा एक करोड सोनामहोर मळशे."

हवे ते नगरमां एक महा दरिद्री वरदत्त नामनो ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने रुद्रदत्ता नामनी स्त्री हती. ते बंने अति निर्दय हता. तेमने सात पुत्रो हता. उपर जणावेली आघोषणा सांभळीने वरदत्ते पोतानी स्त्रीने कह्युं के "हे प्रिया! नाना पुत्रने आपीने आ बधुं द्रव्य आपणे ग्रहण करीए, केमके धननुं माहात्म्य लोकोत्तर छे. कह्युं छे के—

> पूज्यते यदपूज्योऽपि, यदगम्योऽपि गम्यते ।
> वंद्यते यदवंद्योऽपि, तत्प्रभावो धनस्य च ॥ १ ॥

भावार्थ—"अपूज्य छतां पण पूजाय छे, अगम्य छतां पण गमन कराय छे अने अवंद्य छतां पण वंदन कराय छे, ते सर्व धननोज प्रभाव छे."

ते सांभळीने निर्दयपणाने लीधे तेणीए पण पतिनुं वाक्य अंगीकार कर्युं. पछी ते ब्राह्मणे पडह छबीने कह्युं के 'मने आ द्रव्य आपीने आ पुत्रने लइ जाओ.' त्यारे लोकोए कह्युं के "ज्यारे तारी स्त्री विष आपशे अने तुं तेनुं गळुं मरडी नांखशे त्यारे तने आ धन मळशे; ते विना मळशे नहीं." ते वात पेला ब्राह्मणे अंगीकार करी. ते वखते पोताना मावापनुं वाक्य सांभळीने ते नाना पुत्र इन्द्रदत्ते विचार कर्यो के 'अहो! संसार केवो स्वार्थी छे के द्रव्यने माटे पोताना पुत्रने पण मारी नांखवा तैयार थाय.'

पछी ते पुत्रने तेणे महाजनने सोंप्यो. महाजन तेने पुष्पादिकथी शणगारी

राजा पासे लइ गया. राजाए हसते मुखे आवता ते वाळकने जोइने पूछयुं के 'हे वाळक ! तुं केम हसे छे ? शुं तुं मरणथी पण व्हीतो नथी ?' ते वाळक बोल्यो के " हे राजा ! सांभळो.

तावद्भयाद्धि भेतव्यं, यावद्भयमनागतम् ।
आगतं तु भयं दृष्ट्वा, सोढव्यं तमशंकितैः ॥ १ ॥

भावार्थ—" ज्यां सुधी भय प्राप्त थयुं न होय, त्यां सुधीज भयथी विहिवुं, परंतु भयने आवेलुं जोइने तो तेने निःशंकपणे सहनज करवुं. पछी भय राखवो निष्फल छे. "

वळी हे राजा ! लताना अंकुरथी हंसोनी जेम ज्यारे शरण करवा लायकथीज भय प्राप्त थाय, त्यारे पछी क्यां जवुं ? " ते सांभळी राजाए हंसनुं वृत्तांत पूछ्युं. त्यारे ते वाळके हंसनी कथा आ प्रमाणे कही—

कोइ एक अरण्यमां मानस सरोवरनी पाळ पर एक सीधो अने उंचो वृक्ष हतो. ते वृक्ष पर घणा हंसो रहेता हता.एकदा ते वृक्षना मूळमां एक लतानो अंकुर जोइ वृद्ध हंसे वीजा हंसोने कह्युं के " हे पुत्र पौत्रो ! आ लताना अंकुरने तमे सर्वे चांचवडे कापी नांखो, जेथी सर्वेनुं मरण न थाय. " ते सांभळीने जुवानीया हंसो हसीने वोल्या के " अहो ! आ वृध्ध मरणथी केवा वीए छे ? सर्व काळ जीववानी इच्छा करे छे. आ अंकुराथी आपणने शो भय थवानो छे ? " ते जाणी वृध्ध हंसे विचार्युं के " अहो ! आ जुवानीया मूर्ख जणाय छे. पोताना हितने के अहितने पण जाणता नथी. कह्युं छे के—

प्रायः संप्रति कोपाय, सन्मार्गस्योपदर्शनम् ।
निलूननासिकस्येव, विशुध्धादर्शदर्शनात् ॥ १ ॥

भावार्थ—हालना वखतमां सत्यमार्गनो उपदेश करवो, ते घणुं करीने कोपने माटेज थाय छे. जेनी नासिका कपाइ गइ होय, तेवा मनुष्यने जो निर्मळ अरिसो देखाडीए, तो ते कोपने माटेज थाय छे. " वळी—

उपदेशो न दातव्यो, यादृशे तादृशे नरे ।

पश्य वानरमूर्खेण, सुगृही निर्गृही कृता ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेवा तेवा (मूर्ख) माणसने उपदेश आपवो नहीं. केमके जुओ! तेवो विचार कर्या विना उपदेश आपवाथी मूर्ख वानरे सुघरीने घर विनानी करी नांखी." ते दृष्टांत आ प्रमाणे छे.

एक वृक्ष पर एक सुघरी सुंदर माळो बनावीने तेमां सुखे रहेती हती. एकदा वर्षाऋतुमां घणीज वृष्टि थती हती तेवामां आम तेम भमतो, शीतळ वायुथी कंपतो अने दांतने ककडावतो एक वानर त्यां आवी पहोंच्यो. तेने तेवो दुःखी थतो जोइ सुघरीए कह्युं के "हे वानर! आवी वर्षाऋतुमां आम तेम केम भमे छे? अमारी जेम घर करीने केम रहेतो नथी?" ते सांभळीने वानर बोल्यो—

सूचीमुखे दुराचारे, रे रे पंडितमानिनि ।
असमर्थो गृहारंभे, समर्थो गृहभंजने ॥ १ ॥

भावार्थ—"सोयना सरखी तीक्ष्ण मुखवाळी, दुराचारी अने पंडित मानी एवी हे सुघरी! हुं घर बनाववाने तो असमर्थ छुं पण घर भांगवाने तो समर्थ छुं."

एम कही एक फडंग मारी ते वानरे तेणीनो माळो वींखी नांखी एक एक तृणने जूदी जूदी दिशाओमां फेंकी दीधां. पछी ते सुघरी बीजे स्थाने जइने सुखेथी रही."

आ प्रमाणे विचारी ते वृद्ध हंस मौन धारीने रह्यो. केटलेक काळे ते लता वधीने झाडनी आसपास वींटाइ चोतरफ फेलाइ गइ, अने अनुक्रमे वृक्षनी टोच सुधी पहोंची गइ. एक दिवस कोइ पारधीए आवी ते लताने पकडी वृक्ष पर चडी बधे पाश पाथरी दीधो. रात्री थतां सर्वे हंसो सुवा माटे ते वृक्ष पर आव्या. एटले ते सर्वे पाशमां सपडाइ गया. तेथी तेओ पोकार करवा लाग्या. त्यारे वृद्ध हंसे कह्युं के 'पहेलां मारुं वचन तमे मान्युं नहीं तेथी आ मृत्यु प्राप्त थयुं.' तेओ बोल्या "हे पिता! लतानो अंकुर शरणने माटे राख्यो हतो, ते ज अंकुर मरणने माटे थइ पडयो. हवे तमे आमांथी जीववानो उपाय बतावो. कह्युं छे के—

चित्तायत्तं धातुबद्धं शरीरं, नष्टे चित्ते धातवो यान्ति नाशम् ॥

तस्माच्चित्तं यत्नतो रक्षणीयं, स्वस्थे चित्ते बुद्धयः संभवन्ति॥१॥

भावार्थ—" आ सप्तधातुथी बंधायेलुं शरीर चित्तने आधीन छे, चित्त नाश पामवाथी धातुओ नाश पामे छे. तेथी करीने चित्तनुं यत्नथी रक्षण करवुं. केमके चित्त स्वस्थ होवाथी बुद्धिओ उत्पन्न थाय छे."

वृद्ध हंसे कह्युं के "हे पुत्रो ! तमे बधा प्रातःकाळे मरेलानी जेवा तदन स्तब्ध थइ जजो, किंचित् पण हालशो चालशो नहीं, एटले तमने मरेला धारी एमनेएम पारधी नीचे नांखी देशे. नहींतो तमारां गळां मरडीने मारी नांखी पछी नीचे नांखशे." सर्वे हंसोए वृद्धना कह्या प्रमाणे कबुल कर्युं. प्रातःकाळे पारधी आवीने जुए छे तो सर्वेने मरेलां जाण्या. एटले विश्वासथी सर्वेने जाळमांथी काढी नीचे नांख्या. बधा हंसो नीचे नखाइ रह्या त्यारे पेला वृद्ध हंसे इशारो कर्यो. एटले सर्वे उठी उठीने पलायन करी गया अने चिरकाळ जीवता रह्या. ते वखते वृद्धहंसे कह्युं के—

दीग्घकालं वयं तत्थ, पायवे निरुवद्दवे ।
मूलाओ उठ्ठिया वल्ली, जायं सरणतो भयम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" अमे दीर्घकाळ सुधी ते उपद्रव रहित एवा वृक्ष उपर रह्या, पण पछी ते वृक्षना मूळमांथीज वेल उठी (जेथी अमे मरणना भयमां आवी पड्या) माटे शरणथकीज भय थयुं."

आ प्रमाणेनी वार्ता कहीने इंद्रदत्ते कह्युं के " हे राजा ! आ जगतनो एवो नियम छे के—पिताथी ताप पामेलो पुत्र माने शरणे जाय,माताथी उद्वेग पामेलो पुत्र पिताने शरणे जाय, बन्नेथी परिताप पामेलो राजाने शरणे जाय, अने राजाथी पण उद्वेग पामेलो होय तो ते महाजनने शरणे जाय छे. हवे ज्यां माता पोतेज विष आपे छे, पिता गळुं मरडे छे, राजा ते कार्यमां प्रेरणा करे छे अने महाजनो द्रव्य आपीने ते कार्य करावे छे, तो पछी कोनुं शरण लेवुं ? केमके—माता पिताए पुत्रने आपी दीधो,राजा शत्रु थइने घात करवा बेठो, देवता पळीदाननी इच्छा राखे छे, तो हवे लोको शुं करे ? माटे हे राजा ! हवे मारे भय राखीने शुं करवुं ? हवे तो राजी खुशीथी यमराजाना अतिथि थवुं तेज योग्य छे."

आ प्रमाणेनां ते बाळकनां वचनो सांभळीने राजाए कह्युं के "हे बाळक! हुं तने छोडी मूकुं छुं, तने जे मारे ते मारो शत्रु छे. तुं सुखेथी जीवतो रहे. मारे आ नगर विगेरेनुं कांइपण प्रयोजन नथी." एम कहीने राजाए आखा नगरमां पोताना सेवक पासे अमारी पटह वगडाव्यो. आ प्रमाणेनुं राजानुं धैर्य जोइने तरतज एक देव प्रगट थइ बोल्यो के "हे राजा तारा धैर्यनी शक्रे करेली प्रशंसा सांभळी तेनी परीक्षा करवा माटे में आ दरवाजो त्रणवार पाडी नांख्यो हतो, परंतु तारा धैर्यथी हुं संतुष्ट थयो छुं." एम कही राजाने प्रणाम करी दरवाजो हतो तेवो करी दइ राजानी प्रशंसा करतो ते देव स्वस्थाने गयो.

"सुधर्म राजाए सर्व जनोना आग्रहथी पण हिंसावाळुं वाक्य कबूल कर्युं नहीं. प्रांते वैराग्यथी चारित्र ग्रहण करीने ते राजा मोक्षसुखने पाम्यो."

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभेएकोनपंचाशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ४९ ॥

व्याख्यान ५० मुं.

वृत्तिकांतार नामना आगार विषे.

दुर्भिक्षारण्यसंपर्के, जीवनार्थं विधीयते ।
मिथ्यात्वं स च कान्तारवृत्तिनाम निगद्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—"दुकाळने विषे अन्नादिकने अभावे तथा अरण्यमां भूला पडतां जळ फळ विगेरेना अभावे जीववाने माटे जे कांइ मिथ्यात्वनुं सेवन करवुं पडे ते 'कांतारवृत्ति' नामनो आगार कहेवाय छे."

उत्सर्ग अपवादने जाणनार कोइ संविज्ञ पुरुष पण जीवितने राखवा माटे मिथ्यात्व सेवे के नियमजंगादि करे ते वृत्तिकांतार नामनो त्रीजो आगार कहेवाय- छे. केटलाएक उत्सर्ग मार्गमां दृढ रहेनारा तो अच्चंकारी जट्टानी जेम कष्टमां पण स्वधर्मने छोमता नथी. ते दृष्टांत आ प्रमाणे—

अच्चंकारी जट्टानी कथा.

क्षितिप्रतिष्ठित पुरमां 'धना' नामनो श्रेष्ठी हतो. तेने 'जडा' नामनी स्त्रीथी आठ पुत्रो उपर एक 'जट्टा' नामनी पुत्री थइ हती. एकदा श्रेष्ठीए तेना उपरना अतिशय प्रेमथी स्वजनोने एकठां करीने कह्युं के—'आ मारी पुत्रीने को- इए चुंकारो पण करवो नहीं.' तेम कहेवाथी ते पुत्रीने सौ 'अचंकारीजट्टा' कहे- वा लाग्या. एकदा तेणीने मनोहर युवावस्था पामेली जोइने राजाना मंत्रीए तेना पिता पासे तेनी मांगणी करी. त्यारे श्रेष्ठीए कह्युं के—"जे पुरुष मारी पुत्रीनुं वचन उल्लंघन करे नहीं तेने मारे मारी पुत्री आपवानी छे." ते सांजळी मंत्रीए तेनुं वचन कबुल कर्युं. एटले शुज दिवसे श्रेष्ठीए तेमनां लग्न कर्यां. तेनी साथे विषयसुखनो अनुभव करतां केटलाक दिवसो व्यतीत थया. एकदा तेणीए मंत्रीने कह्युं के—"हे प्राणनाथ! तमे राज्यना मोटा अधिकारी छो, परंतु जो मारी साथे प्रीति राखवानी इच्छा होय तो तमारे सूर्य अस्त थया पछी क्यांइ पण जवुं नहीं. एम करशो तोज मारी प्रीति रहेशे." ते सांजळीने मंत्रीए तेणीनुं वाक्य अंगी- कार कर्युं.

एक दिवस राजाए मंत्रीने पूछ्युं के 'हे मंत्री! तमे हमेशां वहेला घेर केम जाओ छो?' त्यारे मंत्रीए सत्य वात जाहेर करी. ते सांजळीने राजाए विनो- दने माटे कांइ मीष करीने मंत्रीने रात्रीना बे प्रहर सुधी रोकी राख्यो, पछी रजा आपी. मंत्री घेर जइने जुए छे तो बारणुं बंध हतुं. तेथी ते बोल्यो के "हे प्रिया! द्वार उघाड. आजे राजानी आज्ञाथी आटलो विलंब थयो छे, मारी म- रजीथी रोकायो नथी, माटे पराधीन एवा मारा पर कोप करीश नहीं." आ प्रमाणे वारंवार कहेवाथी जट्टाए कोप करीने एकदम द्वार उघाड्युं. अने पछी मंत्रीनी दृष्टीने छेतरीने ते तरतज घर बहार नीकळी पिताना घर तरफ चाली. मार्गमां चो- रोए तेणीने पकडी अने तेणीना वस्त्रो तथा आजूषणो लइ लइने तेणीने पल्ली- पतिने सोंपी. पल्लीपतिए तेणीनुं मनोहर रुप जोइ जोगने माटे घणी प्रार्थना करी,

परंतु तेणीए हा पाडी नहीं. तेथी पल्लीपतिए तेणीने घणुं दुःख देवा मांड्युं. त्यारे ते बोली के—"मारा प्राणनो नाश थशे, तोपण हुं मारुं शील खंडन करीश नहीं. तुं फोगट फांफां शा माटे मारे छे ?" एम कह्यां छतां पण पल्लीपति समज्यो नहीं. त्यारे तेने बोध करवा माटे तेणीए एक कथा कही.

"कोइ एक तेजोलेश्यानी सिद्धिवाळो तापस कोइ वृक्ष नीचे बेठो हतो. तेना मस्तक पर एक बगलीए चरक करी. तेथी कोप करीने ते तापसे ते पक्षीपर तेजोलेश्या मूकी तेने बाळी नांख्युं. पछी तेणे विचार्युं के 'जे कोइ मारी अवज्ञा करशे तेने हुं तेजोलेश्याथी बाळी नांखीश.' एम विचारीने ते तापस भिक्षाने माटे कोइ श्रावकने घेर गयो. ते श्रावकनी पतिव्रता स्त्री पोताना पतिनी सेवामां व्यग्र हती. तेथी ते तापसने भिक्षा देवा जरा विलंब करीने आवी. एटले कोप करीने तेणे तेणीना पर तेजोलेश्या मूकी, परंतु शीलना प्रभावथी ते बळी नहीं. ते वखते तेणीए कह्युं के 'हे तापस ! हुं ते बगली नथी.' ते सांभळी विस्मय पामीने तापसे पूछ्युं के 'अरण्यमां थयेली ए वात तें शी रीते जाणी ?' तेणीए कह्युं के 'आ प्रश्ननो जवाब तने वाराणसीपुरीनो कुंभार आपशे.' ते सांभळीने तापसे त्यां जइ ते कुंभारने पूछ्युं. त्यारे ते बोल्यो के 'ते स्त्रीने तथा मने शील-ना प्रभावथी ज्ञान उत्पन्न थयुं छे तेथी अमे बंनेए ते वात जाणी छे. माटे हे तापस ! तुं पण शील पाळवामां यत्न कर.' ते सांभळीने तापस आश्चर्य पामी शीलनी प्रशंसा करी त्यांथी स्वस्थाने गयो."

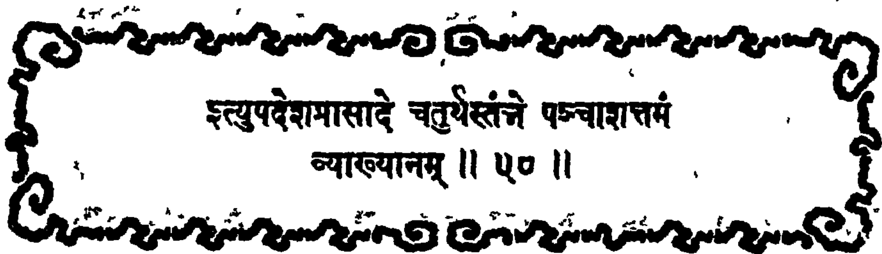
आ प्रमाणेनी वार्ता सांभळीने पल्लीपति भद्राना शापथी भय पामी तेनाथी विरक्त थयो. पछी तेणे तेणीने कोइ माणसने वेचाती आपी दीधी. ते माणसे तेणीने बब्बर कुलमां जइने नीच जातिमां वेची. तेणे पण भोगने माटे प्रार्थना करी. ते तेणीए मानी नहीं. त्यारे ते कारुक बोल्यो के 'जो तुं अन्न व-स्त्रादि सुखने इच्छती होय, तो मारुं कहेवुं कबूल कर.' ते सांभळीने ते भद्रा व्रत संबंधी त्रीजा आगारने जाणती हती, तोपण तेणीए पोतानो निश्चय छोड्यो नहीं. तेथी क्रोध पामीने तेणे तेणीना शरीरमांथी रुधिर काढी एक वासणमां नांख्युं. ते रुधिरमां उत्पन्न थयेला कृमिना रुधिरथी ते वस्त्र रंगवा लाग्यो. ए प्रमाणे वारं-वार रुधिर काढवाथी तेणीने पांडुरोग थयो. तोपण तेणीए शीलनुं खंडन कर्युं नहीं.

अन्यदा ते भट्टानो भाइ धनपाळ वेपारने माटे बब्बर कुळमां आव्यो. तेणे फरतां फरतां पोतानी व्हेनने जोइने ओळखी. तणे ते कारुकने घणुं धन आपीने तेनी पासेथी पोतानी व्हेनने छोडावी. पछी पोतानी व्हेनने लइने धनपाळ पोताना नगरमां आव्यो. भट्टाना पतिए तेनी बधी हकीकत सांभळी, एटले ते तेणीने पोताने घेर लइ गयो अने सर्व गृहकार्यनी स्वामिनी करी. भट्टाए कोपनुं अत्यंत माठुं फळ अनुभवेलुं होवाथी ' हवे प्राणांते पण कोप न करवो ' एवी प्रतिज्ञा करी.

एकदा ते नगरना उपवनमां मुनिपति नामना मुनि कायोत्सर्गे रह्या हता. तेवामां कोइ प्रकारना अग्निथी ते मुनिनुं शरीर दाझी गयुं.दाझेला मुनिना शरीरनी चिकित्सा (औषध) करवा माटे कुंचिक श्रेष्ठीए बीजा बे मुनिने लक्षपाक तेल लेवा माटे अचंकारीने घेर मोकल्या. ते मुनिओए तेणीने घेर जइने तेल माग्युं. त्यारे हर्षित थइने अचंकारीए दासीने कह्युं के ' हे दासी ! तेलनो घडो लाव.' आ समये स्वर्गमां इन्द्रे सभा समक्ष अचंकारीनी प्रशंसा करी के "हालमां पृथ्वीपर अचंकारी भट्टाना जेवुं कोइ पण क्षमावान नथी. " इन्द्रना आ वाक्यपर श्रद्धा नहीं राखनार कोइ नास्तिक देव तेणीने घेर आव्यो. अने दासी तेलनो कुंभ लावती हती ते कुंभने दैवी शक्तिथी पाडीने फोडी नांख्यो. त्यारे अचंकारीए क्रोध कर्या शिवाय बीजो घडो लाववानुं कह्युं. तेपण देवे फोडी नांख्यो. ए प्रमाणे त्रीजो घडो पण फोडी नांख्यो. एटले अचंकारी पोतेज चोथो घडो लेवा उठी. ते घडो तेणीना शीलना प्रभावथी ते देवना फोडी शक्यो नहीं. ते घडामांथी अचंकारीए मुनिने तेल वहोराव्युं. मुनि बोल्या के ' हे भद्रे ! अमारे माटे तारा त्रण घडाओ फुटी गया, तेथी तने घणुं नुकशान थयुं छे, तोपण तारे दासीपर कोप न करवो. ' ते सांभळीने अचंकारी कांइक हास्य करती बोली ' हे पूज्य ! में क्रोधनुं अने माननुं फळ आ भवमांज अनुभव्युं छे. ' एम कहीने मुनिना पुछवाथी तेणीए पोतानुं सर्व वृत्तांत कही संभळाव्युं. ते सांभळीने अदृश्य रहेलो देव प्रत्यक्ष थयो अने इंद्रे करेली प्रशंसा कही बतावी. पछी भांगी नांखेला त्रणे घडा सारा करी तेणीनी प्रशंसा करी तथा सुवर्णनी वृष्टि करीने ते देव स्वस्थाने गयो. आ सर्व जोइने पेला मुनिओ पण तेणीनी प्रशंसा करता स्वस्थाने गया अने ते तेलथी दग्ध थयेला मुनिने सज्ज कर्या.

अबंकारी भट्टा गर्वनो त्याग करी, श्राद्धधर्मनुं प्रतिपालन करी, समाधिथी मरण पामीने देवतानां सुखो अनुभवी छेवट मोक्षपदने पामशे.

" आ अबंकारीनी कथा सांभळीने जे सुबुद्धिमान दुःखमां पण धर्मनो त्याग करे नहीं ते पुरुष थोडा काळमां मोक्ष लक्ष्मीने पामे."



व्याख्यान ५१ मुं.

गुरुनिग्रह नामना आगार विषे.

पितृमातृकलाचार्या, मिथ्यात्वभक्तिचेतसः ।
कारयन्ति यथेच्छं ते, तद्गुरुनिग्रहो भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" पिता, माता अने कलाचार्य जो मिथ्यात्वथी वासित चित्तवाळा होय (मिथ्यात्वी होय), अने तेथी तेओ पोतानी इच्छाथी कांइपण निषिद्ध कार्य करावे, तो ते गुरुनिग्रह कहेवाय छे. अर्थात् गुरुनिग्रहथी नियमनो भंग करवो पडे तो तेनो दोष लागतो नथी. कारण के ते आगार राखवामां आवे छे.—

गुरुनिग्रह एटले गुरुना आदेशथी नियम भंगादि करवुं पडे ते. गुरु कोने कहीए ?

माता पिता कलाचार्य, एतेषां ज्ञातयस्तथा ।
वृद्धा धर्मोपदेष्टारो, गुरुवर्गः सतां मतः ॥ १ ॥

भावार्थ—" माता, पिता, कलाचार्य, पोतानो ज्ञातिवर्ग, वृद्धजनो तथा धर्मनो उपदेश करनार—आटला गुरु कहेवाय छे. एम सत्पुरुषो माने छे."

आ गुरुवर्गमांथी जेओ मिथ्यादृष्टिना भक्त होय, अने तेमना वाक्यथी

निषिद्धनुं सेवन करवुं पडे तो तेथी व्रत भंग थतो नथी. तोपण केटलाएक आना अपवाद मार्गनो त्याग करीने उत्सर्गे पडनेज स्वीकार करे छे. अर्थात् तेवा गुरुवर्गना कथनथी पण ग्रहित नियमादिनो भंग करता नथी. आ संबंधमां सुलसनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

सुलसनी कथा.

राजगृही नगरीमां अत्यंत निर्दय, अभव्य अने हमेशां पांचसो पाडानो वध करनार कालशौकरिक नामनो कसाइ रहेतो हतो. एकदा श्रेणिक राजाए पोतानी नरक गतिनुं निवारण करवा माटे तेने एक कूवामां नांख्यो. तो त्यां पण तेणे माटीना पांचसो पाडा बनावीने तेनो वध कर्यो. त्यारे राजाए तेना हाथ पग बांधीने कूवामां नांख्यो. ते वखते तेणे मनथी कल्पना वडे सेंकडो पाडाओ बनावीने तेनो वध कर्यो. ए प्रमाणे हमेशां जीवहिंसा करतां तेणे अत्यंत पाप कर्म उपार्जन करी सातमी नरकनुं आयुष्य बांध्युं. मृत्यु समय नजीक आवतां ते कालशौकरिक रोगथी अत्यंत पीडा पामवा लाग्यो. त्यारे तेना पुत्र सुलसे पिताने शान्ति थवा माटे मनवांछित खान पान, सुंदर गीत गान, सुकुमार पुष्पशय्या, अने सुगंधी चंदननो लेप विगेरे घणा उत्तम उपचारो कर्या. तोपण तेनाथी तेने जरा पण सुख थयुं नहीं. परंतु उलटो वधारे दाह थवा लाग्यो. तेथी सुलसे अभयकुमार पासे जइ ते वृत्तांत जणाव्युं. ते सांभळी अभयकुमारे कह्युं–"ते तारो पिता नरकमां जवानो छे, तेथी नरकनी आनुपूर्वी तेनी सन्मुख आवेली छे. माटे सुखना उपचारो मात्र दुःखना ज कारणभूत थाय छे. तो हवे तारे निरस भोजन आपवुं, खारुं जळ पीवा देवुं, गधेडा अने कूतराना शब्दो संभळाववा, तीक्ष्ण कांटानी शय्या पर सुवाडवो अने अशुचीनुं विलेपन करवुं. इत्यादि विरुद्ध उपचार करवाथी तेने सुख थशे." आ प्रमाणे अभयकुमारना कहेवाथी सुलसे तेवा उपचार कर्या, तेथी कालशौकरिकने कांइक सुख उत्पन्न थयुं. छेवट ते मृत्यु पामीने सातमी नरके गयो. तेना पुत्र सुलसे पापनुं फळ प्रत्यक्ष जोयुं तेथी अने अभयकुमारना उपदेशथी ते श्री महावीरस्वामीनो बार व्रतधारी श्रावक थयो.

एकदा सुलसने तेनी माता, व्हेन विगेरे स्वजनोए मळीने कह्युं के 'तुं तारा पितानी जेम पापकर्म कर.' त्यारे ते बोल्यो के 'हुं तेवुं पापकर्म कदी पण

करीश नहीं. केमके ते पापनो भोक्ता हुंज थाउं. ' ते सांभळीने तेओ बोल्या के 'धननी जेम त पापसमूहने पण अमे वहेंची लेशुं. ' त्यारे सुलसे एक कुहाडाथी पोताना पग पर घा कर्यो अने तेनी पीडाथी पृथ्वी पर पडी गयो. पछी ते बोल्यो के ' तमे पाप वहेंची लेवा कहो छो तो हमणां आ मारी पीडा वहेंची ल्यो, केमके मने घणुं दुःख थाय छे. ' त्यारे तेओ बोल्या के ' ते कांइ वहेंची लेवाय नहीं, ते तो जे करे तेज भोगवे. ' त्यारे सुलस बोल्यो के ' ज्यारे तमे आ प्रत्यक्ष पीडाने पण वहेंची लइ शकता नथी त्यारे पाप शी रीते वहेंची लेशो ? ' एम कही तेओने निरुत्तर करी दीधा अने जींदगी पर्यंत जीववध कर्यो नहीं. कहुं छे के—

अवि इच्छिय मरणं, न परपीडं करंति मणसा वि ।
जे सुविइयसुगइपहा, सुरियसुओ जहा सुलसो ॥ १ ॥

भावार्थ—" कालसौकरिकना पुत्र सुलसनी जेम जेओने सुगतिनो मार्ग सुविदित छे, तेओ मरणने इच्छे परंतु मनथी पण परने पीडा करे नहीं."

अनुक्रमे सुलस श्राद्धधर्मनुं प्रतिपालन करीने स्वर्गे गयो.इति सुलस कथा.

आ संबंधमां एक बीजुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

आरोग्यद्विजनुं दृष्टांत.

उज्जयिनी नगरीमां एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते बाल्यावस्थाथीज अत्यंत रोगी होवाथी सौ कोइ तेने रोगद्विज कहीने बोलावता हता. लोकोना मुखथी पोतानुं तेवुं नाम सांभळीने ते ब्राह्मण हमेशां खेद पामतो हतो. एकदा धर्मदेशना करता मुनिना मुखथी तेणे सांभळ्युं के—

आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धिर्गतं वयो नो विषयाभिलाषः ।
यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोहविडम्बना मे॥१॥

भावार्थ—"आयुष्य गळी जाय छे पण पाप बुद्धि गळती नथी, युवावस्था जाय छे पण विषयनो अभिलाष जतो नथी अने औषध करवामां यत्न थाय छे पण धर्मने विषे यत्न थतो नथी. माटे हे स्वामी ! हे जिनेश्वर ! मने महामोहनी विडंबना छे."

अनित्यानि शरीराणि, विभवो नैव शाश्वतः ।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः, कर्तव्यो धर्मसंग्रहः ॥ २ ॥

भावार्थ—" शरीर अनित्य (क्षणभंगुर) छे, वैभव निरंतर रहेवानो नथी, अने मृत्यु निरंतर पासे ज रहेलुं छे. माटे प्राणीए धर्मनो संग्रह करवो. "

आ प्रमाणे मुनिनी वाणी सांभळी प्रतिबोध पामेला ते ब्राह्मणे तेज वखते तेमनी पासे श्रावकना बार व्रत ग्रहण कर्यां. ते व्रतोनुं शुद्ध पालन करवाथी तथा शुद्ध श्रावक थवाथी मोटा मोटा लोको तेना व्याधिने माटे अनेक प्रकारनी चिकित्सा करवानुं कहेवा लाग्या. तोपण ते औषध नहीं करतां व्याधिनी पीडाने सहन करवा लाग्यो. ते पोताना आत्माने कहेतो हतो के—

पुनरपि सहनीयो, दुःखपाकस्त्वयायं ।
न खलु भवति नाशः, कर्मणां संचितानाम् ॥
इति सह गणयित्वा, यद्यदायाति सम्यक् ।
सदसदिति विवेको,ऽन्यत्र भूयः कुतस्ते ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे जीव ! फरीथी पण तारे आ दुःखविपाक सहन करवो ज पडशे, केमके संचय करेलां कर्मोनो नाश थतो नथी. एम धारीने सुख के दुःख जे जे प्राप्त थाय तेने तुं सम्यक् प्रकारे सहन कर. केमके आ प्रमाणेनो सत् असत्नो विवेक फरीथी तने बीजा जन्मे क्यांथी प्राप्त थशे ? "

आ प्रमाणे दृढ चित्तवाळा ते ब्राह्मणनी एक वखत इंद्रे प्रशंसा करी के " अहो ! आ रोगद्विज महा सत्ववाळो छे. केमके तेना गुरु जनोए अनेक प्रकारनी चिकित्सा करवा मांडी, तोपण तेनी अपेक्षा राख्या विना ते रोगनी व्यथाने ज सहन करे छे. " ते सांभळीने इंद्रना ते वचन पर श्रद्धा नहीं आववाथी कोइ बे देवो वैद्यनुं स्वरुप धारण करीने तेनी पासे आवी बोल्या के " हे रोगी ब्राह्मण ! अमे तने रोगथी मुक्त करीए, परंतु तारे रात्रे मद्य मांस माखण विगेरेनुं भोजन करवुं पडशे. " आ प्रमाणे वैद्यनुं वाक्य सांभळीने तेणे विचार कर्यो के " ब्राह्मणना कुळमां उत्पन्न थयेला अने वळी विशेषे करीने हाल जिनधर्मने पामेला एवा मारे आ निंदित कर्मनो त्याग करवो ते ज श्रेष्ठ छे. केमके तेवुं कर्म लौकिकमां अने

लोकोत्तरमां बंनेमां निंद्य छे." एम विचारीने ते रोगी ब्राह्मणे वैद्योने कह्युं के "हे वैद्यो ! हुं बीजा औषधथी पण चिकित्साने इच्छतो नथी, तो पछी आवा सर्व धर्ममां असेव्य पदार्थोनुं सेवन करीने तो हुं शी रीते ज चिकित्सा करावुं ? कह्युं छे के—

मद्ये मांसे मधुनि च, नवनीते तक्रतो बहिः ।
उत्पद्यन्ते विलीयन्ते, सूक्ष्माश्च जन्तुराशयः ॥ १ ॥

भावार्थ—" मद्यमां, मांसमां, मधमां अने छाशथी छूटा पडेला माखणमां क्षणे क्षणे सूक्ष्म जन्तुनो समूह उत्पन्न थाय छे अने नाश पामे छे."

सप्तग्रामे च यत्पापमग्निना भस्मसात्कृते ।
तदेवं जायते पापं मधुबिन्दु प्रभक्षणात् ॥ २ ॥

भावार्थ—" अग्निवडे सात गाम बाळीने भस्म करवाथी जेटलुं लागे तेटलुं पाप मधनुं एक बिंदु भक्षण करवाथी लागे छे."

यो ददाति मधु श्राद्धे, मोहितो धर्मलिप्सया ।
स याति नरकं घोरं, खादकैः सह लंपटैः ॥ ३ ॥

भावार्थ—" जे पुरुष धर्म थवानी इच्छाथी मोह पामीने श्राद्धमां मध आपे छे, ते पुरुष तेना लंपट खानाराओनी साथे घोर नरकमां जाय छे."

आ प्रमाणे तेनां वचनो सांभळीने ते वैद्योए तेना स्वजनो पासे वात करी. त्यारे तेओ एकठा थइने शास्त्रनी युक्तिथी तेने चिकित्सा कराववानी प्रेरणा करवा लाग्या. तेओए कह्युं के—

शरीरं धर्मसंयुक्तं, रक्षणीयं प्रयत्नतः ।
शरीराच्छ्रवते धर्मः, पर्वतात् सलिलं यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—"धर्मना साधनभूत शरीरनुं प्रयत्नथी रक्षण करवुं, केमके जेम पर्वतथी पाणी श्रवे छे तेम शरीरथी धर्म स्रवे छे (थाय छे)."

आ प्रमाणे पिता विगेरे स्वजनोए तेने घणी रीते समजाव्यो, तोपण ते धर्ममां दृढ होवाथी देहादिकनी आशा राख्या विना मात्र मोक्ष सुखनीज अभिलाषामां चुस्त रह्यो. तेणे देहनी पीडाने अंगे कह्युं के—

आपदर्थे धनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि ।
आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि ॥ १ ॥

भावार्थ—" आपत्तिने माटे धननी रक्षा करवी, धनवडे स्त्रीनुं रक्षण करवुं, अने स्त्री तथा धनवडे करीने पण निरंतर आत्मानुं रक्षण करवुं. "

धर्मिष्ठ पुरुषोने देह ने धन समान छे, अने आत्मा देहथी विशेष छे. माटे देहनी पीडानी उपेक्षा करीने पण आत्मानुं रक्षण करवुं. "

आ प्रमाणे ते ब्राह्मणनी पोतानी प्रतिज्ञामां निश्चलता जोइने ते बन्ने देवो अत्यंत हर्षित थया. पछी 'अहो ! सात्विक शिरोमणि! अहो! सत्यप्रतिज्ञावान् !' एम कहेता ते बन्ने देवोए पोतानुं रुप प्रगट कर्युं. अने इंद्रे करेली तेनी प्रशंसानुं वर्णन करी सर्व रोगने हरण करनारा रत्नोथी तेनुं घर भरपूर करी ते देवो स्वस्थाने गया. ते रत्नोना प्रभावथी औषध विना ज तेनुं शरीर आरोग्य थइ गयुं. तेथी तेनुं नाम सर्वत्र 'आरोग्यद्विज' एवुं प्रसिद्ध थयुं.

"आ प्रमाणे ते ब्राह्मणे गुरुनिग्रहरुप आगारने जाणतां छतां पण धर्मनी दृढता मूकी नहीं अने ग्रहण करेला नियमो निरतिचार पाळी स्वर्ग सुखने पाम्यो. प्रांते मोक्ष सुखने पामशे."

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे एकपञ्चाशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ५१ ॥

व्याख्यान ५२ मुं.

देवाभियोग नामना आगार विषे.

कुलदेवादिवाक्येन, यन्मिथ्यात्वं विधीयते ।
स सम्यक्त्वरतानां च, भवेत्सुराभियोगकः ॥ १ ॥

जावार्थ—" कुलदेवादिकना वचने करीने जे कांइ मिथ्यात्वनुं सेवन करवुं पमे ते सम्यक्त्वधारीने देवाजियोग नामनो आगार कहेवाय बे. "

चूलनीपिता नामना श्रावकनी जेम केटलाएक व्रत ग्रहण कर्या पछी देवादिकना उपसर्गथी चपळता पामे बे, परंतु तेथी तेमने महा दोष लागतो नथी. मिथ्यादुष्कृत विगेरे आपवाथी ते दोष जलदी निवृत्ती पामे बे; केटलाएक उत्सर्ग मार्गमां स्थित रह्या थका नमि राजर्षिनी जेम चलित थता ज नथी. तेनी कथा आ प्रमाणे—

नमि राजर्षिनी कथा.

अवन्ति देशमां सुदर्शन नामना नगरने विषे मणिरथ नामे राजा हतो. तेनो नानो जाइ युगबाहु युवराज पद पर हतो. ते युगबाहुने मदनरेखा नामनी अति स्वरुपवान स्त्री हती. एकदा मदनरेखाने जोइने मणिरथ राजा कामातुर थयो. तेथी ते एकदम मनमां बोली उठ्यो के—

> दृष्ट्वा यद्रुपसंपत्तिं, स्वात्मन्येव स्मरो ज्वलन् ।
> वृथा पुनः प्रवादोऽयं, लोके दग्धो हरेण यत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे स्त्रीनी रुप संपत्ति जोइने मारा आत्माने विषे ज कामदेव बळवा लाग्यो बे, तो ' शंकरे कामदेवने बाळी नांख्यो बे ' एम जे लोकमां कहेवाय बे ते वृथा ज बे. "

पछी मणिरथ मदनरेखाने वश करवा माटे निरंतर दासी द्वारा पुष्प, तांबूल, वस्त्र तथा अलंकार विगेरे मोकलवा लाग्यो. तेने ' आ जेठनी प्रसादी बे ' एम मानी मदनरेखा ग्रहण करवा लागी. एकदा राजाना कहेवाथी दासीए मदनरेखा पासे राजानी इच्छा जणावी. ते सांजळीने मदनरेखा बोली के " हे दासी !

> जगत्प्रसिद्धो नारीषु, शीलमेव महागुणः ।
> तस्मिन् लुप्ते वृथा सर्वं, गते जीव इवांगिनः ॥ १ ॥

जावार्थ—" स्त्रीओने विषे शीलरूपीज महागुण जगप्रसिद्ध बे, ते

शीलनो लोप थाय, तो पछी जीव विनाना शरीरनी जेम ते स्त्रीओनो जन्म वृथाज छे."

माटे तमारे पृथ्वीपतिने आवुं अयोग्य वचन मारा प्रत्ये कहेवुं योग्य नथी." एम कही दासीने तेणीए विदाय करी. दासीए तेज प्रमाणे राजा पासे जइने कह्युं. ते सांभळी रागथी क्षुब्ध थयेला राजाए विचार कर्यो के "मारा बंधुने मारी नांखीश तो पछी ते मारे वश आवशे, ते विना मारुं कार्य सिद्ध थशे नहीं." एम विचारीने राजा बंधुनो वध करवानो उपाय शोधवा लाग्यो.

एकदा वसंत ऋतुमां क्रीडा करवा माटे युगबाहु पोतानी प्रियाने साथे लइने उद्यानमां गयो. त्यां चिरकाळ सुधी क्रीडा करीने रात्रीए पण त्यांज (उद्यानमां) कदली गृहनी अंदर प्रिया सहित सुइ गयो. ते अवसर जोइने राजा गुप्त रीते खड्ग लइने ते कदलीगृहमां पेठो. त्यां युगबाहुने प्रिया सहित निद्रावश थयेलो जोयो. एटले तरतज कुलमर्यादानुं उल्लंघन करी, यश धर्म अने लज्जादिकनो पण त्याग करी, राजाए खड्गवडे बंधुनो शिरच्छेद कर्यो. 'कामदेवनो उदय एवोज होय छे.' पछी राजा पोताना घर तरफ चाल्यो. राजाए पोताना बंधु पर जे वखते खड्गनो प्रहार कर्यो, तेज वखते मदनरेखा जाग्रत थइ गइ, तेणीए जोयुं तो राजाए ज ते अकृत्य कर्युं दीठुं एटले ते मौन रही. राजाना गया पछी पोताना पतिनो अवसान समय जाणी विलाप करती ते गद् गद् कंठे बोली के—

त्वं वृथा मा कृथाः खेदं, महाभाग मनागपि ।
सर्वत्र प्राक्कृतं कर्म, प्राणिनामपराध्यति ॥ १ ॥

भावार्थ—"हे प्रिय ! हे महाभाग्यवान ! तमे जरा पण वृथा खेद करशो नहीं. केमके पूर्वे करेलां कर्मो ज सर्वत्र प्राणीओनो अपराध करे छे."

तस्मान्मनः समाधेहि, विधेहि शरणं जिनम् ।
ममत्वं मुञ्च मैत्रीं च, कुरु सर्वेषु जन्तुषु ॥ २ ॥

भावार्थ—"तेथी करीने हे प्राणेश ! तमे तमारा मनने समाधिमां राखो, जिनेश्वरनुं शरण करो, ममतानो त्याग करो अने सर्व जंतुओने विषे मैत्री भाव धरावो."

इत्यादि प्रियानां वचनोथी कोपने शांत करी पंचपरमेष्ठी मंत्रनुं स्मरण करतो ते युगबाहु मरण पामीने पांचमा देवलोकमां देव थयो.

पछी मदनरेखा जेठनी बद निष्ठा जाणीने पोताना शीलनुं रक्षण करवा माटे पोताना युवान पुत्रनो तथा धन विगेरेनो त्याग करीने गर्जवती छतां पण रात्रीमांज त्यांथी चालती थइ. चालतां चालतां ते एक मोटा जयंकर अरण्यमां आवी पडी. ते वनमां सिंह अने शार्दुल विगेरेना जयंकर शब्दोथी त्रास पामेली ते सतीए त्यांज पुत्रनो प्रसव कर्यो. पछी ते बाळकने रत्नकंबलमां वींटी, पोताना पतिना नामनी मुद्रिका ते बाळकनी आंगळीमां पहेरावीने, पोताना वस्त्रोनी तथा देहनी शुद्धि करवा माटे नजीकना एक सरोवरमां गइ. ते सरोवरमां रहेला जळहस्तीए तेने पोतानी सूंढवडे पकडीने आकाशमां उछाळी. ते वखते आकाशमार्गे कोइ खेचरेंद्र नंदीश्वर द्वीपनी यात्रा करवा विमानमां बेसीने जतो हतो. तेणे तेणीने झीली लीधी अने पोताना विमानमां बेसाडी. त्यारे ते मदनरेखाए रुदन करतां पुत्र प्रसवनो अने ते पुत्रने मार्गमां मूकी आव्यानी वात ते विद्याधरना राजा पासे कही. ते सांजळीने तेणे विद्याना बळथी ते पुत्रनुं स्वरुप जाणीने कह्युं के "हे जद्रे ! तुं चिंता न कर, विपरीत शिक्षा पामेला अश्वथी हरण करायेला मिथिला नगरीना राजा पद्मरथे तारा पुत्रने लइने पोतानी पुत्र रहित प्रियाने आप्यो छे. माटे हवे तुं ते संबंधी विशादनो त्याग करी मने पति तरीके अंगीकार कर." ते सांजळीने मदनरेखा बोली के "हे पूज्य ! प्रथम मने नंदीश्वरनी यात्रा करावो. पछी हुं तमारो मनोरथ पूर्ण करवानो यत्न करीश." ते सांजळीने विद्याधरेंद्र तेणीने नंदीश्वर द्वीपे लइ गयो. त्यां बावन जिनेश्वरना बिंबोने वंदना करीने ते विद्याधर तथा मदनरेखा त्यां रहेला मणिचूड नामना चक्रवर्ती राजर्षि पासे आवी तेने वंदना करी तेनी पासे बेठा.

हवे पांचमा देवलोकमां उत्पन्न थयेलो युगबाहु देव अवधिज्ञानथी पोतानो पूर्वजन्म जाणीने त्यां आव्यो. अने प्रथम मदनरेखाने वंदना करीने पछी तेणे मुनिने वंदना करी. ते जोइने मणिप्रज विद्याधरे तेन कह्युं के "तमे विवेकी थइने प्रथम आ स्त्रीने वंदना करीने पछी मुनिने वंदना करी तेनुं शुं कारण ? एवुं अयोग्य आचरण तमे केम कर्युं ?" एम कहीने तेने उपालंज दीधो त्यारे चारणश्रमण मुनिए ते देवना पूर्वजवनुं स्वरुप मणिप्रजने कही संजळावीने कह्युं के—

[illegible]

धर्माचार्यमनुस्मृत्य, [illegible] ।
युक्तं मुक्तिं विहायार्थी, [illegible] ॥ १ ॥

भावार्थ—" [illegible] "

यतिना श्रावकेणाथ, येनार्हद्धर्मे स्थिरीकृतः ।
स एव तस्य जायेत, धर्माचार्यो न संशयः ॥ २ ॥

भावार्थ—" [illegible] "

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

थी ते त्यां आवीने नमिने कहेवा लागी के ' हे वत्स नमि ! मोटा जाइ साथे युद्ध करवुं तने युक्त नथी.' ते सांजळी विस्मय पामेला नमिए पूछ्युं के 'शी रीते चंद्रयशा मारो बंधु थाय ?' त्यारे आर्याए पोतानी सर्व वार्ता तेने कही संजळावी. ते सांजळी नमिराजाए पिताना नामनी मुद्रिका जोइ. तेथी तेने वधारे निश्चय थयो. एटले ते युद्धथी निवृत्त थइने चंद्रयशा पासे गयो अने तेने सर्व वृत्तांत कह्यो. पछी बन्ने जाइओ परस्पर प्रीतिवाळा थया. अनुक्रमे चंद्रयशाए नमिकुमारने पोतानुं राज्य सोंपीने व्रतनी इच्छाथी दीक्षा अंगीकार करी.

बन्ने राज्योनुं अखंम पालन करतां अन्यदा नमिराजाना देहमां छ मासनी स्थितिवाळो महा दाहज्वर उत्पन्न थयो. अनेक वैद्योए अनेक प्रकारे चिकित्सा करी, तोपण ते शांत थयो नहीं. एकदा कोइ वैद्यना कहेवाथी तेने विलेपन करवा माटे सर्व राणीओ चंदन घसवा लागी. ते वखते राणीओना हाथमां रहेलां कंकणो परस्पर अथमावाथी बहु शब्द करवा लाग्या. ते शब्द राजाथी सहन थयो नहीं, एटले तेना हुकमथी राणीओए एक एक कंकण राखीने बीजां सर्व कंकणो काढी नांख्यां. राजाए पूछ्युं के ' हवे कंकणनो शब्द केम संजळातो नथी ?' त्यारे ते राणीओए एक एक कंकण बताव्युं. ते जोइने चारित्रावरण कर्मनो बंध तुटवाथी नमिराजाने एवो अध्यवसाय उदय आव्यो के—

वलयावलिदृष्टान्ताज्जीवो बहुपरिग्रही ।
दुःखं वेदयते नूनं, वरमेकाकिता ततः ॥ १ ॥

जावार्थ—" कंकणसमूहना दृष्टांतथी एवुं सिद्ध थाय छे के घणा परिग्रहने धारण करनारो जीव निश्चये दुःखनेज अनुजवे छे. माटे एकला रहेवुं तेज श्रेष्ठ छे."

आ प्रमाणे एकाकी विचरवानुं ध्यान करतां राजा निद्रावश थयो. स्वप्नामां पोताने मेरुपर्वतपर रहेलो ने श्वेत हाथीपर चमेलो जोयो. स्वप्नमांथी जागृत थतां ' आवो सुवर्ण पर्वत में पूर्वे क्यांक जोयो छे ' एम उहापोह करतां ते राजाने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं अने पूर्वजव दीठो. ते पूर्वभवे अगणित पुण्यवाळुं चारित्र पाळवाथी अनुपम लक्ष्मीवाळा पुष्पोत्तर विमानमां देवता थयो हतो. ते वखते जिनेश्वरना जन्मकल्याणक माटे त्यां आवेलो होवाथी तेणे सुवर्णमय मेरु पर्वत जो-

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १ ॥

[illegible]

[illegible]

सुसुखं बताम जीवामि, येन मे नास्ति किञ्चन ।
मिथिलायां प्रदीप्तायां, न मे दह्यति किञ्चन ॥ २ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ३ ॥

[illegible]

[illegible]

बोल्या के—

सुवण्णरूप्पस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि, इच्छा हु आगाससमा अणंतिआ ।१।

भावार्थ—"सुवर्णना अने रुपाना कैलास पर्वत जेवमा असंख्य पर्वतो होय, तो तेथी पण लुब्ध पुरुषने संतोष थतो नथी. केमके इच्छा आकाशनी जेवी अन्त रहित छे."

इत्यादि उत्तराध्यन सुत्रमां कहेली अनेक युक्तिओथी मुनिए ते विप्रने निरुत्तर कर्यो. छेवट तेमनुं चित्त क्षोभ पामे तेम नथी, एम जाणीने इंद्रे ब्राह्मणना रुपनो त्याग करी पोतानुं स्वरुप प्रगट करी तेमने प्रणाम करीने स्तुति करी के—

अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ ।
अहो निरक्कया माया, अहो लोहो वसंकिओ ॥ १ ॥

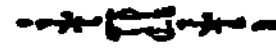
भावार्थ—" अहो ! तमे क्रोधने जीती लीधो छे, अहो ! तमे माननो पराजय कर्यो छे, अहो ! तमे मायानो तिरस्कार कर्यो छे, अने अहो ! तमे लोभने वश करी लीधो छे."

इत्यादि बहु प्रकारे स्तुति करीने स्वर्गपति स्वर्गमां गया. अने नमिराजर्षि अनुक्रमे केवळज्ञान पामीने मोक्षपदने पाम्या.

" प्रत्येक बुद्ध नमिराजर्षिए शक्रनी युक्तिओथी पण धर्मनो त्याग कर्यो नहीं, तेथी तेमनी ज्ञातासूत्रने विषे श्री महावीरस्वामीए पण प्रशंसा करेली छे, ते राजर्षि अमोने सुखने अर्थे थाओ."

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे द्विपञ्चाशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ५२ ॥

व्याख्यान ९३ मुं.



बलाभियोग नामना बीजा आगार विषे.

बहूनां हठवादेन, बलाद्वा त्यक्तसेवनम् ।
एवं बलाभियोगः स्यात्, षमेते छिंमिका मताः ॥ १ ॥

भावार्थ—" घणा लोकोना हठवादथी अथवा कोइना बळात्कारथी त्याग करेलानुं सेवन करवुं पमे ए बलाभियोग आगार कहेवाय छे. आ छए आगारोने छींमीओनी संज्ञा आपेली छे."

केटलाएक उत्सर्ग मार्गमां स्थित रहेला मनुष्यो बीजाना बळात्कारथी पण पोताना ग्रहण करेला व्रतने मूकता नथी. ते उपर सुदर्शन श्रेष्ठीनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

सुदर्शन श्रेष्ठीनी कथा.

चंपापुरीमां ऋषभदास नामे श्रेष्ठी हतो. तेने अर्हद्दासी नामनी शीलवती स्त्री हती. एकदा माघ मासमां सुभग नामनो शेठनी भेंसो चारनार नोकर शेठना ढोर चारीने सायंकाळे घर तरफ आवतो हतो, तेवामां मार्गने विषे कोइ वस्त्र रहित अने टाढने सहन करता मुनिने काउसग्ग ध्याने उभेला जोया. तेमने जोइने ते मुनिनी प्रशंसा करतो ते सुभग शेठने घेर आव्यो. पछी बीजे दिवसे प्रातःकाळे वहेलो उठीने शेठनी भेंसो लइने ते वन तरफ चाल्यो. ते वखते पण तेज स्थाने तेज रीते कायोत्सर्गे रहेला पेला मुनिने जोइने सुभग तेनी पासे जइ पगे लागीने बेठो. थोमी वारे सूर्योदय थतां ते चारण मुनि 'नमो अरिहंताणं' एम बोली आकाशमां उत्पती गया. ते जोइने सुभगे 'नमो अरिहंताणं' ए आकाशगामी विद्यानो मंत्र छे एम जाणीने ते पद याद राखी लीधुं. पछी एक दिवस ते सुभग अरिहंतनी पासे ते पदनुं ध्यान करतो बेठो हतो. ते जोइने श्रेष्ठीए पूछ्युं के 'तुं आ मंत्र क्यांथी शीख्यो ?' त्यारे सुभगे 'मुनि पासेथी शीख्यो' एम कही सर्व वृत्तांत कह्युं. ते सांभळी संतुष्ट थइने श्रेष्ठीए तेने आखो नवकार मंत्र शीखव्यो,

तेथी ते मंत्रनुं ते हमेशां ध्यान करवा लाग्यो.

अनुक्रमे वर्षाकाळ आव्यो. ते वखते पण सुभग ढोर चारवा जतो हतो. एक दिवस अत्यंत वृष्टि थवाथी पृथ्वी समुद्रनी जेम जळमय थइ गइ. भेंसोने लइने पाछा वळतां वच्चे मोटी नदी हती. तेमां घणुं पूर आवेलुं हतुं. ते जोइ आकाशमां उडवानी बुद्धिथी नवकार मंत्रनुं स्मरण करीने तेणे नदीमां पडतुं मूक्युं. ते वखते एक खीलो वागवाथी ते मृत्यु पामीने तेज श्रेष्ठीने घेर सुदर्शन नामनो पुत्र थयो. ते सुदर्शन युवावस्था पाम्यो, त्यारे तेने श्रेष्ठीए कोइ श्रेष्ठीनी मनोरमा नामनी कन्या परणावी.

सुदर्शनने राजाना पुरोहित अने कपिलनी साथे गाढ मैत्री हती. एकदा कपिलना मुखथी सुदर्शनना रुपादिक गुणनी प्रशंसा सांभळीने तेनी स्त्री कपिला तेना पर अनुरक्त थइ. एक दिवस एकांतनो वखत जोइने ते सुदर्शनने घेर गइ, अने तेने कह्युं के 'आजे तमारा मित्रने शरीरे ठीक नथी, माटे तेनी खबर लेवा माटे तमे जल्दी मारे घेर चालो, ते बोलावे छे.' एम कही तेने पोताने घेर तेडी गइ. त्यां गुप्त गृहमां तेने लइ जइ बारणां बंध करी लज्जानो त्याग करीने तेणे भोगनी प्रार्थना करी. त्यारे परस्त्रीने विषे नपुंसक जेवा सुदर्शने पोताना शीलनुं रक्षण करवा माटे कह्युं के 'हे मुग्धे ! हुं तो नपुंसक छुं. तुं मारी पासे फोगट शा माटे प्रार्थना करे छे ?' एम कही ते त्यांथी नीकळी पोताने घेर गयो.

एकदा राजा पुरोहित अने सुदर्शनने साथे लइने उद्यानमां क्रीडा करवा गयो. ते वखते वाहनमां बेसीने अभया राणी पण कपिलाने साथे लइ उद्यानमां गइ. तेवामां कपिलाए एक स्त्रीने छ पुत्रो सहित मार्गे चाली जती जोइने 'आ स्त्री कोण छे ?' एम अभया राणीने पूछ्युं. त्यारे राणी बोली के "आ तो सुदर्शन शेठनी स्त्री छे. तेने तुं ओळखती नथी ? आ छए तेणीना पुत्रो छे." ते सांभळीने कपिलाए कह्युं के-'शेठ तो नपुंसक छे. तेने पुत्रो क्यांथी ?' एम कही पोतानो सर्व वृत्तांत राणी पासे कह्यो. ते सांभळी राणी बोली के 'तुंतो मूर्ख छे. ते शेठे कपट करीने तने छेतरी.' कपिला बोली के "हे देवी ! तमारी चतुराइ तो हुं त्यारे ज जाणुं के ज्यारे तेनी साथे तमे एकपण वखत क्रीडा करो." ते सांभळीने राणीए ते वचन अंगीकार कर्युं. पछी एकदा राजा विगेरे सर्व क्रीडा करवा उद्या-

नमां गया हता. अभया राणी महेलमां एकली हती. ते वखतें तेणे पंडिता नामनी पोतानी धात्रीने सुदर्शनने तेडी लाववानुं कह्युं. ते धात्री सुदर्शनने घेर गइ. तो एक शून्य घरमां सुदर्शनने कायोत्सर्गे रहेल दीठो. तेने धात्रीए उपाडीने रथमां नांख्यो. पछी तेनापर उत्तम वस्त्र ओढाडीने कामदेवनी मूर्तिना मीषथी तेने राणीना महेलमां लइ गइ. त्यां एकांतमां राणीए हावभाव पूर्वक कामविकार देखाडी तेनी घणी प्रार्थना करी. परंतु सुदर्शननुं मन जरा पण क्षोभ पाम्युं नहीं. त्यारे राणीए पोताना स्तननो स्पर्श थाय तेवी रीते तेना आखे अंगे गाढ आलिंगन कर्युं. तोपण तेनुं मन क्षोभ पाम्युं नहीं. छेवट ते राणी थाकी गइ त्यारे तेणीए पोकार करी सीपाइओने बोलाव्या. अने 'आ सुदर्शन मने बळात्कार करवा अहीं आव्यो छे' एम कह्युं. सीपाइओ सुदर्शनने पकडीने राजा पासे लइ गया. राजाए सुदर्शनने पूछ्युं. पण तेणे राणीपरनी दयाने लीधे कांइपण कह्युं नहीं. त्यारे तेने ज दूषित धारी राजाए क्रोधथी 'आने विडंबना पूर्वक आखा नगरमां फेरवी शूळीए चडावीने मारी नांखो' एवी आज्ञा करी. सीपाइओ ते प्रमाणे करी तेने गाममां फेरववा लाग्या. ते वखते सुदर्शननी स्त्रीए तेने तेवी अवस्थामां दीठा. तेथी तरतज घर देरासरमां जइ पतिनुं कलंक उतरे त्यां सुधीने माटे कायोत्सर्ग करीने ते श्री जिनेश्वर पासे उभी रही. अहीं राजसेवकोए सुदर्शनने गाममां फेरवी गाम बहार लइ जइने शूळीपर चडाव्यो. एटले ते शूळी तेना शीयळना प्रभावथी सुवर्णनुं सिंहासन थइ गइ. त्यारे सिपाइओए तेनो वध करवा माटे खड्गना प्रहारो कर्या. तेमां कंठमां प्रहार कर्या, त्यारे तेना कंठमां हार थइ गया, मस्तकपर कर्या त्यारे मुगुट थयो, कानपर कर्या त्यारे कुंडळ थयां, हाथ पग पर प्रहार कर्या त्यारे कडां थइ गयां. ते जोइ आश्चर्य पामीने ते आश्चर्यकारक बनाव सीपाइओए राजाने निवेदन कर्यो. ते सांभळी राजा तरतज त्यां आव्यो अने सुदर्शनने सत्कार पूर्वक हाथीपर बेसाडी मोटा उत्सव साथे पोताने घेर लइ गयो. ते हकीकत जाणीने तेनी स्त्रीए कायोत्सर्ग पार्यो. पछी राजाए आग्रह पूर्वक सुदर्शनने सत्य वात पूछी. त्यारे तेणे राणीने अभय वचन अपावी बधी वात कही. पछी राजाए सुदर्शनने हाथीपर बेसाडीने तेने घेर मोकल्यो.

आ वृत्तांत जाणीने अभया राणी गळे फांसो बांधीने मृत्यु पामी. अने पंडिता पाडलिपुरे कोइ वेश्याने घेर जइने रही. अनुक्रमे सुदर्शन शेठे वैराग्य पा-

मी दीक्षा लीधी. विहार करतां करतां ते पाटलिपुर आव्या. त्यां पंडिताए वहोरावत्राना मीषे पोताने घेर लइ जइने बारणां बंध करी तेनी घणी कदर्थना करी. परंतु ते मुनि जरापण चलित थया नहीं. छेवट सायंकाळे पंडिताए तेने छोडी मूक्या. एटले ते मुनि गाम बहार नीकळी वनमां जइ स्मशान भूमिने विषे प्रतिमा धारण करीने उभा रह्या. त्यां व्यंतरी थयेली अभया राणीए पूर्व भवना वैरथी अनुकूळ तथा प्रतिकूळ अनेक उपसर्गो कर्या, तोपण ते मुनिनुं चित्त किंचित् पण चलित थयुं नहीं ; तेओ तो शुभ ध्यानमांज स्थिर रह्या. अनुक्रमे शुक्लध्याननना योगथी तेमने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. देवोए केवळनो महिमा कर्यो. तेमणे देशना दीधी. तेमनी देशना सांभळीने अभया तथा पंडिता प्रतिबोध पामी समकितधारी थइ. सुदर्शन केवळी चिरकाळ सुधी केवळी पर्यायनुं पालन करी प्रांते मोक्ष पदने पाम्या.

" सुदर्शननी जेम बळाभियोगथी पण जेओ स्वधर्मने विषे दृढ रहेछे तेओ सदर्शनवडे जगतमां प्रधान थइने अल्पकाळमां उत्कृष्ट संपत्तिने पामे छे. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे त्रिपञ्चाशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ५३ ॥

व्याख्यान ५४ मुं.

समकितनी छ भावनाओ विषे.

मूलं द्वारं प्रतिष्ठानमाधारो भाजनं निधिः ।
द्विविधस्यापि धर्मस्य, षडेता बोधिभावनाः ॥ १ ॥

भावार्थ—" मूल, द्वार, प्रतिष्ठान, आधार, भाजन अने निधि ए छ प्रकारना धर्मने विषे बोधिनी भावना कहेली छे. "

मूलं सर्वज्ञधर्मद्रोर्द्वारं मुक्तिपुरस्य च ।
जिनोक्तधर्मयानस्य, प्रतिष्ठानं सुनिश्चलम् ॥ १ ॥
आधारो विनयादीनां, धर्मामृतस्य भाजनम् ।
निधिर्ज्ञानादिरत्नानां, सम्यक्त्वमिति भावयेत् ॥ २ ॥

भावार्थ—" समकित एज सर्वज्ञ भाषित श्रावक अने साधु ए बन्ने प्रकारना धर्म रूप वृक्षनुं मूळ छे. केमके ते मूळ निश्चळ होय तोज स्वर्ग मोक्षादिक फळ प्राप्त थाय छे, ए पहेली भावना. समकित ए मोक्षरूप पुरनुं द्वार छे. केमके समकित रूप द्वार विना मोक्षपुरनी अंदर प्रवेश थइ शकतो नथी. सामान्य नगरने विषे पण दरवाजा विना प्रवेश थइ शकतो नथी, ए बीजी भावना. जिनेश्वरे कहेला धर्म रूपी वाहननुं समकित ज प्रतिष्ठान (निश्चळ पीठ) छे. ते प्रतिष्ठान निश्चळ होय तो धर्म रूपी यान चिरकाळ टकी शके छे, ए त्रीजी भावना. समकित विनयादि गुणोनो आधार (अवस्थान) छे. ते आधार विना विनयादिक गुणो स्थिर थता नथी, ए चोथी भावना. समकित ए धर्म रुपी अमृतनुं पात्र छे. केमके ते पात्र विना ते धर्म रूपी अमृत रही शकतुं नथी, ए पांचमी भावना. तथा समकित ए ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूपी रत्नोनुं निधान (भंमार) छे. निधान विना बीजां रत्नो जेम जाळवी शकातां नथी तेम समकित विना ज्ञानादिक त्रण रत्नो रही शकतां नथी, ए छट्ठी भावना. आ प्रमाणे छ भावना भाववी. " आ संबंधमां विक्रम राजानी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

विक्रम राजानी कथा.

कुसुमपुरने विषे हरितिलक नामे राजा हतो. तेने गौरी नामनी राणी हती अने विक्रम नामे पुत्र हतो. ते कुमार युवान थयो त्यारे तेने राजाए बत्रीश राजकन्याओ परणावी. ते स्त्रीओनी साथे विक्रम कुमार दोगुंदक देवनी जेम एकांत सुखनो अनुभव करवा लाग्यो.

एकदा अशुभ कर्मना वशथी कुमारने अकस्मात् कास, श्वास अने ज्वरादिक व्याधिओनो उपद्रव थयो. तेना निवारण माटे घणा मंत्र, तंत्र अने औषधादिवडे उपचारो कर्या. परंतु कोइ पण रीते रोगनी शांति थइ नहीं. छेवटे

व्याधिनी असह्य पीडाथी तेणे धनंजय नामना यक्षनी रोगशांति माटे सो पाडाना बळिदाननी मानता करी. ते पण निष्फळ गइ. एकदा ते नगरना उद्यानमां विमल नामना केवळी समवसर्या. ते खबर वनपाळना मुखथी सांभळीने राजा केवळीने वंदना करवा जवाने तैयार थयो, त्यारे कुमार बोल्यो के " हे पिता ! मने पण त्यां लइ जाओ, जेथी मुनिना दर्शनवडे मारा रोगनी शांति तथा पापनो क्षय थाय. " ते सांभळीने राजा तेने साथे लइ गया. मुनिने वंदना करी तेमना मुखथी धर्मदेशना सांभळ्या पछी राजाए पोताना कुमारने महा व्याधि थवानुं कारण पूछयुं. त्यारे केवळी बोल्या के—

" पूर्वे आ कुमार पद्म नामे राजा हतो. ते अन्यायनुं मंदिर हतो. एकदा शिकार करवाने माटे ते वनमां गयो हतो. त्यां प्रतिमा धारण करीने उभेला कोइ साधुने जोइने तेणे कारण विना वैरने चिंतवी ते मुनिने शर वडे हण्या. ते पापकर्म जोइने तेना धार्मिक प्रधानोए तेने पांजरामां नांख्यो अने तेनी गादीए तेना पुत्रने स्थापन कर्यो. मुनि तो काळ करी शुभ ध्यानने योगे सर्वार्थसिद्धि नामना विमानमां उत्पन्न थया. केटलाक दिवसो पछी पद्म राजाने पांजरामांथी छोडी, काढी मूक्यो. ते फरतो फरतो कोइ वनमां गयो. त्यां आमतेम भमतां तेणे एक मुनिने दीठा, एटले द्वेषथी तेने पण ताडना करी. मुनिए तेने ज्ञानथी दुराचरणी जाणीने तेजोलेश्यावडे बाळी दीधो. ते मरीने सातमी नरके गयो. त्यांथी आयुष्यनो क्षय थये स्वयंभूरमण समुद्रमां मत्स्यपणे उत्पन्न थयो. त्यांथी पाछो सातमी नरके जइ फरीथी मत्स्य थइ छठी नरके गयो. ए प्रमाणे दरेक नरकमां बबे त्रण त्रण वार भ्रमण करीने कुदेवमां उत्पन्न थइ, पृथ्वी, अप, तेजस् विगेरेमां, अनंतकायादिकमां अने तिर्यंचमां उत्पन्न थइ महा पीडाओने सहन करतां ते पद्म राजाना जीवे अनंती अवसर्पिणी उत्सर्पिणीओ व्यतीत करी. पछी अकाम निर्जरा वडे तेना कर्म हलका थवाथी ते कोइक श्रेष्ठीनो पुत्र थयो. ते भवमां तेणे तापसी दीक्षा लीधी. त्यांथी मरीने आ तारो पुत्र थयो छे. हे राजा ! मात्र थोडा अवशेष रहेला मुनिघातना पापथी तेने आ रोगो उत्पन्न थया छे. "

आ प्रमाणे सांभळतां पण कंपारो आवे तेवो पोतानो पूर्व भव सांभळीने इहापोह करतां ते कुमारने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. पछी कुमारे मुनिने कह्युं के—

मिच्छत्तमोहमूढो, जीव तु मं कत्थ कत्थ नह भमिओ ।
छेयणभेयण पमुहं, किं किं दुक्खं न पत्तोसि ॥ १ ॥

भावार्थ—" मिथ्यात्व मोहथी मूढ बनेलो आ मारो जीव क्यां क्यां भम्यो नथी ? (सर्व योनिमां भम्यो छे.) अने जुदा जुदा भवोमां छेदन भेदन विगेरे कया कया दुःखोने पाम्यो नथी ? (सर्व दुःखो पाम्यो छे.) "

माटे हे पूज्य! मारा पर कृपा करो. संसाररूपी कूवामांथी धर्मरूपी रज्जुवडे मने खेंची काढो (मारो उध्धार करो.) " ते सांभळीने मुनिए दयावडे छ भावनाथी युक्त एवा समकितनुं वर्णन कर्युं. तेथी ते समकित सहित श्रावक धर्मनो अंगीकार करी पोताना नगरमां गयो.

एकदा पेला यक्षे प्रकट थइने कुमारने कह्युं के "हे कुमार ! मारी शक्तिथी तारा व्याधि नाश पाम्या छे, माटे मने सो पाडा आप. " कुमारे हसीने जवाब आप्यो के " मारो रोग तो केवळी भगवंतनी कृपाथी गयो छे, माटे तुं पाडा मागतां कांइ शरमातो नथी ? हुं एक कुंथुवानी पण हिंसा करतो नथी, तो तुं आ शुं मागे छे ?" ते सांभळीने यक्ष क्रोधथी बोल्यो के ' अरे ! ठीक छे, त्यारे हवे मारुं बळ तने बतावीश, जोजे.' एम कहीने ते अदृश्य थयो.

एकदा कुमार वनने विषे रहेला जिनालयमां जइ प्रभुनी पूजा करीने घर तरफ आवतो हतो. ते वखते मार्गमां ते यक्ष कुमारना बे पग पकडी तेने भूमि पर पछाडीने बोल्यो के ' अरे ! केम हजु सुधी तुं तारो आग्रह मूकतो नथी?' कुमारे जवाब आप्यो " हे यक्ष ! तुं जीवहिंसा करवी छोडी दे. कह्युं छे के—

श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि, यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः ।
परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे वात करोड ग्रंथे करीने कही छे, ते वात हुं अर्धा श्लोकथीज कहुं छुं के–जे परोपकार छे ते पुण्यने माटे छे, अने परने पीडा करवी ते पापने माटे छे. "

हेमधेनुधरादीनां, दातारः सुलभा भुवि ।
दुर्लभः पुरुषो लोके, यः प्राणिष्वभयप्रदः ॥ २ ॥

भावार्थ—"सुवर्ण, गायो अने पृथ्वी विगेरेनुं दान करनार पृथ्वीपर सुलभ छे, पण जे प्राणीओने अभयदान आपे छे ते पुरुष आ लोकमां दुर्लभ छे."

आ प्रमाणे कुमारनुं साहस जोइने यक्ष बोल्यो के—"जो तुं जीवहिंसा न करे तो तुं मात्र मने प्रणाम ज कर, तेथी ज हुं संतुष्ट थइश." ते सांभळी कुमारे कह्युं के—"प्रणाम घणी जातनां थाय छे. तेमांथी तुं कइ जातना प्रणाम इच्छे छे? प्रणामना भेद आ प्रमाणे छे, ते तुं सांभळ. हास्य प्रणाम, विनय प्रणाम, प्रेम प्रणाम, प्रभु प्रणाम अने भाव प्रणाम—ए पांच प्रकारना प्रणाममां मश्करीथी के हीलनाथी जे प्रणाम थाय, ते हास्य प्रणाम कहेवाय छे; पिता विगेरे गुरुजनने जे प्रणाम थाय, ते विनय प्रणाम छे; मित्रादिकने जे प्रणाम थाय, ते प्रेम प्रणाम छे; राजा विगेरेने प्रणाम करीए, ते प्रभु प्रणाम छे अने देव गुरुने जे प्रणाम करीए ते भाव प्रणाम कहेवाय छे. तुं आ प्रणामोमांथी कया प्रणामने योग्य छे?" यक्ष बोल्यो के—"हे कुमार! तुं मने छेल्ला भाव प्रणाम कर, केमके आ जगतनी उत्पत्ति, संहार अने पालन तथा संसारथी निस्तारण विगेरे सर्व मारा हाथमां छे." ते सांभळी कुमार बोल्यो के—"हे यक्ष! प्रथम तुं ज भवसागरमां डूबेलो छे तो तुं बीजाने शी रीते तारीश? केमके—

जह लोहसिला अप्पं पि, बोलइ तह विलग्ग पुरिसस्स।
इय सारंभो गुरू, परमप्पाणं च बोलेई ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेम लोढानी शिला (जळमां) पोताने तथा पोताने वळगेला पुरुषने पण बूडाडे छे, तेम आरंभवाळो गुरु पण पोताने तथा परने भवसागरमां बोळे छे—बूडाडे छे."

आ प्रमाणे युक्तिथी राजकुमारे यक्षने प्रतिबोध पमाड्यो. एटले ते संतुष्ट थइने कुमारपर पुष्पवृष्टि करीने 'संकट समये मने याद करजे' एम कही अदृश्य थयो.

एकदा कुमारे यक्षनी सहायथी दुर्जय एवा कालिंग देशना राजाने युद्धमां जीती लीधो अने पछी निष्कंटक राज्य चलाववा लाग्यो. केटलोक काळ व्यतीत थये विक्रम राजा एक दिवस राजवाडीमां फरवा जतो हतो. जती वखत मार्गमां एक श्रेष्ठीने घेर महोत्सव थतो जोइ ते पण आनंद पाम्यो. पछी क्रीडा

करीने पाछो वळयो, त्यारे तेज श्रेष्ठीने घेर माणसोने रुदन करता जोइने राजाए कोइने तेनुं कारण पूछ्युं. त्यारे तेणे कह्युं के—

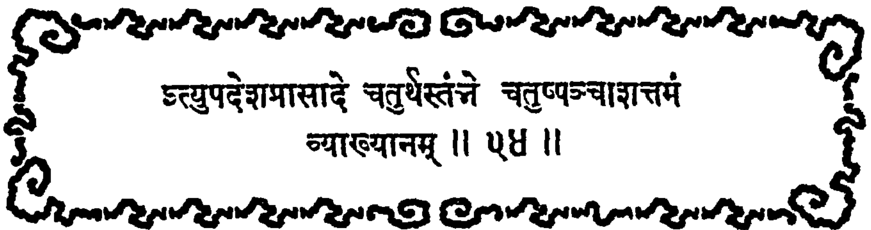
"हे स्वामी! आ श्रेष्ठीने घेर पुत्रनो जन्म थयो हतो, तेथी महोत्सव थतो हतो, पण जन्म्या पछी तरतज ते पुत्र मरण पाम्यो, तेथी तेना कुटुंबीओ रुदन करे छे." ते सांभळीने विक्रम राजाने वैराग्य उत्पन्न थयो. तेणे विचार्युं के—

बाल्यादपि चरेद्धर्ममनित्यं खलु जीवितम् ।
फलानामिव पक्वानां, शश्वत्पतनतो भयम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"आ जींदगी अनित्य छे, तेथी बाल्यावस्थाथीज धर्मनुं आचरण करवुं, केमके पाकेलां फळनी माफक जीवने निरंतर पडी जवानो (मृत्युनो) भय रहेलो छे."

आ प्रमाणे विचारीने राजाए पोताना पुत्रने राज्य पर बेसाडी दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे केवळज्ञान पामी मोक्षपदने पाम्या.

"विक्रम राजानी जेम शुभ भावना वडे समकितनुं सेवन करवुं. केमके तेम करवाथी तेवी भावना वडे बन्ने लोकमां शुभनो उदय थाय छे."


इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे चतुष्पञ्चाशत्तमं
व्याख्यानम् ॥ ५४ ॥

व्याख्यान ५५ मुं.

समकितनां छ स्थानकमांना प्रथमनां बे स्थानक विषे.

अनुभवसिद्धो जीवः, प्रत्यक्षो ज्ञानचक्षुषाम् ।
ज्ञायतेऽनेकवाग्भाग्भिरस्तिस्थानं तदेव हि ॥ १ ॥

जावार्थ—" ज्ञानरूपी नेत्रवाळाओने (केवळज्ञानीओने) प्रत्यक्ष एवो जीव अनुजव सिद्ध छे. तेमज ते जीव अनेक वांछाथी जणाय छे (सिद्ध थाय छे.) ते पहेलुं ' अस्तिस्थान ' कहेवाय छे."

केटलाएक मिथ्यात्वीओ ' जीव छे ज नहीं ' एम माने छे. तेओ एवुं अनुमान करे छे के—आत्मा पांचे इन्द्रियोथी प्रत्यक्षपणे ग्रहण करी शकातो नथी. तेथी आकाशना पुष्पनी जेम ते (आत्मा) छे ज नहीं. आवा नास्तिक वादीने आचार्य जवाब आपे छे के—पोताना ज्ञानथी ज अनुजवातो आत्मा सिद्ध छे. केमके केवळज्ञानीने तो ते प्रत्यक्ष छे अने छद्मस्थोने अनुमानथी सिद्ध थाय छे. अनेक प्रकारनी वांछनाओथी तथा सुख दुःखादिकनी कल्पना जाळथी निश्चय थइ शके छे के ते वांछानो तथा कल्पनाओनो करनार आत्मा छे. ते विषे अनुमान आ प्रमाणे थइ शके छे. सुख, दुःख अने इच्छा विगेरेनो कारणजूत होवाथी आत्मा छे. जे जे वस्तु कार्य अने कारणजूत छे, ते ते वस्तु छतीज होय छे. जेम घट कार्य अने तेनुं कारण माटीनो पिंड ते जेम छती वस्तु छे, तेज प्रमाणे आ आत्मा कारण अने सुख दुःखादिक तेनां कार्यो छे; तेथी आत्मानी सिद्धि थाय छे. जेओनी आवी सम्यग् बुद्धि छे तेओमां सम्यक्त्वनुं प्रथम स्थानक छे एम जाणवुं. आ प्रमाणे जीवनुं होवापणुं जे मानवुं ते पहेलुं ' अस्तिस्थान ' कहेवाय छे.

हवे बीजुं जीवनुं नित्यत्वस्थान कहे छे—

द्रव्यस्यापेक्षया नित्यो, हि व्ययोत्पादवर्जितः ।
पर्यायापेक्षयाऽनित्यः, सद्भावेन च शाश्वतः ॥ १ ॥

जावार्थ—" द्रव्यनी अपेक्षाए नाश अने उत्पत्ति रहित एवो नित्य आत्मा छे, पर्यायनी अपेक्षाए अनित्य छे, अने सद्भाव वडे ते आत्मा शाश्वत छे."

आ आत्मा द्रव्यनयनी अपेक्षाए विनाश अने उत्पत्ति रहित छे एटले आत्मा कदापि उत्पन्न थतो नथी तेमज विनाश पण पामतो नथी. अहीं कोइ शंका करे के ' आटलुंज कहेवाथी तो आचार्ये आत्मानुं नित्यपणुं एकांते अंगीकार कर्युं.' तो तेना निराकरणने माटे उत्तरार्धमां कहे छे के पर्यायनयनी अपेक्षाए आत्मा अनित्य छे अने सत्ताए करीने शाश्वत छे. केमके पूर्वे करेलानुं तथा करावेलानुं तेने स्मरण

थाय छे, ते आवी रीते के ' में पूर्व भवे जे अरिहंततुं बिंब कराव्युं हतुं, तेज आ बिंब छे.' ए प्रमाणे आ जन्मने विषे ते बिंब जोवाथी तेतुं स्मरण थाय छे, अने जातिस्मरण ज्ञान उपजे छे. जीवना पर्याय बदलाता होवाथी बीजा भवमां गमन करवा वडे ते सादि सांत भांगे अनित्य जणाय छे. अर्थात् आत्मा नित्य छे अने तेना पर्यायो अनित्य छे, एम जाणवुं.

वळी द्रव्य कदापि पर्याय रहित होतुंज नथी. ते विषे पूर्वसूरिए कह्युं छे के-

पर्यायविच्युतं द्रव्यं, पर्याया द्रव्यवर्जिताः ।
कदापि केन किंरूपा, दृष्टा मानेन केन वा ॥ १ ॥

भावार्थ—" पर्याय रहित द्रव्यने तथा द्रव्य रहित पर्यायने कोइ पण वखत कोइ पण रूपे कोइए जोया छे ? अथवा कोइ पण प्रमाणथी सिद्ध कर्या छे? नथीज कर्या, केमके पर्याय विनानुं द्रव्य अने द्रव्य विनाना पर्याय होताज नथी."

वळी सद्भाव एटले सत्ताने आश्रयीने आत्मा शाश्वत छे. एटले आद्यंत रहित केवळ स्थिर स्वभावपणाए करीने ध्रुव छे. आ प्रमाणे निश्चळ करेला मनवाळाने समकितनुं बीजुं स्थानक छे एम जाणवुं. आ प्रसंग उपर इंद्रभूतिनो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

इंद्रभूति (गौतम) नो प्रबंध.

मगध देशना गोवर नामना गाममां वसुभूति नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने पृथ्वी नामनी पत्नी हती अने इन्द्रभूति नामनो पुत्र हतो. ते पोतानी बुद्धिथी व्याकरण, न्याय, काव्य, अलंकार, वेद, पुराण अने उपनिषद विगेरे सर्व शास्त्रमां विद्वान थयो हतो, परंतु तेने वेदनो अर्थ विचारतां जीवना होवापणा विषे संशय थयेलो हतो, पण ते पोते सर्वज्ञ होवानो भोळ धारण करतो हतो, तेथी कोइने पूछीने पोताना संशयनो खुलासो करी शकतो नहोतो.

एकदा ते इन्द्रभूति श्री महावीर स्वामीना समवसरणने विषे आव्यो, ते वखते प्रभुए तेने बोलाव्यो अने ज्ञानवडे तेना मननो संशय जाणीने कह्युं के " हे इन्द्रभूति ! तुं जीवनो अभाव स्थापन (सिद्ध) करे छे अने तेमां एवी युक्तिओ करे छे के घट, पट,लकुट विगेरे पदार्थोनी जेम जीव प्रत्यक्ष देखातो नथी,माटे ते ससलानां

शींगडानी जेम छे ज नहीं. आ प्रमाणे प्रत्यक्ष प्रमाणथी आत्मा नथी एम सिद्ध थाय छे. वळी अनुमान प्रमाणथी पण आत्मा सिद्ध थइ शकतो नथी. केमके अनुमान प्रमाण पण प्रत्यक्ष पूर्वक ज प्रवर्ते छे. प्रथम महानस (रसोडा) विगेरेमां धुमाडो जोइने अग्निनी सिद्धि प्रत्यक्ष प्रमाणथी करी हती, तेथी त्यारपछी ज्यां धुमाडो होय त्यां अग्नि होय एवी व्याप्तिनुं ज्ञान थाय छे, अने त्यार पछी कोइ पर्वतादिकमां धुमाडो जोवाथी तेमां अग्नि सिद्ध करवा माटे अनुमान करवामां आवे छे. ते प्रमाणे अहीं आत्मानी सिद्धि करवा माटे आत्मारूप लिंगिनी साथे तेना कोइ पण लिंग (चिन्ह)नी प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्धि थती नथी, के जे चिन्ह जोइने व्याप्तिनुं ज्ञान थाय अने त्यार पछी अनुमान करी शकाय. वळी आगमथी पण आत्मानी सिद्धि थइ शकती नथी, केमके सर्व मतना आगमो परस्पर विरुद्ध छे. एक शास्त्रमां एम पण कह्युं छे के—

एतावानेव लोकोऽयं यावानिन्द्रियगोचरः ।
भद्रे वृकपदं पश्य यद्वदन्त्यबहुश्रुताः ॥ १ ॥

भावार्थ—" कोइ नास्तिके रेतीमां पोताना हाथवडे वरुनां पगलां जेवी रेखाओ करीने, पछी तेने बधा माणसो आ वरुनां पगलां जणाय छे एम कहेतां जोइ पोतानी बहेनने कह्युं के—हे प्रिया ! आ दुनिया जेटली इन्द्रियोथी ग्राह्य छे तेटलीज छे, तेथी वधारे कांइ नथी. जो आ अबहुश्रुतो मारी करेली रेखाने वरुनां पगलां कहे छे; तेम तेओए शास्त्रोमां बधुं कपोल कल्पित ज लखेलुं छे. अर्थात् अनेक प्रकारना त्याग नियमादि बतावनारा शास्त्रो मुग्ध जनोने छेतरवा माटे रचेलां छे." वळी ते ब्राह्मणे बीजो श्लोक कह्यो के—

पिब खाद च चारुलोचने, यदतीतं वरगात्रि तन्न ते ।
न हि भीरु गतं निवर्तते, समुदयमात्रमिदं कलेवरम् ॥ २ ॥

भावार्थ—" हे सुंदर नेत्रवाळी ! तुं मरजी प्रमाणे खान पान कर. हे सुंदर देहवाळी ! जे गयुं ते तारुं नथी (अर्थात् ते फरीथी मळवानुं नथी). केमके हे भीरु (बीकण स्त्री) ! गयेलुं पाछुं आवतुंज नथी. अने आ शरीर तो मात्र पंच महाभूतनो समुदाय ज छे. अर्थात् शरीरनो नाश थये सर्वनो नाश थाय-

छे. परलोक विगेरे सर्व असत्य छे. तेथी खावुं पीवुं ने जोगववुं तेज खरुं छे." (आ प्रमाणे नास्तिको माने छे.)

तेमज वेदमां पण कह्युं छे के " न हि वै सशरीरस्य प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति, अशरीरं वा संतं प्रियाप्रिये न स्पृशतः "। " शरीरवाळा जीवने प्रिय के अप्रियनो नाश (अजाव) नथी. शरीर विनाना जीवने प्रिय के अप्रिय स्पर्श करता नथी. " (अहीं प्रिय एटले सुख अथवा पुण्य अने अप्रिय एटले दुःख अथवा पाप समजवुं.)

वळी कपिलना मतवाळा कहे छे के—" अस्ति पुरुषः । अकर्त्ता निर्गुणो जोक्ता चिद्रूपः इत्यादि " पुरुष—आत्मा छे. ते आत्मा अकर्त्ता छे (कर्त्ता नथी). निर्गुण छे (सत्वादिक गुणवाळो नथी) पण जोक्ता अने चैतन्य स्वरूप छे. इत्यादि.

आ प्रमाणे शास्त्रो पण परस्पर विरुद्ध कहेता होवाथी आत्मा सिद्ध थतो नथी.

तेमज आ त्रण जुवनने विषे एवो कोइ पण पदार्थ नथी, के ते पदार्थनी जेवो जीव कहीने उपमान प्रमाणथी पण आत्मा सिद्ध करी शकाय. तेथी सर्व प्रमाणोथी अतीत एवो आत्मा (जीव) छेज नहीं एम सिद्ध थाय छे."

हे इंद्रभूति ! आवुं जे तारुं समजवुं छे ते अयुक्त छे. हे आयुष्मन् ! तें आत्मा इन्द्रियोवडे अग्राह्य होवाथी ते (आत्मा) नथी एम कह्युं, पण जेम तारा मननो संशय में जाण्यो तेमज हुं प्रत्यक्ष रीते सर्वत्र जीवने जोउं छुं. केवळ हुंज जोउं छुं एम नथी परंतु तुं पण ' अहं ' (हुं) एवो शब्द बोली तारा देहमां आत्मा रहेलो छे एम बतावी आपे छे. छतां तेनो तुं अजाव कहे छे तेथी ' मारी माता वंध्या छे ' ए वाक्यनी जेम तारा पोताना ज वाक्यमां दोष आवे छे. वळी स्मरण, कांइपण जाणवानी इच्छा, कोइपण कार्य करवानी इच्छा, क्यांक जवानी इच्छा, संशय विगेरे ज्ञान विशेष, एवा जीवना ज गुणो छे. अने तेथी ते स्वसंवेदन प्रत्यक्ष छे. माटे तेनो तुं स्वीकार कर.

वळी अनुमान प्रमाणथी पण आत्मा सिद्ध थाय छे.—देहादिक इंद्रियोनो जे अधिष्ठाता तथा जोक्ता छे ते जीव ज छे. जेनो जोक्ता न होय ते जो-

ग्य पण न होय, गधेडाना शींगडानी जेम. आ शरीरादिक भोग्य छे तो तेनो भोक्ता पण कोइ होवो ज जोइए. वळी हे गौतम ! तने जीव विषे संशय थवाथी तारा शरीरमां जीव छे एम निर्णय थाय छे. (केमके तने संशय थयो, ते कोने थयो ?) ज्यां ज्यां संशय होय, त्यां त्यां ते (संशयवाळो) पदार्थ होवो ज जोइए. जेम कोइ पुरुष दूरथी झाडनुं ठुंठुं अने माणस जोयेल होवाथी फरीने ज्यारे एवुं दृष्टिए पडे छे त्यारे ते तेमां माणसनां अने झाडनां ठुंठानां—बन्नेनां लक्षणो विचारे छे के शुं आ ते झाडनुं ठुंठुं छे के पुरुष छे ? पछी अन्वय व्यतिरेक धर्म विचारी, पक्षी ते उपर बसवाथी आ स्थाणु (झाडनुं ठुंठुं) छे एम सिध्ध करे छे. अथवा हस्तपादादिक अवयवोथी अने हालवा चालवाथी माणस छे एम सिध्ध करे छे. तेवी ज रीते आत्मा अने देह ए बन्ने पदार्थो छता होय तो ज संशय थाय छे, पण बेमांथी एक पदार्थ न ज होय, तो तेवो संशय पण थतो नथी. आ प्रमाणे अनुमान प्रमाणथी पण तुं जीवनी हयाती अंगीकार कर.

तेमज वळी हे गौतम ! सर्व शास्त्रो (आगमो) परस्पर विरुद्ध होवाथी कयुं प्रमाण अने कयुं अप्रमाण ? एवो तने जे संदेह थाय छे ते पण अयुक्त छे. केमके सर्व आगमो आत्मानी हयातीनुं तो स्थापन करे छे ज.

शब्द प्रमाण (व्याकरण) वाळा शाब्दिको कहे छे के—

यद्व्युत्पत्तिमत्सार्थकं शुध्धपदं तद्वस्तुत्त्वत्येव यथा तपन । व्युत्पत्त्यादिरहितो यत् शब्दः तद्वस्तु नास्त्येव यथा डित्थडवित्थादयः ।

" जे व्युत्पत्तिवाळुं, सार्थक एक पद होय ते पदार्थ होय ज. जेम तपतीति तपन–ताप पमाडे ते तपन कहेवाय; ए व्युत्पत्तिथी तपन शब्दे सूर्य एवो पदार्थ एम सिध्ध थयुं. तथा जे व्युत्पत्ति विगेरे विनानो शब्द होय, ते पदार्थ न होय; जेम डित्थ, डवित्थ विगेरे. तेवीज रीते अततीति आत्मा–भवांतरमां जे निरंतर गति करे, ते आत्मा. एम आत्मा शब्द शब्दप्रमाणथी पण सिध्ध थाय छे. वळी कह्युं छे के—

परमानन्दसंपन्नं, निर्विकारं निरामयम् ।

ध्यानहीना न पश्यन्ति, निजदेहे व्यवस्थितम्॥ १ ॥

भावार्थ—" परम आनंदथी युक्त, विकार रहित अने निरामय एवो आत्मा पोताना देहमांज रह्यो छे. तोपण तेने ध्यान रहित पुरुषो जोइ शकता नथी."

उत्तमा ह्यात्मचिन्ता च, मोहचिन्ता च मध्यमा ।
अधमा कामचिन्ता च, परचिन्ताऽधमाधमा ॥ २ ॥

भावार्थ—" आत्मानी चिंता-आत्माना हिताहितनुं चिंतवन-विचार करवो ते उत्तम छे, मोहनी चिंता एटले सांसारिक अनेक कार्योनी चिंता करवी ते मध्यम छे, कामनी एटले इंद्रियोना विषयादिकनी चिंता करवी ते अधम छे, अने पारकी चिंता करवी ते अधमाधम छे."

नलिन्यां च यथा नीरं, भिन्नं तिष्ठति सर्वदा ।
अयमात्मा स्वभावेन, देहे तिष्ठति सर्वदा ॥ ३ ॥

भावार्थ—" नलिनी (कमलिनी)ने विषे जेम जळ हमेशां जूदुं ज रहे छे तेम आ आत्मा पोताना स्वभावथीज निरंतर देहने विषे (जूदो ज) रहे छे."

आ प्रमाणे हे गौतम! सर्व शास्त्र संमत एवा जीवनो जेओ अभाव कहे छे तेओ मिथ्यावादी ज छे. माटे अनंत जीवोथी भरेलुं आ विश्व छे एम तुं अंगीकार कर.

वळी हे गौतम! "आत्मानी जेवो कोइ पदार्थ नथी माटे उपमान प्रमाणथी पण आत्मा सिद्ध थइ शकतो नथी" एम जे तुं माने छे ते पण अयोग्य छे. केमके धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रणे पदार्थो एक जीवना प्रदेश जेटलाज प्रदेश प्रमाणवाळा छे. तेथी तेनी उपमा आपी शकाय छे. (आ विषे हरिभद्र सूरिकृत षड् दर्शन समुच्चयनी बृहद्वृत्तिमां विस्तारथी कहेलुं छे. त्यांथी जोइ लेवुं.) वळी हे गौतम! जेवो तारा देहमां आत्मा छे, तेवो ज बीजाना देहमां पण छे. केमके हर्ष, शोक, संताप, सुख, दुःख विगेरे विज्ञाननो उपयोग सर्व देहोमां जणाय छे. वळी आत्मा कुंथु (कुंथवो) जेवडो प्र-

इने मोटो हाथी जेवडो पण थाय छे. इंद्र थइने तिर्यंच पण थाय छे. तेथी जेनी शक्ति चिंतवी न शकाय तेवो ते अचिंत्य, शक्तिमान्, विभु (समर्थ), कर्त्ता, भोक्ता, ज्ञाता अने कर्मथी भिन्नाभिन्न स्वरूपवाळो छे.

वळी तुं विज्ञानघन विगेरे वेद वाक्यना पदोनो अर्थ जे करे छे ते अयोग्य छे. तुं कहेछे के " विज्ञानघन वै तेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय (उत्पन्न) ततस्तान्येव (महाभूतान्येव) अनुविनश्यति तदा विज्ञानघन आत्मा नश्यति । अत एव न प्रेत्यसंज्ञास्ति, प्रागेव सर्वनाशं नष्टत्वात्"—" घणा विज्ञानवाळो आ आत्मा आ पंचमहाभूत थकी उत्पन्न थइने पछी तेज महाभूतोमांज नाश पामे छे. एटले गाढ विज्ञान स्वरूप आत्मा नाश पामे छे. माटे परभवमां जाय छे एवी तेनी संज्ञा रहेती नथी. केमके पूर्वे भवे ज तेनो सर्वथा नाश थयो छे." आ प्रमाणे तुं अर्थ करे छे ते युक्त नथी. अमे कहीए छीए ते प्रमाणे धार एटले विरोध आवशे नहीं—विज्ञान एटले ज्ञान अने दर्शननो उपयोग. तेणे करीने घन (निबिड—गाढ) एवो जीव आ ज्ञेयभावना परिणामने पामेला महाभूत (घटादिक) थकी उत्पन्न थइने एटले घटादिकना ज्ञानरूप उपयोग वडे उत्पन्न थइने, तेज उपयोगमां आवेला घटादिकनो नाश थवाथी काळना क्रमे करीने (एक काळे एक वस्तुनो उपयोग, बीजे काळे बीजी वस्तुनो, ए रीते) बीजी वस्तुनो उपयोग थये सते प्रथम वस्तुनो उपयोग नाश पामे छे, पण आत्मानो सर्वथा नाश थतो नथी. केमके आ एकज आत्मा त्रण स्वभाववाळो छे, ते आ प्रमाणे—पूर्व वस्तुना उपयोगनो नाश थवाथी विनाशी, बीजी वस्तुना ज्ञाननो उपयोग थवाथी उत्पन्न स्वभाववाळो, अने अनादिकाळथी प्रवृत्त थयेला सामान्य विज्ञाननी संततिथी अविनष्ट ध्रुव स्वभावी आत्मा छे. आ प्रमाणे बीजी सर्व वस्तुओ पण त्रण स्वभाववाळी जाणवी. हवे न प्रेत्यसंज्ञास्ति एटले बीजी वस्तुना उपयोग वखते पूर्वे वस्तुनुं ज्ञान एटले संज्ञा होती नथी, केमके हाल बीजी वस्तुनो उपयोग वर्तेछे—तेनी संज्ञा छे. हे गौतम ! आ युक्तिओथी 'जीव छे' एम तुं अंगीकार कर."

आ प्रमाणे त्रण जगतना स्वरूपने जाणनार भगवाने सर्व जीवोने प्रतिबोध करवाना उपायनी निपुणताथी गौतमनो संशय दूर कर्यो, एटले पचास वर्षनी वये पहोंचेला ते गौतमे गृहस्थ धर्मनो त्याग करी पांचसो शिष्यो सहित भगवान पासे

दीक्षा ग्रहण करी. पछी भगवाने तेने प्रथम गणधरने पदे स्थापन कर्या. सात हाथ उंचा देहवाळा, अनेक लब्धिओथी युक्त, शुध्ध चारित्रनुं पालन करवाथी मनःपर्याय ज्ञान पामेला, क्षायोपशम समकितथी युक्त, यावज्जीव छठ तप करनार, विषय अने कषायनो जय करवा रूप गुणने पामेला इंद्रभूति (गौतम) गणधरे त्रीश वर्ष सुधी श्री महावीर प्रभुनी सेवा करी.

एकदा श्री महावीर स्वामीए पोताना निर्वाणनो समय नजीक जाणीने गौतमना पोतानी प्रत्येना रागनो नाश करवा माटे तेमने (गौतम गणधरने) देवशर्मा नामना ब्राह्मणने प्रतिबोध करवा माटे मोकल्या. तेमना गया पछी प्रभुए सोळ प्रहर सुधी एक धाराए देशना आपी. देशनाने अंते भगवान अविनाशी मोक्षपद पाम्या. गौतम गणधर देवशर्माने प्रतिबोध करी जिनेश्वर पासे पाछा आवता हता, तेवामां मार्गमां प्रभुना मोक्ष कल्याणकने माटे आवेला देवताओना मुखथी भगवाननुं निर्वाण जाणी वज्रना प्रहारथी हणाया होय, तेम महा दुःखी थयेला चित्तथी विचार करवा लाग्या के—" अहो ! कृपासागर प्रभुए आ शुं कर्युं ? के जेथी आवा समये मने दूर मोकल्यो ? शुं मने पोतानी साथे लइ गया होत तो मोक्षनो मार्ग सांकडो थइ जात ? हे त्रण जगत्मां सूर्य समान प्रभु ! हवे मारा प्रश्नना जवाब कोण आपशे ? " इत्यादि विचार करीने ते वारंवार ' महावीर ' ' महावीर ' ए शब्दनो मोटे स्वरे जाप करवा लाग्या. एम करतां तेमना कंठ अने ताळु सुकाइ गयां. एटले पछी ' वीर ' ' वीर ' अने छेवट एकला 'वी' शब्दनोज उच्चार थवा लाग्या. ते वखते पोते द्वादशांगीना जाण होवाथी एक 'वी' शब्दे करीने ज सर्व शास्त्रोना अर्थने प्रगट करवानी शक्तिने धारण करनार श्री गौतम गणधरने 'वी' शब्दथी शरु थता अनेक सारा शब्दो स्मरणमां आव्या. ते आ प्रमाणे—हे वीतराग! हे विबुध्ध! हे विषयत्यागी ! हे विज्ञानी ! हे विकारजीत् ! हे विद्वेषी (गयो छे द्वेष जेमनो एवा) ! हे विशिष्ट श्रेष्ठ ! हे विश्वपति ! हे विमोही (गयो छे मोह जेनो एवा) ! इत्यादि शब्दो याद आवतां तेमांना प्रथम ' वीतराग ' शब्दनो अर्थ विचारतां तेमनो सर्व मोह—राग जतो रह्यो, अने तत्काळ केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. देवताओए केवळीनो महिमा कर्यो. सुवर्णकमळ विगेरेनी रचना करी. पछी तेनापर बेसीने अनेक भव्य जीवोने प्रतिबोध करी बार वर्ष सुधी केवळी अवस्थाए विचरी अंते साद्यनंत सुख (मोक्ष) ने

पाम्या.

" निर्मळ केवळज्ञानवडे उत्तम एवा प्रथम गणधर गौतम के जे जिनेश्वर पासेथी जीवनो निश्चय जाणीने प्रतिबोध पाम्या, ते गणनाथनी हुं मनोहर स्तुति करुं छुं. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे पञ्चपञ्चाशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ५५ ॥

व्याख्यान ५६ मुं.

समकितना त्रीजा तथा चोथा स्थानक विषे.

शुभाशुभानि कर्माणि, जीवः करोति हेतुभिः ।
तेनात्मा कर्तृको ज्ञेयः, कारणैः कुंभकृद्यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेम कुंभार माटी, चक्र अने चीवर (दोरो) विगेरे कारणोथी घमानो कर्ता छे तेम जीव कषायादिक बंधना हेतुओ वमे शुभ अने अशुभ कर्मो करे छे. माटे आत्मा कर्त्ता कहेवाय छे. " आ जीव कर्त्ता छे एवुं समकितनुं त्रीजुं स्थानक जाणवुं.

हवे चोथुं भोक्ता स्थानक कहे छे—

स्वयं कृतानि कर्माणि, स्वयमेवानुभूयते ।
कर्मणामकृतानांच, नास्ति भोगः कदापि हि ॥ २ ॥

भावार्थ—" पोते (आत्माए-जीवे) करेलां कर्मो (कर्मोनुं फळ) पोते ज भोगवे छे. केमके नहीं करेलां कर्मोनो भोग (अनुभव) कदापि थतोज नथी." आ जीव भोक्ता छे एवुं समकितनुं चोथुं स्थानक जाणवुं. आ प्रसंग उपर अग्नि-

नूति गणधरनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

अग्निनूतीनुं दृष्टांत.

मगध देशना गोवर गाममां वसुभूति ब्राह्मणनी पृथ्वी नामनी स्त्रीथी बीजो अग्निनूति नामनो पुत्र थयो हतो. ते पण सोमनट्टने घेर यज्ञ कराववा पोताना पांचसो शिष्यो सहित गयो हतो. ते वखते पोतानी पहेलां तेना मोटा नाइ इन्द्रनूति जिनेश्वर पासे गया हता, तेमणे पराजय पामी प्रनु पासे दीक्षा लीधी ते हकीकत जाणीने अग्निनूतिए विचार कर्यो के "मारो नाइ इन्द्रभूति त्रण नुवनने पण दुर्जय छे, तेने कोइ इंद्रजाळीए छळथी (कपटथी) छेतर्यो जणाय छे अने जगतना गुरु एवा मारा नाइनुं चित्त भ्रमित करी दीधुं लागे छे. तेथी हवे हुं जइने तेनो युक्तिथी पराजय करुं. अरे! मारा नाइनी मोटी नूल छे के ते सर्वज्ञोमां सूर्य जेवा मने अहीं मूकीने एकला गया. अने इंद्रजाळीके पण आ केवुं अकार्य कर्युं के पोतानी शक्ति जाण्या विना सिंहने आलिंगन दीधुं? पण हवे मारे तेनी पासे जलदी जवुं जोइए." आ प्रमाणे वाणीनो आडंबर करतो अग्निनूति पोताना पांचसो शिष्योने साथे लइने जिनेश्वर पासे गयो. ते वखते जिनेश्वरे तेने 'हे गौतम अग्निनूति! आव.' एम तेना नाम गोत्रकथन पूर्वक बोलाव्यो. ते सांनळीने अग्निभूतिए विचार्युं के "हुं जगतमां प्रसिद्ध छुं, तथी मने कोण न ओळखे? परंतु जो मारा मननो संशय कहीने तेनो खुलासो करे, तो मने विस्मय थाय." ए प्रमाणे ते विचार करतो हतो, तेवामां नगवान बोल्या के "हे अग्निभूति गौतम! तने 'कर्म छे के नहीं?' एवो संशय छे, परंतु ते तारो संशय अयोग्य छे, तुं वेदना पदोनो अर्थ बराबर जाणतो नथी तेथी तने एवो संशय थयो छे. ते वेदनां पदो आ प्रमाणे छे. "पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च नाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति। यदेजति यन्नेजति यद्दूरे यदन्तिके यदन्तरस्य सर्वस्यास्य बाह्यत इत्यादि" आनो अर्थ तुं एवो करे छे के "पुरुष एटले आत्मा. एवनो अर्थ निश्चय छे, अने ते कर्मनी व्यावृत्ति (निषेध)ने माटे छे. आ सर्व प्रत्यक्ष देखातुं चेतन तथा अचेतन, जे थइ गयुं अने जे थवानुं (मुक्ति तथा संसार). उतनो अर्थ समुच्चय छे. अमृतत्वस्य एटले मृत्युधर्म रहित एवा मोक्षनो इशान-प्रनु छे. जे कांइ आहारादिकथी वृद्धि पामे छे, पशु विगेरे जे कांइ चा-

ले छे, पर्वत विगेरे जे चालता नथी, मेरु विगेरे जे दूर छे, अने जे समीपे छे ते सर्व आत्मा ज छे. जे आ चेतन तथा अचेतन सर्वनी मध्ये तथा ते सर्वनी बहार छे ते सर्व पुरुष (आत्मा) ज छे. " आ प्रमाणे अर्थ करीने तुं कर्मनो अभाव सिद्ध करे छे ते अयुक्त छे. केमके केटलांएक वेदनां वाक्यो विधिवाद करे छे, केटलांएक अर्थवाद करे छे, तथा केटलांएक अनुवाद करनारां होय छे. तेमां 'अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः'—स्वर्गनी इच्छावाळाए अग्निहोत्र करवो. इत्यादि वाक्यो विधिवाद करनारां छे. अर्थवादनां वाक्यो स्तुत्यर्थक अने निंदार्थक एवा बे प्रकारनां होय छे. तेमां 'पुरुष एव' इत्यादि वाक्यो आत्माना स्तुत्यर्थक छे. अने 'जीवहिंसानुं कारण होवाथी यज्ञकर्म न करवुं' ए निंदार्थक वाक्य छे. तथा 'द्वादश मासा संवत्सरोऽग्निरुष्णोऽग्निर्हिमस्य भेषजं'—बार मासनुं वर्ष छे, अग्नि उष्ण छे, अग्नि हिमनुं औषध छे; इत्यादिक वाक्यो अनुवादवाळां छे, केमके ते वाक्यो लोकप्रसिद्ध अर्थने ज कहेनारां छे. हवे 'पुरुष एव' इत्यादि स्तुत्यर्थक वाक्यो जाति विगेरेना मदनो त्याग करवा माटे छे अने अद्वैतवादना प्रतिपादक छे. एटले ज्यां जोइए त्यां आत्मा ज छे, माटे मदनो त्याग करवो ए एनुं तात्पर्य छे.

वळी हे गौतम ! आत्मपणाए करीने सरखा एवा सर्व आत्मानुं आ जे देव, मनुष्य, तिर्यंच, नारकी, राजा, अने रंकपणारूप विचित्रपणुं प्रत्यक्ष छे ते निर्हेतुक नथी; तेनुं कारण होवुं ज जोइए. कारणविना जो आवी विचित्रता होय तो ते सदा एक सरखी होवी जोइए अथवा न होवी जोइए. पण तेम तो नथी. आ तो बदलाया ज करे छे. माटे ए सर्व विचित्रता कर्मथी ज थयेली छे एम अवश्य मानवुं पडशे. कह्युं छे के—

नित्यं सत्त्वमसत्त्वं वा हेतोरन्यानपेक्षणात् ।

"अन्य हेतुनी अपेक्षा नहोय तो नित्य सत्व अथवा असत्वपणुं होवुं जोइए." तेम नथी तेथी, जे कांइ ते विचित्रतानो हेतु छे तेज कर्म छे.

पौराणिको पण कर्मनुं प्रतिपादन करे छे. तेओ कहेछे के—

यथा यथा पूर्वकृतस्य कर्मणः, फलं निधानस्य इवावतिष्ठते ।
तथा तथा तत्प्रतिपादनोद्यता, प्रदीपहस्तेव मतिः प्रवर्तते ॥१॥

भावार्थ—" जेम जेम निधाननी पेठे पूर्वे करेला कर्मनुं फळ प्राप्त थाय-

छे, तेम तेम ते कर्मनुं प्रतिपादन करवा तैयार थयेली मति जाणे हाथमां दीवो ल-इने ज आवती होय, तेम प्रवर्ते छे." वळी

यत्तत्पुराकृतं कर्म न स्मरन्तीह मानवाः ।
तदिदं पांडवज्येष्ठ दैवमित्यभिधीयते ॥ २ ॥

भावार्थ—"हे युधिष्ठिर ! पूर्वे करेला जे कर्मने मनुष्यो आ भवमां सं-भारी शकता नथी (मनुष्योने स्मरणमां आवता नथी), ते कर्म 'दैव' ए शब्दथी कहेवाय छे."

वळी हे अग्निभूति ! ते कर्म मूर्तिमान छे एम मान. केमके कर्मने अमूर्त मानवाथी आकाशादिकनी जेम तेनाथी आत्माने अनुग्रह उपघातनो (सुख दुः-खनो) संभव घटे नहीं. वळी ए कर्मोनी साथे आत्माने अनादिकाळथी संबंध (संयोग) छे एम पण जाण. केमके जो तेनो संबंध सादि मानीए तो मुक्त जीवोने पण कर्मनो संबंध थवो जोइए, केमके सादि संबंध मानवायी संसारी जीव पहेलां कर्म रहित हतो, अने पछी अमुक काळे कर्म सहित थयो, तो मुक्त जीव पण कर्म रहित थया पछी तेने पण अमुक वखते कर्मनो संबध थवो जोइए अने तेम थवाथी मुक्त जीवो अमुक्त थशे, माटे तेम मानवुं इष्ट नथी; तेथी प्रवाहे करीने जीव कर्मनो संबंध अनादि छे एम जाण. अहीं कोइ एवी शंका करे के 'ज्यारे जीव कर्मनो संबंध अनादि छे, त्यारे तेनो वियोग शी रीते थइ शके ? केमके जे अनादि होय, ते अनंत पण होय. जेम काळ अनादि छे तेम अनंत पण छे.' आ शंकानो जवाब ए छे के जेम सुवर्ण अने पाषाणनो संबंध अनादि छे, तोपण तेवा प्रकारनी साम-ग्रीने योगे अग्निमां मूकीने धमवाथी सुवर्ण अने पाषाण जुदा पडे छे, तेम जीव पण ध्यानरूपी अग्निना योगे अनादि संबंधवाळा कर्मथी जुदो पडे छे, एम सिद्ध थाय छे.

वळी हे आयुष्मान् ! जो कर्म न होय, तो धर्म, अधर्म, दान, अदान, शीळ, अशीळ, तप, अतप, सुख, दुःख, स्वर्ग, नरक विगेरे सर्व व्यर्थ थाय, माटे तुं तारो पक्ष छोडीने 'कर्म छे' एम अंगीकार कर.

अहीं कोइ शंका करे के 'जगत् विगेरे सर्व वस्तुओनो कर्ता इश्वर एक ज छे, तो शामाटे वंध्याना पुत्रनी जेम अदृष्ट कर्मनी कल्पना करवी?' आवी शंका तद्दन असत्य

छे. केमके जो जगतनो कर्ता ईश्वर छे, तो ते मूर्तिमान छे के अमूर्त छे ? जो मूर्तिमान होय, तो ते कुंभकार विगेरेनी जेम देखातो केम नथी? अने जो अमूर्त छतो ज जगतने सरजे छे, तो तेने शरिरादिकना अभावने लीधे जगतने सरजवानुं सामर्थ्य क्यांथी होय ? माटे शुभाशुभ कर्मनो कर्ता जीव ज छे, अने भोक्ता पण जीव ज छे. ते विषे आगममां पण कह्युं छे के " जीवे णं भंते किं अत्तकडे दुक्खे परकडे दुक्खे उभयकडे दुक्खे ? गोयमा ! अत्तकडे नो परकडे तदुभयकडे । हे भगवान ! शुं जीव पोते करेलां दुःखो भोगवे छे के बीजाए करेलां के पोते तथा बीजाए-उभये करेलां दुःखो अनुभवे छे ? हे गौतम ! जीव पोते करेलां दुःखो ज अनुभवे छे. पण बीजाए करेलां के बन्नेए करेलां दुःखो भोगवतो नथी. " माटे जीव पोते करेलां कर्मोने पोते ज भोगवे छे.

वळी हे अग्निभूति ! तारा मननो संशय जेम में जाण्यो तेम हुं ज्ञानावरणादिक आठे कर्मो प्रत्यक्ष जोउं छुं, माटे तुं कर्मनो स्वीकार कर. जीव, कर्म विगेरे कोइपण वस्तु मारे अदृश्य नथी. तेम ज वेदने विषे पण " पुण्यं पुण्येन कर्मणा, पापं पापेन कर्मणा-शुभ कर्मथी पुण्य अने अशुभ कर्मथी पाप बंधाय छे." आ प्रमाणे कह्युं छे. माटे आगम (वेद)थी पण कर्म सिद्ध थाय छे, तेथी तुं तेनो स्वीकार कर.

आ प्रमाणे भगवानना उपदेशथी प्रतिबोध पामेलो अग्निभूति पोतानो गर्व छोडीने विचार करवा लाग्यो के "अहो ! मारुं मोटुं भाग्य छे, के जेथी मने विश्वने विषे पूज्य, गाढ अज्ञाननुं हरण करवामां सूर्य समान तथा अनंत गुणोवडे युक्त एवा गुरु प्राप्त थया. " एम विचारी आनंदथी पांचसो शिष्यो सहित छेंताळीश वर्षनी उमरे तेणे (अग्निभूतिए) प्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी. पछी दश वर्ष सुधी छद्मस्थपणे विहार करी केवळ ज्ञान पाम्या अने सोळ वर्ष सुधी केवळीपर्यायने भोगवी सिद्ध पदने पाम्या. (अहीं कर्मनी सिद्धिपर घणी युक्तिओ छे. ते विस्तारनी अपेक्षा वाळाए श्री जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणे करेली महाभाष्यनी मोटी वृत्तिमांथी जाणी लेवी.)

" श्री जिनेश्वरना वाक्यथी कर्म विषेनो संदेह छेदीने बीजा गणधर अग्निभूति चारित्र ग्रहण करी अने त्रसादिक जीवोने विषे दयामय आगमनी प-

रुपणा करी मुक्तिपदने पाम्या. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे षट्पञ्चाशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ५६ ॥

व्याख्यान ५७ मुं.

समकितना पांचमा तथा छठा स्थानक विषे.

अभावे बन्धहेतूनां, घातिकर्मक्षयोद्भवे ।
केवले सति मोक्षः स्याच्छेषाणां कर्मणां क्षये ॥ १ ॥
सुरासुरनरेन्द्राणां, यत्सुखं भुवनत्रये ।
तत्स्यादनन्तभागोऽपि, न मोक्षसुखसंपदाम् ॥ २ ॥
अनन्तसुखसंपूर्णं, निर्वाणपदमक्षयम् ।
साद्यनन्तं प्रवाहेण, भाषितं विश्ववेदिभिः ॥ ३ ॥

भावार्थ—" कर्मना बंध हेतुओनो अभाव थवाथी अने घाति कर्मोनो क्षय थवाथी केवळज्ञान थया पछी बाकीना अघाति कर्मोनो क्षय थये मोक्ष प्राप्त थाय छे. त्रण जगतमां सुर, असुर अने नरेंद्रोने जे सुख छे, ते सर्व सुखने एकत्र करीए तो ते मोक्षसुखनी संपदाने अनंतमे भागे पण थाय नहीं. विश्वना सर्व भावने जाणनारा जिनेश्वरोए निर्वाण (मोक्ष) पदने अनंत सुखथी संपूर्ण, अक्षय (अविनाशी) अने प्रवाहनी अपेक्षाए अनादि अनंत कहेलुं छे. " आ 'निर्वाण छे' ए नामनुं समकितनुं पांचमुं स्थानक जाणवुं.

हवे छठुं मोक्षोपाय (मोक्षनो उपाय) छे ए नामनुं छठुं स्थानक कहे छे.

ज्ञानादयस्त्रयः शास्त्रे, मोक्षोपायाः प्रकाशिताः ।

इति सम्यक्त्वरत्नस्य, षट् स्थानानि विचिन्तयेत् ॥१॥

भावार्थ—" शास्त्रोने विषे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण मोक्षना उपायो कहेला छे. आ प्रमाणे समकित रुपी रत्नना छ स्थानोनुं चिंतवन करवुं." आ संबंधमां प्रभास गणधरनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

प्रभास गणधरनो प्रबंध.

राजगृह नगरमां बल नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने अतिभद्रा नामनी स्त्री हती. तेमने प्रभास नामनो पुत्र हतो. ते वेद, सांख्य, मीमांसा, न्याय, योगाचार विगेरे शास्त्रोमां निपुण थवाथी अहंकारना पूरवडे आखा जगतमां पोतानी शिवाय बीजा सर्वने मूर्ख मानवा लाग्यो.

अहीं चंपापुरीमां सोम विप्रने त्यां यज्ञ थतो हतो. तेमां इंद्रभूति विगेरे विद्वानो आवेला हता. तेमां आ प्रभास पण आवेलो हतो. ते वखते इन्द्रभूति विगेरे जे जे विप्रो श्री महावीर स्वामी पासे गया, ते ते सिंहने जोइने मृगनी जेम पोताना अहंकारनो त्याग करीने प्रभुना चरणरूप मानस सरोवरमां हंसपणाने पाम्या. ते वात लोकोना मुखथी सांभळीने प्रभास विचार करवा लाग्यो के "खेरखर आवुं रूप धारण करीने साक्षात् इश्वर ज पोताना धामथी अहीं अमने पवित्र करवा आवेला जणाय छे, नहीं तो तेनी आटली बधी शक्ति न होय. माटे हुं पण तेनी पासे जइने तेनी विद्वत्ता, देहकांति अने चतुराइ विगेरे जोउं तो खरो. त्यां जवाथी मने तो बन्ने प्रकारे लाभ छे. एक तो मारी ज्ञातिना मोटा पंडितो त्यां गयाछे तेथी मारे पंक्तिभेद राखवो योग्य न होवाथी जवुं योग्य छे. अने बीजुं जो कदाच कोइपण प्रकारनी युक्तिथी घुणाक्षर न्याये हुं तेने जीती जाउं तो सर्व द्विजोमां हुं श्रेष्ठपद पामुं." आ प्रमाणे विचारीने ते प्रभास श्री जिनेश्वर पासे आव्यो. तेने जोइ प्रभु बोल्या के " हे आयुष्यमान् प्रभास! तुं एम माने छे के—मोक्ष छे के नहीं ? तने आवो संशय थवानुं कारण परस्पर विरुद्ध एवा वेद वाक्यो छे. वेदमां कह्युं छे के " जरामर्यं वा एतत्सर्वं यदग्निहोत्रं । तथा—सैष गुहा दुरवगाहा । तथा—द्वे ब्रह्मणी परमपरं च, तत्र परं सत्त्वं ज्ञानमनन्तरं ब्रह्मेति " । आ पदोनो अर्थ तुं आवो करे छे—जे अग्निहोत्र छे ते यावज्जीव करवानुं छे. आ अग्निहोत्रनी क्रिया प्राणीवधना हेतुभूत होवाथी ते शबल एटले पापव्यापार रुप छे, ते-

थी ते स्वर्ग फळ ज आपी शके, पण मोक्षरूप फळ आपी शके नहीं. अने ए पदमां यावज्जीव ते करवानुं कहुं छे तेथी बीजो एवो कोइ काळ बाकी रहेतो नथी के जे काळे मोक्षना हेतुभूत बीजी क्रिया करी शकाय. माटे साधनना अभावे साध्य (मोक्ष)नो पण अभाव छे. एम सिद्ध थाय छे. बीजा वाक्यमां—ते आ गुहा (मोक्षरूपी गुहा) संसारनी, आसक्तिवाळा जीवोने दुरवगाहा (दुःखे करीने प्रवेश करी शकाय तेवी) छे. तथा ब्रह्म बे छे. पर अने अपर. तेमां परब्रह्म ते सत्य (मोक्ष) अने अपर ब्रह्म ते ज्ञान छे. आ प्रमाणे वेद पदोनो अर्थ करीने तुं एम विचारे छे के—प्रथमना वेद वाक्यथी मोक्ष नथी एम सिद्ध थाय छे, अने बीजा पदोथी मोक्ष छे एम सिद्ध थाय छे. आ प्रमाणे अर्थ करवाथी तने संशय थयो छे के आ वाक्योमां कया वाक्यने प्रमाण गणवुं ? परंतु हे प्रभास ! ए वेद पदोनो अर्थ हुं कहुं छुं ए प्रमाणे करवो. जे अग्निहोत्र छे ते यावज्जीव करवो. तेमां जे वा शब्द कहेलो छे तेथी एम समजवुं के मुमुक्षु पुरुषोए मोक्षना साधनभूत क्रियानुष्ठान करवुं. आ अर्थ योग्य छे. तथा हे सौम्य ! तुं एम पण माने छे के दीवो बुझाइ जाय छे तेम जीवनुं निर्वाण थाय छे? ते बाबतमां केटलाक सौगतो कहे छे के—

दीपो यथा निर्वृतिमभ्युपैति, नैवावनीं गच्छति नान्तरिक्षम्।
दिशं न कांचिद्विदिशं न कांचित्, स्नेहक्षयात्केवलमेति शान्तिम्॥१॥
जीवस्तथा निर्वृतिमभ्युपैति, नैवावनीं गच्छति नान्तरिक्षम्।
दिशं न कांचिद्विदिशं न कांचित्क्लेशक्षयात्केवलमेति शान्तिम्॥२॥

भावार्थ—" जेम दीवो निर्वृत्ति पामे छे (ओलाइ जाय छे) त्यारे ते पृथ्वी पर कोइ जग्याए जतो नथी, आकाशमां जतो नथी, कोइ दिशामां जतो नथी, तेमज कोइ विदिशामां जतो नथी; परंतु स्नेह (तेल) नो नाश थवाथी (थइ रहेवाथी) केवळ शांतिने ज पामे छे. तेवी रीते जीव निर्वृत्ति पामे छे त्यारे ते पृथ्वी पर क्यांइ जतो नथी, आकाशमां जतो नथी, कोइ दिशामां जतो नथी, तेमज कोइ विदिशामां जतो नथी; परंतु क्लेशनो (कर्मनो अथवा संसारनो) क्षय थवाथी केवळ शांतिने ज पामे छे. "

आम मानवुं ते असत्य छे. केमके जैन शासनमां कयुं छे के—

केवलसच्चिद्दर्शनरूपाः सर्वार्त्तिदुःखपरिमुक्ताः ।
मोदन्ते मुक्तिगता जीवाः क्षीणान्तरारिगणाः ॥१॥

भावार्थ—" क्षीण थया छे अभ्यंतर शत्रु समूह जेना एवा जीवो मुक्तिमां गया छतां सर्व आर्त्ति ने दुःखथी मुक्त थइने केवळ सत् चित् (ज्ञान) दर्शन रुपे हर्ष पामे छे. "

दीपनुं उदाहरण सर्वथा नाश तरीके आप्युं छे ते योग्य नथी. तेनुं कारण ए छे के—दीपकना अग्निनो कांइ सर्वथा नाश थतो नथी. परंतु ते अग्नि अन्य परिणाम पामे छे. जेम दूधनुं परिणाम दहीं विगेरे थाय छे तेम अथवा अन्य परिणाम पामीने चूर्ण रूप थयेला घटनो जेम सर्वथा नाश नथी तेम दीपकना अग्निनो पण सर्वथा नाश थतो नथी. अहीं कोइ शंका करे के " जो दीपकना अग्निनो सर्वथा नाश न थतो होय, तो ते अग्नि ओलवाया पछी केम साक्षात् देखातो नथी ? " एनो उत्तर ए छे के—दीपक ओलवाया पछी तरत ज ते अग्नि अंधकारना पुद्गल रुप परिणामने पामे छे तेथी ते देखातो नथी. केमके ते अति सूक्ष्मतर परिणामने पामे छे. जेम घटनुं अति सूक्ष्म चूर्ण थइने पृथ्वी साथे मळी जवाथी ते बिलकुल देखातुं नथी तेम. अथवा आकाशमां थयेला श्याम वादळां अन्य परिणाम पामीने अति सूक्ष्मतर थइ जवाथी जोवामां आवतां नथी, तेम दीपकनो अग्नि पण अन्य परिणाम पामवाथी देखी शकातो नथी. केमके पुद्गलना परिणामो अति विचित्र छे. जेम सुवर्णनां झीणां पानां कर्यां होय तो ते चक्षुथी जोइ शकाय छे. पण तेने शुद्ध करवा माटे अग्निमां नाख्यां अने ते सुवर्णनो रस थइ ढोळाइने भस्म साथे मळी गयो, त्यारे ते चक्षुथी जोइ शकातुं नथी. परंतु स्पर्शथी सुवर्ण छे एम जाणी शकाय छे. तेने पण अत्यंत चूर्ण करी सुक्ष्म रजनी साथे मेळवीए तो ते किंमत विनानुं अने नहीं जेवुं ज थइ जाय छे. पण खरी रीते तो ते सुवर्ण रहेलुं ज छे, नाश पामी गयुं नथी. केमके तेनो फरीथी जूदो प्रयोग करीए तो पाछुं ते हतुं तेवुं सुवर्ण करी शकाय छे. इत्यादि अनेक प्रकारनी विचित्रता पुद्गलोमां रहेली छे. ते पोतानी बुद्धिथी जाणी लेवी. दीवाना पुद्गलो पण प्रथम चक्षुथी ग्राह्य हता, ते ओलाया पछी तरत ज अंधकार मय थइ गया छतां घ्राणेन्द्रिय (नासिका) वडे ग्रहण थइ शके छे. जेम जूदा

परिणामने पामेलो दीपक निर्वाण शब्दथी बोलाय छे, तेम जीव पण कर्म रहित थइने एकलो, मूर्ति रहित, संपूर्ण जीवस्वरूपनी प्राप्तिरूप अव्याबाध परिणामने पामवाथी निर्वाण—निवृत्ति पाम्यो एम कहेवाय छे.

अहीं कोइ शंका करे के—शब्दादिक विषयनो उपभोग न होवाथी तथा शरीर अने इन्द्रियो न होवाथी मोक्षमां सुखनो पण अभाव ज होवो जोइए. तेनो उत्तर ए छे के—मुक्ति पामेला जीवोने वचनथी अगोचर एवुं अति उत्कृष्ट अकृत्रिम स्वाभाविक सुख छे. (आ अनुमान प्रमाणमां प्रतिज्ञा—साधवा लायक वाक्य छे.) प्रकर्ष ज्ञान थवाथी जन्म, जरा, व्याधि, मरण, अरति, चिंता अने उत्सुकता विगेरे निःशेष (समग्र) बाधाथी रहित छे माटे. (आ हेतु छे.) तेवा प्रकारना उत्कृष्ट मुनिनी जेम. (आ उदाहरण छे.) हवे सांसारिक सुखनी दुःख पणे घटना करे छे—आ संसारमां पुष्पमाळा, चंदन, स्त्रीसंभोग विगेरेथी उत्पन्न थता सुख तथा चक्रवर्ती विगेरेनी पदवीनुं पुण्यफळनुं सुख निश्चयथी जोइए तो दुःख ज छे. (प्रतिज्ञा) ते सुख परिणामे विनाशी होवाथी तेमज ते सुख कर्मना उदयथी उत्पन्न थयेलुं होवाथी. (हेतु) जेम खरजवाळा प्राणीने खरजनुं सुख तथा रोगी माणसने अपथ्य आहारनुं सुख परिणामे दुःख रूप छे तेम. (उदाहरण) सांसारिक सुखो दुःख रुप ज छे. कह्युं छे के—

नग्नः प्रेत इवाविष्टः, कुणन्तीमुपगुह्य ताम् ।
गाढायासितसर्वांगः, कः सुखी रमते किल ॥ १ ॥

भावार्थ—" नग्न थइने अने प्रेत वळगेलो होय तेनी जेम कामाविष्ट थइने सीत्कार शब्द करती स्त्रीने आलिंगन आपी सर्व अंगोने अत्यंत प्रयास पामतो पुरुष तेणीनी साथे जे क्रीडा करे छे तेवी क्रीडा कोण बुद्धिमान करे ? केमके तेमां शुं सुख छे ? अर्थात् कांइपण सुख नथी." मात्र मोहाधीनपणाथ' दुःखने अनुभवतो सतो सुख माने छे. वळी कह्युं छे के—

भुक्ताः श्रियः सकलकामदुघास्ततः किं
संप्रीणिताः प्रणयिनः स्वधनैस्ततः किम् ।
दत्तं पदं शिरसि विद्विषतां ततः किं

कल्पं स्थितं तनुभृतां तनुभिस्ततः किम् ॥ २ ॥

भावार्थ—" सकल मनोरथने पूर्ण करनारी लक्ष्मीने कदि भोगवी तो तेथी शुं ? पोताना धन वडे प्रेमी जनोने प्रसन्न कर्या तो तेथी शुं ? शत्रुओनां मस्तकपर पग मूक्यो तो तेथी शुं ? अने आने आ देहवडे कदि प्रलयकाळ पर्यंत रह्यो (जीव्यो)तो तेथी पण शुं ?" केमके परिणामे तो ते सर्व निष्फळ अने विनाशी छे ए चोकस वात छे.

इत्थं न किंचिदपि साधनसाध्यजातं
स्वप्नेन्द्रजालसदृशं परमार्थशून्यम् ।
अत्यन्तनिर्वृतिकरं यदपेतबाधं
तद्ब्रह्म वाञ्छत जना यदि चेतनास्ति ॥ ३ ॥

भावार्थ—" आ प्रमाणे परमार्थ रहित स्वप्न अने इन्द्रजाळना जेवुं सुख भोगवीने जो कांइपण साधनथी सधातुं साध्य नीपजाव्युं नहीं तो ते बधुं नकामुं छे. माटे हे भव्य जीवो ! जो तमारामां चेतना (बुद्धि) होय, तो अत्यंत निवृत्ति करनार अने बाधा रहित एवा ब्रह्म (मोक्ष)नी वांछा करो. "

आटला माटे संसारनां सर्व सुखो तत्त्वतः दुःखरुपज छे. ते विषे महाभाष्यमां कह्युं छे के—

विसयसुहं दुक्खं चिय, दुक्खपडिआरओ तिगिच्छ व्व ।
तं सुहमुवयाराओ, न य उवयारो विणा तत्थ ॥ १ ॥

भावार्थ—" दुःखना प्रतिकार रूप ज मात्र होवाथी विषय सुख ते दुःख रूप ज छे. कोढ, अन्तर्गल, विगेरे व्याधिओ जेम क्वाथ पान, छेदन, भंजन विगेरे चिकित्सा करवाथी मटे छे, अर्थात् दुःख रुप प्रतीकारथी मटे छे तेम विषय सुख पण मात्र क्षुधा, तृषा, कामविकारादि दुःखोना प्रतिकाररूप होवाथी ते दुःख ज छे. छतां लोकमां ते सुखना नामथी बोलाय (ओळखाय) छे ते मात्र उपचारथी ज बोलाय छे. परंतु तेवो उपचार पारमार्थिक सुख विना कोइ पण स्थाने घटतो नथी." जेम कोइ माणवक (मनुष्य)ने सिंह विगेरे नामथी बोलावीए तो

तेथी लोक रुढिए तेओ तेवा नामथी ओळखाय छे खरा पण तेथी ते सिंहनो शब्द सांभळतां लोकोने भयादिक उत्पन्न थता नथी. तेम विषय सुख पण वास्तविक सुख उपजावनार नथी, मात्र तेनुं नाम ज सुख छे, सुख शब्दथी ते ओळखाय छे. पारमार्थिक सुख तो एक मोक्षमां ज रहेलुं छे. ते सुखने कोइनी उपमा आपी शकाय तेम नथी. (निरुपम छे.) तथा ते सुख प्रतिकार रहित सत्य ज छे.

वळी हे प्रभास ! वेदमां पण संसार अने मोक्षनुं स्वरुप बतावेल छे. ते आ प्रमाणे " न ह वै सशरीरस्य प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति। अशरीरं वा वसंतं प्रियाप्रिये न स्पृशत इति " न ए अव्यय निषेधने माटे छे. ह अने वै ए बे पण अव्यय छे. तेनो अर्थ ' जेथी करीने ' एवो थाय छे. शरीरनी साथे जे रहे ते सशरीरी–जीव. ते (जीव)ने प्रिय अप्रिय एटले सुख दुःखनी अपहति एटले तेनो विनाश नथी. (अर्थात् शरीर साथे रहेलो जीव सुख दुःख पामे छे.) अने शरीर रहित एटले मुक्तिनी अवस्थामां रहेला (लोकाग्रमां रहेला) ने ते प्रिय तथा अप्रिय (सुख दुःख) स्पर्श करता नथी. (मोक्षमां प्रियाप्रिय नथी. अर्थात् त्यां आत्मा स्वस्वरुपे ज रहे छे). अहीं कोइ प्रश्न करे के—ते मोक्ष सुख शी रीते पमाय ? तेनो जवाब ए छे के—ज्ञान, दर्शन अने चारित्र विना बीजा कशाथी ते प्राप्त थतुं नथी. ते विषे दर्शन सप्ततिकामां कह्युं छे के—

सम्मत्तनाणचरणा, संपुन्नो मोक्खसाहणोवाओ।
ता इह जुत्तो जत्तो, ससत्तिओ नायतत्ताणं ॥ १ ॥

भावार्थ—" सम्यक्त्व, ज्ञान अने संयम संपूर्ण प्राप्त करवा ते ज मोक्ष साधवानो उपाय छे. ते उपाय आ नरभवने विषे ज साधवा योग्य छे. कारणके तत्त्वना जाण पुरुषो स्वशक्तिवडे अहीं ज तेने मेळवे छे. "

ये धर्मशीला मुनयः प्रधानास्ते दुःखहीना नियमे भवन्ति ।
संप्राप्य शीघ्रं परमार्थतत्त्वं, व्रजन्ति मोक्षं त्विदमेकमेव ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेओ धर्मशील (धर्मनुं प्रतिपालन करनार) प्रधान मुनिओ होय छे, तेओ निश्चे दुःख रहित थाय छे. तेओ शीघ्रपणाथी परमार्थ तत्त्वने पामीने एक चिद्रूप एवा मोक्ष प्रत्ये जाय छे. "

इत्यादि भगवानना मुखथी युक्ति युक्त वचनो सांभळीने प्रसन्न थयेला प्रभासे पोतानो संशय दूर थवाथी पोताना त्रणसो शिष्यो सहित भगवान पासे दीक्षा

ग्रहण करी. तेणे सोळ वर्षना गृहस्थपर्यायनो त्याग करीने सर्व विरति अंगीकार करी. पछी आठ वर्ष सुधी छद्मस्थ पर्याय पाळीने आवरण रहित अव्याबाध केवळ ज्ञान पाम्या. केवळी अवस्थामां सोळ वर्ष विचरी अनेक भव्य जीवोने प्रतिबोध पमाडी जे सुखने माटे उद्योग कर्यो हतो ते मोक्ष सुख प्राप्त कर्युं. (आ प्रमाणे संक्षेपथी सर्व गणधरोनुं वर्णन जाणवुं.)

परिनिव्वुआ गणहरा, जीवंते णायए नवजणाओ ।
इंदभूति सुहम्मो य, रायगिहे निव्वुए वीरे ॥ १ ॥

भावार्थ—"नव गणधरो महावीर स्वामीनी हयातिमां निर्वृत्ति पदने पाम्या अने इन्द्रभूति तथा सुधर्मा स्वामी राजगृही नगरीमां वीर भगवान निर्वाण पाम्या पछी मोक्ष पदने पाम्या. (आ प्रमाणे आवश्यक निर्युक्तिमां कह्युं छे).

मास पाउवगया सव्वे वि य सव्वलद्धियसंपन्ना ।
वज्जरिसहसंघयणा समचउरंसावसंठाणा ॥ २ ॥

भावार्थ—"सर्वे गणधरो सर्व लब्धिथी युक्त, वज्रऋषभनाराच संघयणवाळा, समचतुरस्र संस्थानवाळा, अने अंते एक मासनुं पादपोपगम अनशन करीने मोक्ष सुखना मेळवनारा थया छे."

"बाल्यावस्था (सोळ वर्षनी वय) ने विषे ज चारित्र ग्रहण करी प्रभुनी पहेलां निर्वृत्ति सुख पामनार मुनि श्रेष्ठ प्रभास गणधर अमारा प्रभूत (घणा) उदयने माटे थाओ."

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे सप्तपञ्चाशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ५७ ॥

सम्यक्त्वना सडसठ भेदनुं विवरण.

संपूर्ण.

व्याख्यान ५८ मुं.



समकितना केटलाएक अन्य प्रकारो कहे छे—

सम्यक्त्वं चैकधा जीवे, तत्त्वश्रद्धानतो भवेत् ।
निश्चयव्यवहाराभ्यां, दर्शनं द्विविधं मतम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" तत्त्वश्रद्धान रुप जीवने विषे एक प्रकारनुं समकित छे. अने निश्चय तथा व्यवहारे करीने समकित बे प्रकारनुं मानेलुं छे. "

पाछला व्याख्यानोमां बतावेला समकितना ६७ भेदो पैकी एकसठ भेदो व्यवहार समकितमां अन्तर्गत थाय छे अने छेल्ला छ भेदो निश्चय समकितमां अंतर्भाव पामे छे.

समकितना पांच प्रकार छे ते आ प्रमाणे—

आदावौपशमिकं च, सास्वादनमथापरम् ।
क्षायोपशमिकं वेद्यं, क्षायिकं चेति पञ्चधा ॥ १ ॥

भावार्थ—" पहेलुं औपशमिक, बीजुं सास्वादन, त्रीजुं क्षायोपशमिक, चोथुं वेद्य (वेदक) अने पांचमुं क्षायिक. एम पांच प्रकारे समकित छे. "

१ तेमां औपशमिक समकित—जेनी कर्मग्रंथि भेदायेली छे (ग्रंथिभेद करेलो छे) एवा शरीरी (मनुष्य) ने सम्यक्त्वनो प्रथम लाभ थती वखते पहेला अंतर्मुहूर्तमां थाय छे. अथवा उपशम श्रेणी पर चडेला उपशांतमोहीने मोहना उपशमथी उत्पन्न थयेलुं ते पण औपशमिक समकित कहेवाय छे. ते पण अंतर्मुहूर्त ज रहे छे.

२ समकित पाम्या पछी तत्काळ अनंतानुबंधी कषायना उदयथी समकितनुं वमन करतां ते समकितना रसनो लेशमात्र आस्वाद पामे छे, ते बीजुं सास्वादन नामनुं समकित कहेवाय छे. आ समकित जघन्यथी एक समय सुधी अने उत्कृष्टथी छ आवलीका सुधी रहे छे.

३ मिथ्यात्व मोहनीयना उदयमां केटलाकनो क्षय अने केटलाकनो उपशम करवाथी जे सम्यक्त्व गुण प्राप्त थाय, ते क्षायोपशमिक समकित कहेवाय छे.

४ क्षपक श्रेणीपर चडेला देहीने अनंतानुबंधी चार कषायनो क्षय थया पछी मिथ्यात्व मोहनी अने मिश्र मोहनीनो सारी रीते परिपूर्ण क्षय थये छते सम्यक्त्व मोहनीना छेल्ला अंशने भोगवती वखते क्षायिक समकितनी सन्मुख थनारने वेदक समकित थाय छे.

५ समकित मोहनी, मिश्र मोहनी ने मिथ्यात्व मोहनी तथा अनंतानुबंधी चार कषाय. ए सात प्रकृतिनो क्षय थवाथी जीवने जे तत्त्वश्रद्धा थाय छे ते पांचमुं क्षायिक समकित छे.

आ समकित गुणथी त्रण प्रकारनुं पण छे—रोचक, दीपक अने कारक. तेमां सिद्धान्तने विषे कहेला तत्त्वो उपर हेतु तथा उदाहरण विना जे दृढ आस्था थाय, ते रोचक समकित कहेवाय छे. आ समकित उपर कृष्ण अर्धचक्रीनो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

कृष्ण वासुदेवनो प्रबंध.

द्वारका नगरीमां एकदा वर्षाऋतुमां श्री नेमिनाथ भगवंत समवसर्या. तेमने वंदना करीने श्रीकृष्णे पूछ्युं के 'हे स्वामी! वर्षाऋतुमां मुनिओ केम विहार करता नथी?' प्रभुए जवाब आप्यो के, "हे कृष्ण! वर्षाऋतुमां पृथ्वी घणा जंतुओथी व्याप्त थाय छे तेथी ते काळे विहार करतां ते जीवोनुं रक्षण थइ शके नहीं, माटे मुनि विहार करता नथी." ते सांभळीने कृष्णे पण अंतःपुरमांज चार मास रहेवानो निश्चय कर्यो. केमके राजसभामां जवाथी घणा सभासदोने आववुं पडे एटले घोडा गाडीओ विगेरेना जवा आववाथी घणा जीवोनुं मर्दन थाय.

ते नगरीमां एक वीरक नामनो साळवी रहेतो हतो. ते कृष्णनो भक्त हतो. तेने कृष्णना दर्शन करीने जमवानो नियम हतो. तेथी ज्यारे कृष्ण चार मास अंतःपुरमां रह्या त्यारे तेमनुं दर्शन नहीं थवाथी ते वीरक हमेशां त्यां आवी राजद्वारनी पुष्पादिकथी पूजा करीने चाल्यो जतो, परंतु भोजन करतो नहीं, वस्त्रो बदलतो नहीं, हजामत करावतो नहीं अने नख पण छेदरावतो नहीं. आ प्रमाणे तेणे चार मास सुधी कर्युं. वर्षाकाळ पूर्ण थये ज्यारे कृष्ण अंतःपुरनी बहार नीकळ्या त्यारे

वीरके आवीने नमन कर्युं. तेने जोइने राजाए पूछ्युं के 'हे वीरक ! तुं आवो कृश केम देखाय छे ?' ते सांभळी प्रतीहारे कह्युं के "हे स्वामी ! आपनुं दर्शन आटला दिवस नहीं थवाथी तेणे भोजन विगेरे कर्युं नथी, तेथी ते आ आवो दुर्बळ थइ गयो छे." ते सांभळीने कृष्ण तेनापर तुष्टमान थया, अने ते वीरकने सर्वत्र ज्यां पोते होय, त्यां आववानी छुट आपी. पछी ते नेमिनाथने वांदवा गया, त्यां भगवानना मुखथी धर्मोपदेश सांभळीने कृष्णे कह्युं के "हे प्रभु ! भागवती दीक्षा के अन्य व्रतो ग्रहण करवाने हुं समर्थ नथी तोपण हुं एटलो नियम करुं छुं के जे कोइ दीक्षा लेवा तैयार थशे, तेनो हुं महोत्सव करीश." आ प्रमाणे अभिग्रह लइने कृष्ण वासुदेव पोताने घेर गया.

एकदा विवाहने योग्य वये पहोंचेली पोतानी कन्याओ कृष्णने प्रणाम करवा आवी. त्यारे वासुदेवे ते पुत्रीओने पूछ्युं के "हे पुत्रीओ ! तमे राणीओ थवा इच्छो छो, के दासीओ थवा इच्छो छो ? तमारा मननो जे मनोरथ होय ते कहो." त्यारे ते कन्याओ बोली के 'हे पिता ! आपना प्रसादथी अमे राणीओ थवा इच्छीए छीये.' ते सांभळी कृष्ण बोल्या के "हे पुत्रीओ ! जो तमारी एवी ज इच्छा होय, तो श्री नेमिनाथ पासे जइ दीक्षा ग्रहण करो." ते सांभळीने ते सर्वे कन्याओए प्रभु पासे जइ चारित्र ग्रहण कर्युं. एकदा एक राणीए पोतानी पुत्रीने शीखव्युं के "तुं तारा पिता पासे प्रणाम करवा जाय, त्यारे तने जो ते राणी के दासी थवानुं पूछे, तो तारे एनो जवाब आपवो के-हुं दासी थवा इच्छुं छुं." अन्यदा प्रणाम करवा जतां कृष्णे ते पुत्रीने पूछ्युं, त्यारे तेणीए मातानी शिखामण प्रमाणे जवाब दीधो. ते सांभळीने कृष्णे विचार कर्यो के "आ पुत्रीनी जेम बीजी पुत्रीओ पण संसारमां पडशे, माटे जो हुं आने खरेखरी दासी ज बनावुं तो पछी बीजी पुत्रीओ संसारमां पडे नहीं." एम विचारीने तेणे एकांतमां वीरक सालवीने पूछ्युं के "हे वीरक ! तें पहेलां कोइ पण वखत कांइ अद्भुत कार्य कर्युं होय ते कहे." वीरक बोल्यो के "हे स्वामी ! में कांइ तेवुं अद्भुत कार्य तो कर्युं नथी, परंतु एक वखत हुं शरीरचिंता करवा गयो हतो त्यां एक बोरडीना झाडनी टोच पर रहेला काकीडाने में एक ज पथ्थर मारीने पृथ्वी पर पाडी दीधो हतो; तथा वर्षाऋतुमां गाडाना पैडाना चीलामां भराइ रहेलुं पाणी में डाबा पगथी रोकी दीधुं हतुं; अने पग लइ लीधो त्यारे पछी नदीनी जेम तेनो प्रवाह चाल्यो

हतो. तथा एक वखत पांजणीना वासणमां माखीओ गुंजारव करती हती, तेने में ते वासणना मुखपर हाथ मुकीने रोकी (रुंधी) दीधी हती. " आ प्रमाणे सांभळीने कांइक हास्य करी कृष्ण सभामां गया. त्यां सर्व सभासदो समक्ष ते बोल्या के " हे सभासदो ! वीरक साळवीनुं पराक्रम अति अद्भुत छे तेथी तेनुं कुळ पण उंचुं छे. सांभळो—

येन रक्तस्फटो नागो, निवसन् बदरीवने ।
पातितः क्षितौ शस्त्रेण, क्षत्रियः सैष वै महान् ॥ १ ॥
येन चक्रकृता गंगा, वहन्ती कलुषोदकम् ।
धारिता वामपादेन, क्षत्रियः सैष वै महान् ॥ २ ॥
येन घोषवती सेना, वसन्ती कलशीपुरे ।
धारिता वामहस्तेन, क्षत्रियः सैष वै महान् ॥ ३ ॥

भावार्थ—" बदरीना वनमां रहेला रक्तफणावाळा नागने (काकीडाने) जेणे शस्त्रवडे मारी पृथ्वी पर पाडी नांख्यो, ते आ वीरक महा क्षत्रिय छे. वळी जेणे चक्रथी पाडेली गंगा नदी के जे डोळुं पाणी वहेती हती, तेने डावा पगवडे रोकी दीधी ते आ वीरक महा क्षत्रिय छे, तथा कलशीपुरमां (कळशामां) रहेली अने घोष (शब्द) करती सेनाने जेणे एक डावा हाथथीज रुंधी दीधी ते आ वीरक खरेखर महा क्षत्रिय छे. " तेथी आ मारी केतुमंजरी नामनी पुत्रीने ते योग्य वर छे. " एम कहीने कृष्णे ते वीरक साथे तेनी इच्छा नहीं छतां पण केतुमंजरीने परणावी. वीरक पण कृष्णना भयथी तेणीने परणीने पोताने घेर लइ जइ तेणीनी दासनी जेम सेवा करवा लाग्यो. घणा दिवसो गया पछी एकदा कृष्णे वीरकने पूछ्युं के ' मारी पुत्री तारी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे के नहीं ? ' वीरके जवाब आप्यो के ' हे राजा ! हुंज आपनी पुत्रीनी आज्ञा प्रमाणे वर्तुं छुं. ' ते सांभळीने कृष्णे कृत्रिम क्रोध करी तेने बहु धिक्कार्यो. तेथी ते वीरके घेर जइने तेणीने कह्युं के " अरे स्त्री ! तुं केम बेठी छे ? खेळ तैयार कर, घरमांथी वासीदुं काढ, पाणी भरी लाव, अने जलदीथी रसोइ तैयार कर. " आ प्रमाणे कोइ वखत नहीं सांभळेलां वाक्यो सांभळीने ते बोली के ' हे स्वामी ! हुं आमांनुं कोइ पण काम

जाणती नथी.' ते सांभळीने वीरके दोरडी वडे तेणीने खूब मारी. तेथी ते रोती रोती पिता पासे गइ अने पिताने सर्व वात कही. त्यारे ते बोल्या के 'तें दासीपणुं माग्युं हतुं तेथी में तने दासीपणुं आप्युं छे.' ते बोली "हे पिता! हवे हुं तेने घेर नहीं जउं, परंतु आपना प्रसादथी हुं राणी थइश." त्यारे कृष्णे वीरक साळवीनी रजा लइने तेणीने प्रव्रज्या अपावी. आ प्रमाणे कृष्णे घणा जीवोने दीक्षा अपावी परंतु पोते अप्रत्याख्यानी कषायना उदयथी व्रतादिकनुं ग्रहण करी शक्या नहीं.

एकदा श्री नेमिनाथ जिनेश्वर रैवतक गिरिपर समवसर्या, ते वखते कृष्ण परीवार सहित प्रभुने वांदवा गया. त्यां अढार हजार साधुओने तेणे द्वादशावर्त्त वंदनवडे वंदना करी. बीजा राजाओ तो थाकी जइने थोडा थोडा साधुओने वंदना करी विराम पाम्या, पण वीरक साळवीए कृष्णनी साथे छेवट सुधी सर्व मुनिओने द्रव्य वंदना करी. प्रांते वंदनाना परिश्रमने लीधे कृष्णनां गात्रो परसेवाथी आर्द्र थइ गया. सर्व मुनिने वंदना करीने कृष्णे प्रभु पासे जइने कह्युं के "हे भगवंत! त्रणसोने साठ युद्धो करतां पण मने आटलो श्रम लाग्यो नहोतो." त्यारे भगवान् बोल्या के "हे कृष्ण! तमने आजे घणो लाभ थयो छे. तमे आजे सात कर्म प्रकृतिनो क्षय करीने क्षायिक समकित उपार्जन कर्युं छे तथा आवती चोवीशीमां पहेलेथी गणतां बारमा अने छेल्लेथी गणतां तेरमा अमम नामना तीर्थंकर थवानुं कर्म उपार्जन कर्युं छे तथा सातमी नरकनुं आयुष्य बांध्युं हतुं ते त्रीजी नरकनुं रह्युं छे." ते सांभळीने कृष्ण बोल्या के 'हे भगवंत! फरीथी सर्व मुनिओने वंदना करीने त्रण नरकनुं आयुष्य पण तोडी नांखुं.' जिनेश्वर बोल्या के 'हे कृष्ण! ते समये जे तमारो तद्दन निःस्पृह भाव हतो ते हवे जतो रह्यो छे तेथी फरीने वंदना करतां ते लाभ मळे तेम नथी, पण जगतना उत्तम पदार्थो सर्व तमने प्राप्त थया छे, तेथी हवे तेनाथी अधिक शेनी इच्छा छे? वळी त्रीजी नरकनुं आयुष्य तो निदान (नियाणुं) करीने बांधेला वासुदेवपणानी साथे ज रहेलुं छे. तेथी तेनो अभाव तो थवानो ज नथी. कह्युं छे के 'अनियाणकडा रामा' इत्यादि-बळदेव नियाणुं कर्या विना थाय छे अने वासुदेव तो अवश्य नियाणुं करवाथी ज थाय छे, ते ओछामां ओछा त्रीजी नरके तो अवश्य जाय ज छे, माटे ते त्रीजी नरकनुं आयुष्य छूटे तेम नथी." आ प्रमाणे प्रभुना मुखथी सांभळीने प्रभुनुं वाक्य सत्य मानता

कृष्ण पोताने घेर गया.

अहीं कोइने शंका थाय के—त्रीजी नरकमां उत्कृष्टुं आयुष्य सात सागरोपमनुं कहेलुं छे अने नेमिनाथथी आरंभीने आवती चोवीशीमां बारमा अमम जिनेश्वर थाय, त्यां सुधीनुं अंतर तो अठ्ताळीश सागरोपमनुं थाय छे; तो पछी सात सागरोपम वाळा एक भवमां तेटलो काळ केम व्यतित थाय के जेथी कृष्ण नरकथी नीकळीने तीर्थंकर थइ शके ? अहीं एवो जवाब छे के–"श्री हेमचंद्र सूरिए करेला नेमिनाथना चरित्रमां श्रीकृष्णना पांच भव कहेला छे. तत्त्व तो केवळी जाणे. तथा वसुदेव हिंडि नामना ग्रंथमां एम कह्युं छे के—कृष्ण त्रीजी नरकमांथी नीकळीने भरतक्षेत्रने विषे शतद्वार नगरमां मांडलिक राजा थइ दीक्षा ग्रहण करी, तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन करीने वैमानिक देवता थइ त्यांथी च्यवी, बारमा अमम नामे तीर्थंकर थशे." आ प्रमाणे श्री कृष्ण वासुदेव शुद्ध श्रद्धा गुणथी भवनो पार पामशे.

आ रोचक गुण (समकित) श्रेणिक राजा विगेरेने पण तीर्थंकरादि पद आपनार तरीके प्रसिद्ध छे.

" पृथ्वी पर देवताओ तथा मनुष्यो जेमना गुणोनुं वर्णन करे छे, एवा कृष्ण त्रिकरण शुद्धिथी श्री जैन शासनने विषे भक्तिवाळा थया छे. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभेऽष्टपंचाशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ५८ ॥

व्याख्यान ५९ मुं.



कारक समकित विषे.

तथा कार्यं गुरोर्वाक्यं, यथा प्रवचनाच्छ्रुतम् ।
तपोव्रतादिकं सर्वं, सेवनात् कारको मतः ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे प्रमाणे प्रवचन (सिध्धांत)थी सांभळ्युं होय, ते प्रमाणे गुरुनुं वाक्य अंगिकार करवुं अने तप, व्रत विगेरे सर्व आचरण करवुं. तेम करवाथी कारक समकित कहेवाय छे." आ संबंधमां काकजंघ ने कोकाशनी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

काकजंघ अने कोकाशनी कथा.

सोपारक नगरमां 'विक्रम' नामे राजा हतो. ते नगरमां 'सोमिल' नामे एक रथकार (सुथार) हतो. ते सर्व रथकारोनो अग्रेसरी (उपरी) हतो. ते सोमिलने 'देविल' नामनो पुत्र हतो. तथा ते ज सोमिलनी दासीने ब्राह्मणथी उत्पन्न थयेलो 'कोकाश' नामनो पुत्र हतो. ते सोमिल पोताना पुत्र देविलने हमेशां मोटा प्रयासथी पोतानी विद्या शीखवतो हतो. कह्युं छे के—

पितृभिस्ताडितः पुत्रः, शिष्यश्च गुरुशिक्षितः ।
घनाहतं सुवर्णं च, जायते जनमण्डनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"मावापथी ताडन करायेलो पुत्र, गुरुथी शिक्षा अपायेलो शिष्य अने घणथी टीपायेलुं सुवर्ण—ए त्रणे लोकमां शोभाने पामे छे."

सोमिल पोताना पुत्रने घणी महेनत लइने शीखवतो हतो, परंतु तेने कांइ पण आवड्युं नहीं. अने दासीपुत्र कोकाश तेनो चाकर होवाथी तेनी पासे बेसी रहेतो हतो ते मौनताथी ज सर्व कळाओने मात्र सांभळीने शीखी गयो. तेमज गुरु (सोमिल) करतां पण वधारे कुशळ थयो. केटलेक काळे सोमिल रथकार मरण पा-

म्यो त्यारे तेने स्थाने तेनो पुत्र देविल्ल मूर्ख होवाथी कोकाशने ज राजाए स्थापन कर्यो. कह्युं छे के—

दासेरोऽपि गृहस्वाम्यमुच्चैः काममवासवान् ।
गृहस्वाम्यपि दासेरमहो प्राच्यशुभाशुभे ॥ १ ॥

भावार्थ—" कोकाश दासीपुत्र छतां पण मोटा गृहना स्वामीपणाने पाम्यो. अने देवील गृहस्वामी छतां पण दासनुं आधीनपणुं पाम्यो. अहो! पूर्वना शुभाशुभ कर्म केवा विचित्र छे ?"

अन्यदा कोकाशे गुरुना मुखथी धर्मदेशना सांभळी. तेथी ते जैनधर्म पाम्यो अने तेनुं दृढ चित्ते आराधन करवा लाग्यो.

मालव देशमां उज्जयिनी नगरीमां विचारधवल नामे राजा हतो. तेनी पासे चार नर रत्नो हता. तेमां एक सूपकार रत्न (रसोयो) हतो ते खानारनी जेवी इच्छा होय, तेवी ज रसोइ करतो. तेमज ते रसोइ जम्या पछी तेज क्षणे (तरतज), क्षण पछी, अथवा एक पहोरे, अथवा एक दिवसे, अथवा एक पखवाडीये, अथवा एक मासे, अथवा एक वरसे एम ज्यारे भूख लागवानी इच्छा होय तेज वखते भूख लागे. पण तेथी पहेलां अथवा पछी क्षुधा लागे एवुं बनतुं नहीं. तेवी ते रसवती बनावतो हतो. बीजुं नररत्न शय्यापाळ हतो. ते शय्याने एवी पाथरतो के तेमां सुनारनी इच्छा प्रमाणे, पोहोरे के ज्यारे जागवानी होय त्यारे ते ज क्षणे ते सुनार कोइनी प्रेरणा विना ज जाग्रत थाय. त्रीजुं नररत्न अंगमर्दक हतो. ते एक शेर तेलथी मांडीने पांच शेर, दश शेर सुधी तेल अंगमां मर्दन करीने समावतो हतो अने पछी जेटलुं तेल समाव्युं होय तेटलुं बधुं पाछुं काढी आपतो. परंतु समावतां के पाछुं काढतां तेने शरीरे जरा पण दुःख उत्पन्न थतुं नहीं. चोथुं नररत्न भांडागारिक (भंडारी) हतो. ते एवी रीते भंडार बनावतो के तेमां राखेलुं धन तेना विना बीजो कोइ जोइ के लइ शके नहीं. तेम ज ते भंडारमां कोइ खातर पाडी शके नहीं अने अग्नि लागी शके नहीं. आ चार नररत्नोथी चिंतित कार्य करतो विचारधवल राजा अत्यंत सुखमां दिवसो निर्गमन करतो हतो. एकदा तेनुं चित्त संसारथी वैराग्य पाम्युं. तेथी ते दीक्षा लेवा तैयार थयो. परंतु तेने पुत्र न होवाथी कोइक गोत्रीने राज्य सोंपीने दीक्षा लेवानो ते विचार

करतो हतो.

तेवा समयमां पाटलीपुरना राजा 'जितशत्रु' ए चार नररत्नो लेवानी इच्छाथी विचारधवळनी राजधानी उज्जयिनी नगरीने अकस्मात् घेरो घाल्यो. ते वखते काकतालीय न्याये विचारधवळ राजा शूळना महा रोगथी पीडा पामी समाधिवडे मृत्यु पाम्यो. 'महाशूळ विगेरे व्याधिओ घणुं करीने मृत्युरुप नाटकनी नांदी समान छे.' कह्युं छे के—

शूल विस अहि विसूइअ, पाणि अ सत्थग्गि संभमेहिं च ।
देहंतरसंकमणं, करेइ जीवो मुहुत्तेण ॥ १ ॥

भावार्थ—"शूलरोगथी, विष भक्षणथी, सर्प दंशथी, विसूचिकाथी, जळमां बुडवाथी, शस्त्रना वागवाथी अने अग्निना उपद्रवथी तेमज ससंभ्रमथी जीव एक मुहूर्त्त मात्रमां बीजा देहनी अंदर संक्रमण करे छे. अर्थात् मृत्यु पामीने बीजा देहने धारण करे छे."

विचारधवळ राजानुं मृत्यु थवाथी तेना मंत्रीओए नायक विनानुं सैन्य नकामुं जाणी जितशत्रु राजाने ज भेटनी जेम ते पुरी सोंपी दीधी. एटले जितशत्रु राजा ते राज्य पण भोगववा लाग्यो. पछी ते चारे नररत्नोनी तेणे परीक्षा करी. तो जेवा तेणे सांभळ्या हता तेवा ज ते नररत्नो जणाया. एकदा राजाए अंगमर्दक रत्ननी पासे अंगमर्दन करावीने पछी तेमांथी समग्र तेल पाछुं काढती वेळाए अंगमर्दकने आज्ञा करीने पोतानी एक जंघामां पांच कर्ष जेटलुं तेल बाकी रखाव्युं. पछी सभामां जइने कह्युं के "जो कोइ बीजो अंगमर्दक अभिमान धरावतो होय तो तेणे मारी जंघामांथी बाकी रहेलुं तेल काढी आपवुं." ते सांभळी बीजा अंगमर्दकोए घणा उपायो कर्या पण तेओ एक बिंदु पण काढी शक्या नहीं. तेथी तेओ झंखवाणा थइ चाल्या गया. बीजे दिवसे अंगमर्दक रत्नने राजाए ते जंघानुं तेल काढवा आज्ञा करी. पण अंगमर्दक रत्न बीजे दिवसे तेल काढी शक्यो नहीं. केमके ते ज दिवसे तेल काढवानी तेनी शक्ति हती. राजानी जंघामां रहेलुं तेल कूवानी छाया कुवामां ज रहे तेम त्यां ज स्थित थयुं तेथी तेनी जंघा कागडाना वर्ण जेवी श्याम वर्णवाळी थइ गइ. त्यारथी लोकमां तेनुं काकजंघ एवुं नाम प्रसिद्ध थयुं राजा जेवाना पण तेवा उपनामो लोको पाडे छे. केमके 'अ-

गतने मुखे गरणुं बांधी शकातुं नथी. ' वळी सारां उपनामो नठारां उपनामोनी जेवा प्रसिद्ध थता नथी. जुओ माषतुष, कुरगडूक, सावद्याचार्य, रावण विगेरे नामो जेवा प्रसिद्धि पाम्या छे तेवा सारा नामो प्रसिद्धि पाम्या नथी.

एकदा कोंकण देशमां निर्धन लोकोनो संहार (नाश) करवामां महाराक्षस जेवो मोटो दुष्काळ पड्यो. तेथी धनिक लोको पण निर्धन जेवा थया, अने राजा पण रंक जेवा थइ गया. कह्युं छे के—

मानं मुञ्चति गौरवं परिहरत्यायाति दीनात्मताम्
लज्जामुत्सृजति श्रयत्यदयतां नीचत्वमालंबते ।
भार्या बन्धुसुतासुतेष्वपकृतीर्नानाविधाश्चेष्टते
किं किं यन्न करोति निन्दितमपि प्राणी क्षुधापीडितः॥१॥

जावार्थ—" दुष्काळमां क्षुधाथी पीडा पामेला लोको माननो त्याग करे छे, गौरव (मोटाइ) मूकी दे छे, दीनता धारण करे छे, लज्जानो त्याग करे छे, निर्दयतानो आश्रय करे छे, नीचपणानुं अवलंबन करे छे, जार्या, बंधु, पुत्र अने अने पुत्रीने विषे नाना प्रकारना अपकार करवानी चेष्टा करे छे. अर्थात् तेओना दुःखनी दरकार करता नथी. तथा क्षुधापीडित मनुष्य बीजां पण कयां कयां निंदित कार्यो करतो नथी ? सर्व करे छे. "

आवा जयंकर दुष्काळना समयमां कोकाश पोताना कुटुंबनो निर्वाह नहीं थइ शकवाथी स्वदेश छोडी उज्जयिनी नगरीमां कुटुंब सहित आव्यो. त्यां कोइनी सहाय विना राजाने मळी शकाय तेम नहोतुं. तेथी विचार करीने छेवटे ते कोकाशे काष्ठना घणा पारेवा बनाव्या. तेने कारिगरीथी एवी खीलीओ मारी हती के ते पारेवा उडीने राजाना धान्यना कोठारमां जइ जीवता पारेवानी जेम चांचवडे चोखा दाळ विगेरे तमाम जातनुं अनाज पोताना काष्ठशरीरमां जेटलुं माय तेटलुं जरीने पाछा कोकाश पासे आवता. पछी ते अनाज तेमांथी काढीने ते वडे कोकाश पोताना कुटुंबनुं जरण पोषण करतो. एकदा धान्यना रक्षकोए साचा पारेवानी जेम दाणाथी जरेला ते काष्ठकपोतरुप चोरोने धान्यना कोठारमांथी नीकळता जोया. तेथी आश्चर्य पामीने ते आरक्षको ते पारेवानी पाछळ तपास करवा

गया. तो ते पारेवाओने कोकाशना घरमां पेसता जोया. तेथी तेओ ते कोकाशने पकडीने राजा पासे लइ गया. राजाए तेने पूछ्युं. त्यारे तेणे सत्य हकीकत कही आपी. कह्युं छे के—

सत्यं मित्रैः प्रियं स्त्रीभिरलीकं मधुरं द्विषा ।
अनुकूलं च सत्यं च, वक्तव्यं स्वामिना सह ॥ १ ॥

भावार्थ—" मित्रो पासे सत्य बोलवुं, स्त्रीनी पासे प्रिय बोलवुं, शत्रु पासे असत्य पण मधुर बोलवुं, अने राजा पासे अनुकूळ तेमज सत्य वचन बोलवुं. "

तेनी कलाकुशळता सांभळीने राजाए हर्षित थइ पूछ्युं के ' तुं बीजी पण कांइ कळा जाणे छे ? ' कोकाश बोल्यो—" हे स्वामी ! रथकारनी सर्व कळाओ हुं जाणुं छुं. आपणी इच्छा प्रमाणे गति करे तेवा मोर, गरुड, पोपट, हंस विगेरे पक्षिओ लाकडाना बनावुं छुं के जेनी उपर रथनी जेम बेसीने पृथ्वीनी जेम आकाशमां पण कीलिकादिकना प्रयोगथी जवाय अवाय. " ते सांभळीने कौतुकप्रिय राजाए कह्युं के " मारे माटे तेवो एक गरुड बनाव के जेनापर बेसीने आकाशमां रही आखा भूमंडळनी शोभा जोउं. " आ प्रमाणेनी राजानी आज्ञा थतां कोकाशे तेवो गरुड बनाव्यो. ते गरुडने जोवाथी ज राजाए प्रसन्न थइने तेना आखा कुटुंबनो सारी रीते निर्वाह थाय तेवो बंदोबस्त करी आप्यो. तेथी तेओ सुखेथी त्यां ज रह्या. कह्युं छे के—

लवणसमो नत्थि रसो, विन्नाणसमो अ बंधवो नत्थि ।
धम्मसमो नत्थि निहि, कोहसमो वेरिणो नत्थि ॥ १ ॥

भावार्थ—" लवण जेवो बीजो कोइ (उत्तम) रस नथी, विज्ञान (कळा-हुन्नर) जेवो कोइ बांधव नथी, धर्म समान बीजो कोइ निधि (भंडार) नथी, अने क्रोध समान बीजो कोइ वैरी नथी. "

एक दिवस कोकाशने साथे लइने राजा विष्णुनी जेम पोतानी राणी सहित गरुड पर आरुढ थइ आकाश मार्गे चाल्यो. घणा देशोने उल्लंघन करी भरुच पुरनी उपर आव्या, त्यारे राजाए कोकाशने ते नगरनुं नाम विगेरे पूछ्युं. त्यारे तेणे गुरुना मुखथी पूर्वे वृत्तांत सांभळ्युं हतुं तेथी ते बोल्यो के " हे स्वामी ! आ

नगरनुं नाम भरूच छे. आ पुरमां पहेलां श्री मुनिसुव्रत स्वामीए साठ योजन दूर रहेला प्रतिष्ठान पुरथी एक रात्रीमां ज आवीने यज्ञमां होमवाने तैयार करेलो अश्व, के जे पोतानो पूर्व भवनो मित्र हतो, तेने प्रतिबोध पमाड्यो हतो. अने तेने जैन धर्ममां दृढ कर्यो हतो. जेथी ते अश्व मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमां सामानिक देवता थयो हतो. तेणे तरतज अवधिज्ञान वडे पूर्वनी हकीकत जाणी एटले ते अहीं (भरूचमां) आव्यो. अने जिनेश्वरना समवसरणने स्थाने तेणे जिनप्रासाद बनावी तेमां प्रभुनुं बिंब पधरावी तेनी सन्मुख पोतानी अश्व मूर्ति उभी राखी अने अश्वावबोध नामनुं तीर्थ स्थापन कर्युं." आ प्रमाणे वातो करतां अने विविध देशोनुं अवलोकन करतां तेओ लंका नगरी उपर आव्या, त्यारें राजाए तेनुं नाम विगेरे कोकाशने पूछ्युं. कोकाश बोल्यो के "हे स्वामी! आ लंका नगरी छे. अहीं पहेलां रावण नामे राजा थइ गयो. तेनी समृद्धिनुं वर्णन लोकमां (लोकिक शास्त्रोमां) एवुं संभळाय छे के—ते रावणे नव ग्रहोने पोताना पलंगे बांध्या हता, यमराजाने बांधीने पातालमां नाख्यो हतो, वायुदेव तेने घेर वासीदुं वाळतो हतो, चारे मेघो तेने घेर गंध युक्त जळनी वृष्टि करता हता, यमराज पोताना पाडा उपर जळ भरीने लावतो हतो, साते मातृका देवीओ तेनी आरती उतारती हती, शेषनाग तेना मस्तक पर छत्र धारण करतो हतो, सरस्वती तेनी पासे वीणा वगाडती हती, रंभा नामनी अप्सरा नृत्य करती हती, तुंबरु (देव) गंधर्व गायन करतो हतो, नारद तेनुं दूतपणुं करतो हतो तेमज ताळ वगाडतो हतो, सूर्य तेनी रसोइ करतो हतो, चंद्रमा अमृत वृष्टि करतो हतो, मंगळ (ग्रह) भेंशो दोनारो हतो, बुध अरिसो देखाडतो हतो, गुरु (बृहस्पति) घडीयाळ वगाडतो हतो, शुक्र (शुक्राचार्य) तेनो मंत्री हतो, शनि तेना पृष्ठ भागनो रक्षक हतो, अठ्याशी हजार ऋषिओ पाणीना परबनी रक्षा करता हता, विष्णु तेनी पासे मसाल धारण करता हता अने ब्रह्मा तेना पुरोहित हता. आवी समृद्धिवाळो छतां पण ते रावण परस्त्रीनुं हरण करवाथी दुःख पाम्यो." आ रीते वातो करता ते पाछा वळी पोताना नगरमां आव्या.

अन्यदा पश्चिम दिशामां गया. त्यां सिद्धाचळ अने गिरनार तीर्थ देखी तेनुं वर्णन कर्युं. ए ज प्रमाणे उत्तर दिशा तरफ गया. त्यारे कोकाशे अष्टापद नामनो कैलास पर्वत, शाश्वत सिद्धायतनो तथा जिनेश्वरना कल्याणकना स्थानको दे-

खाव्या. हस्तिनापुर आवतां तेनुं वर्णन कर्युं के " हे स्वामी ! अहीं सनत्कुमार विगेरे पांच चक्रवर्तीओ तथा पांच पांडवो थया छे. श्री ऋषभदेव स्वामीनुं वरसी-तपनुं पारणुं पण अहीं थयुं छे. शांतिनाथ आदि त्रण जिनेश्वरना मोक्ष कल्याणक विना बाकीना चार चार कल्याणको अहीं थया छे. विष्णुकुमारे उत्तर वैक्रिय शरीर अहीं कर्युं हतुं, तथा कार्तिक श्रेष्ठीए एक हजार ने आठ पुरुषो सहित अहींज दीक्षा लीधी हती. विगेरे अनेक शुभ कार्यो अहीं थयेलां छे." आ प्रमाणे हमेशां नवां नवां तीर्थोनुं महात्म्य संभळावीने कोकाशे राजाने जैन धर्म पर रुचिवाळो कर्यो. पछी एकदा कोकाश राजाने ज्ञानी गुरु पासे लइ गयो. गुरुए धर्मोपदेश करतां कह्युं के " गृहस्थीओने माटे समकित सहित पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत मळी बार व्रतो कहेलां छे. बीजा धर्मना नियमो ग्रहण करवाथी तेना फळमां सामान्य वर्षानी जेम कदाच संदेह रहे छे पण आ जैन धर्मनुं फळ तो पुष्करावर्त मेघनी जेम मळे ज छे-निष्फळ जतुं ज नथी. " इत्यादि धर्मोपदेश सांभळीने राजाए समकित सहित बार व्रतो ग्रहण कर्यां. तेमां छठ्ठा दिग्विरति व्रतमां एक दिवसे दरेक दिशाए एक सो योजनथी वधारे दूर जवुं नहीं एवो नियम लीधो.

एकदा राजा यशोदेवी नामनी पोतानी पट्टराणी सहित काष्ठ गरुड पर बेसी फरवा जवा तैयार थतो हतो. ते हकीकत जाणीने विजया नामनी बीजी राणीए सपत्नी (शोक्य) परना द्वेषने लीधे पोताना खानगी माणस पासे ते गरुडनी एक मूळ खीली काढी नंखावी तेने स्थाने बीजी तेवीज नवी खीली स्थापन करावी. ते वातनी कोइने खबर पडी नहीं. कह्युं छे के—

> उन्मत्तप्रेमसंरंभादारभन्ते यदंगनाः ।
> तत्र प्रत्यूहमाधातुं, ब्रह्मापि खलु कातरः ॥ १ ॥

भावार्थ—" उन्मत्त प्रेमना वेगथी स्त्रीओ जे कार्यनो आरंभ करे छे ते कार्यमां विघ्न लाववाने ब्रह्मा पण समर्थ थतो नथी "

पछी राजा राणीसहित गरुड पर बेठो. अने कोकाशे गरुडने आकाशमां उडाड्यो. घणा दूर गया पछी राजाए दिग्विरति व्रत याद आववाथी कोकाशने पूछ्युं के ' हे मित्र ! आपणे केटले दूर आव्या ? ' कोकाश बोल्यो ' हे स्वामी !

आपणे बसो योजन दूर आव्या ढीए. ' ते सांजळी खेद युक्तथइ राजाए कह्युं के हे मित्र ! गरुमने जलदी पाछो वाळ, पाढो वाळ. केमके जाण्या पढी निषिद्ध आचरण करवाथी तो मूळ व्रतनो जंग थाय ढे अने अजाणतां व्रतनो जंग थवाथी अतिचार लागे ढे तो ते प्रतिक्रमणादिक करवावमे शुद्ध थइ शके ढे. अहो ! कौतुक जोवानुं जेने प्रिय ढे एवा मने धिक्कार ढे के जेथी में आत्महित पण जाएयुं नहीं. " आ प्रमाणे जाणे पोतानुं सर्वस्व गयुं होय तेम राजा शोक करवा लाग्यो. ते वखते कोकाशे गरुमने पाढो वाळवा माटे बीजी खीली पकमी के तरत ज तें खीली अन्य छे एम जाणीने ते चिंतातुर थइ बोल्यो " हे देव ! दुर्दैवना वशथी कोइ दुष्टे आ खीली बदली नांखी ढे, हवे ते खीली विना गरुम पाछुं वळी शकशे नहीं, माटे हवे तो थोडे दूर जइने नीचे उतरीये तो ठीक थाय केमके जो अहीं ज उतरशुं तो आ शत्रुनुं राज्य होवाथी अनर्थनो संजव थशे." ते सांजळी राजाए कह्युं के " हे मित्र ! अनंत जव सुधी दुःख आपनार व्रतजंग करवा रुप वाक्य तुं केम बोले ढे ? अनाभोगादिकथी (अजाणथी) कदि निषिद्धनुं सेवन थयुं होय तो व्रतनुं मालिन्य थवारुप अतिचार लागे छे, अने जाणीजोइने जो व्रतनुं उल्लंघन करीये तो व्रतनो जंग ज थाय ढे. अतिचारथी खंमित थयेलुं व्रत तो काचा घमानी जेम पाछुं सांधी शकाय छे पण अनाचारथी थयेल व्रतजंग तो पाका घमानी जेम सांधी शकातो नथी. माटे अहींथी एक पगलुं पण आगळ वधवानुं करीश नहीं. कह्युं छे के—

> जलधूलीधरित्र्यादिरेखावदितरे नृणाम् ॥
> परं पाषाणरेखेव, प्रतिज्ञा हि महात्मनाम् ॥ १ ॥

जावार्थ—" सामान्य जनोनी प्रतिज्ञा जळ, धूळ अने पृथ्वी विगेरेमां करेली रेखा जेवी ढे. (तरत जंग थाय तेवी होय छे.) पण महात्माओनी प्रतिज्ञा तो पथ्थरनी रेखा जेवी एटले तेनो जंग ज न थाय तेवी होय ढे. "

वळी हे कोकाश ! व्रतना उल्लंघननुं फळ तो कटु द्रव्यना आस्वादनी जेम हमणां ज प्राप्त थयुं छे, माटे ते ज खीलीथी जो वळे तो वाळ, नहीं तो अहीं ज उतरी पडवुं योग्य ढे. " ते सांजळी राजानी दृढतानी वारंवार प्रशंसा करतो कोकाश गरुमने पाढो वाळवा प्रयास करवा लाग्यो. तेवामां तो ते गरुमनी

वन्ने पांखो मळी गइ अने ते नीचे पड्यो. परंतु सारा जाग्यने योगे ते गरुम एक सरोवरमां पड्यो. तेथी कोइना अंगने कांइ पण इजा थइ नहीं. पछी राजा, राणी अने कोकाश गरुम सहित सरोवरने कांठे आव्या. तेनी नजीकमां ज कांचनपुर नगर जोइने कोकाशे राजाने शीखामण आपी के " हे स्वामी! आप सावधान थइने अहीं ज कोइ न जाणे तेम छुपा रहो. हुं गाममां कोइ रथकारने घेर जइ नवी खीली करीने आवुं छुं. " एम कहीने जय रहीत कोकाश राजाना मानीता रथकारने घेर गयो अने तेनी पासे खीली करवा माटे विशेष प्रकारना ओजार माग्या. एटले ते रथकार एक रथनुं पैडुं करतो हतो ते पमतुं मूकीने तेना मागेला ओजार लावी आपवा घरनी अंदर गयो. ते ओजार लइने आव्यो तेटलामां तो कोकाशे रथनुं पैडुं तेना करतां घणुं ज सुंदर दीव्यचक्र (पैडुं) बनाव्युं के जे पैडुं हाथमांथी नीचे मुकतां ज धक्को मार्या विना तेनी मेळे चाले. ते रथकारे आवी असाधारण कळा जोइ मनमां विचार्युं के " नक्की आ कोकाश ज छे, तेना विना वीजो आ पृथ्वी पर आवी दीव्य कळावाळो कोण छे ? कोइ ज नथी. " आ प्रमाणे निश्चय करी ते रथकार कांइक मीष करीने त्यांना राजा पासे गयो. अने तेने कह्युं के "हे राजा! पुण्य योगे मारे घेर अकस्मात कोकाश आवेलो छे." ते सांजळीने राजाए पोताना सेवकोने मोकली कोकाशने बोलावी पूछ्युं के ' तारो राजा क्यां छे ? ' त्यारे बुद्धिमान कोकाशे मरणना जयथी तेम ज कांइक मनमां विचार करीने पोताना राजानुं ठेकाणुं कही दीधुं. एटले कनकप्रज राजाए सैन्य सहित काकजंघ राजा पासे जइ तेने बांधी लइने विमंबना पूर्वक काष्ठना पांजरामां नाख्यो. कलिंग देशनो राजा तेनापरना वैरने लीधे तेने खावानुं पण आपतो नहीं. तेथी घणा माणसोने दया आववाथी राजाना जयने लीधे कागमाने बलिदान आपवाने मीषे तेमने पिंम (बलिदान) आपवा लाग्या. ए प्रमाणे काकपिंमथी प्राणवृत्तिने करतो अने कोइपण वखत जेणे स्वप्नमां पण दुःख जोयुं नथी एवो काकजंघ राजा आवा कष्टने समये पण धीरज राखी पोताना पूर्व कर्मने ज निंदतो सतो दिवसो निर्गमन करवा लाग्यो. ते पोताना आत्माने कहेतो के—

को इत्थ सया सुहिओ, कस्स व लच्छी थिराइं पिम्माइं ।
को मच्चुणा न गहिओ, को गिद्धो नेव विसएसु ॥ १ ॥

भावार्थ—" आ विश्वमां निरंतर सुखी कोण छे ? कोनी लक्ष्मी अने प्रेम स्थिर रह्यां छे? मृत्युए कोने ग्रहण कर्यो नथी ? अने विषयोमां कोण आसक्त थयो नथी? "

केटलेक दिवसे राजा कोकाशनो वध करवा तैयार थयो. त्यारे पौरजनोए राजाने कह्युं के "हे स्वामी ! आ अकार्य करवुं आपने योग्य नथी. एक खीलीने माटे थइने आखो प्रासाद कोण तोडी पाडे ? उत्तम पुरुषो तो गुणोने विषे पक्षपात राखीने तेमां स्वपरनो विभाग चिंतवता ज नथी. कह्युं छे के—

सर्वेषां बहुमानार्हः, कलावान् स्वपरोऽपि वा ।
विशिष्य च महेशस्य, महीयो महिमाप्तिकृत्[1] ॥ १ ॥

भावार्थ—" कळावान् पोतानो होय के पारको होय, तो पण ते सर्वेने बहुमान करवाने योग्य छे. जुओ चंद्र कळावान् होवाथी शंकरे तेने पर न गणतां पोताना भालस्थळमां स्थान आप्युं छे. "

आ प्रमाणे पौरजनोनुं कहेवुं सांभळीने राजाए कोकाशनो सत्कार करी तेने कह्युं के " हे कळाकुशळ ! मारे माटे एक कमळना आकारे गरुडनी जेवुं आकाशगामी घर बनाव. तेने सो पांखडीओ कर अने दरेक पांखडीओ उपर मारा पुत्रोने रहेवा योग्य मंदिरो बनाव. तेना मध्यमां कर्णिकाने स्थाने मारे रहेवा योग्य भुवन कर अने ते भुवननी सन्मुख प्रधानो विगेरे परिजनोनी बेठक बनाव. आवी रीतनुं देवविमाननी जेवुं भुवन बनाव. " ते सांभळीने जीवननी आशावाळा थयेला कोकाशे पोतानो अभिप्राय गुप्त राखीने ' आपनी आज्ञा प्रमाण छे' एम कही पोताना मनोरथने सिद्ध करवा माटे अने बहारथी राजानुं चित्त प्रसन्न करवा माटे तेणे कह्युं तेवुं कमळगृह बनाव्युं. पछी तेणे काकजंघ राजाने गुप्त रीते कह्युं के " हे स्वामी ! तमे चिंतानो त्याग करीने श्री जिनेश्वरना ज ध्यानमां तत्पर रहो. हुं थोडा दिवसमां शत्रुने विडंबनामां नांखुं छुं. " एम कही कोकाशे गुप्त रीते काकजंघना पुत्रने सैन्य सहित बोलाव्यो. तेना नजीक आव्याना खबर मळतां ते ज दिवसे शुभ मुहूर्त कहीने कनकप्रभ राजाने परिवार सहित ते कमळगृहमां बेसवा कह्युं. राजा पण ते जोइने गर्वथी सौधर्म इन्द्रना भुवनने पण ति-

[1] उत्तरार्ध अशुद्ध जणाय छे.

स्कार करतो आनंद पाम्यो. पछी सर्वने ते पद्मगृहमां दाखल करीने प्रफुल्ल मुखथी कोकाश बोल्यो के “ हे राजा ! तमे सर्वे पोतपोताना स्थानपर सावधान थइने बेसी जाओ. हुं खीलीना प्रयोगथी हमणां आ विमान आकाशमां उडाडी तमने कौतुक देखाडुं छुं. ” ते सांभळीने भूख्या माणसो भोजन माटे बेसी जाय, तेम तेओ कौतुक जोवाने माटे पोतपोताने स्थाने बेसी गया. पछी कोकाश कांइक मीषथी ते कमळगृहनी बहार नीकळी बोल्यो “ हे मूढ लोको ! जुओ ! मारा स्वामीनी विडंबना करवानुं फळ ! ” एम कहीने तेणे खीली फेरवी के तरत ज निद्राथी घूर्णायमान थयेला नेत्रनी पेठे ते आखुं भुवन कमळनी जेम बीडाइ गयुं अने तेमां रहेला सर्वे लोको भ्रमरानी जेम हाहारव करवा लाग्या. अहीं कमळ अने भ्रमरा उपर अन्योक्तिथी कहेलो श्लोक घटी शके छे. ते आ प्रमाणे छे—

> रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं
> भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः ।
> इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
> हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार ॥ १ ॥

भावार्थ—“ कोइ एक भमरो एक कमळमां पेसी तेनो रस चूसतो हतो, तेवामां रात पडी, अने कमळ बीडाइ गयुं. त्यारे अंदर रहेलो भमरो विचार करवा लाग्यो के ‘ रात्रि जती रहेशे अने सारो प्रातःकाळ थशे तथा सूर्यनो उदय थशे, त्यारे आ कमळनी शोभा खीलशे (कमळ उघडशे एटले हुं नीकळी जइश). ’ एम कोशमां रहेलो भमरो विचार करतो हतो तेटलामां तो खेदकारक वात बनी के कोइ हाथी त्यां पाणी पीवा आव्यो, तेणे ते कमळने तोडी नाख्युं अने खाइ गयो.” जेथी भमरानी धारणा मननी मनमां रही. तेम अहीं पण कौतुक जोवाने मिषे देवभुवन जेवा भुवनमां पेठेला राजा विगेरेनी कौतुक जोवानी इच्छा मननी मनमां रही अने उलटा कष्टमां आवी पड्या.

ए वखते कोकाशना करी राखेला संकेत प्रमाणे काकजंघ राजानो पुत्र सैन्य सहित त्यां आवी पहोंच्यो. तेणे कनकप्रभ राजाना सुभटोने जीतीने पोताना

मातापिताने पांजरामांथी वहार काढ्या. पछी कोकाश सहित सौ पोताने नगरे गया. काकजंघ राजाए पोतानी व्रतमां बांधेली अवधि उपरांतनो ते देश होवाथी पोताने तावे कर्यो नहीं.

काकजंघ राजाए राज्यनुं पालन करतां गरुडनी खीली वदलवानो प्रपंच पोतानी ज वीजी राणीनो हतो, एम जाण्या छतां गंभीरताने लीधे प्रगट कर्यो नहीं. कह्युं छे के—

अर्थनाशं मनस्तापं, गृहे दुश्चरितानि च ।
वञ्चनं चापमानं च, मतिमान्न प्रकाशयेत् ॥ १ ॥

न्नावार्थ—" धननो नाश, मननो संताप, घरमां चालतुं दुराचरण, वंचन (कोइनाथी ठगाइ गया हइए ते), अने अपमान (कोइए कर्युं होय ते) एटलां वानां बुद्धिमान पुरुषे कोइनी पासे प्रकाशित करवां नहीं. "

अहीं परिवार सहित कनकप्रन्न राजाने कमळगृहमांथी वहार काढवा माटे घणा उपायो करवामां आव्या. लोको एकठा थइने ते कमळगृहने न्नांगी नांखवा माटे कुहाडा विगेरेना प्रहार तेना पर करवा लाग्या. परंतु ते कमळगृह न उघडतां तेनी अंदर रहेला राजा विगेरे सर्वने तेना प्रहारनी पीडा थवा लागी. छेवटे तेमने कांइ पण उपाय सूज्यो नहीं त्यारे ते लोकोए अवंतीमां आवी कोकाशनी पासे पोताना राजाना जीवितनी न्निक्षा मांगी. त्यारे कोकाशे तेओने कह्युं के " तमारो राजा अमारा राजानी दासनी जेम सेवा करे, तो तेने मुक्त करुं. " ते सांन्नळी लोकोए नेम करवुं कबूल कर्युं. पछी कोकाशे, त्यां जइने ते कमळगृह उघाडयुं, एटले सर्वे वहार नीकळ्या. कनकप्रन्न राजाए कोकाशनो पितानी जेम सत्कार कर्यो. पछी कोकाश पोताना नगरमां आव्यो.

एकदा काकजंघ राजा अने कोकाश गुरु पासे गया. त्यां तेमणे धर्मदेशना सांन्नळीने पोतानो पूर्वन्नव पूछ्यो. त्यारे गुरु वोल्या के "हे राजा ! पूर्वे तुं गजपुरनो राजा हतो. अने आ कोकाश ते ज गाममां ब्राह्मण जातिनो जैन धर्मी सूत्रधार हतो. तेना वचनथी तें तेनी पासे अनेक जैन प्रासादो कराव्या. एकदा ते ज गाममां कोइ बीजा गामथी एक जैन सूत्रधार आव्यो. ते पण पोतानी कळामां कुशळतावाळो हतो. तेनी कळापर इर्ष्या आववाथी तारा प्रथमना सूत्रधारे तारी पासे

तेनी जाति नीच छे इत्यादि कहीने तेनी निंदा करी. कह्युं छे के—

कलावान् धनवान् विद्वान् क्रियावान् धनमानवान् ।
नृपस्तपस्वी दाता च स्वतुल्यं सहते न हि ॥ १ ॥

भावार्थ—" कळावान, धनवान, विद्वान, क्रियावान, धनना अभिमानवाळो, राजा, तपस्वी अने दातार—एओ पोतानी सरखाने सहन करता नथी—जोइ शकता नथी. "

पोताना सूत्रधारना कहेवाथी तें पण ते नवा आवेला सूत्रधारने छ घडी सुधी कारागृहमां राख्यो. पण पछी ते कार्य अघटित लागतां तेने मुक्त कर्यो. ते पापनी आलोचना कर्या विना तमो बन्ने मरण पामीने सौधर्म देवलोकमां देवता थया. त्यांथी चवीने आ भवे पण तमे राजा अने रथकार थया छो. कोकाशे जाति मद कर्यो हतो, तेथी आ भवे ते दासीपुत्र थयो. अने पेला परदेशी सूत्रधारने छ घडी केदखानामां राख्यो हतो तेथी आ भवे तमे बन्ने छ मास सुधी केदखानामां तेम ज प्रतिबंधमां रह्या. "

आ प्रमाणे ज्ञानीना वचनो सांभळीने काकजंघ राजाए पोताना पुत्रने राज्य पर स्थापन करी कोकाश सहित दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे केवळ ज्ञान पामी ते बन्ने मोक्षपदने पाम्या.

" जगतप्रसिद्ध काकजंघ राजा कोकाशनी बुद्धिथी धर्मनी दृढता मेळवी कारक समकित धारण करी अतींद्रिय ज्ञान पामीने मोक्षे गया. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे एकोनषष्टितमं
व्याख्यानम् ॥ ५७ ॥

व्याख्यान ६० मुं.



दीपक समकित विषे.

मिथ्यादृष्टिरनव्यो वा, स्वयं धर्मकथादिभिः ।
परेषां बोधयत्येवं, दीपकं दर्शनं नवेत् ॥ १ ॥

नावार्थ—" मिथ्यादृष्टि के अभव्य पोते धर्मकथादिके करीने बीजाने बोध पमाडे, ते मिथ्यादृष्टिने दीपक समकित कहेवाय छे. "

अहीं आ प्रमाणे भावना जाणवी—अनादि सांत नांगे प्रथम गुणस्थानके वर्ततो कोइ मिथ्यादृष्टि जीव कोइ पण पुण्यने योगे श्रावकना कुळमां उत्पन्न थाय. त्यां कुळाचारने लीधे गुरु विगेरे सामग्री पामीने मोटाइ पामवानी इच्छाए करीने अथवा मत्सर, अहंकार के हठ विगेरेए करीने जिनबिंब, जिनचैत्य विगेरे श्रावकने उचित एवां सारां कार्यो करे; परंतु ते देवादिकना सत्य स्वरुपने जाणतो नथी, तेम ज ग्रंथि भेद पण कर्यो नथी. तेथी सम्यक्नाव विना ज ते सुकृत्यो करे छे. आ प्रमाणे प्राणी अनंतीवार तेवां सुकृत्यो करे छे, परंतु तेथी विशेष प्रकारनो लान थतो नथी. आगममां कह्युं छे के—

पाएणणंत देउल पडिमाओ कराविआओ जीवेण ।
असमंजसवित्तीए न हु सुध्धो दंसणलवो वि ॥ १ ॥

नावार्थ—" जीवे प्राये करीने अनंतीवार चैत्यो तथा प्रतिमाओ करावी छे, पण ते असमंजस वृत्तिथी (मिथ्यादृष्टिथी) करावेली होवाथी शुद्ध दर्शन (समकित)नो एक लेश पण पाम्यो नथी. " (आ गाथा दर्शनरत्नाकरनी छे.)

वळी अनादि अनंत नांगे प्रथम गुणस्थानके वर्ततो कोइ अनव्य जीव घणीवार गुर्वादिक सामग्री पाम्या छतां पण कदापि कोइ पण नवमां सास्वादन स्वनावने (बीजा गुणस्थानकने) पण पामतो नथी. ते विषे त्रण भुवनना शरण भूत श्री तीर्थंकर महाराजे कह्युं छे के—

काले सुपत्तदाणं, सम्म विसुद्धं बोहिलाभं च ।
अंते समाहिमरणं, अभव्वजीवा न पावंति ॥ १ ॥
इंदत्तं चक्कीत्तं, पंचुत्तरसुरविमाणवासं च ।
लोगंतियदेवत्तं, अभव्वजीवा न पावंति ॥ २ ॥
उत्तरनरपंचुत्तर[१] तायतीसा य पुव्वधर इंदा ।
केवलिदिक्खिय सासणि जक्खणि जक्खा य नोऽभव्वा ॥३॥

भावार्थ—" समये सुपात्र दान, सम्यक् प्रकारे विशुध्ध बोधिलाभ तथा अंते (मृत्यु समये) समाधि मरण एटलां वानां अभव्य जीवो पामता नथी. इन्द्रपणुं, चक्रवर्तीपणुं, पांच अनुत्तर विमाननो वास, लोकांतिक देवपणुं, एटलां वानां पण अभव्य जीवो पामता नथी. शलाका पुरुषपणुं, नारदपणुं, त्रायत्रिंशत् देवपणुं, चौद पूर्वधारीपणुं, इन्द्रपणुं, केवळी पासे दीक्षा तथा शासनना जक्ष अथवा जक्षिणीपणुं एटलां वानां पण अभव्य जीवो पामता नथी. "

संगम य कालसूरि कविला अंगार पालया दो वि
नोजीव गुठ्ठमाहिल उदायिनिवमारओ अभव्वा ॥ १ ॥

भावार्थ—" एक रात्रीमां श्री महावीर स्वामीने एकवीश प्राणांत उपसर्ग करनार संगम देव, कालसौकरिक कसाइ, कपिला दासी, अंगारमर्दक आचार्य वे पालक (पांचसो मुनिने पीलनार पालक तथा कृष्णनो पुत्र पालक), नोजीवनो स्थापक गोष्ठामाहिल तथा उदायीराजानो मारनार विनयरत्न साधु—एटला आ चोवीशीमां अभव्य थया छे. "

चार सामायिक (समकित, श्रुत, देश विरति, सर्व विरति,)मां अभव्य प्राणी कदाच उत्कृष्ट पामे तो श्रुत सामायिक पामी शके छे. तेथी अधिक बीजा त्रण सामायिकनो लाभ तेने मळतो नथी.

उपर कहेला भव्य तथा अभव्य बन्ने प्रकारना जीवो मिथ्यात्वरूपे युक्त

१ उत्तर नर एटले [illegible] पुरुष शलाका पुरुष जणाय छे. तेनी संख्या ७० नी [illegible] समजातुं नथी ६३ शलाका पुरुष उपरांत ११ रुद्र गणे तो ७४ थाय ने नव नारद गणे तो ८३ थाय [illegible] मित्तरीमां एम गणेल छे.

छतां पण धर्मादिकनी प्ररूपणा करीने तथा उंचा प्रकारनी समिति गुप्ति धारण करीने बीजाओने प्रतिबोध पमाडे छे, तथा शासनने दीपावे छे. तेथी कारणने विषे कार्यनो उपचार करवाथी तेमने दीपक सम्यक्ति कहेवाय छे. आ प्रसंग उपर अंगारमर्दकाचार्यनो संबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

अंगारमर्दक सूरिनो प्रबंध.

क्षितिप्रतिष्ठित पुरने विषे श्री विजयसेन सूरिना शिष्ये एकदा रात्री मध्ये स्वप्नमां पांचसो हाथीओथी युक्त एक सूकर जोयो. ते वात तेणे प्रातःकाळे गुरुने कही. ते सांजळी गुरु बोल्या के ' आजे कोइ अजव्य गुरु (आचार्य) पांचसो शिष्यो सहित अहीं आवशे. ' पछी ते ज दिवसे रूड नामना आचार्य पांचसो शिष्यो (साधुओ) सहित ते ज गाममां आव्या. ते दिवसे विजयसेन सूरिए तेमनी अशनादिकथी जक्ति करी. पछी बीजे दिवसे पोताना शिष्योने ते रुडाचार्यनी अजव्यतानी खात्री करावबा माटे लघुनीत करवाने स्थाने गुप्त रीते कोयला पथराव्या. रात्रे ते रुद्राचार्यना शिष्यो मात्रुं परठववा गया, ते वखते पगतळे कोयला दबावाथी चमचम शब्द थवा लाग्यो. ते शब्द सांजळीने ते साधुओ कोयलाने नहीं जाणवाथी जीवोनुं मर्दन थाय छे एम जाणीने वारंवार पश्चात्ताप करी पोताना आत्मानी निंदा करवा लाग्या अने ते पापनुं प्रतिक्रमण करवा लाग्या. पछी रुद्राचार्य पोते लघुनीत करवा उठ्या. तेणे पण चमचम शब्द सांजळ्यो. तेथी तेना पर वारंवार जोरथी पग मूकी शब्द करावता बोल्या के ' अहो ! आ अरिहंतना जीवो पोकार करे छे. 'आ वाक्य विजयसेन सूरिए पोताना शिष्योने प्रत्यक्ष संजळाव्युं. पछी प्रातःकाळे सूरिए रुडाचार्यना शिष्योने कह्युं के " आ तमारो गुरु अजव्य होवाथी सेववा योग्य नथी. केमके—

सप्पो इक्कं मरणं, कुगुरु दिंति अनंताइं मरणाइं ।
तो वर सप्पं गहियं, मा कुगुरुसेवणा जद्दा ॥ १ ॥

जावार्थ—" सर्प (करड्यो होय तो) एक ज वखत मरण आपे छे पण कुगुरु तो अनंतभव सुधी अनंता मरण आपे छे. तेथी सर्पने ग्रहण करवो श्रेष्ठ छे; पण कुगुरुनी सेवा करवी श्रेष्ठ नथी. "

असंजयं न वंदेज्जा, मायरं पियरं गुरुं ।
सेवणाविय सिद्वाणं, रायाणं देवया पि वा ॥ २ ॥

भावार्थ—" संयम विनाना (असंयति–विरति रहित) माता, पिता, गुरुने वंदना करवी नहीं अने तेवा असंयति शेठ, राजा, अथवा देवतानी सेवा पण करवी नहीं. "

भट्ठायारो सूरि, भट्ठायाराणुविक्खओ सूरि ।
उम्मग्गट्ठिओ सूरि, तिन्नि वि मग्गा पणासंति ॥ ३ ॥

भावार्थ—" भ्रष्ट आचारवाळो सूरि, भ्रष्ट आचारवाळाने नहीं अटकावनार सूरि अने उन्मार्गनी प्ररूपणा करनार सूरि—ए त्रणे धर्म मार्गनो नाश करनारा छे. "

वहारथी आचार पाळनाराने माटे श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां कह्युं छे के " जेओ साधुना गुणोथी मुक्त एवा साधु क्रियाओ करे छे तेओ छ जीवनिकाय पर दयावाळा होता नथी, अश्वनी जेवा चपळ होय छे, हाथीओनी जेवा निरंकुश (मदोन्मत्त) होय छे, शरीरने घसारी मठारी मसळी समारी राखे छे अने धोयेलां धुपेलां उज्वल वस्त्रो पहेरे छे अने जिनेश्वरनी आज्ञानुं उल्लंघन करी स्वच्छंदपणे विचरे छे. तेओ बन्ने वखत जे आवश्यक क्रिया करे छे ते लोकोत्तर द्रव्य आवश्यक कहेवाय छे. इत्यादि." वळी श्री प्रज्ञापना सूत्रनी वृत्तिमां पण कह्युं छे के—

परमत्थ संथवो वा सुदिट्ठ परमत्थसेवणा वा वि ।
वावन्न कुदंसण वज्जणाय सम्मत्तसद्दहणा ॥ १ ॥

भावार्थ—" परमार्थ संस्तव, सुदृष्टि परमार्थ सेवना. व्यापन्न दर्शनीनुं वर्जन तथा कुदर्शनीनुं वर्जन—आ चार समकितनी सद्दहणा छे. (आ चारे सद्दहणानुं वर्णन दृष्टांत साथे पहेलां स्थंभमां आवी गयेल छे.)

तेथी करीने मिथ्यादृष्टिनी सेवना करवाथी आत्मगुणनी हानी थाय छे–पतन थाय छे. कह्युं छे के—

जं तवसंयमहीणं नियमविहुणं च बंभपरिहीणं ।
तं सेलसमं अयतं बुड्डंतं बोलए अन्नं ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे तप संयमथी रहित छे, नियम विनाना छे, अने ब्रह्मचर्यथी रहित छे तेवा अयत—अविरति जीवो पथ्थरना वहाण समान होवाथी पोते बुडे छे अने बीजाने पण बुडाडे छे. "

अहीं आवश्यक निर्युक्तिनी बृहद्वृत्तिमां कहेलुं एक दृष्टांत बहु उपयोगी छे. ते ए छे के—कोइ एक साधुओना समुदायमां एक साधु श्रमणगुण रहित हतो. ते हमेशां गोचरी विगेरेनी आलोचनाने वखते वारंवार पोताना आत्मानी निंदा करतो सतो प्रतिक्रमण करतो हतो. तेने जोइने घणा मुनिओ तेनी प्रशंसा करता हता. एकदा कोइ सम्यक् ज्ञानवाळा संवेगी साधु त्यां आव्या. तेमणे तेनो प्रपंच जाणीने बीजा साधुओने कह्युं के " एक समृध्धिवाळो गृहस्थ दर वर्ष पोताना घरमां सर्व रत्नादिक भरी पुण्यने माटे ते घर बाळी देतो हतो. ते जोइने सर्व लोको तेनी प्रशंसा करता हता के ' अहो ! आ गृहस्थनुं रत्नादिक पर केवुं निर्लोभीपणुं छे ? ' अन्यदा तेणे रत्नादिकथी भरीने पोतानुं घर अग्निथी सळगाव्युं. ते वखते प्रचंड वायु वावाथी अग्निनी ज्वाळा एटली बधी वृध्धि पामी के आखुं नगर बळीने भस्म थइ गयुं. तेथी राजाए ते गृहस्थने दरिद्री करी (सर्वस्व लइ लइने) नगर बहार काढी मूक्यो. बीजा कोइ नगरमां कोइ वणिक ते प्रमाणेज पोतानुं घर बाळवा तैयार थयो. तेनी खबर थतां तेनुं परिणाम अशुभ जाणीने राजाए प्रथमथी ज तेने गाम बहार काढी मूक्यो. तेथी आखा नगरना लोको सुखी थया. हे मुनिओ ! ते ज प्रमाणे आ साधु पण बहारथी बधो आडंबर करे छे, ते तमोने पण अनर्थकारक छे, माटे तेनी श्लाघा के सेवा करवी बीलकुल योग्य नथी. तेनो परिचय पण हानीकारक छे. " ते सांभळीने बधा साधुओ ते बाह्याचारीनो त्याग करीने पोतपोताना धर्मध्यानमां तत्पर थया.

माटे हे साधुओ ! तमे पण आ अभव्य गुरुनो त्याग करी शुध्ध चारित्रनुं पालन करो. " ते सांभळीने रुद्राचार्यना शिष्यो विस्मय पामी विचार करवा लाग्या के " अहो ! आ रुद्राचार्यनो कोइ अलौकिक क्रियादंभ छे के जेथी आटला वखत सुधी आपणा जाणवामां पण ते आव्यो नहीं. अने तेथी ज तेनी

आपणे आखी मुदत सुधी सेवा करी." आ प्रमाणे विचारीने तेओए ते अन्भव्य गुरुनो त्याग कर्यो. अने संयमनुं प्रतिपालन करीने स्वर्गे गया.

त्यांथी चवीने ते पांचसो दिलीप राजाना पुत्रो थया. ते पुत्रो युवावस्था पाम्या, त्यारे हस्तिनापुरमां कोइ राजपुत्रीनो स्वयंवर थतो हतो त्यां गया. ते वखते रुद्राचार्य (अंगार मर्दक)नो जीव घणा भवोने विषे भ्रमण करीने उंट थयो हतो. ते उंट पर घणो भार भरीने तेनो स्वामी ते ज गाम पासेथी नीकळ्यो. ते उंटने भारने लीधे बराडा मारतो जोइने ते पांचसो कुमारो विचार करवा लाग्या के " अहो ! आ उंट पूर्व कर्मने योगे आ भवमां अनाथ अने अशरण थइने महा दुःख पामे छे. श्री देवेन्द्र आचार्ये कर्मग्रंथमां कह्युं छे के—" तिरियाउ गूढहियओ सढो ससल्लो. इत्यादि—गूढ हृदयवाळो, शल्यवाळो अने शठतावाळो प्राणी तिर्यंचनुं आयुष्य बांधे छे. विगेरे " ए रीते चिंतवता ते पांचसो कुमारोने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी तेओए पोतानो पूर्वभव दीठो एटले तेने पूर्व भवनो उपकारी गुरु जाणीने तेना स्वामी पासेथी धन आपी छोडाव्यो अने दुःख रहित कर्यो. पछी ते सर्वे कुमारो आवुं भवनाटक जोइ चारित्र ग्रहण करी केवळज्ञान पामीने मोक्षे गया.

" अंगार मर्दक आचार्य बहारथी विरागता धरावतो हतो. तेना पांचसो शिष्योए मोक्षनुं साधन कर्युं पण ते तो भवमां भटक्यो. माटे दीपक समकितवाळानी सेवा करवी नहीं. अने शुभमतिवाळा जीवोए शुद्ध श्रद्धा धारण करवी. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे षष्टितमं व्याख्यानम् ॥ ६० ॥

व्याख्यान ६१ मुं.

समकितनुं वस्तु स्वरूप.

मिथ्यात्वपुद्गलाभावात् प्रदेशाः सन्ति चात्मनः ।
ते सर्वे स्वस्थतां नीते सम्यक्त्वं वस्तु तद्भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" आत्मप्रदेशसाथे रहेला मिथ्यात्वमोहनीना पुद्गलोनो अभाव (क्षय) थवाथी आत्माना सर्वे प्रदेशो जे स्वस्थताने पामे छे ते वस्तुताए समकित कहेवाय छे. "

अहीं श्लोकमां मिथ्यात्वना पुद्गलो कह्या तेना उपलक्षणथी अनंतानुबंधि कषायना जे पुद्गलो छे ते पण ग्रहण करवा. तेनो क्षयोपशमादिके करीने अभाव थवाथी मलीनताने अभावे उज्वळ थयेला वस्त्रनी जेम जीवना प्रदेशोने विषे निर्मळता रुप जे श्रद्धागुण प्रगट थाय छे ते ज वस्तुताए समकित कहेवाय छे. ए आ श्लोकनो भावार्थ छे.

अहीं शिष्य शंका करे छे के—जीव मिथ्यात्वना पुद्गलोना ज त्रण पुंज करे छे. शुद्ध, अर्ध शुद्ध तथा अशुद्ध. ते आ रीते—कोद्रवा फोतरां सहित होय छे, तेने छाण विगेरे लगाडी फोतरा काढी शुद्ध कोद्रवा करवामां आवे छे. तेमां जेना तदन फोतरां नीकळी जाय ते शुध्ध, जेना अर्धा फोतरां नीकळी जाय—अर्धा रहे ते अर्ध शुद्ध, अने जेना एमना एम फोतरां रहे ते अशुद्ध. ए रीते त्रण पुंज करे छे. ते विषे कह्युं छे के—

दंसणमोहं तिविहं सम्मं मीसं तहेव मिच्छत्तं ।
सुध्धमध्धविसुध्धमविसुध्धं तं हवइ कमसो ॥ १ ॥

भावार्थ—" दर्शन मोहनीयना त्रण प्रकार छे. सम्यक्त्व, मिश्र अने मिथ्यात्व. तेमां पहेलो शुद्ध, बीजो अर्धविशुद्ध अने त्रीजो अविशुद्ध एम अनुक्रमे त्रण पुंज होय छे. "

तो एक सरखा ज मिथ्यात्वना पुद्गलो साधक बाधक बंने प्रकारना गुण-ने विषे शी रीते प्रवर्ती शके ? जो बे वस्तु भिन्न भिन्न होय, तो तेम घटी शके. जो एम कहो के ते मिथ्यात्वना पुगद्लोमांथी मदनपणुं (मेलापणुं) जतुं रह्युं ते-थी ते शुध्ध सम्यक्त्व मोहनीय थाय छे तो पछी तेमां मदन (मेला) पणुं शुं ? अर्थात मेलापणुं क्यां रह्युं के जेथी ते मिथ्यात्वना पुद्गलो कहेवाय ? "

आ शंकानो गुरु जवाब आपे छे के—चार प्रकारना (चोठाणीया) म-हारसने स्थाने रहेला (चोठाणीया रसवाळा) मिथ्यात्वना पुद्गलो मिथ्यात्वरुप बाधकपणाने तथा विभावपणाने पामी शके छे. परंतु कोद्राना फोतराना त्यागनी जेम ते पुद्गलोमांथी महारसना अभावे करीने अनिवृत्ति करण करवाथी एक ठा-णीयो रस कर्यो. तेथी यथार्थ वस्तु परिणामनो व्याघात न करे एवुं समकित मो-हनीय थाय छे. तेमां कांइक शंकादिक उत्पन्न थाय छे तेथी तेने मोहनीय कह्युं छे. ते समकित मोहनीयनो सर्वथा क्षय थवाथी चरमदर्शन (क्षायिक समकित) थाय छे. तेमां कदापि शंकादिक अतिचार लागता ज नथी. आ रीते पुद्गलो भिन्न भिन्न नहीं छतां पण तेना त्रण प्रकार थाय छे. तेमां कांइ शंका करवा जेवुं नथी. "

हवे समकित दृष्टिनुं ज्ञान तेज ज्ञान कहेवाय छे ते विषे कह्युं छे के—

सदाद्यनन्त धर्माढ्यमेकैकं वस्तु वर्तते ।
तत्तथ्यं मन्यते सर्व श्रध्धावान् ज्ञानचक्षुभिः ॥ १ ॥

भावार्थ—" दरेक वस्तु सत्, असत्, विगेरे अनंत धर्म युक्त छे ते सर्व ज्ञानचक्षुए करीने श्रध्धावान् सत्य माने छे. "

एकान्तेनैव भापन्ते वस्तुधर्मान् यथा तथा ।
तस्मादज्ञानता ज्ञेया मिथ्यात्विनां निसर्गजा ॥ २ ॥

भावार्थ—" मिथ्यात्वीओ सर्व वस्तुना पृथक् पृथक् धर्मोने जेम तेम (को-इक युक्तिथी) एकांतपणे ज कहे छे. माटे ते मिथ्यात्वीओनी स्वाभाविक ज अ-ज्ञानता छे एम जाणवुं."

दरेक वस्तु सत् असत् विगेरे अनंत धर्म युक्त छे. जेम एक घट रूपी वस्तु

छे ते पोताना रक्तपणादिक गुणे करीने सत् छे अने बीजा पटादिकना धर्मे करीने असत् छे आदि शब्दथी अहीं पुद्गलोनी साथे एकपणुं (अभिन्नपणुं) छे, व्यवहारथी मानेलुं छे के घट छे, निश्चयथी तो पट, लकुट (लाकडी), शकट, सुवर्ण विगेरे धर्म युक्त छे. तेथी आ घट चूर्ण रुप थयो छतो कदाचित् ते ते भावने पण पामे छे. तेवी रीते जीव पण गायपणुं, हाथीपणुं, स्त्रीपणुं, पुरुषपणुं विगेरे पामे छे ते व्यवहारथी जाणवुं; निश्चयथी तो पूर्वे कहेला सर्व धर्मथी युक्त अने अच्छेद्य, अभेद्य विगेरे गुण युक्त छे. आ प्रमाणे सर्वत्र समकितीने ज्ञान होय छे पण बीजाने तेवुं ज्ञान होतुं नथी, अज्ञान होय छे. महाभाष्यमां कह्युं छे के—

सदसदविसेसणाओ भवहेउ जहच्छिओवलंभाओ ।
नाणफलाभावाओ मिच्छदिट्ठिस्स अन्नाणं ॥ १ ॥

भावार्थ—" मिथ्यात्वीनुं ज्ञान सत् असत् विगेरे विशेष धर्मथी युक्त एवा वस्तुना परिज्ञान रहित होय छे, भवना हेतुभूत छे एटले के ते सत्तावन बंधना हेतुने यथार्थपणे जाणतो नथी, यदृच्छापणुं—स्वेच्छाचारीपणुं छे अने ज्ञाननुं फळ जे विरति तेनो अभाव छे. तेथी मिथ्यादृष्टिनुं ज्ञान ते अज्ञान ज जाणवुं. "

हवे समकित सते ज बुद्धिना आठ गुण पण होय छे ते विषे कहे छे.

अष्टौ बुद्धिगुणाः सन्ति शुश्रूषाश्रवणादयः ।
सम्यक्त्ववान् तदाढ्यः स्यादित्याहितं चिदात्मभिः ॥१॥

भावार्थ—" शुश्रूषा, श्रवण विगेरे बुद्धिना आठ गुणो छे. ते गुणो समकितवानने होय छे. एम ज्ञानी पुरुषोए कह्युं छे. " ते आ प्रमाणे—

सुश्रूषा एटले सांभळवानी इच्छा. ते विना श्रवणादिक गुणो प्राप्त थता नथी. बीजो गुण श्रवण एटले शास्त्रादिक सांभळवुं ते. श्रवण करवाथी ज मोटा गुण प्राप्त थाय छे. ते विषे षोडशकमां कह्युं छे के—

क्षारांभस्त्यागतो यद्वन्मधुरोदकयोगतः ।
बीजं प्ररोहमादत्ते तद्वत्तत्त्वश्रुतेर्नरः ॥ १ ॥

भावार्थ—" खारा जळनो त्याग थवाथी अने मीष्ट जळनो योग थवाथी

बीज अंकुराने पामे छे. ते ज प्रमाणे तत्त्वनुं श्रवण करवाथी माणस बोधीबीज-ना अंकुरने पामे छे. "

क्षारांभस्तुल्य इह च, भवयोगोऽखिलो मतः ।
मधुरोदकयोगेन, समा तत्त्वश्रुति स्मृता ॥ १ ॥

भावार्थ—" अहीं खारा जळ जेवो समग्र भवयोग जाणवो अने मीष्ट जळना योग समान तत्त्वज्ञाननुं श्रवण समजवुं. "

त्रीजो गुण ग्रहण एटले श्रवण करेला शास्त्रनुं ग्रहण करवुं. चोथो गुण धारण एटले ग्रहण करेलाने भूलवुं नहीं. पांचमो गुण ऊहा एटले ते संबंधी विचार करवो ते सामान्य ज्ञान. छट्ठो गुण अपोह एटले अन्वयव्यतिरेकादिके विशेष विचार करवो ते विशेष ज्ञान. सातमो गुण अर्थविज्ञान एटले ऊहा अने अपोहना योगथी मोह, संदेह, विपर्यास (उलटी मति) विगेरेनो नाश थवावडे जे ज्ञान प्रगट थाय ते. अने आठमो गुण तत्त्वज्ञान एटले ' आ आम ज छे ' एवो निश्चय थवो ते. आ आठ बुद्धिना गुणो छे, ते आठे गुणोथी युक्त दर्शन (समकित) होय छे. केमके तेथी (समकितथी) सर्व पदार्थना परमार्थनी पर्यालोचना थइ शके छे. ते विषे सुबुद्धि मंत्रीनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे छे—

सुबुद्धि मंत्रीनुं दृष्टान्त.

चंपा नगरीमां जितशत्रु नामे राजा हतो. तेने सुबुद्धि नामे मंत्री हतो. ते जैनधर्मी हतो. एकदा राजा मनोहर षड्रसमय स्वादिष्ट रसवती करावीने घणा सामंत, मंत्री विगेरे सहित भोजन करवा बेठो. जमतां जमतां स्वादलुब्ध राजा " अहो ! आ रसवती केवी स्वादिष्ट छे? अहो ! आनी सुगंध केवी सरस छे ?" इत्यादि वाक्योथी वारंवार तेनी प्रशंसा करवा लाग्यो. ते वखते सुबुद्धि मंत्री विना बीजा सर्व सामंतो विगेरे पण रसोइना स्वाद विगेरेनी प्रशंसा करवा लाग्या. सुबुद्धि तो सारी के नबळी कांइ पण बोल्यो नहि. तेथी राजाए तेने पूछ्युं के " हे मंत्री ! तमे केम आ रसोइनी कांइ पण प्रशंसा करता नथी ? शुं तमने आ रसोइ सारी नथी लागती ?" मंत्रीए कह्युं के " हे स्वामी ! मने शुभ के अशुभ वस्तु जोइने कांइपण विस्मय थतो नथी. केमके पुद्गलो स्वभावथी ज घडीमां सुगंधी, घडीमां दुर्गंधी, घडीमां सुरस, घडीमां नीरस थइ जाय छे. तेथी तेनी

प्रशंसा करवी के निंदा करवी युक्त नथी. " राजाने तेना वचन पर विश्वास आव्यो नहीं. एक दिवस राजा सर्व परिवार सहित उद्यानमां जतो हतो. त्यां मार्गमां एक नगर फरती खाइ हती ते आवी. तेमां जळ थोडुं हतुं. तेथी ते जळमां कीडा पड्या हता, दुर्गंध मारतुं हतुं अने सूर्यना तापथी उकळी गयेलुं हतुं. तेनी दुर्गंधथी राजाए तथा बीजाओए नासिकाने वस्त्रथी ढांकी दइने ते पाणीनी दुर्गंधता विषे निंदा करी के ' अहो! आ जळ महा दुर्गंधी छे. ' ते सांभळी मंत्रीए कह्युं " हे राजा ! आ जळनी निंदा करवी युक्त नथी. केमके आ ज जळ काळे करीने प्रयोग वडे दुर्गंधी छतां पण सुगंधी थइ जाय छे." ते सांभळी राजाए तेना वाक्यने स्वीकार्युं नहीं. पछी मंत्रीए गुप्त रीते पोताना खानगी माणस पासे ते खाइनुं जळ मंगावी वस्त्रथी सारी रीते गळीने एक कोरा माटीना घडामां नांख्युं. पछी तेमां निर्मळी (कतक) फळनुं चूर्ण नांखी ते जळने निर्मळ कर्युं. पाछुं फरीथी गळीने बीजा कोरा घडामां नांख्युं. ए प्रमाणे एकवीश दिवस सुधी ते जळने गळी गळीने जूदा जूदा घडामां नांख्युं. एटले ते जळ तदन स्वच्छ, स्वादिष्ट अने शीतळ तथा सर्व जळ करतां अधिक सुंदर थइ गयुं. पछी तेमां सुगंधी पदार्थ नांखी तेने सुवासित कर्युं. पछी ते जळ मंत्रीए राजाना जळरक्षकने आपीने कह्युं के ' आ जळ वखत आव्ये राजाने पीवा आपवुं. ' पछी राजाए ज्यारे पीवा माटे जळ माग्युं त्यारे तेणे ते जळ आप्युं. ते जळनुं पान करी तेमां अलौकिक गुणो जोइ राजाए पूछ्युं के ' आवुं अद्भुत स्वादिष्ट जळ क्यांथी ? ' जळरक्षके जवाब आप्यो के ' हे स्वामी ! आ जळ मंत्रीए मने आप्युं छे. ' राजाए मंत्रीने पूछ्युं, त्यारे मंत्रीए कह्युं के ' हे स्वामी ! जो मने अभय आपो तो आ जळनी हकीकत कहुं. ' ते सांभळी राजाए तेने अभय आप्युं. त्यारे मंत्रीए कह्युं के ' हे राजा ! पेली खाइनुं आ पाणी छे. ' ते सांभळी राजाए ते वात मानी नहीं. त्यारे मंत्रीए राजानी समक्ष ते खाइनुं जळ मंगावी पूर्वे कहेली विधि प्रमाणे ते जळने स्वादिष्ट बनाव्युं. ते जोइ राजा विस्मय पामी बोल्यो के ' हे मंत्री ! आवी रीति तें क्यांथी जाणी ? ' मंत्रीए कह्युं " हे देव ! जिनागम सांभळवाथी अने सद्दहवाथी आ सर्व पुद्गळना परिणामनी खबर पडे छे. हे राजा ! पुद्गलोनी अचिंत्य शक्ति छे. अनेक प्रकारे परिणाम पामवानो तेनो स्वभाव छे. पण ते बधा स्वभाव तीरो भावे वर्ते छे. ते सर्व स्वभावोने ज्ञानीओ ज्ञानथी जाणी शके छे. छद्मस्थ जीवो ज्ञानावरणीयादिक

कर्मो वडे आवरण पामेला होवाथी सम्यक् प्रकारे जाणी शकता नथी. तो पण तेओ शास्त्रना ते वचनोने अवश्य सद्दहे छे.

वळी हे राजा ! आ जगतमां वस्तुनी अनुपलब्धि (अप्राप्ति) बे प्रकारे होय छे. एक तो सत् (छती) वस्तुनी अप्राप्ति अने बीजी असत् (अछती) वस्तुनी अप्राप्ति. तेमां ससलानां शींगडां, आकाशनुं पुष्प विगेरे असत् वस्तुनी अप्राप्ति कहेवाय छे. एटले ते वस्तुओ दुनियामां छे ज नहीं. बीजी सत् (छती) वस्तुनी अप्राप्ति ते आठ प्रकारनी छे. तेमां अति दूर रहेली वस्तुनी प्राप्ति न थाय ते पहेलो प्रकार छे. तेना पण देश, काळ अने स्वभाव ए त्रण भेद छे. जेम कोइ माणस बीजे गाम गयो, तेथी ते देखातो नथी. तेथी ते माणस शुं नथी ? छे, पण देश थकी अति दूर रहेलो होवाथी तेनी प्राप्ति थती नथी. ए प्रमाणे समुद्रने पेलेपार मेरु विगेरे छे, ते सत् छतां पण दूर होवाथी देखाता नथी. तथा काळथी दूर होय ते पण देखाता नथी. जेम मृत्यु पामेला पोताना पूर्वजो तथा हवे पछी थवाना पद्मनाभ जिनेश्वर विगेरे काळथी दूर होवाने लीधे देखाता नथी. त्रीजो प्रकार स्वभावथी दूर होय ते पण देखाता नथी. जेम आकाश, जीव, भूत, पिशाच विगेरे देखाता नथी. ते पदार्थो छे पण चर्मचक्षु गोचर थइ शकता नथी. आ त्रण भेद पहेला विप्रकर्ष (दूर) नामना प्रकारना छे. बीजो प्रकार अति समीप जे वस्तु होय, ते पण देखाती नथी. जेम नेत्रमां रहेलुं काजळ देखातुं नथी, ते शुं नथी ? छे ज. इन्द्रियनो घात थवाथी वस्तु देखाय नहीं ते त्रीजो प्रकार छे. जेम अंध, बधिर विगेरे माणस रूप, शब्द विगेरेने जोइ सांभळी शकतो नथी. तो तेथी शुं रूप, शब्द विगेरे नथी ? छे ज. तथा मनना असावधानपणाथी वस्तु देखाय नहीं, ते चोथो प्रकार छे. जेम अस्थिर चित्तवाळो मनुष्य पोतानी पासे थइने जता हाथीने पण जोइ शकतो नथी. तो शुं हाथी त्यांथी गयो नथी ? गयो छे. तथा अति सूक्ष्मपणाथी वस्तु देखाय नहीं ते पांचमो प्रकार छे. जेम के जाळीयानी अंदर पडता सूर्यना किरणोमां रहेली त्रसरेणु (रजकणो) तथा परमाणु द्व्यणुक विगेरे तेमज सूक्ष्म निगोदना जीवो विगेरे देखाता नथी. तेथी शुं ते नथी ? छे ज. तथा कोइ वस्तुना आवरणथी कोइ वस्तु देखाय नहीं ते छठो प्रकार छे. जेम भींतने अंतरे रहेली वस्तु देखाती नथी. तो ते वस्तु शुं नथी ? छे. चंद्र मंडळनो पाछळनो भाग देखातो नथी. केमके ते आगळना भागथी

व्यवहित थयेलो छे. तेमज शास्त्रना सूक्ष्म अर्थ पण मतिनी मंदताने लीधे जाणी शकातो नथी. तथा एक वस्तु वडे बीजी वस्तुनो पराभव थवाथी ते (बीजी) वस्तु देखी शकाती नथी ते सातमो प्रकार छे. जेम सूर्यादिकना तेजथी पराभव पामेला ग्रह, नक्षत्रो आकाशमां प्रकट छतां पण देखाता नथी. तेमज अंधकारथी पराभव पामेलो घडो देखातो नथी. तो शुं ते वस्तु नथी ? छे ज. तथा समान वस्तु साथे मळी जवाथी जे देखाय नहीं ते आठमो प्रकार छे. जेम कोइना मगना ढगलामां एक मुठी आपणा मग नांख्या अथवा कोइना तलना ढगलामां आपणे तल नांख्या ते आपणे जाणीये छीये, तो पण आपणे नांखेला मग अथवा तल देखाता नथी. (जूदा पडी शकता नथी.) तेमज जळमां नांखेलुं लवण, साकर विगेरे जुदुं देखी शकातुं नथी. तो तेथी शुं ते जळमां लवण के साकर नथी ? छे ज. आ प्रमाणे आठ प्रकारे छती वस्तुनी पण अप्राप्ति थाय छे. ए प्रमाणे पुद्गल तथा जीव विगेरेमां अनेक स्वभावो विद्यमान छे, ते अनुक्रमे प्रकट थाय छे, परंतु ते सर्व स्वभावोनी विप्रकर्षादिक कारणोने लीधे प्राप्ति थइ शकती नथी. एम सर्वत्र जाणवुं.

अहीं कोइ शंका करे के "उपर बतावेला प्रकारोमां देवदत्त विगेरे देशांतर गयेला देखाता नथी एम कह्युं, तेओ जो के आपणने अदृश्य छे, तो पण तेओ जे देशमां गया छे ते देशना लोकोने तो तेओ प्रत्यक्ष छे, तेथी तेओनी सत्ता (होवापणुं) मानवामां अमने वांधो नथी. पण जीवादिक तो कोइ पण कदापि देखी शकतां नथी, तो ते जीवादिक छे एम शी रीते मानी शकाय?" आनो जवाब ए छे के "जेम परदेश गयेला देवदत्तादिक केटलाकने प्रत्यक्ष होवाथी तेमनुं होवापणुं मानी शकाय छे, तेम जीवादिक पदार्थो पण केवलीने प्रत्यक्ष होवाथी तेमनुं होवापणुं मानी शकाय छे. अथवा परमाणुओ निरंतर अप्रत्यक्ष छे तो पण तेना (परमाणुना) कार्यथी तेमनी सत्ता (होवापणुं) अनुमानथी सिद्ध थाय छे, तेम जीवादिक पण तेना कार्यथी अनुमान वडे सिद्ध थाय छे."

आ प्रमाणे सिद्धान्तना वाक्यनी युक्तिओथी सुबुद्धि प्रधाने राजाने प्रतिबोध पमाड्यो. तेथी राजा देशविरति (बार व्रत) अंगीकार करी श्रावक थयो. पछी केटलेक काळे राजा तथा प्रधाने प्रव्रज्या ग्रहण करी. अने अनुक्रमे मोक्ष पदने पाम्या. कह्युं छे के—

जियसत्तु पडिवुद्धो, सुबुद्धिवयणेण उदयनायंमि।
तह्नोवि समणसिंहा, सिद्धा इक्कारसंगधरा ॥ १ ॥

भावार्थ—" सुबुद्धिमंत्रीना वचन वडे जळना दृष्टांतथी जीतशत्रु राजा प्रतिबोध पाम्यो. अने ते बन्ने श्रमणसिंहो अगीयार अंगने धारण करी सिद्धिपदने पाम्या."

" आ चार स्तंभमां (प्रथम खंडमां) समग्र बुद्धिना निधानरूप समकितने घणा प्रकारे दृष्टांतो सहित देखाड्युं छे. ते समकित मोक्षना सर्व शुभ हेतुओमां मुख्य (प्रथम) छे. माटे पाठकोए (जाणनारे, जणावनारे, सांभळनारे) ते समकितनी प्राप्ति माटे सतत् उद्योग करवो. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे एकषष्टितमं व्याख्यानम् ॥ ६१ ॥

॥ इति चतुर्थ स्तंभः ॥

खास खरीदो ने वांचो.

जैन वर्गमां हालमां पुस्तको प्रसिद्ध करवानुं काम घणुं संतोषकारक चालवा लाग्युं छे. जुदी जुदी चार पांच संस्थाओए ते काम उपाडी लीधुं छे. श्रीमंत गृहस्थो ते कार्यमां पोताना द्रव्यनो व्यय करवा लाग्या छे. गुजराती भाषाना वांचनाराओने माटे नीचेना पुस्तको अमूल्य लाभ आपनारा छे.

१ उपदेश प्रासाद भाषांतर भाग १ लो (स्तंभ १ थी ४) १-८-०
२ " भाग २ जो (स्तंभ ५ थी ९) १-८-०
३ " भाग ३ जो (स्तंभ १० थी १४) १-८-०
४ " भाग ४ थो (स्तंभ १५ थी १९) २-०-०
५ " भाग ५ मो (स्तंभ २० थी २४) २-०-०

आ पांच भागमां थइने ३६० व्याख्यानो छे. ते दरेक व्याख्यान उपदेशक होवा साथे कथाओवाळा होवाथी रसिक छे. समकित अने श्रावकनां व्रतो उपरांत बीजी अनेक बाबतो समावेली छे. तेनी खरी खुबी वांचवाथीज जाणी शकाय तेम छे. आ पांचे भाग भेगा खरीदनारना रु. ७-८-० लेवामां आवे छे.

६ उपदेशमाळा मूळ सहित भाषांतर (७० कथाओ सहित) कीं. रु. १-८-०
(बुकनुं प्रमाण घणुं मोटुं होवा छतां अन्य सहाय मळेली होवाथी किंमत बहुज ओछी राखवामां आवी छे. ग्रंथ अपूर्व छे.)

७ श्री त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र भाषांतर (पर्व १ लुं-२ जुं) २-४-०
८ " (पर्व ३-४-५-६) २-४-०
९ " (पर्व ७ मुं) १-४-०
१० " (पर्व ८ मुं-९ मुं) १-१२-०
११ " (पर्व १० मुं) १-८-०

आ पांच भागमां २४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ वासुदेव, ९ बळदेव अने ९ प्रतिवासुदेव मळी ६३ महापुरुषोना चरित्रो बीजी अनेक कथाओ सहित तेमज उपदेशथी भरपूर छे. पांचे भाग भेगा खरीदनारना रु. ८ लेवामां आवे छे.

१२ श्री अध्यात्म कल्पद्रुम (विवेचन साथे) बीजी आवृत्ति कीं. रु. १-४-०

आ ग्रंथ उपदेशथी भरपूर छे. ७५ फारमनी बुक छतां किंमत पडत

प्रमाणे ज राखवामां आवी छे. टुंका वखतमां बीजी आवृत्ति करवी पडी छे.

१३	चरितावळी	भाग १ लो.	१–०–०
१४	,,	भाग २ जो.	१–०–०
१५	,,	भाग ३ जो.	१–०–.

आ त्रणे भागमां अनेक चरित्रो, बार व्रत उपर कथाओ विगेरे रसिक रसिक विभाग ज चुंटीने दाखल करवामां आवेल छे.

१६ प्रतिक्रमणना हेतु. (तेना आठ पर्याय उपर आठ कथाओ सहित) ०–६–०

१७ श्री विजयचंद केवळी चरित्र भाषांतर (आठ प्रकारनी पूजा उपर आठ कथाओ तेमज बीजी कथाओ युक्त) ०–६–०

१८ प्रबोध चिंतामणि भाषांतर (आगामी चोवीशीमां थनारा गणधरे कहेलुं पोतानुं पूर्व वृत्तांत. मोह विवेकनुं स्वरूप) ०–८–०

१९ श्री शत्रुंजय माहात्म्य भाषांतर (श्री धनेश्वरसूरि विरचित दश हजार श्लोकना ग्रंथनुं भाषांतर. घणुं रसीक ने उपदेशक) २–८–०

२० श्री जैनधर्म प्रसारक सभानो ज्युबीली अंक (खास वांचवा लायक अने अनेक प्रकारनो धर्म लेवा योग्य) ०-१२-०

आ शिवाय बीजी पण अमारी सभा तरफथी छपायेली ५० उपरांत बुको छे, ते तेनुं लीस्ट मंगावीने खरीद करवा योग्य छे.

श्री जैनधर्म प्रसारक सभा.

भावनगर.